वैज्ञानिक कथा साहित्य पुस्तकमाला

दूसरी दुनिया का मुसाफ़िर

तथा अन्य कहानियाँ



इण्डिया पब्लिशर्स
लखनऊ

लेखक
सोवियत कथाकार ए० बेलायेव,
अरकादी तथा बोरिस स्त्रूगात्स्की,
एलेक्ज़ेण्डर काज़न्तसेव, जॉर्जी
गुरेविच तथा व्लादीमीर शावचेंको

हिन्दी अनुवादक तथा सम्पादक
रमेश सिनहा

आवरण चित्र
टी० सिनहा

प्रकाशक
इण्डिया पब्लिशर्स
कृष्णा भवन
आर० के० टण्डन रोड, कैसरबाग,
लखनऊ

मुद्रक
युनाइटेड प्रिन्टर्स एण्ड बाक्स मेकर्स
५२, न्यू मार्केट, कैसरबाग, लखनऊ

प्रथम संस्करण अगस्त, १९६२

मूल्य ४ रु० ३७ न० प०

हिदी पाठको के सामने, और विशेष रूप से, देश के अपने युवक वग के सामने—"वज्ञानिक कथा साहित्य पुस्तकमाला" की प्रथम पुस्तक के रूप म इन कहानियो का प्रस्तुत करते समय हमे विशेष प्रसन्नता हो रही है, क्योकि ये सवथा नये प्रकार की कहानिया है।

पुस्तक म सग्रहीत कहानियो मे सुदर कथाओ के सभी गुण मौजूद हैं। हमारा विश्वास है कि पुस्तक को एक बार शुरू कर देने के बाद पूरा किये बिना उसे रख देना किसी भी पाठक के लिए कठिन होगा। हम स्वय इसी अनुभव से गुजर चुके है।

किन्तु ये मात्र कहानिया ही नही है। उनमे से प्रत्येक ज्ञान की, आधुनिकतम ज्ञान की, नाना रत्नजटित एक अदभुत मजूषा है। हर कहानी विज्ञान की एक शाखा को लेती है और उसकी नवीनतम शोधो, उपलब्धियो तथा सभावनाओ को उच्चतम मानवी कल्पनाओ के तान-बाने मे सँजो कर हमारे सामने रख देती है। अनजाने ही हम न जाने कितनी बातो को—अपने ब्रह्माण्ड के न जाने कितने गुल्बुलाते रहस्यो को—जान जाते हैं। ये कहानिया हैं इसलिए इनको समझने अथवा इनका आनद लेने के लिए सम्बधित विज्ञानो के किसी पूव ज्ञान की आवश्यकता नही होती।

"रूस" विज्ञान और रसीली कल्पना का, आशाकामयी वास्तविकता और उदात्त आदर्शों का ऐसा सयोग हमे अयत्र देखने को नही मिला।

पर, सभवत, इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि इन कहानियो मे प्रतिष्ठित आदर्श वही है जो हमारे देश के आदर्श हैं—शान्ति, स्वतत्रता तथा "वसुधव कुटुम्बकम्" के आदर्श। उन विग्रहो, मारकाटो तथा युद्धो की कल्पनाएँ इनमे नही मिलती जो एच० जी० वेल्स जैसे पश्चिम के वैज्ञानिक कथाकारो की रचनाओ मे हमने पढी है।

प्रधान मत्री प० जवाहरलाल नेहरू ने राष्ट्रीय प्रयोगशालाओ तथा देश के भव्य औद्योगिक सस्थानो को आधुनिक भारत के मन्दिरो की सज्ञा दी है। तो ये कहानियाँ भी दरअसल इन्ही मदिरो के आबाल-वृद्ध पुजारियो के लिए है, उन सबके लिए है जो भारतीय मानस की उन्नति तथा प्रगति चाहते है।

१५ अगस्त, १९६२ —प्रकाशक

विषय-सूची

एलेक्जेन्डर बेलायेव

(१८८४ १९४२)

वज्ञानिक कथा साहित्य के प्रसिद्ध सोवियत लेखक, एलेक्जेण्डर बेलायेव का जीवन उन कहानियों से कम अदभुत नहीं था जो उन्होंने लिखी हैं।



उन्हें क्षय (टी० बी०) हो गया था। इस भयानक बीमारी की वजह से वर्षों वे शय्या ग्रस्त थे। फिर भी उन्होने हार नही मानी—जीवन का पूरा उपभोग किया और, शारीरिक असहायता की स्थिति मे भी, करोड़ो सोवियत पाठको का वे मनोरंजन तथा शिक्षण करते रहे।

इसी अवस्था मे उन्होने कानून पढा सगीत की शिक्षा ली, पत्र पत्रिकाओ मे काम किया तथा वज्ञानिक और प्राविधिक विषयो का गहन अध्ययन किया और फिर अपनी मोहिनी लेखनी के स्पर्श से स्वय उनमे एक नया जीवन डाल दिया। "उभयचरा", 'प्रोफसर डौवेल का सिर', 'मत नौकाओ का द्वीप" "अटलाटिस का अन्तिम आदमी', 'एरियल", 'पृथ्वी के गोले का शासक', "शून्य मे छलाग", आदि, आदि, उनकी रचनाएँ इस बात का प्रमाण हैं।

प्रस्तुत सग्रह मे उनकी कहानी "ह्वाइटी टवाइटी, अथवा एक मनमौजी हाथी" दी जा रही है। यह एक आधे हाथी और आधे मानव की, अथवा, कहना चाहिए कि, हाथी के शरीर मे एक मानव (एक जमन वज्ञानिक) के मस्तिष्क की कहानी है—इतनी रोचक (तथा शिक्षाप्रद) कि एक बार शुरु कर दने के बाद खत्म किये बिना आप उसे छोड न सकेंगे।

हॉइटी-ट्वॉइटी

या एक मनमौजी हाथी

(ए० वेलायेव द्वारा उनकी जीवनी के लिए एकत्रित
की गयी सामग्री के आधार पर)

१ एक विलक्षण कलाकार

बर्लिन का विशाल बुश सर्कस खचाखच भरा हुआ था। बियर के भरे हुए मग्गे लिए सेवक गण ढलुवे बरामदा म चमगीदडो की तरह इधर उधर आ जा रहे थे। पीने वालो की प्यास अभी नही बुझी है, यह दिखाते हुये जहाँ भी उन्हे बियर के खुले मग्गे नजर आते वही दौडकर उनके सामने लबालब भर हुये नये मग्गे वे रख देते। फिर दूसरे प्यासा की पुकार पर तेजी से वे उनकी तरफ लपक जाते। अपनी अविवाहित बेटिया के साथ बैठी मोटी मोटी माओ ने चिकनाई प्रूफ कागज के पैकटो को खालकर गोद म रख लिया था और सेण्डविचें चबा रही थी तथा अत्यन्त मगन भाव से काला पुडिंग और फ्रैन्कफुटर की सासेजें उडा रही थीं। उनकी आँखें रंगभूमि की ओर एकटक लगी हुई थी।

परन्तु, दशकों के पक्ष में कहना पड़ेगा कि इतनी बड़ी सख्या में न तो वे उस फकीर को देखने के आकर्षण से वहा आये थे जो अपने को तरह-तरह की यातनाएँ देता था, न उस आदमी को देखने के आकर्षण से जो मढकों को जिन्दा ही लील जाता था। अधीर भाव से वे सब इन्तजार कर रहे थे कि पहले भाग का पटाक्षेप हो और इण्टरवल निकल जाय, क्योंकि ह्वाइटी ट्वाइटी अपने करतब उसी के बाद दिखाने वाला था। उसके बारे में अद्भुत कहानियाँ सुनने में आयी थीं, वैज्ञानिकों ने उसमें विशेष दिलचस्पी दिखलायी थी। वह एक पहेली था, सबका प्रिय पात्र था, और एक चुम्बक की तरह सबका आकर्षण-केन्द्र था। उसके पहले 'शो' के बाद से ही हर रोज सर्कस के टिकटघर के ऊपर "सब टिकट बिक गये' का नोटिस लटकता आया था। जिन लोगों ने पहले कभी सर्कस घर में पैर तक नहीं रखा था उनको भी वहाँ खींच लाने की उसमें शक्ति थी।

यह सच है कि गैलरी और नीचे का भवन दोनों, सर्कस के नियमित दर्शकों से—सपरिवार आने वाले छोटे अधिकारियों और कर्मचारियों, दुकानदारों तथा एवजी में काम करने वाले लोगों से भरे हुए थे। लेकिन बौक्सों और 'स्टॉलों' में बुजुर्ग सफेद बालों वाले, गंभीर किस्म के, यहाँ तक कि मनहूस लगने वाले लोग तक, पुराने फैशन के ओवरकोटों और रेन-कोटों में लिपटे हुए दराज थे। और आगे के "स्टालों" पर कुछ नौजवान थे। वे भी उतने ही गंभीर और मौन थे। वे न सैंडविच चबा रहे थे, न बियर पी रहे थे। भक्त ब्राह्मणों के समान वे एकदम खामोश और अपने में खोये हुये से बैठे थे। वे तमाशे के दूसरे भाग का, ह्वाइटी ट्वाइटी का, इन्तजार कर रहे थे। विशेष तौर से उसी को देखने वे आये थे।

'इण्टरवल' में केवल ह्वाइटी-ट्वाइटी के आगे आने वाले प्रदर्शन की ही बात होती रही। अब आगे के "स्टॉलों" पर बैठी विद्वानों की मंडली

मे भी जीवन के चिह्न दिखलाई देने लगे। चिर प्रतीक्षित क्षण आखिर आ रहा था। तुरही का घोषणा भरा स्वर गूज उठा, लाल और सुनहरी वर्दिया पहने सकस-कमचारी पातो म तरतीबवार खडे हो गये, दरवाजा के पर्दे दूर-दूर तक खोल दिये गये और, दशको के बीच से उठती तुमुल करतल ध्वनि क मध्य, ह्वाइटी ट्वाइटी ने रग भूमि म प्रवेश किया। वह एक विशाल हाथी था। उसके सिर पर सोने की जरी से कढा हुआ एक टोपा था। उसम रेशमी तागे और एक राजसी चँवर लगा हुआ था। अपने महावत के साथ, जो वास्कट पहने हुए एक ठिगना सा आदमी था और दाहिने-बायें दोनो तरफ झुक झुक कर बराबर सलाम करता जाता था, हाथी ने रग भूमि का एक चक्कर लगाया। उसके बाद वह बीचोबीच आ गया और इन्तजार करता हुआ चुपचाप खडा हो गया।

"अफ्रीकी है," अपने साथी के कान मे सफेद बालो वाले एक प्रोफेसर ने धीरे से फुसफुसाया।

"मुझे तो हिदुस्तानी हाथी ज्यादा पसन्द है। उनके शरीर ज्यादा गोल मटोल होते है। अगर हम कह सकें, वे अधिक सुसस्कृत दिखते है। अफ्रीका का हाथी भाडा लगता है। वह अधिक बेडौल होता है। इस तरह का हाथी जब अपनी सूड फैलाता है तो किसी शिकारी पक्षी की तरह लगने लगता है।"

हाथी के पास वास्कट पहने खडे उसके ठिगने महावत ने खखारकर गला साफ किया। फिर उसने कहना शुरू किया

"देवियो और सज्जनो! आपकी सेवा मे हम अपने प्रसिद्ध हाथी, ह्वाइटी-ट्वाइटी को पेश कर रहे हैं। इसका शरीर १४½ फुट लम्बा है, वह ११½ फुट ऊँचा है। सूड के सिरे से पूछ के अन्तिम छोर तक इसकी लम्बाई ९ मीटर है।"

अचानक ह्वाइटी टवाइटी ने अपनी सूँड उठाई और उस महावत के सामने घुमाने लगा।

"आह, माफ कीजिएगा, मैंने गल्ती कर दी" उसने कहा। 'सूड २ मीटर लम्बी है और पूछ लगभग १½ मीटर। इस तरह सूड के आरम्भ से पूँछ के अन्त तक ह्वाइटी-टवाइटी की लम्बाई ७५/१० मीटर है। हर रोज इसे ३६५ किलोग्राम साग सब्जियो और १६ बाल्टी पानी की जरूरत होती है।'

एक आवाज सुनाई दी, "हाथी का हिसाब किताब आदमी के हिसाब स ज्यादा सही मालूम पडता है।"

"तुमने देखा अपने टेनर की गल्ती को हाथी ने कैसे सही कर दिया?" सामने बैठे प्राणिशास्त्र के प्रोफसर न अपने एक साथी से पूछा।

बिल्कुल इत्तफाक की बात है' उसने जवाब दिया।

महावत कहता जा रहा था, 'ह्वाइटी टवाइटी दुनिया का सबसे आश्चयजनक हाथी है। शायद आज तक जितने जानवर हुए है उनमे यह सबसे बडा जीनियस (प्रतिभा-सम्पन्न प्राणी) है। यह जमन समझता है। ह्वाइटी तुम जमन समझते हो न?' हाथी को सम्बोधित करते हुए उसने पूछा।

हाथी ने गम्भीरता से स्वीकृति सूचक सिर हिला दिया। दर्शकों की तालियाँ गूज उठी।

"सब ढकोसला है!" प्रोफेसर श्मिट ने कहा।

"हा लेकिन अभी देखो तो आगे क्या होता है,' आपत्ति करते हुए स्टोल्ज ने कहा।

"ह्वाइटी टवाइटी गिन सकता है और अकों को पहचानता है।'

"बात बहुत हो चुकी! अब कुछ दिखाओ!'—गैलरी से किसी ने चिल्लाकर आवाज कसा।

जरा भी विचलित हुए बिना उसी अन्दाज मे महावत कहता गया, 'किसी को कोई शक न हो इसलिए मैं दरख्वास्त करूँगा कि कुछ दर्शक यहाँ रग भूमि मे तशरीफ ले आये। वे आपको विश्वास दिला सकेंगे कि इसमे कोई चाल नही है।"

श्मिट और स्टोल्ज ने एक दूसरे की तरफ देखा। फिर वे रग भूमि की तरफ चलने लगे।

और फिर ह्वाइटी ट्वाइटी ने अपनी आश्चर्यजनक कारगुजारिया दिखानी शुरू कर दी। पुटठे (काड बोड) के बडे बडे चौकोर टुकडो पर लिखे अक उसके सामने रख दिये गये, और उसने जोडना, घटाना और भाग देना शुरू कर दिया। सवालो का जवाब देने के लिए सामने के आकडो के ढेर मे से वह उन अको को निकाल लेता जो जरूरी होते। पहले एक अक वाली सख्याओ को लिया गया, उसके बाद दो अक वाली सख्याओ को, फिर तीन अक की सख्याओ को। एक भी गल्ती किये बिना हाथी हर सवाल को शात भाव से हल करता गया।

"बोलो ? अब क्या कहते हो ?" स्टोल्ज ने पूछा।

'अच्छा, रुको। अभी हम देखते है कि अको को वह कितना समझता है।" श्मिट ने जवाब दिया। वह हाथी को किसी चीज का श्रेय देने के लिए नही तैयार था। इतना कहने के बाद, अपनी जेब से उसने घडी निकाली, उसे सामने किया और हाथी से पूछा "ह्वाइटी ट्वाइटी, क्या तुम हम बता सकोगे कि क्या बजा है ?"

हाथी ने एकदम अपनी सूड उठायी और श्मिट के हाथ से घडी ले ली। अपनी आँखो के सामने वह उसे थोडी देर लटकाये रहा। फिर उसके भौचक मालिक को उसने घडी लौटा दी और पुट्ठे के चौकोर टुकडो को लेकर जवाब लिख दिया

"१० बजकर २५ मिनट!"

श्मिट ने अपनी घडी देखी और परेशान होते हुए अपने कन्धे उचकाये। हाथी ने बिल्कुल ठीक समय बतलाया था। उसमें १ मिनट की भी गल्ती नही थी।

अगली समस्या पढन की थी। महावत (ट्रेनर) ने हाथी के सामने जानवरो की बडी बडी तस्वीरे फैला दी। कार्ड बोर्ड (पुट्ठे) के दूसरे तख्ता पर लिखा हुआ था शेर, बन्दर, हाथी। हाथी को पहले एक जानवर की तस्वीर दिखलाई गयी। अपनी सूड से फौरन उसने कार्ड बोर्ड के उस तख्त की तरफ इशारा कर दिया जिस पर उस जानवर का नाम लिखा हुआ था। हर बार जब उसे किसी जानवर की तस्वीर दिखायी जाती वह जिस तख्त पर उसका नाम लिखा होता उसे उठा कर दे देता। इसमे हाथी ने एक बार भी गलती नही की। श्मिट ने प्रयोग की व्यवस्था बदलने की कोशिश की हाथी को उसने पहले एक शब्द दिखलाया और फिर कहा कि जिसका नाम उसे दिखलाया गया था उसकी तस्वीर वह ढूढ निकाले। हाथी ने यह काम भी बिना एक भी गलती किये कर दिखाया।

अन्त म ह्वाइटी ट्वाइटी के सामने पूरी वर्णमाला ही रख दी गयी। अब उससे कहा गया कि अक्षर चुने उनसे शब्द बनाये और पूछे जाने वाले सवालो का जवाब दे।

"तुम्हारा नाम क्या है ?' प्रोफेसर स्टाल्ज ने उससे पूछा।

"ह्वाइटी-ट्वाइटी आजकल," हाथी ने जवाब दिया।

" 'आजकल' इससे तुम्हारा क्या मतलब है ?' बातचीत मे शामिल होते हुए श्मिट ने पूछा। "क्या पहले तुम्हारा कोई दूसरा नाम था ? वह क्या था ?"

'सपियन्स"*, हाथी ने जवाब दिया।

* Sapiens (लैटिन) = 'बुद्धिमान"।

"शायद, होमो सेपियन्स*?" एक दबी हँसी हँसते हुए स्टोल्ज ने कहा।

"शायद," उसी रहस्यपूर्ण लहजे म हाथी ने जवाब दिया।

फिर वणमाला मे से उसने कुछ अक्षर निकाले और निम्न श द बनाय "बस, आज के लिए इतना काफी है।" ट्रेनर के 'नही नही' चिल्लात रहने के बावजूद, ह्वाइटी टवाइटी न चारो तरफ घूम घूम कर झुककर सलाम किया और रग भूमि से बिदा हो गया।

इण्टरवल मे सारे प्रोफेसर गण सिगरेट पीने के कमरे मे इकट्ठा हुए। वहा वे कई दलो म बँट गय और उनके बीच जारो से बहस छिड गयी।

दूर के एक कोने मे श्मिट और स्टाल्ज एक दूसरे स उलझे हुए थे।

"मेरे प्रिय मित्र, तुम्ह याद नही है कि कुछ दिन पहले हॉन्स ने कैसी सनसनी पैदा कर दी थी?", श्मिट कह रहा था। "वह एक घोडा था। वह किसी भी सख्या का वगमूल बता सकता था और तरह तरह की गणनाएँ कर सकता था। सारे जबावा को वह अपने खुर स लिख देता था। और बाद मे पता चला था कि उस सब का राज केवल यह था कि उसका मालिक जब कोई गुप्त सकेत करता था तो उत्तर मे वह अपन खुर पटकने लगता था। जिस तरह एक अन्धा पिल्ला गणना नही कर सकता उसी तरह वह भी दरअसल कोई गणना नही कर सकता था। "

"यह तो महज तुम्हारा खयाल है," स्टोल्ज ने आपत्ति की।

"फिर थौनडाइक या यौक्स के प्रयोगो के बारे म तुम क्या कहते हो? वे सब जानवरा के प्राकृतिक साहचर्यों के अनुसार उनकी ट्रेनिंग

---

* Homo Sapiens (लैटिन) = बुद्धिमान आदमी। स्तनधारियो के वर्गीकरण के अन्तर्गत यह मानव का वैज्ञानिक नाम है।

पर आधारित है। जानवरों को एक लाइन में रखे कई बक्सों के सामने खड़ा कर दिया जाता था। बक्सों में से केवल एक में खाना होता था। अब मान लीजिए कि यह विशेष बक्स दाहिनी तरफ से दूसरे नम्बर पर आता था। अगर जानवर उसका पता लगा लेता है तो वह अपने आप खुल जाता है और जानवर को खाना मिल जाता है। इस प्रकार, मोटे तौर से, जानवर के अन्दर निश्चित साहचर्य की भावना पैदा हो जाती है 'दाहिनी तरफ से दूसरा बक्स—खाना। फिर बक्सों को किसी दूसरे ढंग से लगा दिया जाता है।'

"तुम्हारी घड़ी में तो खाने का कोई बक्स नहीं है' व्यंग करते हुए स्टोल्ज ने कहा। फिर इन चीज़ों का तुम क्या जवाब देते हो?"

'ठीक है, मेरी घड़ी के बारे में हाथी कुछ नहीं समझता था। उसने तो सिर्फ एक चमकीली सी गोल चीज को देखा और उसे अच्छी तरह से देखने के लिए अपनी आँखों के पास ले गया। पुट्ठे के चौकोर टुकड़ों पर बने अंकों को जब वह छाँटने लगा तब स्पष्ट रूप से वह अपने ट्रेनर के किन्हीं गुप्त आदेशों को ही सुन रहा था। इसे हम न देख सके थे। यह सब केवल जाल बट्टा है। वह उसी वक्त से शुरू हो गया था जब उसकी लम्बाई के बारे में भूल करने पर ह्वाइटी टवाइटी ने अपने ट्रेनर को 'दुरुस्त' कर दिया था। अभ्यनुकूलित प्रतिवर्त—और कुछ नहीं।"

'सर्कस मैनेजर ने मुझे अनुमति दे दी है कि मैं चाहूँ तो तमाशे के बाद अपने कुछ साथियों के साथ रुक जाऊँ और जो-कुछ देखना चाहूँ उसे देख लूँ। मैं ह्वाइटी टवाइटी के ऊपर कुछ प्रयोग करने जा रहा हूँ' स्टोल्ज ने कहा। मेरा ख़याल है कि तुम भी हमारे साथ रहने में एतराज न करोगे?"

मैं जरूर तुम्हारे साथ रहूँगा।'

सर्कस की रंग-भूमि तमाशबीनों से जब खाली हो गयी और ऊपर की एक को छोड़कर शेष सब रोशनियाँ बुझा दी गयीं तब ह्वाइटी ट्वाइटी को फिर वहाँ ले आया गया। श्मिट ने ट्रेनर से दरख्वास्त की कि जब वे ह्वाइटी-ट्वाइटी के साथ प्रयोग करें तब वह वहाँ से चला जाय। उस छोटे से आदमी ने अपना चमक वाला कोट अब उतार दिया था और केवल एक स्वेटर पहने हुए था। श्मिट की बात सुनकर उसने किंचित अपने कन्धे उचकाए, पर बोला कुछ नहीं।

"मेरी बात का बुरा न मानिएगा मुझे माफ कीजिए, मैं आपका नाम नहीं जानता," श्मिट ने शुरू किया।

"जुङ्ग, फ्रेडरिक जुङ्ग। आपकी खिदमत में हाजिर हूँ।"

"अच्छा, सुनिये। बुरा न मानिएगा मिस्टर जुङ्ग। हम प्रयोग इसलिए करना चाहते हैं जिससे कि कहीं भी कोई शक की गुन्जाइश न रह जाय।"

"जरूर कीजिए," ट्रेनर ने जवाब दिया। "जब हाथी का काम खत्म हो जाय तो मुझे बुला लीजिएगा।"—कहकर वह दरवाजे की तरफ चला गया।

वैज्ञानिकों ने अपने प्रयोग शुरू कर दिये। हाथी उनकी बात ध्यान से सुनता आज्ञा मानता, उनके सवालों के जवाब देता। एक भी गल्ती किये बिना तरह-तरह की समस्याओं के समाधान उसने प्रस्तुत कर दिये। उसने जो किया उससे सब आश्चर्य में पड़ गये। अविलम्ब दिये जाने वाले उसके जवाबों को केवल ट्रेनिंग या चालबाजी की बात कह कर नहीं खत्म किया जा सकता था। हाथी में असाधारण बुद्धि थी, एक तरह से बिल्कुल मानवी बुद्धि थी, इससे किसी तरह इनकार नहीं किया जा सकता था। श्मिट भी अब आधा हो गया था परन्तु केवल हठवश वह बहस करता रहा।

इस अंतहीन बहस को सुनते सुनते हाथी भी स्पष्ट रूप से थक गया था। एकाएक, अपनी सूँड की एक सधी हुई गति से, श्मिट की वास्कट की जेब से उसने उसकी घड़ी निकाल ली और उसे उसके सामने कर दिया। सुइयाँ बता रही थी कि बारह बज गये है। फिर, घड़ी को लौटाकर, ह्वाइटी टवाइटी ने श्मिट की गर्दन के कालर को पकड़ कर ऊपर उठा लिया और उसे इसी तरह लिये हुए रंगभूमि से बाहर चला गया। प्रोफेसर गुस्से से चीखता रहा परन्तु उसके साथियों ने हँसते रहने के अलावा और कुछ नहीं किया। जुंग अस्तबल से दौड़ आया और हाथी को डाटने डपटने लगा परन्तु ह्वाइटी टवाइटी ने उसकी तरफ कोई ध्यान नहीं दिया। श्मिट को बाहर रास्ते में उसने उतार दिया। इस तरह उससे अपना बदला ले चुकने के बाद उसने अपनी हिंसक दृष्टि रंगभूमि में खड़े दूसरे वैज्ञानिकों की तरफ की। 'ठीक है, ठीक है हम लोग जा ही रहे है,' स्टोल्ज ने हाथी से ऐसे कहा जैसे वह कोई आदमी हो। 'तुम गुस्सा मत हो।'

इतना कहने के बाद घबराया हुआ स्टोल्ज रंगभूमि से निकल आया। उसके पीछे पीछे दूसरे प्रोफेसर भी चले गये।

"ह्वाइटी, तुमने बिल्कुल ठीक किया जो उनको बाहर निकाल दिया,' जुंग ने कहा। 'हम बहुत काम करने को पड़ा है। हे, जोहान ! फ्रेडरिक ! विल्हेम ! तुम लोग कहाँ मर गये ?'

तभी रंगभूमि में कई मजदूर आ गये और उन्होंने सफाई शुरू कर दी। उन्होंने बालू खोदकर बराबर की, रास्तों को झाड़ू से साफ किया, सीढ़ियों और छल्लों को बाहर ले गये। हाथी ने मंच की सजावट का सामान हटाने में जुंग की मदद की। परन्तु ऐसा लगता था जैसे काम करने की उसकी मर्जी न थी। या तो किसी चीज के बारे में वह नाराज हो गया था, या, शायद, रात के उस बवक्त के दूसरे प्रदर्शन के बाद वह थक गया था। वह नथुनों से आवाज

करता, सिर को इधर उधर पटकता और स्टज की साज-सज्जा को ढकेलता-गिराता चलता। उनम से एक चीज को उसन इतने जोर से घसीटा कि वह वही टूट गयी।

"सावधानी से, ओ शैतान," जु ग ने चिल्लाते हुए उससे कहा। "आज तुम काम-चोरी क्या कर रहे हो? मुझे लगता है कि तुम्हारा सर फिर गया है। अब तुम पढ लिख सक्ते हो, इसलिए शारीरिक मेहनत करना शायद अच्छा नही लगता! लेकिन उससे बचा नही जा सक्ता, जनावआली। यहा कोई खैरात खाना नही है। सर्कस म हर एक को काम करना पडता है। हैनरिक फैरी को दखो। एक बेहतरीन घुडसवार के रूप म वह सारी दुनिया मे मशहूर है, फिर भी जब वह अपना कौशल नही दिखाता होता तब वर्दी पहनकर सईसा के साथ खडा रहता है। बालू हटाने मे भी वह मदद देता है।"

बात सच थी और हाथी इसे जानता था। लेकिन ह्वाइटी-ट्वाइटी को हैनरिक फैरी से क्या लेना देना था। वह फिर चिघाडा और रगभूमि को पार करता हुआ बाहर के रास्ते की तरफ चल दिया।

जु ग अब पूरे तौर से गुस्सा हो उठा था। वह जोर से चिल्लाया' 'ह, तुम कहा भागे जा रहे हो? रुको! मैं तुमसे कहता हूँ?"

फिर उसने एक झाडू उठा ली और उसे लेकर हाथी की तरफ दौडा। उसकी मूठ से जु ग ने उसके मोटे पुट्ठों पर वार कर दिया। इससे पहले कभी जु ग ने हाथी को नही मारा था। यह सच है कि इससे पहले कभी हाथी ने भी उसकी आज्ञा का उल्लघन नही किया था। यकायक ह्वाइटी-ट्वाइटी इतने जोर से चिघाडा कि छोटा-सा जु ग वही जमीन पर लुढक गया। अपने दोनो हाथो से वह अपना पेट पकडे था, जैसे कि उसकी चिघाड से बीमार हो गया हो। हाथी फौरन मुड पडा, जु ग को एक पिल्ले की तरह उसने ऊपर उठा लिया, और

हवा में उछाल दिया। इसी तरह कई बार वह उसे हवा में उछालता और बीच में ही पकड़ता रहा। अन्त में, उसने उसे जमीन पर खड़ा कर दिया, वहीं पड़ी झाड़ू को अपनी सूँड से उठा लिया और, रंगभूमि में घूमते हुए, उसने लिखा

"खबरदार, अब कभी मुझे हाथ न लगाना! मैं जानवर नहीं हूँ। मैं एक मानव प्राणी हूँ!"

इसके बाद झाड़ू को उसने फेंक दिया और उद्दण्ड भाव से बाहर चला गया। अस्तबल के घोड़ों के पास से होता हुआ वह फाटक पर पहुँच गया। वहाँ अपनी विशाल काया को उसने फाटक से लगाया और ज़ोर से धक्का दिया। फाटक चरचराया और फिर उस ज़बरदस्त धक्के से चूर चूर हो गया। आज़ाद होकर हाथी बाहर निकल गया।



लुदविग स्ट्रीम सर्कस का मैनेजर था। इत्तफाक से उस दिन सारी रात वह बहुत परेशान रहा था। आखिरकार, बड़ी मुश्किल से जब उसे नींद आई थी उसी समय उसका बटलर आया। उसने कमरे के दरवाज़े पर उसने हल्के से दस्तक दी। उसने उससे कहा कि जुङ्ग किसी बहुत जरूरी काम से आया है। सर्कस के कर्मचारी सब कुछ जानते थे। उन्हें पूरी ट्रेनिंग मिल चुकी थी। इसलिए इस खबर को सुनते ही स्ट्रीम फौरन समझ गया कि कोई बहुत ही संगीन वारदात हुई होगी तभी ऐसे वक्त उसको जगाने कोई आया है। जल्दी जल्दी उसने अपना ड्रेसिंग गाउन पहना, स्लीपरों में पैर डाले और छोटे से बैठक खाने में बाहर निकल आया। 'क्या हुआ, जुङ्ग?", उसने पूछा।

"एक बहुत ही भयानक चीज हो गयी है, मिस्टर स्ट्रौम ! ह्वाय्टी-ट्वाइटी को गर्मी चढ गयी है !" जुङ्ग की आखो और उसके हाथो की गति से परेशानी झलक रही थी।

"जुङ्ग, तुम्हारा दिमाग क्या बिलकुल खराब हो गया है ?" स्ट्रौम ने पूछा।

बुरा मानते हुए जुङ्ग ने कहा, "मै जानता हूँ कि तुम मेरी बात का विश्वास नही करते ! पर मैं बिल्कुल होश मे हूँ और जो कह रहा हूँ ठीक ही ठीक कह रहा हूँ। अगर तुम्हे मेरी बात का भरोसा नही है तो तुम जोहान, फ्रैडरिक और विल्हेम से पूछ ले सकते हो। उन्होन सब कुछ अपनी आखो से देखा है। हाथी ने झाड़ू मेरे हाथ से छीन ली थी और रगभूमि मे पडी बालू के ऊपर लिखा था 'मैं जानवर नही हूँ, मैं एक मानव प्राणी हूँ !' इसके बाद एकदम ऊपर तक उठा-उठाकर १६ बार उसने मुझे उछाला था। फिर अस्तबलो की तरफ से वह आगे निकल गया, फाटक के उसने टुकडे टुकडे कर दिये और बाहर भाग गया।"

"क्या कहा ? भाग गया ! बेवकूफ कही के, मुझे फौरन क्यो नही बताया ? उसे पकडने और वापिस लाने के लिए हमे फौरन कुछ करना चाहिए, वर्ना वह न जाने क्या शरारत कर डाले।"

स्ट्रौम की आखो के सामने पुलिस की जुमाने की पर्ची घूमने लगी ! उसके सामने किसानो के खेतो को हुए नुकसान के लम्बे-लम्बे बिल तथा दूसरे नुकसानो के बिल नाचने लगे। उसे हरेक के नुकसान का आना पाई तक भरना पडेगा !

"सर्कस मे आज किसकी ड्यूटी है ? पुलिस को इत्तिला दे दी गयी ? हाथी को पकडने के लिए क्या किया गया ?"

"ड्यूटी तो मेरी ही है। मैं जो कुछ भी कर सकता था कर चुका हूँ," जुग ने जवाब दिया। "पुलिस को मैंने इत्तिला नही दी, परन्तु

उसे जल्दी ही सब कुछ मालूम हो जायगा। मैंने ह्वाइटी ट्वाइटी का बहुत दूर तक पीछा किया, उससे लौटने की बार बार प्रार्थना की, मैंने उसे 'बैरन', 'काऊण्ट', यहां तक कि 'जनरललिस्सिमा' (महासेनापति) तक कहकर सम्बोधित किया। मैंने कहा, 'महाराज! लौट आओ! महामहिम, मुझे माफ कर दो क्योंकि मैं तुम्हें फौरन न पहचान सका। सर्कस में अंधेरा था और मैं तुम्हें केवल एक हाथी समझ बैठा।' परन्तु उसने बस एक नजर मेरे ऊपर डाली, तिरस्कार के साथ जोर से चिंघाड़ा और फिर आगे बढ़ गया। जोहान और विल्हम मोटर साइकिलों पर बैठकर उसके पीछे गये हैं। वह उण्टर डेन लिण्डन में घुस गया, टीयरगार्टेन से होता हुआ चारलोटटेनबर्गर चाउसी में निकल गया और फिर ग्रूनवाल्ड की तरफ चला गया। इस समय मस्तीपूर्वक वह हैवेल में लोट लगा रहा है।'

तभी टेलीफोन की घंटी बजी और स्ट्रौम ने रिसीवर उठा लिया।

"हलो! हाँ बोल रहा हूँ ... मुझे मालूम हो गया है शुक्रिया ... हम जो भी कर सकते थे कर चुके हैं ... फायर ब्रिगेड? मुझे उसके बारे में शक है। अच्छा हो यदि जानवर को हम छेड़ें न?"

रिसीवर को वापिस रखते हुए स्ट्रौम ने कहा। 'पुलिस का फोन था। वह कहती है कि फायर ब्रिगेड को बुला लिया जाय और हाथी को वापिस भेजने के लिए उस पर पानी के नलों से पानी डाला जाय। परन्तु ह्वाइटी-ट्वाइटी के सम्बन्ध में हमें बहुत सावधानी बरतने की जरूरत है।"

'पागल आदमियों के साथ और छेड़खानी न की जानी चाहिए', जुम्र ने कहा।

"फिर भी, जुङ्ग, हाथी और किसी की अपेक्षा तुमको अधिक अच्छी तरह जानता है। उसके पास पहुँचने की ओर फुसलाकर उसे सकुस मे वापिस ले आने की कोशिश करो।"

"जरूर, कोशिश तो मैं कर ही सकता हूँ। शायद मुझे उसको हिण्डेनबग कहकर बुलाना चाहिए ?"

जुङ्ग चला गया।

सारी रात स्टौम जागता हुआ टेलीफोन से सन्देशो को सुनता और आदेश जारी करता रहा। कुछ देर तक हाथी फाओएनिसेल द्वीप के बिल्कुल पास ही नहाता रहा। फिर बराबर के किसी के घरेलू बाग पर उसने धावा बोल दिया। वहाँ की तमाम बन्दगोभिया और गाजरो को वह खा गया। पडौस के एक दूसरे बाग के सेबो को उसने चक्खा और फिर वह फ्रीडेन्सडोफ के जगलो की तरफ चला गया।

ऐसी रिपोर्ट कही से नही आयी थी कि हाथी ने किसी आदमी को किसी तरह की चोट पहुँचायी है अथवा जान बूझ कर कोई दूसरा नुकसान किया है। आम तौर से उसका व्यवहार बहुत अच्छा रहा था। घास उसके पैरो के नीचे न रौंद जाय इसलिए अत्यन्त सावधानी के साथ वह बाग के पक्के मार्गो पर ही चला था। उसने गलिया और सडको पर ही चलने की कोशिश की थी। केवल भूख से मजबूर होकर ही उस बाग-बगीचो के सब्जी-साग और फलो को खाना पडा था। इसके बावजूद, उसने बहुत सावधानी बरती थी।

उसने क्यारिया को कुचलने से बचाया था। बन्दगोभिया को उसने बहुत तरीके से खाया था। उसने उनकी एक पात के बाद दूसरी पात को खाया था। फलो के पेडो की शाखाओ को भी उसने टूटने नही दिया था।

सुबह ६ बजे जुङ्ग दुबारा वहा आया। वह थका हुआ था और उसके ऊपर धूल लिपटी हुई थी। उसका चेहरा काला हो रहा था और उससे पसीना निकल रहा था। उसके कपडे भी भीगकर गीले हो गये थे।

'कहो, अब क्या हाल है जुङ्ग ?"

"रिपोर्ट करने लायक कुछ नही है। ह्वाइटी ट्वाइटी किसी भी तरह की बात सुनने के लिए तैयार नही है। मैंने उस मिस्टर प्रेसीडेण्ट' तक कहा था। परन्तु वह नाराज हो उठा और मुझे उठाकर उसने झील मे फेंक दिया। हाथियो को जब बडप्पन का रोग लग जाता है तो स्पष्टतया उनका रूप वैसी ही स्थिति के आदमियो के रूप से भिन्न होता है। इसलिये मैंने उसे तक से समझाने की कोशिश की शायद आपको खयाल हो रहा है कि आप अफ्रीका मे है' मैंने उससे पूछा। डर के मारे इस बार किसी उपाधि का इस्तेमाल मैंने नही किया था। परन्तु यह अफ्रीका नही है। यह तो ५२ ८ का उत्तरी अक्षाश है। सम्भव है कि अगस्त के इस महीने मे वहा फल और शाक सब्जिया की इफरात होती हो। परन्तु जब वहा जाडे की बर्फ पडने लगगी तब क्या होगा ? उस वक्त आप क्या करेंगे ? बकरा की तरह पेड की छाल तो आप खा नही सकेंगे, खा सकेंगे ? आप याद कीजिए कि किसी जमाने म आपके पूर्वज मैमथ लोग (भीम गज) यहाँ योरप म रहा करते थे। परन्तु ठड के मारे व सब मर गये। इसीलिए क्या अच्छा न होगा कि आप वापस सरकस के अपने घर लौट जाय जहा आपको ठीक से रखखा जायगा, जाडे म गम रखने का इन्तजाम किया जायगा और कपडे पहनाये जायेंगे।' ह्वाइटी टवाइटी न बहुत ध्यान से य बातें सुनी। क्षण भर तक वह विचार करता रहा। लेकिन आखिर म अपनी सूँड से मेरे ऊपर उसने पानी की वर्षा कर दी। ५ मिनट के अन्दर उसने मुझे दो बार स्नान करा दिया। मेरी तो खूब अच्छी तरह गत बन गयी है। मुझ जुकाम न हो जाय तो आश्चय ही होगा।"

३ युद्ध घोषणा

समझाने बुझाने के सारे नतिक प्रयत्न बेकार हुए। अन्त म स्टीम को कडे कदम उठाने के लिये मजबूर होना पडा। फायरमैना (आग-बुझाने वाले लोगा) का एक बिग्रेड जगल मे भेज दिया गया। उनके आगे-आग पुलिस थी। फायरमैन हाथी के पास दस गज तक पहुँच गये। उन्होंने उसके इद गिद एक अद्ध-चक्र बना लिया। फिर उन्होने पानी के अपने ताकतवर नलो से उस विशाल जानवर पर पानी छोडना शुरु किया। हाथी को फव्वारे के इस स्नान मे बहुत मजा आया। पहले एक तरफ, फिर दूसरी तरफ नलो की तरफ घूम घूमकर और जोरा से चिघाडते हुए उसने खूब नहाया। इसके बाद, दस नलो को मिलाकर पानी की एक बहुत शक्तिशाली धार बनायी गयी, और उसे सीधे हाथी की आँखो पर लगा दिया गया।

यह चीज उसे पसन्द नही आयी। वह जोर से चिघाडा और फायरमैनो की तरफ इतने गुस्से से बढा कि वे घबडा गये। हौज नलो को उन्होन वही डाल दिया और भाग खडे हुए। पलक मारते ही हौज नला के टुकड टुकडे हो गये और फायर इजिन उलट गय।

इसके बाद से स्ट्रीम के खर्चे के बिल चढत ही गय। हाथी का क्रोध अब पूण रुप से जाग उठा था। उसके और जनता के बीच युद्ध घोषणा हो गयी थी और यह बताने मे उसने कोई कोर-कसर नही रखी कि जनता को यह युद्ध महँगा पडेगा। फायर ब्रिगेड की कई मोटरो को उठा कर उसन झील मे फेंक दिया। जगल क अफसर के लौज (मकान) को उसने नष्ट कर दिया। एक पुलिसमैन को पकडकर उसने एक पेड पर लुका दिया। इसके पहले तक वह सावधानी बरत रहा था, परन्तु अब उसन जो नुकसान करना शुरू कर दिया था उसकी कोई सीमा नही थी। फिर भी, इस विनाश काय मे भी, एक विचित्र प्रकार

की चतुराई के चिह्न मौजूद थे। अब भी औसत पागल हाथी की अपेक्षा उसमें नुकसान पहुँचाने की कहीं अधिक क्षमता थी।

पुलिस के प्रधान को फ्रीडेंसडौफ के जंगल की घटनाओं की रिपोर्ट ज्यों ही मिली त्यों ही उसने हुक्म जारी कर दिया कि पुलिस के बडे-बडे, राइफिलवाले दलों को फौरन बुलाकर जंगल भेज दिया जाय। वहाँ जाकर वे हाथी को चारों तरफ से घेर लें और मार दें। स्टौम की हालत बहुत खराब थी। दुबारा कभी इस तरह का हाथी पाने की आशा वह नहीं कर सकता था। मन ही मन उसने अपने को इस बात के लिए राजी कर लिया था कि हाथी की हरकतों के एवज में उसे भारी हरजाना भरना पड़ेगा। लेकिन, वह सोचता था कि ह्वाइटी ट्वाइटी ठीक हो जायगा तो मय सूद के वह सारा खर्चा वसूल कर लेगा। स्ट्रौम ने पुलिस के प्रधान से प्रार्थना की कि उसे मारने के हुक्म को मुल्तवी कर दिया जाय। उसे आशा थी कि दगई हाथी किसी न किसी प्रकार फिर ठीक हो जायगा।

पुलिस के प्रधान का उत्तर था "मैं तुम्हें केवल दस घंटे का समय दे सकता हूँ। घंटे भर में सारे जंगल को घेर लिया जायगा। जरूरत पड़ी तो पुलिस की मदद के लिये मैं सेना को भी बुला भेजूंगा।"

स्ट्रौम ने आपत्ति-कालीन एक मीटिंग बुलायी। सर्कस के लगभग सारे कर्मचारी तथा करतब दिखाने वाले लोग इसमें उपस्थित थे। जिंदा अजायबघर के डायरेक्टर और उनके सहायक भी मौजूद थे। मीटिंग के ८ घंटे बाद, जंगल में चारों तरफ, छिपे हुये गड्ढों और फन्दों का जाल बिछा दिया गया। इतनी चालाकी से लगाये गये फन्दों में किसी भी मामूली हाथी को आसानी से पकड़ा जा सकता था। परन्तु ह्वाइटी ट्वाइटी को नहीं। वह बाड़े के बाहर निकल गया, गड्ढों को छिपाने के लिए जो चीजें रखी गयी थीं उनको उसने तोड़कर

नष्ट कर दिया, उन तख्तो पर पैर रखने से वह साफ बच कर निकल गया जो पेडो की शाखाओ से बधे भारी लट्ठो से जुडे थे। उस तरह का एक भी लट्ठा अगर किसी हाथी के सिर पर गिर पडता तो वह वही बेहोश हो जाता और ढेर हो जाता।

पुलिस के प्रधान ने जो अवकाश दिया था वह खत्म हो रहा था। पुलिस के मजबूत दल घेरे को अधिकाधिक कडा करने जा रहे थे। सशस्त्र पुलिस उस चील के और पास आ गयी थी। पेडा के तनो के बीच हाथी का विशाल शरीर साफ-साफ दिखलायी दे रहा था। वह पानी को अपनी सूड मे भरता, सूड को सिर के ऊपर ले जाता, और फिर फव्वारे की एक फुहार की तरह पानी को अपनी पीठ पर डाल देता। वह इसी मे मस्त था।

हुक्म देते हुए अफसर ने धीरे से कहा, "तैयार!"

"गोली चलाओ!"

गोलियो की आवाज आयी और आस पास के पूरे जगल म गूज उठी। हाथी ने अपना सिर घुमाया। उसमे से खून की धारें निकल रही थी। फिर वह पुलिस की तरफ दौडा। पुलिस गोलिया चलाती रही। गोलिया की उसने उपेक्षा की और दौडता रहा। पुलिस वाले निशाना लगाने मे कच्चे नही थे, परन्तु हाथी की शरीर-रचना की उह जानकारी नहीं थी, इसलिए उनकी गोलिया उसके मस्तिष्क और हृदय मे नही लग रही थी। हाथी के यही सबसे कमजोर स्थल होते ह। दद और डर की वजह से जोर से चिघाडते हुए, हाथी ने अपनी सूँड आगे फैलायी, फिर जल्दी से उसे उसने वापिस मोड लिया। सूँड उसका अत्यत महत्वपूण अग है, उसके बिना हाथी जल्दी ही मर जाता है। इसलिए केवल अत्यन्त गम्भीर परिस्थितियो मे ही हाथी अपने बचाव के लिए, अथवा आक्रमण करने के लिए उसका उपयोग करता है। ह्वाइटी-ट्वाइटी न

अपने सिर को नीचा किया और अपने विशालकाय दांतो से दुश्मन पर भयंकर हमला बोल दिया। उसके प्रत्येक दांत का वजन लगभग १०० पाउंड था। उनके प्रहारों के सामने केवल सख्त अनुशासन के ही कारण पुलिसमैन ताबड़तोड़ गोली चलाते हुए अपनी जगहों पर जमे रहे।

इसके बावजूद, घेरे को तोड़कर हाथी बाहर निकल गया। रास्ते की सारी रुकावटों का उसने ध्वंस कर दिया और फिर अन्तर्धान हो गया।

उसका पीछा किया गया। परन्तु उसे पकड़ना तो दूर रहा, उसके पास तक पहुँचना भी आसान न था। पुलिस की टुकड़ियों को सड़क पर ही रहना पड़ता था परन्तु हाथी को तो कोई खास रास्ता चुनने की जरूरत नहीं थी। बिना कहीं रुके बागों-बगियाओं और जंगली इलाकों को पार करता हुआ वह आगे बढ़ गया।

४ वैगनर ने परिस्थिति सँभाली

स्ट्रौम इस बीच निराश-हताश अपने कमरे में चक्कर लगा रहा था। धीरे धीरे वह बुड़बुड़ाता जाता था, "मैं मिट गया! बिल्कुल बर्बाद हो गया। मेरी सारी सम्पत्ति हाथी के नुकसान का हरजाना चुकाने में ही चली जायगी। फिर ह्वाइटी ट्वाइटी को वे जान से मार देंगे। यह कितना अपूरणीय नुकसान होगा।

तभी एक नौकर आया और उसने तश्तरी पर रखा हुआ एक सन्देश स्ट्रौम को दिया।

"आप के लिए तार है," उसने कहा।

"इसके मानी सारा खेल खत्म हो गया!" मैनेजर ने सोचा। निस्सन्देह उसमें यही बताया गया होगा कि हाथी को उन्होंने मार दिया है। परन्तु नहीं, यह तो सोवियत संघ का तार है! मास्को से आया है!! आश्चर्य है, इन वहाँ से किसने भेजा होगा?"

"मैनेजर स्ट्रौम, बुश सर्कस, बर्लिन"

"अभी अभी हाथी के भागने की खबर पढ़ी। पुलिस से दरख्वास्त कीजिए की उसे मारने के हुक्म को फौरन वापिस ले ले। किसी नौकर से हाथी के पास निम्न सन्देश भिजवा दीजिए 'सेपियन्स, वैगनर हवाई जहाज से बर्लिन आ रहे हैं। बुश सर्कस वापिस चले जाओ।' अगर इस पर भी वह आपकी आज्ञा न माने तब उसे गोली मार दें—

—प्रोफेसर वैगनर।"

स्ट्रौम ने तार को दुबारा पढ़ा।

"मेरी समझ में कुछ नहीं आता! मालूम होता है कि प्रोफेसर वैगनर हाथी से परिचित हैं। उन्होंने उसके पुराने नाम 'सेपियन्स' का इस्तमाल किया है। लेकिन वैगनर को यह क्योंकर विश्वास है कि यह बताये जाने पर कि प्रोफेसर बर्लिन आ रहे हैं, हाथी वहाँ लौट आयेगा? फिर भी, तार से हाथी को बचा लेने की थोड़ी सम्भावना तो दिखलाई देती है।"

मनेजर ने फौरन काम शुरू कर दिया। काफी कठिनाई के बाद ही पुलिस के प्रधान को "फौजी कारवाइयाँ बन्द करो" के लिए वह राजी कर सका। जुन्न को हवाई जहाज से फौरन हाथी के पास भेज दिया गया।

जुन्न जब ह्वाइटी-ट्वाइटी के पास पहुँचा तो एकदम विराम-सन्धि के एक दूत के ढंग से उसने एक सफेद रूमाल निकालकर उसके सामने हिलाया।

फिर उसने यों शुरू किया, "महामान्य सेपियन्स! प्रोफेसर वैगनर ने आप को अभिनन्दन भेजा है। वे बर्लिन आ रहे हैं और आप से मिलने के इच्छुक हैं। मिलना बुश सर्कस में होगा। मैं आपको विश्वास दिलाता

हूँ कि लौटने पर आप का किसी तरह का नुकसान नही पहुँचाया जायगा।"

हाथी ने जुंग की बात को अत्यंत ध्यान से सुना, एक क्षण तक विचार किया, फिर अपनी सूँड से उस ऊपर उठाकर अपनी पीठ पर बठा लिया। इसके बाद आहिस्ता-आहिस्ता वह बर्लिन की ओर जाने वाली उत्तर की सडक पर चल पडा। इस भाँति जुंग ने देखा कि वह एक साथ दो-दो भूमिकाएँ अदा कर रहा था—वह एक बंधक भी था और उसका रक्षक भी। जब तक वह हाथी की पीठ पर बैठा था तब तक उस पर कोई गोली नही चला सकता था।

हाथी, निस्संदेह, पैदल चलता गया। परंतु प्रोफेसर वैगनर और उनका सहायक डेनीसीव हवाई जहाज से उडकर बर्लिन आये थे, इसलिए वे उससे पहले वहाँ पहुँच गये थे। वहा पहुंचते ही तुरंत वे स्ट्रौम से मिलने चल पडे। इस समय तक सकस मैनेजर के पास तार आ चुका था। उससे उसे सूचना मिल गयी थी कि प्रोफेसर वैगनर का नाम लेते ही ह्वाइटी-ट्वाइटी एकदम विनम्र और आज्ञाकारी बन गया था और अब वह बर्लिन के रास्ते में था।

वैगनर ने पूछा, "क्या आप मुझे यह बता सकते हैं कि यह हाथी आपको कैसे मिला था? क्या आप उसके इतिहास को जानते हैं?"

"मैंने उसे ताड के तेल और खजूरों के एक सौदागर से खरीदा था। उस सौदागर का नाम निकस था। वह मध्य अफ्रीका में, कागो में रहता है। यह जगह मठादी से बहुत दूर नही है। उसने बताया था कि एक दिन जब उसके बच्चे बगीचे में खेल रहे थे, तभी अचानक यह हाथी कहीं से वहाँ आ गया था। वह बच्चों को तरह-तरह के अद्भुत खेल दिखा रहा था। कभी वह अपने पैरों पर खडा होता, कभी नाचता, और कभी लकडियों से बाजीगरी के करतब दिखलाता। एक बार उसने अपने बडे

खडे दानों को जमीन में गाड दिया, आगे के अपने पैरों पर खडा हो गया और अत्यत मजाकिया ढग से पीछे के अपने पैरों को मटकाने लगा तथा अपनी दुम को नचाने लगा। हसते हसते निक्स के बच्चों के पेट में बल पड गये और वे घास पर लोटने लगे। हाथी को ह्वाइटी-ट्वाइटी कहने का विचार बच्चों ने ही दिया था। जैसा कि हर एक जानता है, अग्रेजी में ह्वाइटी-ट्वाइटी का मतलब 'खिलाडी, किल्लोलें करने वाला' होता है। कभी-कभी इस शब्द का इस्तेमाल आश्चर्य चिह्न के रूप में भी होता है, जैसे कि कोई कह रहा हो 'अच्छा, अच्छा!' धीरे धीरे हाथी इसी नाम का अभ्यस्त हो गया। फिर जब वह हमारे पास आया तो हमने उसे रख लिया। उसकी खरीद से सम्बन्धित दस्तावेजों को देखिए, ये है। वे सब एकदम ठीक हैं। उसकी खरीद के सम्बन्ध में कोई सवाल नहीं उठ सकता।"

"खरीद के सम्बध मे कोई सवाल उठाने का मेरा इरादा नहीं है," वैगनर ने कहा। "हाथी के शरीर पर क्या कोई विशेष चिह्न हैं ?"

"उसके सिर पर कुछ बडे-बडे दाग जैसे बने हुए हैं। मिस्टर निक्स का खयाल था कि ये दाग उन चोटों के हैं जो हाथी पकडते समय उसे लगी होगी। ये देसी लोग हाथियों को कभी कभी टा से पकडते हैं। दागों ने उसको कुरूप बना दिया है। उनका [illegible] पब्लिक को बुरा लग सकता है, इसलिए उसके सिर को [illegible] सिल्क मे मढे हुए एक टोपे से ढक देते हैं जिसमें चवर भी लग होते हैं।"

"तब तो बिला शक यह वही हाथी है।"

"आपका मतलब ?" स्ट्रोम ने पूछा।

"वह सेपियन्स है, वही हाथी जो मेरे पास से खो गया था। [illegible] बेल्जियम कांगों में एक वैज्ञानिक अभियान के समय मैंने [illegible] और उसे मैंने ही ट्रेनिंग दी थी। लेकिन एक रात वह [illegible]

यह गुप्त बातचीत स्ट्रौम को पसन्द नही आ रही थी।

धीरज खोते हुए उसने कहा, "अच्छा, तो फिर अब बताइये हाथी ने क्या तय किया ?"

"वह थोडे दिनो की छुट्टी मनाना चाहता है जिससे कि कुछ खास चीजें मुझे बतला सके। छुट्टी के बाद सर्कस मे लौट आने के लिए वह राजी है, शर्त बस एक है मिस्टर जुग अपनी बदसलूकी के लिए उससे माफी माँगें और वादा करें कि शारीरिक बल का फिर कभी उसके खिलाफ इस्तेमाल नही करेंगे। यह ठीक है कि हाथी के ऊपर ऐसे प्रहारो का कोई खास असर नही होता। परन्तु सिद्धान्तत ही वह किसी प्रकार का अपमान सहने के लिए तैयार नही है।"

झूठ मूठ का आश्चय दिखलाते हुए, जुग न पूछा, "आप कहते हं मैंने हाथी को मारा था ?"

वगनर ने जवाब दिया, "जी हा, झाडू की मूठ से। जुग, आपको बहाना करने की जरूरत नही है, हाथी झूठ नही बोलता। हाथी के प्रति आपको उसी तरह का विनम्र व्यवहार करना चाहिए जिस तरह का आप "

"गणतत्र के प्रेसीडेण्ट के साथ करेंगे ,

' किसी भी इसान क साथ जिसे अपनी प्रतिष्ठा का जरा भी भान है।"

दुष्टता स जुग ने कहा, "शायद वह कोई नवाब है ?"

स्ट्रौम ने डाँटते हुए कहा, "अब यह सब बहुत हो चुका। इस सब परेशानी के लिए तुम्ही जिम्मेदार हो, जुग और मैं इसका हरजाना तुम्ही से भरवाऊँगा। मिस्टर ह्वाइटी ट्वाइटी कब छुट्टी लेना चाहते हैं और वे कहाँ जायेंगे ?"

"उसके साथ पर्यटन के लिए हम लोग पैदल जायेंगे।" वगनर ने जवाब दिया। "बहुत मजा आयगा। उसकी चौड़ी पीठ पर डेनीसोव और मैं दोनों अच्छी तरह आ जायेंगे और वह हमें दक्षिण की ओर ले जायगा। हाथी ने स्विजरलैण्ड के चरागाहों में छुट्टी बिताने की इच्छा प्रकट की है।"

वगनर का सहायक डेनीसोव अभी केवल २३ वर्ष का ही था। परन्तु, अपनी युवावस्था के बावजूद, उसने कई जीव शास्त्रीय खोजें की थी। वैगनर ने अपनी प्रयोगशाला में काम करने के लिए उसे भर्ती करते हुए उससे कहा था, "तुम बहुत कुछ करोगे।" नवयुवक वैज्ञानिक उस समय एक अनिर्वचनीय आनन्द में डूब गया था। प्रोफेसर के पास भी अपने सहायक पर इस तरह प्रसन्न होने का कारण था। इसलिए जहाँ वह जाते थे, वहाँ डेनीसोव भी जाता था।

"डेनीसोव, ऐक्मि आइवनोविच यह नाम बहुत लम्बा है," वैगनर ने पहले ही दिन साथ काम करते समय उससे कहा था। "अगर हर बार जब मुझे तुमको बुलाना हो मुझे ऐक्मि आइवनोविच कहना पड़ेगा तो साल में ४८ मिनट सिर्फ इसी में खर्च करता रहूँगा और उन ४८ मिनटों में बहुत कुछ किया जा सकता है। इसलिए मैं किसी भी नाम का इस्तेमाल नहीं करूँगा जब तक कि मुझे तुमको पुकारना न हो, और जब तुम्हें पुकारना होगा तब मैं संक्षेप में और साफ-साफ सिर्फ 'डेन!' कह कर आवाज लगाऊँगा। और तुम भी मुझे 'वग' कह सकते हो।" समय बचाने के काम में वैगनर निपुण था।

सुबह तक सब कुछ तैयार हो गया। हाथी की पीठ पर वैगनर और डेनीसोव दोनों के लिए काफी स्थान था। केवल जरूरी चीजें ही उनके साथ रखी गयी थीं।

बहुत सुबह का वक्त होने पर भी स्ट्रोम उन्हें विदा करने आया था।

"हाथी को आप खिलायगे कैसे ?" उसन पूछा ।

वैगनर न उत्तर दिया, "कस्बा और गावो म हर जगह हम 'शो' दिखायेंगे । बदले म दशकगण उसे खाना देंगे । सेपियन्स अपने को खिलायगा और हमे भी । गुड बाई ।"

धीरे-धीरे हाथी सडक पर चलन लगा । किन्तु ज्यो ही शहर के अन्तिम मकान से वह आग निकला और और सामन के लम्ब राजमाग को उसने देखा त्यो ही, बिना किसी के कुछ कहे हुए ही, उसने अपनी रफ्तार तेज कर दी । वह ७ मील फी घट की रफ्तार से चलने लगा ।

"डेन, हाथी को सभालना अब तुम्हारा काम है । और जिससे कि तुम उसे अच्छी तरह समझ जाओ यह आवश्यक है कि तुम उसके साधारण जीवन की पिछली बातें जान लो । इस नोटबुक को लो । यह डायरी है जिस तुम्हारे पूवगामी पसकोव न तैयार किया था । उसने मेरे साथ कागो का दौरा किया था । पसकोव को एक मजेदार दुख-सुखपूर्ण अनुभव हुआ था । उसके बारे म मैं किसी और दिन तुमको बतलाऊँगा । इस बीच इस डायरी को पढ डालो ।'

वैगनर हाथी के सिर के पास खिसक गये । उन्होने एक छोटी सी मेज निकाली और अपन सामन रख ली और इसके बाद अपने दोनो हाथो स दो नोटबुको म एक ही साथ लिखना शुरु कर दिया । वैगनर हमेशा ही दो काम साथ-साथ करते थे ।

"अच्छा आओ, अब मुझे पूरी कहानी बताओ," हाथी को सम्बोधित करते हुए उन्होंने कहा । हाथी ने अपनी सूँड पीछे की ओर घुमाया जिससे वह वैगनर के कान के एकदम पास तक पहुँच गया । फिर थोडी थोडी देर म तेजी के साथ उसने गुस्से भरी आवाजें करना शुरू कर दिया ।

"हफ—फ—फफ—फ—फ—फफ

एक मोटी-सी, जिल्द-बँधी नोटबुक को खोलते हुए डेनीसोव ने सोचा, "यह तो मोर्स कोड (मोर्स की सांकेतिक भाषा) की तरह मालूम होती है।'

बायें हाथ से वैगनर वह लिखते जाते थे जो हाथी लिखा रहा था, और दाहिने हाथ से वे एक वैज्ञानिक ग्रन्थ तैयार-करते जाते थे। हाथी हचकोले खाता हुआ मजे मजे चला जा रहा था। उसकी वजह से पालने के झूलने की तरह की जो नियमित गति होती थी उससे उनके लिखने में कोई बाधा नहीं पडती थी। इस दर्म्यान डेनीसोव पैंसकोव की डायरी पढने में खो गया था। उसमें उसने जो पढा वह निम्न प्रकार था।

५ रिंग अब कभी आदमी नहीं बन सकेगा

२७ मार्च मुझे ऐसा लग रहा है जैसे कि मैं फास्ट* के अध्ययन कक्ष में पहुँच गया हूँ। प्रोफेसर वैगनर की प्रयोगशाला एक अदभुत जगह है। इसमें लगभग सब कुछ है। भौतिक शास्त्र, रसायन शास्त्र, जीव शास्त्र, विद्युत्-टेक्नालाजी, सूक्ष्म-जीवशास्त्र, शारीरकी, दैहिकी। स्पष्ट है कि ज्ञान का ऐसा कोई क्षेत्र नहीं है जिसमें वैगनर की, अथवा वैग की—जैसा कि वे अपने को कहते हैं—दिलचस्पी तथा पहुँच नहीं है। सूक्ष्म दर्शी यन्त्र, वर्णक्रम दर्शी यन्त्र, विद्युत-दर्शी यन्त्र, जिस भी "दर्शी यन्त्र" की कल्पना की जा सकती है वह यहाँ मौजूद है। उनसे उन सब चीजों को देखा जा सकता है जिन्हें खाली आँख नहीं देख सकती। सुनने में सहायता देने के हर सम्भव प्रकार के यन्त्र यहाँ मौजूद हैं कान के "सूक्ष्मदर्शी यन्त्र" जिनकी सहायता से वैगनर हजारों प्रकार की

* महान जर्मन कवि और नाटककार गेटे की इसी नाम की रचना का मुख्य पात्र।—सं०

नयी ध्वनियाँ सुन सकते ह । "समुद्र के सापो की पानी के नीचे की गति को, दूर की वल्लरी के वनस्पति जीवन को"—इन सब को व सुन सकते हं । काच, ताबा, एल्यूमीनियम, रबड, चीनी की मिट्टी, आवनूस, प्लेटीनम, सोना, इस्पात—ये सब चीजे भी विविध रुपो और सयोजना म यहाँ माजूद हैं। टाटीवार बर्तन (रिटोर्ट) फ्लास्कस (काच की खास बातलें), कुडलिया, परख-नलिया, लैम्प, गडारिया घुमावदार बतन, फ्यूज-स्विच, बटन क्या य सब चीजें वैगनर के मस्तिष्क की महान सश्लिष्टता का ही एक प्रतिबिम्ब प्रस्तुत करती ह ? फिर बगल क एक कमरे मे मोम की बनी चीजो की एक पूरी प्रदर्शनी है। उसम वैगनर मानवी ऊतको को "पैदा करत ह," मानव प्राणी से अलग कर ली गयी जिन्दा अँगुली को खाना खिलाते हैं खरगोश के कान, कुत्ते के हृदय, भेड के सिर और मनुष्य के मस्तिष्क का वे खाना खिलाते ह। जिन्दा अब भी सोचता हुआ मानवी मस्तिष्क ! उसकी देखभाल करन का उत्तरदायित्व मेरे ऊपर है। उसके साथ बातचीत करन के लिए प्रोफेसर मस्तिष्क क बाह्यतल पर एक अगुली रखकर दबा देते हैं। उसे किसी विशेष प्रकार के विलयन का भोजन दिया जाता है। इस बात को देखना कि वह विलयन हमेशा ताजा ही रह मेरा काम है। कुछ समय पहले वैगनर ने इस विलयन के तत्वो को बदल दिया था और मस्तिष्क का "तजी स खिलाना" शुरू कर दिया था। नतीजा आश्चर्यजनक हुआ। मस्तिष्क तेजी से बढने लगा। मैं यह ता नहीं कहूगा कि बढकर जब वह एक तरबूजे के बराबर हो गया तो देखने म वह कोई बहुत सुन्दर लगने लगा था !

२९ मार्च वग किसी न किसी सवाल क सबध म मस्तिष्क क साथ गम्भीर विचार-विमर्श कर रहे हैं।

३० मार्च आज शाम को वग न मुझस कहा "यह एक नवयुवक जमन वनानिक का मस्तिष्क है। उसका नाम रिंग था। उसकी

अवोसीनिया मे मृत्यु हो गयी थी, किन्तु जैसा कि तुम देखते हो, उसका मस्तिष्क अब भी जीवित है और उसमे सोचने की शक्ति है। परन्तु, हाल मे, मस्तिष्क कुछ कुछ उदास हो गया है। उसके लिए जो आँख मैंने बनायी थी वह उससे सतुष्ट नही है। सुनने के साथ साथ वह देखना भी चाहता है। उसको सारे वक्त चुप चाप पडे रहना अच्छा नही लगता, वह घूमना फिरना चाहता है। दुभाग्य से अपनी इच्छाएँ बताने मे उसने इतनी देर कर दी है। उसने अगर पहले ही उनका जिक्र कर दिया होता तो शायद मैंने उन्हे पूरा कर दिया होता। शारीरीय कक्ष (थियेटर) से उपयुक्त साइज (आकार) का एक मुर्दा मैने छाँट लिया होता और रिग के मस्तिष्क को उसके सिर मे लगा दिया होता। अगर वह आदमी केवल मस्तिष्क की किसी बीमारी से मरा होता तो उसके सिर मे एक नये, स्वस्थ मस्तिष्क को लगाकर मैंने उसे फिर से जिन्दा कर दिया होता। तब रिग के मस्तिष्क को एक नयी काया प्राप्त हो गयी होती और वह वास्तविक जीवन की पूणता का उपभोग कर सकता। परन्तु म ऊतक को बढ़ाने के प्रयोग की ही तरफ ध्यान केन्द्रित किये रहा और, अब, जैसा कि तुम देखते हो, रिंग का मस्तिष्क इतना बडा हो गया है कि उसे किसी मानव के कपाल मे नही लगाया जा सकता। रिंग अब आदमी कभी नही बन सकेगा।"

"क्या आप यह कह रहे है कि मानव प्राणी के अलावा भी रिंग कुछ बन जा सकता है?"

"हाँ, ठीक यही बात है। उदाहरणके लिए, वह एक हाथी बन सकता है। ठीक है, उसका मस्तिष्क अभी तक बढकर हाथी के मस्तिष्क के साइज के बराबर नही हुआ, पर कुछ समय मे वह उतना बडा हो जायगा। हमे सिर्फ इस बात पर ध्यान रखना होगा कि मस्तिष्क आवश्यक स्वरूप ही ग्रहण करे। जल्दी ही मैं किसी हाथी की मस्तिष्क पेटिका मंगा लूंगा। इस मस्तिष्क को तब मैं उसके अन्दर रख दूंगा और उसने उ... ...

तब तक बढाता रहूँगा जब तक कि वे उसकी पूरी गुहा को नहीं भर देंगे।"

"तब रिग को आप हाथी बना देना चाहते है ?"

"क्या नहीं ? रिग से मैंने उसके बारे मे बात भी कर ली है। देखन-सुनने, चलने फिरने और सास लेने की उसकी इतनी प्रबल इच्छा है कि वह सुअर या कुत्ता तक बन जाने के लिए राजी है । लेकिन हाथी तो एक उदात्त जानवर होता है, मजबूत, दीर्घजीवी । और वह, अर्थात, रिग का मस्तिष्क, १०० अथवा २०० वर्षो तक और जिन्दा रह सकता है। क्या यह कोई साधारण चीज है ? रिग ने अपनी स्वीकृति दे दी है।"

डेनीसोव ने डायरी पढते-पढते, वैगनर से एक सवाल पूछने के लिए सिर ऊपर उठाया।

"मै जानना चाहता हूँ कि क्या इसी हाथी म, जिस पर हम इस वक्त चढे हुए हैं, ?"

'हा, हा, इसका मस्तिष्क मानवी है," लिखना बन्द किये बिना ही वैगनर ने जवाब दिया। 'पढते जाओ और मुझे परेशान न करो।"

डेनीसोव न आगे कुछ और नही कहा और फिर पढने म जुट गया। यह बात उसे बहुत भयानक लग रही थी कि जिस हाथी पर वे चढे हुए जा रहे थे उसका मस्तिष्क मानवी था। वह उस एक अजीब कौतूहल की भावना से, एक प्रकार के अन्ध विश्वासी भय के साथ देखने लगा।

३१ मार्च हाथी की मस्तिष्क-पेटिका आज आ गयी। प्राफेसर ने उसके माथे को अनुदैर्घ्य रुख पर आरी से काट दिया है।

उन्होंने कहा कि, "यह जगह मस्तिष्क के अन्दर रखने के लिए है। इसके अलावा, अगर कभी मस्तिष्क को इस मस्तिष्क पेटिका से हम किसी दूसरी मस्तिष्क पेटिका म रखना चाहें तो उसको इसम से निकाल भी लिया जा सकेगा।"

कपाल के अदर के भाग की मैंने जाँच-पड़ताल की। यह देखकर मैं ताज्जुब मे आ गया कि जिस जगह को भरना था वह अपेक्षाकृत कितनी छोटी थी ! किन्तु, बाहर से देखने पर हाथी कही "अधिक बुद्धिमान" प्रतीत होता है।

वैग ने आगे बताया, "जमीन पर विचरण करने वाले समस्त जानवरो म हाथी की ललाटकीय शिराए सबसे अधिक उच्चरूप से विकसित होती है, समझे ? उसके कपाल के पूरे ऊपरी भाग म हवा के कक्ष होते है। साधारण लोग आम तौर से इन्हे ही मस्तिष्क-पेटिका मान बैठते है। मस्तिष्क स्वय अपेक्षाकृत छोटा होता है और, हाथी मे बहुत नीचे, यहाँ पर, छिपा रहता है। वह कान के प्रदेश के आस पास होता है। यही सबब है कि उसके सिर पर सामने मारी जाने वाली गोलियाँ आम तौर से निशाने पर नही लगती। गोलियाँ अस्थियो के कुछ विभाजनो के अन्दर घुस जाती हैं, पर मस्तिष्क को वे नही नष्ट कर पाती।"

हम दोनो ने मिलकर मस्तिष्क-पेटिका म कई छेद बनाये जिससे कि मस्तिष्क के पास पोषक विलयन पहुँचाने के लिए उनके अन्दर से नलियाँ लगायी जा सकें। इसके बाद, सावधानी से, रिगके मस्तिष्क को मस्तिष्क-पेटिका के अर्द्ध भाग मे हमने बैठा दिया। उसके लिये जो गुहा बनायी गयी थी वह उस मस्तिष्क मे भरी कदापि नही थी।

परन्तु, कपाल के दूसरे अर्द्ध-भाग म उसे लगाते हुए, वैग न मुझे विश्वास दिलाया, "चिन्ता न करो। यात्रा के दौरान म यह मस्तिष्क बढ जायगा और गुहा को भर देगा।"

सच कहूँ तो वैग के प्रयोग की सफलता मे मुझे बहुत कम विश्वास है, यद्यपि उनके बहुसख्यक आविष्कारो से मैं अच्छी तरह परिचित हूँ। पर यह तो बहुत ही कठिन काम है। जबदस्त अडचनो को पार करना होगा। पहले तो आवश्यक है कि हम कही से एक जिन्दा हाथी लायें।

अफ्रीका अथवा भारत से उसे मगाने म बहुत खर्चा होगा। फिर यह भी सम्भव है, कि वहा मे जो हाथी आये वह किसी न किसी कारण इस काम के उपयुक्त न निकले। इसी वजह से वैग ने अब यह फैसला किया है कि रिंग के मस्तिष्क को लेकर वे अफ्रीका मे कागो जायेंगे। पहले भी वे वहाँ हो आये है। वहाँ पर वे एक हाथी पकडेंगे और मस्तिष्क को उसके सिर मे लगाने के काम को वे वही मौके पर ही सम्पन्न करगे। आदमी के मस्तिष्क को हाथी के सिर म लगाना। कहना बहुत आसान है—करना नही। यह दस्ताने के किसी जोडे को एक जेब स दूसरी जेब मे रख देन जैसा काम नही है। तन्त्रिकाओ के तमाम छोरा को, शिराओ और धमनिया को, अलग-अलग करना होगा और फिर जोडना होगा। जानवर की शरीर रचना मनुष्य के शरीर की रचना जैसी हा सकती है, फिर भी दोना के बीच भारी अन्तर होते ह। इन दो भिन्न भिन्न तत्रा को जोड कर एक कसे वग बना सकगे ? और फिर यह सारी जटिल काट छाट की कारवाई एक जीवित हाथी के ऊपर की जानी है

६ बन्दरो की फुटबाल!

२७ जून कई दिना की घटनाओ का एक ही बार म आज लिख डालना होगा। यात्रा म अनक अनुभव हुए थे और व सब सुखकर भी नही थे। जहाज म ही, और खास तौर से उस मोची जाने वाली नाव मे, मच्छरा न हमारे ऊपर धावा बोलना शुरू कर दिया था। यह ठीक है कि जब हम नदी के बीचो बीच रहते थे तब वे कम आते थ। नदी एक झील के समान चौडी थी। परन्तु तट के समीप पहुँचते ही हम मच्छरा के घन बादला स घिर जाते थे। नहाते समय काली मक्खियाँ हमारा खून चूमती था। तट पर उतरने के बाद जब हमने पैदल चलना प्रारम्भ

कर दिया तो नये दुश्मन पैदा हो गये छोटी छोटी चीटियाँ और बालू के पिस्सू। प्रत्येक रात को हम अपने पैरों की गौर से जाच करनी पडती थी और पिस्सुओ को उनसे निकाल कर फेंकना पडता था। साप, कनखजूर, मधु-मक्खिया और ततैया सब मिलकर हमे सताती थीं।

उस घने जगल मे घुसना भी आसान काय न था, किन्तु खुले मे चलना उससे मुश्किल से ही कम कठिन था। वहाँ तरह-तरह की घासें १२ फुट ऊँची खडी थीं। उनके तने मोटे थे। उनके बीच से चलना दो हरी हरी दीवारो के बीच मे चलने जैसा था। अपने इद गिद हम कुछ नही देख सकते थे। भयानक दशा थी। घास के पैने अकुर हमारे चेहरा और हाथो को छील छील डालते थे। जब हम घास को नीचे दबाने की कोशिश करते तो वह उलझ जाती और हमारे पैरो म फँस जाती। वर्षा होती तो पानी पत्तियो के ऊपर इकट्ठा हो जाता और फिर हमारे ऊपर इस तरह गिरता जैसे कि कोई बाल्टियां उँडेल रहा हो। जगलो और स्टपी के घास के मैदानो की सकरी पगडण्डियो पर से हम इकहरी पक्ति मे चलना पडता था। वहाँ पर पगडडिया ही आवागमन का एकमात्र मार्ग थीं। हम २० थे—इनम से १८ हमारा सामान ले चलने वाले और पथ प्रदर्शक थे। वे वहा के एक अफ्रीकी कबीले के लोग थे।

आखिरकार, अपने निर्दिष्ट लक्ष्य पर हम पहुँच गये। तुम्बा झील के किनारे हमने एक शिविर तैयार किया। हमारे गाइड (पथ प्रदर्शक) इस समय विश्राम कर रहे हैं। वास्तव म, वे मछलियाँ मारने म जुटे हुए हैं। वहाँ से उनको बुलाना, जिससे कि यहाँ ठीक से जमने मे वे हमारी मदद कर सकें, आसान नहीं है। हमारे पास दो बडे तम्बू हैं। पडाव के लिए जो स्थान चुना गया है वह अच्छा है। यह एक सूखी पहाडी की बगल मे है। घास यहाँ ऊँची नहीं है। अपने चारो तरफ दूर-दूर तक हम नजर डाल सकते हैं। रिंग का

मस्तिष्क याना मे एक दम ठीक रहा है और इस वक्त भी वह खूब मजे मे है। ध्वनियो, रगो, गधो तथा अन्य सम्वेदनाओ की दुनिया म फिर स पहुँच जाने के लिय वह अधीरता से प्रतीक्षा कर रहा है। मैं उसे यह कहकर सात्वना दे रह हू कि उसे अब और अधिक नही प्रतीक्षा करनी पडेगी। वे किन्ही रहस्यपूण चीजो की तैयारी मे जुट हुए ह।

२९ जून हम लोगो के चारो तरफ जबदस्त हलचल है। देशिया न हमारे पडाव के बिलकुल पास ही शेर के आन के कुछ ताज़े निशान देखे ह। मैंने राइफिलो का बक्सा खोल डाला है और हर देशी का, जो कहता है कि वह उसे चला सकता है, एक बदूक द दी है। खाना खाने क बाद हमने बदूक चलान की आजमायश की सारा काण्ड अत्यत वीभत्स था। देशी लोग बदूक के कुदे को अपने पेट या घुटन से दबाते ह और बदूक के चलने पर वे जोर से उल्टे गिरते ह और गोलिया निशाने के साथ १८० का कोण बनाती हुइ सनसन करती निकल जाती हैं। इस पर भी उनकी खुशी का कोई ठिकाना नही रहता। उनका शोर गुल कल्पनातीत है। मुझे लगता है कि उनकी चीख पुकार की वजह से वाणो बेसिन (द्रोणी) का हर हिंस्र पशु यही दौड आयगा।

३० जून पिछले दिन शेर हमारे पडाव के बिलकुल पास तक आ गया था। वह अपने पीछे ठास सबूत छोड गया था एक जगली सुअर को फाडकर उसने उसके टुकडे-टुकडे कर डाले थे और लगभग पूरे क पूरे को गडप गया था। सुअर के कपाल का एक नारियल की तरह ताड दिया गया था। उसकी पसलियो को कुचल कर उनके परखचे बना दिये गय थे। एस ही किसी हड्डी-तोडक के मुह म पहुँच जान का विचार मुझे खास अच्छा नही लगता।

दशिया क औसान गुम है। ज्यो ही रात होती है त्यो ही वे सिकुडकर हमार तम्बुओ के पास जमा हो जाते है, आग जला लेते है, और सारी रात लपटो को तज करत रहते ह। उम भयकर जानवर

से आदिम मानव को कितना डर लगता रहा होगा, यह मैं अब समझने लगा हूँ। शेर जब गजता है—और मैं उसको गजते हुए कई बार सुन चुका हूँ—तो मुझे कुछ हो जाता है। सुदूर के पूवजो का भय मेरे खून मे जाग उठता है और मेरे हृदय की गति रुकने लगती है। मुझे लगता है कि मैं भागना नही चाहता, बल्कि यो ही बैठा रहना चाहता हूँ, अथवा छछूदर की तरह जमीन मे बिल बनाकर घुस जाना चाहता हूँ। परतु मालूम होता है कि बैंग को शेर का गजना सुनाई ही नही देता। वह अब भी अपन तम्बू म कुछ करते हुए बैठे है। आज सुबह नाश्ते के बाद वे बाहर निकल कर मेरे पास आये थे।

पास आकर बोले, "कल सुबह मैं जगल के अदर जा रहा हूँ। देशी लोग बताते है कि झील तक जाने वाला हाथियो का पुराना रास्ता वहाँ है। हाथी जहाँ पानी पीते हैं वह जगह पडाव से दूर नही है। लेकिन अपन चरागाहो को वे जल्दी-जल्दी बदल देते है। जगल म जो रास्ता उन्होने बनाया था वह फिर पेड पौदो से ढक गया है। इससे मालूम होता है कि वे कही और दूर चले गये हैं। हम उन्हे ढूढ निकालना होगा।"

"यह तो आप अवश्य ही समझते होंगे कि एक शेर हमारे पास तक मिलने आया था। इसलिए राइफिल लिये बगैर उधर न जाइये,' उन्हे चेतावनी देते हुए मैंने कहा।

वे बोले, "जगली जानवरो से मैं नही डरता। उन्हे ठीक करना मैं जानता हूँ।" उन्होने अपनी मुस्कराहट छिपाने की कोशिश की तो उनकी घनी मूँछ हिल उठी।

"तब अपने साथ आप राइफिल नही ले जायेंगे ?"

बैंग ने सिर्फ अपना सिर हिला दिया।

२ जूलाई इस बीच कुछ विचित्र चीजे हुई है। रात मे शेर फिर गरजा था। मेरी आँतें जैसे मुह को आ गयी थी, हृदय की गति बन्द होने लगी थी—मैं इतना डर गया था। अगले दिन सुबह अपने तम्बू के बाहर मैं हाथ मुह धो रहा था तभी दूसरे तम्बू से वैग बाहर आये। वे सफेद फ्लालेन का सूट पहने हुए थे, कार्क का टोप लगाये थे और मजबूत मोटे तल्ले के जूते डाटे हुए थे वे यात्रा के लिए बिलकुल तयार थे। पर न तो सामान का थैला वे लिये हुए थे, न राइफिल। मैंने 'गुड मार्निंग' कहा। सिर हिलाकर उन्होंने जवाब दिया और पास आ गये। मुझे लगा जैसे वे कुछ चौकन्ने होकर चल रहे थे। धीरे धीरे उनके कदम अधिक दृढ हो गये और थोडी ही देर मे वे अपनी हमेशा की स्थिर और तेज चाल से चलने लगे। फिर पहाडी से नीचे की ओर जाने वाले ढलुए रास्ते पर वे बढ गये और जब वह वास्तव मे बहुत ढलावदार हो गया तो उन्होंने अपने हाथ ऊपर उठा लिये। ठीक उसी समय कोई एक ऐसी विचित्र चीज हुई कि देसी लोग और मैं आश्चर्य से एकदम चौंक पडे।

सबसे पहले तो उनके फैले हुए शरीर ने हवा मे एक चतुर्भुजी मल्लाकार की तरह धीरे धीरे चक्कर खाना शुरू कर दिया। वह इसी तरह से चक्कर खाता रहा, उसके घूमने की गति लगातार तेज होती गयी। एक क्षण वे क्षितिज स्थित मे खडे दिखलाई पडते, तो दूसरे ही क्षण वे उल्टे नजर आते, और उनके पैर ऊपर हवा मे होते। इसी तरह निरन्तर वे चक्कर लगाते रहे। उनके पैरो की जगह सिर आगे सिर की जगह पैर घूम घूमकर आते रहे। फिर उनके चक्कर लगाने की गति इतनी तेज हो गयी कि सिर और पैर मिलकर एक धूमिल चक्र बन गये और उनका धड एक धुधले नाभिक की तरह दिखलाई पडने लगा। यह क्रम तब तक इसी तरह चलता रहा जब तक कि वैग पहाडी की तलहटी पर नहीं पहुच गये। वहाँ पर कुछ गजो तक समतल भूमि

पर कुलाचें मारने के बाद वे सीधे खड़े हो गये और अपनी हास्यास्पद गति से जंगल की तरफ चले गये।

किसी गूढ़ रहस्य की भावना से भरकर मैं एकदम व्यग्र हो उठा और हमारी अफीकी लोग मुझसे भी अधिक उद्विग्न हो उठे। वे सिर्फ आश्चर्य में ही नहीं पड़ गये थे, वे भयभीत हो उठे थे। जो कुछ उन्होंने देखा था वह उन्हें अलौकिक मालूम होता था। मुझे ये मुर्गाने उन्हीं पहेलियों जैसी मालूम हो रही थी जो वैंग बराबर मेरे सामने प्रस्तुत करते रहते थे। पहेलियाँ तो ठीक है, पर शेर का क्या किया जाय? निश्चय ही वैंग इस बार जरूरत से ज्यादा आत्म विश्वास दिखा रहे हैं। मैं जानता हूँ कि कुत्ते अलौकिक चीजों से डरते हैं। किसी हड्डी में कोई डोरी अथवा घोड़े का बाल बांध कर उसे कुत्ते के सामने फेंक दीजिए और फिर देखिए। जब कुत्ता उसे खाने के लिए आगे बढ़े तो डोरी को आहिस्ता से खींच दीजिए। हड्डी जब जमीन पर चलती मालूम होती है और कुत्ते को लगता है कि यह उसके पास से भाग रही है, तो वह खुद दुम दबाकर उसके पास से भाग खड़ा होता है, क्योंकि वह उसे "जिन्दा हड्डी" समझने लगता है। परन्तु वैंग को हवा में कलाबाजियाँ करते हुए देखकर क्या शेर भी इसी तरह की चीता करेगा? सवाल तो यही है। मुझे लगा कि वैंग को अरक्षित नहीं छोड़ना चाहिए।

मैंने एक राइफल उठाया और चार कुछ अधिक हिम्मत वाले और बुद्धिमान देशियों को साथ लेकर उनके पीछे चल दिया। वे जंगल में हाथियों के द्वारा बनाये गये काफी चौड़े रास्ते पर तेजी से चले जा रहे थे। उन्हें हमारी मौजूदगी की खबर नहीं थी। उस मार्ग से हजारों जानवर गुजरे थे। केवल एक दो जगह हमें गड्ढों में छोटे गिरे हुए तने अथवा उनकी सूखी टहनियाँ मिलीं। परन्तु इन अड़चनों के सामने जब वैंग आये, तो वे हिचकिचाए, फिर अपने पैर को कुछ आवश्यकता से अधिक ऊँचा उठाया और एक विचित्र गति के साथ

लाघ गये । एक क्षण उनका शरीर आगे की ओर सीधा झुका हुआ—मुडा हुआ नहीं—नजर आया, तो दूसरे ही क्षण वे फिर सीधे हो गये और अपने रास्त पर चलने लगे । हम थोडे फासले पर उनके पीछे पीछे चलते रह । आखिरकार आगे की ओर एक रोशन हिस्सा दिखलाई दिया । रास्ता और चौडा हो गया और उस पर चलते हुए जगल मे साफ करके तैयार किये गये एक स्थान पर हम पहुँच गये ।

वैग पहले ही जगल की छाया को छोड चुके थे ओर सूय की किरणो स प्रकाशित उस खुले स्थान के बीच से आगे बढते जा रहे थ । तभी मुझ एक विचित्र, धीरे से गजती अथवा गडगडाती हुई सी आवाज सुनाई दी । यह आवाज गुस्सा हो उठे, या डर गय किसी बडे जानवर की ही हो सकती थी, परन्तु वह शेर की गजना से नही मिलती थी । देशी अफ्रीकिया ने धीरे म उस जानवर का नाम लिया, परन्तु मुकामी नामो से मैं परिचित नहीं था । अपन साथिया के बर्ताव तथा उनके चेहरा के भावा को देखकर मुझे लगा कि इस गुरात हुए जानवर से भी वे उतना ही डरते थ जितना कि शेर से । लेकिन वे मेरे पीछे पीछे चलते रह । खतरा देखकर मन अपनी चाल और तज कर दी । जब मैं साफ किय गये स्थान पर पहुँचा तो मेरी आँखा को एक अजीब ही तस्वीर दिखलाई दी ।

जगल से लगभग १० गज के फासले पर, मेरी दाहिनी तरफ एक १० वष के बच्चे के आकार का एक गोरिल्ला बच्चा जमीन पर बैठा था । उसके पास ही एक स्याह भूरी-सी मादा गोरिल्ला और एक विशाल नर उठा हुआ था । वैग काफी तेजी से उस साफ किये गये समतल स्थान के बीच से आग बढत जा रहे थे । उन पर उनकी नजर पडने से पहले ही वे गोरिल्ला के बच्चे और उसके मा-बाप के बीच जा पहुँचे । वैग को देखते ही नर गोरिल्ला न वही भारी गुर्राहट भरी आवाज की जो पहले भी मैं जगल म सुन चुका था । अब तक

वैग ने भी उन पशुओं को देख लिया था। नर गोरिल्ला की तरफ सीधे देखते हुए वे अपनी सामान्य चाल से आगे बढ़ते गये। तब छोटे गोरिल्ला ने उनको देखा और तेजी से भागकर, चीखता-हूकता हुआ, वह पास के एक छोटे पेड़ पर चढ़ गया।

नर ने चेतावनी देते हुए फिर एक आवाज़ की। आम तौर से गोरिल्ले आदमी से दूर ही रहने की कोशिश करते हैं। परन्तु लड़ने के लिये अगर वे मजबूर हो जाते हैं तो फिर वे बीहड़ साहस तथा असाधारण भीषणता से लड़ते हैं। नर गोरिल्ला ने देखा कि आदमी पीछे नहीं हट रहा है। अपने बच्चे की चिन्ता करता हुआ वह अचानक उठ खड़ा हुआ और जैसे हमला करने के लिए तैयार हो गया। मनुष्य की तरह लगने वाले इस बदशक्ल जानवर से भी भयङ्कर कोई दूसरा प्राणी हो सकता है, इसमें मुझे सन्देह है। एक वानर की हैसियत से यह नर पशु बहुत बड़ा था।

उसका कद मझोले कद के आदमी के बराबर था, लेकिन उसका सीना आदमी के सीने से दोगुना अधिक चौड़ा लगता था। उसका धड़ आनुपातिक रूप से बहुत विशाल था, उसकी लम्बी भुजाएँ लट्ठों की तरह मोटी थीं। उसके हाथ और पैर अत्यधिक लम्बे थे। आगे की ओर खूब बढ़ी हुई भौंहों के नीचे उसकी आँखें खूँखार लगती थीं और खुले हुए मुंह के अन्दर से उसके भारी भारी दाँत चमक रहे थे।

तभी वह पशु बालों से ढँकी अपनी मुट्ठियों से अपनी छाती को जोर-जोर से पीटने लगा और उससे एक खाली पीपे की तरह की खोखली विकराल आवाज निकलने लगी। फिर उसने जोर से हुंकारी भरी और रिरियाया, अपने दाहिने हाथ की मदद से जमीन पर वह और आगे की तरफ बढ़ा तथा वैगनर की तरफ लपका।

मैं तो इतना डर गया कि अपने कन्धे से राइफिल तक न उतार

मरा। कुछ ही सैकिण्डों में उस भीषण गोरिल्ले ने वैंग के पास तक का फसला तय कर लिया और तब फिर एक अत्यन्त विचित्र चीज हुई!

वानर किसी अदृश्य रुकावट से जोरों से टकरा गया। वह खूब जोर से चिल्लाया और जमीन पर गिर पडा। वैंग का गिरना तो दूर रहा, इसके विपरीत, अपनी भुजाओं को फैलाकर, अपने शरीर को अपने पूरे कद की ऊँचाई तक ऊपर उठाकर, एक चतुर्भुजी कलाकार की तरह उन्होंने हवा में कलाबाजी खायी और फिर आगे बढ़ने लगे। परन्तु वानर की किस्मत खराब थी। इसी से उसकी क्रोधाग्नि और भी प्रज्वलित हो उठी। लड़खड़ा कर वह फिर उठ खड़ा हुआ और जोरों से छलांग मार कर उसने वैंग पर वार करने की कोशिश की। इस बार वह बिल्कुल ही उलट गया और जमीन पर औंधा जा पड़ा। अब क्रोध के मारे वह आप से बिल्कुल बाहर हो चुका था। वह फिर जोर से चिंघाड़ा और रिरियाया। उसके मुह पर फेन आ गया। अपनी अत्यन्त लम्बी भुजाओं में वैंग को पकड़ लेने की कोशिश में वह फिर जोर से उनकी तरफ झपटा। परन्तु वैंग और गोरिल्ला के बीच अब भी कोई अदृश्य परन्तु अत्यन्त मजबूत रुकावट मौजूद थी। पशु की भुजाओं की स्थिति को देखते हुए मुझे लगता था कि वह वस्तु किसी प्रकार की कोई गेंद थी—जो अदृश्य थी, कांच की तरह पारदर्शी थी, उसमें कोई खास रोशनी नहीं थी और वह इस्पात की तरह मजबूत थी। तो क्या यही वैंग का नवीनतम् आविष्कार था!

अब मुझे पूरा भरोसा हो गया कि वैंग के लिये कोई खतरा नहीं है। इसलिए उस असाधारण तमाशे को देखने के लिए मैं और भी दिलचस्पी के साथ वहीं बैठ गया। खेल ज्यों-ज्यों अधिक दिलचस्प होता गया त्यों-त्यों साथ के अफ्रीकियों की खुशी बढ़ती गयी। आनन्द विभोर होकर वे नाचने लगे। खुशी के मारे अपनी टोपियाँ तक उन्होंने फेंक दीं।

थाडी देर तक मादा गोरिल्ला भी अपने क्रुद्ध जीवन-साथी को स्पष्टतया उतनी ही दिलचस्पी से दखती रही। फिर उसने भी एक भीषण हमलावर हुकार भरी और उसकी मदद के लिए दौड पडी। इसके बाद खेल न दूसरा ही रूप ले लिया। उत्तेजित होकर गोरिल्ले उस अदृश्य गेंद से बार-बार अपने पूरे बल के साथ टकराते थे और एक फुटबाल की तरह वह गेंद एक जगह से उछलकर दूसरी जगह पहुच जाती थी! फुटबाल के उत्तेजित खिलाडियो की तरह गोरिल्ला दम्पति जब उस गेंद को अपनी पूरी ताकत से ठोकरें मार रहा था, तब उसके अन्दर बठे रहना कोई मजाक की चीज नही रही होगी!

बैग एक सूरजमुखी चर्खी की तरह बराबर चक्कर काट रहे थे। उनकी गति बराबर तेज होती जा रही थी। मालूम होता था कि उनका शरीर सीधा खडा है। मेरी समझ म अब आया कि अपने शरीर को इस तरह अकडा हुआ-सा वे क्या रखते थे और अपनी भुजाओ को क्या फैलाये रखते थे। उनको किसी तरह की चोट न लगे—इसके लिए भुजाएँ और टाँगें दोनो गेंद की अन्दर की भित्ति के ऊपर मजबूती स टिकी हुई थी। गेंद की भित्ति असाधारण तौर म मजबूत रही होगी, क्योंकि गोरिल्ले जब साथ-साथ दो तरफ से उस पर प्रहार करते थे, और उसे धक्का देकर ऊपर की तरफ फेंक देते थ, तो वह जमीन स ३ या ४ गज ऊपर तक उछल जाती थी और तिस पर भी जमीन पर गिरने पर वह टूटती नहीं थी। परन्तु बग थक्न लग गये थ। मास पशियो को खीच हुए बहुत देर तक हाथ-पैर फैलाये रखना सम्भव नही होता। यकायक मैंने देखा कि बैग खुद कर दोहरे हो गय और गेंद के तले पर गिर पडे।

अब स्थिति गम्भीर हो गई थी। अब हम केवल दर्शक नही बन रह सकते थे। देनिया को मैंने आवाज दी। उससे मैंने कहा कि अपनी राइफिलें उठा लो। फिर साथ-साथ हम गेंद की तरफ बढ़ने लगे।

दरिया था आगाह करते हुए मैंने कहा कि जब तक मैं आर्डर न दूं तब तक वे गोली न चलाएँ। मुझे डर था कि गलती से कहीं वे बग को ही न घायल कर दें। मुझे ठीक से पता नहीं था कि वह अदृश्य गेंद गोली प्रूफ थी या नहीं। इसके अतिरिक्त, गेंद में किसी न किसी तरह का छिद्र भी जरूर होगा, वर्ना तो बग उसके अन्दर सांस ही न ले सकते। उस छिद्र के अन्दर से भी तो गोली घुस जा सकती है।

अपनी ओर ध्यान आकर्षित करने के लिए हम लोगों ने खूब शोर गुल किया और चीखे चिल्लाए। हमारी कोशिश सफल हुई। सबसे पहले हमारी तरफ नर गोरिल्ले ने सिर घुमाया। डरवाते हुए वह जोरों से गुर्राया। इसका हमारे ऊपर कोई स्पष्ट असर पड़ता न देख-कर, वह हमारी तरफ बढ़ने लगा। ज्यों ही गेंद से वह कुछ दूर हटा, त्यों ही मैंने गोली चला दी। गोली गोरिल्ले की छाती में लगी। उसके स्याह भूरे बालों के ऊपर बहता खून को मैंने देखा। जानवर ने जोर से भौंकने जैसी आवाज की और अपने एक हाथ को घाव पर लगाया परन्तु वह वहीं खड़ा रहा। फिर तेजी से वह मेरी ओर लपका। मैंने दुबारा फायर किया। इस बार उसके कंधे में चोट लगी। इस समय तक वह मेरे नजदीक आ गया था और अचानक हाथ बढ़ाकर उसने मेरी राइफिल की नली पकड़ने की कोशिश की। उसने हाथ ने असाधारण शक्ति से राइफिल को मेरे हाथ से झिटक कर छीन लिया। उसने उसकी नली को मेरी आँखों के सामने मोड़ा और तोड़ लिया। जैसे कि इतने से उसे संतोष नहीं हुआ था, इसलिए गोरिल्ला ने उसे काट लिया और उसे ऐसे चबाने की कोशिश की जैसे वह कोई हड्डी हो। फिर वह लड़खड़ाया और जमीन पर गिर पड़ा। उसके हाथ-पैर ऐंठ ऐंठ कर अकड़ने लगे—यद्यपि टूटे हुए राइफिल को अब भी वह पकड़े हुए था। मादा गोरिल्ला भागकर छिपने चली गयी।

"क्या तुम्हें ज्यादा चोट लग गयी है ?" वैग ने पूछा। उनकी आवाज़ कही दूर से आती मालूम होती थी। या क्या सिर्फ चूंकि मेरे पास से—मुझे धक्का देता हुआ—एक गोरिल्ला निकल गया था, इसलिए मैं बहरा हो गया हूँ ?

मैंने नज़र उठाई और देखा कि वैग मेरे सामने खड़े हुए हैं। अब चूंकि वे नजदीक थे इसलिए मैंने देखा कि बादल जैसी एक धूमिल झिल्ली उनके शरीर के चारों तरफ लिपटी हुई है। और भी अच्छी तरह से देखने पर मैंने महसूस किया कि जिस चीज को मैं देख रहा था वह झिल्ली नही थी, क्योंकि झिल्ली तो बिल्कुल पारदर्शी थी। इसके विपरीत, मैंने देखा कि गेंद के तल पर गोरिल्ला के हाथो की छापो के निशान तथा धूल के धब्बे लगे हुए थे।

अदृश्य गेंद पर लगे धब्बो की ओर मुझे घूरते हुए वैग ने देखा होगा।

मुस्कराते हुए उन्होने बताया, "जब जमीन सीलन भरी अथवा कीचडदार होती है तो गेंद पर उसके धब्बे लग जाते हैं और वह दिखलायी देने लगती है, परन्तु बालू और सूखी पत्तियाँ उस पर नही चिपकती। अगर अब तुम्हारी तबियत ठीक हो तो उठो, वापिस चलें। अपने आविष्कार के बारे मे रास्ते मे मैं तुम्हे बताऊँगा।

मै उठकर खडा हो गया और वैगनर को ध्यान से देखने लगा। थोडी चोट उनके भी लगी थी। उनके चेहरे पर खरोंचें पड गयी थी।

"यह कुछ नही हैं, केवल एक खरोंच है। यह सब मेरे लिए एक सबक है। मालूम होता है कि इस तरह की अभेद्य गेंद मे बैठ कर भी आदमी अफ्रीकी जगल की झाडियो मे नही घुस सकता। साथ मे एक राइफिल रखना भी उसके लिए जरूरी है। कौन सोच सकता था कि कभी मैं एक फुटबाल के अन्दर बन्द हो जाऊँगा!'

"तो आप को भी फुटबाल का खयाल आया था ?"

"अवश्य। अब सुनो। तुमने क्या कभी अमरीकिया द्वारा तैयार की गयी उस धातु के बारे म पढा है जा कांच की तरह पारदर्शी होती है ? अथवा उस काच के बारे म जो धातु की तरह मजबूत होता है ? कहा जाता है कि उसका इस्तेमाल सामरिक हवाई जहाज बनाने के लिए किया जाता है। उसके लाभ स्पष्ट है। दुश्मन की नजर मे वह लगभग अदृश्य होता है। मैं लगभग कहता हूँ, क्याकि जहाज का पायलट (चालक) भी उतना ही दृश्य होता होगा जितना अपनी गद के अन्दर स म दृश्य हाता हूँ। हा तो, बहुत दिना तक मैं इस विचार को मन म सता रहा था कि एक एसा 'किला' बनाया जाय जिसके अन्दर से मैं सब कुछ दख सकू। मै पशु जीवन को देख सकू। परन्तु जगली जानवर यदि मुझे दख भी लें और मुझ पर हमला करें ता यह 'किला मेरी रक्षा कर ले। मैंने कई प्रयाग किय और अन्त म अपना लक्ष्य प्राप्त कर लिया। यह गेंद विशष रबड की बनी हुई है। अहा ! इस अत्यन्त उपयोगी वस्तु की कितनी चीज तयार की जा सकती ह इसका लोगा को अनुमान नही है। म ऐसी रबड बनाने म सफल हो गया हू जा कांच की तरह पारदर्शी तथा इस्पात की तरह मजबूत है। आज की हमारी किसी कदर असुखकर दुघटना के बावजूद आर इसक बावजूद कि अगर ठीक समय पर तुम मरी मदद के लिए न आ जाते ता इस दुघटना का अत और भी अधिक अप्रिय हो सकता था—इस आविष्कार का मैं अत्यत सफल ओर उपयागी समझता हू। जहां तक गोरिल्ला की बात है ता यह कौन सोच सकता था कि यहां पर मुझे उनका मुकाबला करना पडेगा ? यह ठीक है कि यह एक जगली स्थान है, किन्तु, आम तौर स गोरिल्ले और भी अधिक जगली तथा अभेद्य घन स्थाना म रहत हैं।'

"परन्तु एक जगह स दूसरी जगह कस आप जात है ?

"ओह! वह तो बहुत आसान है। तुम देखते नहीं? गेंद की अन्दर की भित्ति के ऊपर मैं पैर रखता हूँ और मेरे शरीर का भार गेंद को आगे ढकेलने लगता है। गेंद के तल पर साँस लेने के लिए छेद बने हुए हैं। गेंद दो अर्धांशों में बनी हुई है। जब मैं उसके अन्दर प्रवेश कर जाता हूँ, तो पारदर्शी रबड़ की बनी हुई विशेष पट्टी को खींचकर मैं अपने को अन्दर बन्द कर लेता हूँ। हाँ, एक कमजोरी उसमें यह है कि ढलावों पर गेंद को रोक सकना कठिन होता है, वहाँ वह इतनी तेजी से लुढ़कने लगती है कि मेरी पूरी कसरत हो जाती है! परन्तु क्यों नहीं?"

७ अदृश्य बेड़ियाँ

२० जुलाई मेरी डायरी फिर रुक गयी थी। हाथी बहुत आगे निकल गये मालूम होते हैं। हमें अपने पड़ाव को उखाड़ कर कई दिनों तक उस रास्ते पर चलना पड़ा, तभी उनके झुण्ड के रास्ते के कुछ नये चिह्न दिखलाई पड़े। दो दिन बाद ही अफ्रीकियों ने हाथियों के पानी पीने की एक जगह को ढूँढ़ निकाला। अफ्रीकी हाथी के अनुभवी शिकारी होते हैं। हाथियों को पकड़ने के लिए वे नाना उपायों का इस्तेमाल करते हैं। परन्तु वैग स्वयं अपने मौलिक उपायों को ही पसन्द करते थे। वे अपने साथ एक पेटी लाये थे। उसके अन्दर से कोई अदृश्य चीज उन्होंने निकाली। वैग के हाथ बोक्स के अन्दर से चीजों को निकालने और अलग रखने की गतियाँ कर रहे थे। [illegible] जिन 'चीजों' को वे उठा रहे थे वे हवा के समान ही अदृश्य थीं। [illegible] इन कर्मों को अफ्रीकी एक अलौकिक मन्त्र के [illegible] रहे थे। [illegible] वैगनर का कुछ अधिक [illegible] किस्म का [illegible] आशा [illegible] थे।

वग ने मुझे कुछ नहीं बताया था, लेकिन मैं समझ गया था कि हाथियो को पकडने के लिए वे किसी प्रकार के विशेष यत्र को निकाल रहे थे। इस यत्र को भी सम्भवत उन्हाने उसी अदृश्य वस्तु से बनाया था जिसकी वह गेंद बनी हुई थी।

'आओ, इसे पास स देखो," यह देखते हुए कि मैं कौतूहल से मरा जा रहा हूँ, वैगनर ने मुझे अपने पास बुलाया।

मैं उनके पास चला गया और काफी देर तक हवा म इधर उधर टटोलता रहा। आखिरकार मेरे हाथ मे एक रस्सी आयी जो लगभग एक सेण्टीमीटर मोटी रही होगी।

"क्या यह रबड की है ?"

"हाँ, रबड की जा अनक किस्म होनी है उन्ही म से एक की। इस विशेष काम के लिए मैंने उसे रस्सी की तरह लचकीला बनाया है। परन्तु उसम गेंद की ही तरह, इस्पात जसी शक्ति तथा अदृश्यता है। इन अदृश्य रस्सिया क हम फन्दे बनायेंगे और उन्हें हाथियो के माग मे लगा देंगे। उनम से किसी एक को हम पकड लेंगे, और फिर उसके ऊपर हमारा पूरा कण्ट्रोल होगा।"

यहाँ मैं यह बता दू कि दिखलाई न देने वाली रस्सिया को जमीन पर रखने और उनके फन्दे बनाने का काम सहल न था। बार-बार हमारा पैर किसी रस्सी म फँस जाता था और हम गिर जाते थे, परन्तु रात होते होते तक काम पूरा हो गया। हाथिया का इन्तजार करने के अलावा अब हमारे पास कोई काम न था।

वह बडी सुन्दर, उष्ण-कटिबन्धीय रात थी। जगल पत्ता की ममर ध्वनि तथा आहा जसी आवाजा स मुखरित था। कभी-कभी एसी आवाजें आती थीं जसे इस जीवन का छोडते समय रोता हुआ कोई

छोटा प्राणी करता है। निर्जन में कभी-कभी हँसी के तेज ठहाके गूज उठते थे। अफ्रीकी लोग सिमट कर ऐसे पास पास बैठे हुए थे जैसे कि किसी ने उनके ऊपर ठडा पानी छोड दिया हो।

धीरे धीरे हाथी नजदीक आये। उनका विशालकाय नेता झुण्ड से कुछ आगे था। उसकी सूंड आगे की ओर फैली हुई थी और वह बराबर उसे इधर उधर घुमा रहा था। रात्रि की सहस्रो गधो को वह जैसे सूघ रहा था, उनका वर्गीकरण कर रहा था, और उन गधो को मन ही मन नोट कर रहा था जिनसे खतरे की आशका थी। जब हमारे अलक्ष्य फन्दो से वह केवल कुछ ही गजो के फासले पर रह गया तो वह तेजी से रुक गया। उसकी सूड एकदम सीधी रेखा मे आगे की तरफ इस तरह तनी हुई थी कि मैं दग रह गया। इससे पहले ऐसी कोई चीज मैंने कभी नही देखी थी। वह किसी न किसी खास गध को सूघने का प्रयत्न कर रहा था। शायद वह हमारे शरीरो की गध रही हो, यद्यपि—देशी लोगों की सलाह के अनुसार—सूरज डूबने से पहले ही हम सबने झील म नहा लिया था और अपन कपडे अच्छी तरह साफ कर लिए थे। भू मध्य रेखा पर आदमी के सारे दिन पसीना आता है।

वैंग ने धीरे से कहा, "यह तो बुरा हुआ। हाथी को हमारी उपस्थिति की गध मिल गयी है। मरा खयाल है कि उसे हमारे शरीरो का नही, बल्कि रबड का पता चल गया है। इस सम्भावना की ओर मने ध्यान नही दिया था।"

हाथी स्पष्टतया हिचकिचा रहा था। अपने को उस बास का वह अभ्यस्त बना रहा था जो उसके लिए नयी थी। इस अपरिचित गध के साथ कैसा खतरा जुडा हुआ था? हिचकिचाता हुआ वह थोडा आगे बढा, कदाचित उस विचित्र गध के स्रोत की ओर समीप म जाँच पडताल करने के लिए। कदम कदम और और वह फन्दे मे

फँस गया। उसके आगे के पैर ने फन्दे को जोर से हटाने की कोशिश की, बेडी मजबूती से उसे पकडे रही। जानवर ने रस्सी को और जोर से खीचा। पैर के ठीक ऊपर के उसके चमडे पर रस्सी का दबाव पडता हम स्पष्ट दिखलाई दिया। उसके बाद उस विशालकाय पशु ने अपने पूरे शरीर को पीछे की तरफ खीचा, इतना खीचा कि उसका पीछे का हिस्सा लगभग जमीन से लग गया। रस्सी के दबाव से हाथी की खाल की जबदस्त मोटाइ कट गयी और उसके पर से गाढा, स्याह रग का खून बहने लगा।

स्पष्ट था कि वैगनर की रस्सी म असाधारण शक्ति थी।

हमने अपनी विजय की खुशियाँ मनाना शुरु कर दी। और तभी एक अप्रत्याशित घटना घट गयी। पेड का वह मोटा तना जिससे रस्सी बँधी हुई थी, कडक कर टूट गया जसे उसे किसी न कुल्हाडी से काट दिया हो। अचानक हाथी पीछे की ओर गिर पडा। फौरन लडखडा कर वह फिर खडा हो गया, फिर पीछे की ओर घूमा, और भय से जोरा से चिंघाडता हुआ भाग निकला।

वैग न अफसोस मे कहा, उसन उसे तोड दिया! जब व उन स्थाना क पास तक नही फटकेंगे जहाँ हमन अपने अदश्य फन्दे लगाय हैं। गन्ध से वे उनका पता लगा लेते ह। अब मुझे किसी खुशबू उडाने वाले रसायन का आविष्कार करना होगा। रसायन हुम यह रबड गन्ध करती है अच्छा, ऐसा है " वगनर अपन ही विचारा म खाय हुए अस्फुट रूप से कुछ कह रह थे। फिर वे बोलने लगे, "और क्या नहीं? जानत हो मैं क्या साच रहा हूँ हाथी को पकड़ने के लिए हम रासायनिक साधना का इस्तेमाल कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, हम गस मे उस पर हमला कर सकत है। हाथी का मारने की जरूरत नहीं है। एसा करना तो आसान होगा। हम उस बहोश करना है। हम लाग गैस मास्क पहन

लें, इसके बाद मैं भी एक घोंट ले लें, और अन्त में इसी मं- पर उसे रख दें। अल-कोहल की वनस्पति बहुत बढ़ी है। वास्तव में तो वह वनस्पति की एक पूरी दुनिया है। मैं यहाँ बड़े मजे से रहती रहती। और तब ... किन्तु एक इससे भी भयानक तरीका हो सकता है।'

यह कहकर बैंन्नर जोर से हँसने लगे। स्पष्ट था कि किसी चीज की कल्पना से उनको खासा मजा आ रहा था।

अब हमें उस जगह का पता लगाना है जहाँ हाथी पानी पीने जाते हैं। इस स्थान पर तो शायद ही कभी अब वे दोबारा आयेंगे ..."

८ हाथियों के लिए वोदका *

२१ जुलाई अफ्रीकियों ने पानी के एक दूसरे स्थान को, एक छोटी जंगली झील को ढूंढ निकाला है। जानवर पानी पीकर ज्यों ही घनी झाड़ियों के अन्दर गायब हुए, त्यों ही देसी लोगों को साथ लेकर बैंग और मैं काम में जुट गये। हमने अपने कपड़े उतार दिये, पानी के अन्दर हिल गये, और झील के तल में लकड़ी के लट्ठों को बिछाने लगे। हम उन्हें एक पाँत में पास पास लगा रहे थे जिससे कि झील का एक छोटा-सा भाग शेष जल से अलग हो जाय। फिर पानी के नीचे बनायी अपनी दीवाल के ऊपर चिकनी मिट्टी की एक मोटी तह का पलास्टर हमने लगा दिया। इससे वहाँ मछली पैदा करने का एक तालाब जैसा बन गया। हमारे इस बाँध ने झील के उस भाग को चारों तरफ से घेर दिया जहाँ हाथियों को पानी पीते देखा गया था।

* वोदका—प्रसिद्ध रूसी शराब। —सं०

वैग ने प्रसन्न होकर कहा, "बहुत बढ़िया! बस, अब पानी म 'जाहर मिलाने' की जरूरत रह गयी है। एसा करने का मेरे पास एक बहुत बढ़िया, एकदम निरापद उपाय है, वह एल्काहल* स भी अच्छा काम करता है।"

वैग कई घण्ट तक अपनी प्रयोगशाला म काम करते रह। अत म, बाल्टी भरकर वे कोई चीज ले आय। बोले कि यह "हाथी की वादका" है। उस तरल वस्तु को तालाब मे डाल दिया गया। फिर हम सब पडो पर चढ गय और परिणाम दखने के लिए बठ गये।

"लेकिन हाथी वोद्का पियेंगे ?" मन पूछा।

"आशा तो मरी यही है कि वह उन्ह सुस्वाद लगगी। आखिर रीछो का वादका पसन्द है वास्तव मे उनका ता पक्का शराबी बनते भी देखा गया है! दा ! कुछ आ रहा है।

मन रग-स्थली' की ओर नजर डाली वह बहुत बडी थी।

यहाँ ज़रा रुक कर म एक दूसरी बात कहूँगा, क्योंकि मुझे बता देना चाहिए कि उष्ण-कटिबन्धीय जगल की रमणीक प्रकृति तथा शिल्प-कला सम्बन्धी' उसकी विविधता के सम्बन्ध म मेरे विस्मय म कभी कमी नही आयी। बहुधा आदमी देखता है कि वह एक 'तिमजिले' जगल क बीच स जा रहा है एक छोटा-सा शत्र झाडियो और ऐस छोट छोट पडो का ह जो आदमी के कद स ऊचा नही है, इसके ऊपर एक दूसरा जगल है जिसन पड लगभग उतने ही ऊँचे है जितन कि उत्तर क हमार अपन जगलो क पेड होते है, अत म, और भी अधिक ऊँचाई पर चलकर, विशालकाय दरख्तो का एक तीसरा जगल है। दरख्तो की पहली और दूसरी मजिलो के बीच

* शराब का सत।—स०

नाना प्रकार की लताओं की डोरियों और रस्सियों का प्रवेश होता है। इस तरह के "निमज़िले' जंगल का दृश्य आश्चर्यजनक रूप से सुन्दर लगता है। सिर के ऊपर हरी भरी गुफाएं, घन्टा के रूप में बरन हरीतिमा मण्डित जल प्रपात, आकाश को छूती हुई हरी-नीली पर्वत-मालाएँ, और चारों तरफ पूरे दृश्यपट पर पक्षियों के रंग-बिरंग चमकीले पखों तथा फूलों के अति सुन्दर रंगों का अनन्त विस्तार।

कभी-कभी आदमी देखता है कि अचानक वह गोथिक शैली के एक भव्य कैथीड्रल (बड़े गिरजे) जैसे स्थान में पहुँच गया है जहाँ पर काई लगी पृथ्वी के ऊपर से विशाल स्तम्भों का एक वन ऊपर उठता चला गया है। उसका कंगूरा दृष्टि नहीं आता। फिर कुछ और कदम आगे चलने पर, हर चीज़ बदल जाती है। आदमी दुर्गम झाड़ियों की एक भूल भुलैयाँ में खो जाता है। बायीं तरफ़ पत्तियाँ, दाहिनी तरफ पत्तियाँ, सामने की ओर पत्तियाँ, पीछे की ओर पत्तियाँ, और सिर के ऊपर भी पत्तियाँ। चारों तरफ पत्तियाँ ही पत्तियाँ दिखलायी देती हैं। नीचे सवार, तरह-तरह की घासें, फर्नियाँ और प्रसून जो कन्धे के पास तक पहुँचते हैं। ऐसा लगता है जैसे आदमी हरीतिमा के भँवर में फँस गया हो। पैर रस से सराबोर वनस्पति से उलझते हैं, चरण गिरे हुए वृक्षों में टकराते जाते हैं। आदमी जब बिल्कुल थक जाता है और नीचे की घनी हरियाली में एकाएक खो गया महसूस करता है तभी झाड़ियाँ दृश्य पट से ओझल हो जाती हैं और चकित होकर आदमी देखता है कि सामने एक हरी, गुम्मजदार, गोलाकार गुफा है जिसके विराट कलश को अविश्वसनीय आयामों का एक "स्तम्भ ऊपर उठाये हुए है। पैरों के नीचे रत्ती भर भी घास नहीं है। एक विराट वृक्ष की छाया के कारण नीचे के तमाम पौदे मर गये हैं। यह वृक्ष सूर्य की एक भी किरण को नीचे नहीं आने देता। वृक्ष की शाखाएँ झुककर ज़मीन तक आ गयी हैं और स्वयं भी उसी में गड़ गयी हैं।

गुफा के अन्दर प्रकाश धीमा है, उसके अन्दर शीतलता का विस्तार है। इन महावृक्षों की छाया में—रबड़ और भारतीय अजीर के वृक्षों की सुखद छाया में—बहुत बार हम विश्राम कर लेते थे।

अब अपनी कहानी को आगे बढ़ाऊँ। इस समय भी हम एक ऐसे ही विराट वृक्ष की शाखाओं में आश्रय लिए हुए थे। वृक्ष झील के बिल्कुल समीप था। हाथियों के मार्ग का इस्तेमाल करने वाले हर वन्य पशु को झील के तट पर पहुँचने के लिए इसी "रंग-स्थली" से गुज़रना होता था। स्पष्ट था कि इस "रंग-स्थली" में अनेक वन्य नाटक खेले जा चुके थे। इधर उधर मृगों, भैंसों और जंगली सुअरों की हड्डियाँ पड़ी हुई थीं। घास के मैदान यहाँ से दूर नहीं थे, इसलिए वहाँ से अक्सर पशु यहाँ पानी पीने आते थे।

एक जंगली सुअर "रंग-स्थली" से गुज़रा। उसके पीछे पीछे उसकी मादा और आठ बच्चे थे। पूरा परिवार पानी पीने जा रहा था। क्षण भर बाद ८ और मादाएँ वहाँ आ गयीं। साफ था कि उनका भी उसी कुण्ड से सम्बन्ध था। सुअर पानी के पास गया और पानी पीने लगा। क्षण ही भर में उसने अपने थूथन को ऊपर उठा लिया और अप्रसन्नता प्रकट करते हुए गुर्राया। फिर वह एक दूसरे स्थान की तरफ चला गया। उसने फिर पानी पिया, फिर अपनी अप्रसन्नता व्यक्त की, और सिर हिलाया।

"वह पियेगा नहीं," मैंने धीरे से वर्ग के कान में कहा।

"उसके लिए उसे स्वाद बनाना होगा," उन्होंने जवाब दिया।

और उनकी बात सही थी। थोड़ी ही देर में सुअर ने अपने सिर को हिलाना बन्द कर दिया और जमकर पानी पीने लगा। लेकिन मादा सुअरी परेशान थी और मुझे ऐसा लगा जैसे कि अपने बच्चों को चेतावनी देती हुई वह उनसे कह रही थी कि वे पानी न पियें। परन्तु

जल्दी ही उसने भी पानी का स्वाद पा लिया । बहुत देर तक, आम तौर से वे जितना समय लेते हैं उससे भी देर तक सुअर और उनके बच्चे झील का पानी पीते रहे । सबसे पहले बच्चों पर असर हुआ । उन्होंने आवाजें करना और एक दूसरे को मारना तथा "रंग-स्थली" में इधर-उधर दौड़ना शुरू कर दिया । इसके बाद छओं मादा सुअरियों ने लड़खड़ाना और कुछ अजब ढंग से व्यवहार करना शुरू कर दिया । उन्होंने चीखना चिल्लाना, कुलेलें करना, चिंघाड़ी मारना, और अपने बड़े बालों से एक-दूसरे पर प्रहार करना, जमीन पर लोटना तथा कुलाचें मारना शुरू कर दिया । अंत में, वे जमीन पर पड़ गयीं और अपने बच्चों के साथ गहरी नींद में सो गयीं । परन्तु नशे ने सुअर को जगा दिया और वह अशान्त हो उठा । भयंकर स्वर से वह गुर्राया, "रंग-स्थली" के बीचोंबीच लगे हुए विशाल वृक्ष के तने पर टूट पड़ा, उसकी छाल में कटारी की तरह के अपने तेज दांतों को उसने इतने जोर से धंसा दिया कि उन्हें निकालने में उसे मुसीबत हो गयी ।

नशे से मस्त सुअर के तमाशे को देखने में हम लोग इस तरह खोये हुए थे कि हाथियों के आने की ओर हमारा ध्यान ही न गया । नपी-तुली चाल चलते हुए, धीरे धीरे वे उसी घने हरे मार्ग से आये । वे इकहरी पंक्ति में चल रहे थे । वृक्ष के तने के इर्द गिर्द का क्षेत्र वास्तव में उस समय सर्कस की "रंग-स्थली" बन गया था । परन्तु चार पैरों वाले कलाकारों की इतनी भारी संख्या कभी किसी सर्कस में न देखी गई होगी । मैं खुद स्वीकार करता हूँ कि उनकी इतनी बड़ी संख्या देखकर मैं डर गया था । वे बहुत बड़े-बड़े चूहों की तरह दिखायी देते थे । उनकी संख्या दो दर्जन से भी अधिक थी ।

परन्तु शराब पिये हुए जंगली सुअर के तमाशे की यहीं इति नहीं हो गयी । जिन्न रहते ही दुम दबा कर वनों में भाग जाने के बजाय, नशे में धुत वह सुअर हाथियों को देखकर भयानक ढंग से घुड़घु

और फिर तीर की तरह तेजी से उछल कर उनके गिरोह पर टूट पड़ा। आग वाला हाथी इस हरकत को देखकर स्पष्ट ही एकदम अचकचा गया था। उस आगे बढ़ते हुए पशु को, जिसने उसके पैर में अपने दाँत घुसा दिये थे, वह कौतूहल भरी दृष्टि से देखने लगा। फिर उसने अपनी सूंड को समेट लिया, सिर नीचा किया, और दाँतों से सुअर को इतने ज़ोर से मारा कि वह झील के अन्दर जा गिरा। सुअर फिर घुरघुराया और ऊब-डूब होने लगा। लड़खड़ाता हुआ किसी तरह वह किनारे आ गया। रास्ते में जैसे कि अपनी हिम्मत बढ़ाने के लिए हो, कुछ घूंट पानी भी उसने पी लिया था। फिर हाथी के ऊपर वह दोबारा झपटा। लेकिन इस बार हाथी ने अधिक सावधानी बरती। सामने के दाँतों को नीचा किये हुए वह जैसे पहले से ही सुअर की राह देख रहा था। सुअर ज्यों ही झपट्टा मार कर उस पर कूदा त्यों ही हाथी के दाँत उसके शरीर के अन्दर गहराई तक घुस गये। मरते हुए सुअर को हाथी ने अपने दाँतों से निकाल कर दूर किया। और उसके ऊपर एक पैर रख दिया। सुअर के नाम पर केवल उसका सिर और पूँछ शेष रह गई। शरीर कुचल कर ज़मीन की ही तरह सपाट हो गया था।

शान्त भाव और धीर गति से आगे का हाथी फिर 'रंग-स्थली' से आगे बढ़ने लगा—मानो कहीं कुछ हुआ ही नहीं था। मादा सुअरा और उनके बच्चों के शरीरों को, जो बिल्कुल बराबर ज़मीन पर औंधे पड़े थे, बचाता हुआ वह आगे बढ़ गया। पानी के पास पहुँच कर उसने अपनी सूंड झील में डाल दी। यह देखने के लिए कि अब क्या होना है हमारा कौतूहल चरम सीमा पर पहुँच गया था।

हाथी ने पानी का एक घूंट पिया, फिर अपनी सूंड को बाहर निकाल कर उससे इधर उधर टटोलने लगा। लगता था कि झील के विभिन्न भागों के जल के स्वाद की वह मन ही मन तुलना कर रहा था। फिर

वह कुछ कदम और आगे बढा और हमने जो अलग खाना बनाया था उसके बाहर के पानी मे अपनी सूड उसने डाल दी। वहाँ के पानी में नशा पैदा करने वाली हमारी 'दवा' नहीं थी।

मैंने धीरे से कहा, "अब खेल खत्म हो गया!" किन्तु ये शब्द मेरे मुह से निकले ही थे कि मेरा मुह आश्चय से खुला का खुला ही रह गया। मुह से आवाज निकलते निकलते बची। हाथी फिर पहले वाले स्थान पर लौट आया था और मजे से "हाथी की वोदका" का पान कर रहा था! ऐसा लगता था कि वह उसे पसन्द आ रही थी। दूसरे हाथी भी अपने नेता की बगल मे खडे होकर पानी पीने लगे। हमारा बाँध बहुत बडा नहीं था, इसलिए झुड के कुछ हाथियो ने शुद्ध ताजे पानी को ही पिया। मुझे लगा जैसे कि वे पानी पीना कभी बन्द ही नहीं करेंगे। मुझे साफ-साफ दिखलाई दे रहा था कि हाथी के नेता का पेट दोनो तरफ से खूब फूल आया था। फिर भी वह पानी पीता ही जा रहा था। आध घटे बाद हमने देखा कि हमारे तालाब के जल का स्तर ५० प्रतिशत नीचा हो गया है। घटे भर बाद हाथियो का नेता और उसके साथी तालाब के तले मे जो तरल पदाथ रह गया था उसे सुडक रहे थे! सुडकना खत्म करने से पहले ही उनके पैर लडखडाने लगे। उनमे से एक वहीं पानी मे पड गया। इसकी वजह से भयानक कोलाहल मच गया। वह जोर से चिंघाडा, उठ कर एक बार खडा हुआ और फिर धम से पीठ के बल पछाड खा कर वहीं गिर गया। उसकी सूंड तालाब के किनारे पर पडी थी और वह इतने जोर जोर से खर्राटे ले रहा था कि पेडो की पत्तियाँ तक काँप रही थीं और भयभीत पक्षी उडकर वृक्षो के एकदम ऊपरी भागो मे चले गये थे।

हाथियो का नेता जोरो से आवाज करता हुआ झील से दूर हट गया। उसकी सूंड एक बजान लत्ते की तरह उसके शरीर से लटक रही थी। क्षण भर के लिए उसने अपने कान उठाये पर उन्हे वह

और फिर तीर की तरह तेजी से उछल कर उनके गिरोह पर टूट पड़ा। आगे वाला हाथी इस हरकत को देखकर स्पष्ट ही एकदम अकचरा गया था। उस आगे बढ़ते हुए पशु को, जिसने उसके पैर में अपने दाँत घुसा दिये थे, वह कौतूहल भरी दृष्टि से देखने लगा। फिर उसने अपनी सूंड को समेट लिया, सिर नीचा किया, और दाँतों में सुअर को इतने जोर से मारा कि वह झील के अन्दर जा गिरा। सुअर फिर घुरघुराया और ऊब डूब होने लगा। लड़खड़ाता हुआ किसी तरह वह किनारे आ गया। रास्ते में जैसे कि अपनी हिम्मत बढ़ाने के लिए हो, कुछ घूंट पानी भी उसने लील लिया था। फिर हाथी के ऊपर वह दोबारा झपटा। लेकिन इस बार हाथी ने अधिक सावधानी बरती। सामने के दाँतों को नीचा किये हुए वह जैसे पहले से ही सुअर की राह देख रहा था। सुअर ज्यों ही झपट्टा मार कर उस पर कूदा त्यों ही हाथी के दाँत उसके शरीर के अन्दर गहराई तक घुस गये। मरते हुए सुअर को हाथी ने अपने दाँतों से निकाल कर दूर किया। और उसके ऊपर एक पैर रख दिया। सुअर के नाम पर केवल उसका सिर और पूंछ शेष रह गई। शरीर कुचल कर जमीन की ही तरह सपाट हो गया था।

शान्त भाव और धीर गति से आगे का हाथी फिर "रंग-स्थली" से आगे बढ़ने लगा—मानो कहीं कुछ हुआ ही नहीं था। मादा सुअरों और उनके बच्चों के शरीरों को, जो बिल्कुल बेखबर जमीन पर औंधे पड़े थे, बचाता हुआ वह आगे बढ़ गया। पानी के पास पहुँच कर उसने अपनी सूंड झील में डाल दी। यह देखने के लिए कि अब क्या होता है हमारा कौतूहल चरम सीमा पर पहुँच गया था।

हाथी ने पानी का एक घूंट पिया, फिर अपनी सूंड को बाहर निकाल कर उससे इधर उधर टटोलने लगा। लगता था कि झील के विभिन्न भागों के जल के स्वाद की वह मन ही मन तुलना कर रहा था। फिर

वह कुछ कदम और आगे बढा और हमने जो अलग खाना बनाया था उसके बाहर के पानी मे अपनी सूड उसने डाल दी। वहा के पानी मे नशा पैदा करने वाली हमारी 'दवा' नही थी।

मैने धीरे से कहा, "अब खेल खत्म हो गया!" किन्तु य शब्द मेरे मुह से निकले ही थे कि मेरा मुह आश्चय से खुला का खुला ही रह गया। मुह से आवाज निकलते निकलते बची। हाथी फिर पहले वाले स्थान पर लौट आया था और मजे से "हाथी-की वोदका" का पान कर रहा था! ऐसा लगता था कि वह उसे पसद आ रही थी। दूसरे हाथी भी अपने नेता की बगल म खडे होकर पानी पीने लग। हमारा बाँध बहुत बडा नही था, इसलिए झुड के कुछ हाथियो न शुद्ध ताजे पानी को ही पिया। मुझे लगा जैसे कि वे पानी पीना कभी बन्द ही नही करेंगे। मुझे साफ-साफ दिखलाई दे रहा था कि हाथी के नेता का पेट दोनो तरफ से खूब फूल आया था। फिर भी वह पानी पीता ही जा रहा था। आध घटे बाद हमने देखा कि हमारे तालाब के जल का स्तर ५० प्रतिशत नीचा हो गया है। घटे भर बाद हाथियो का नेता और उसके साथी तालाब के तले म जो तरल पदाथ रह गया था उसे सुडक रह थे! सुडकना खत्म करने से पहले ही उनके पैर लडखडाने लग। उनमे से एक वही पानी मे पड गया। इसकी वजह स भयानक कोलाहल मच गया। वह जोर से चिंघाडा, उठ कर एक बार खडा हुआ और फिर धम से पीठ के बल पछाड खा कर वही गिर गया। उसकी सूड तालाब के किनारे पर पडी थी और वह इतने जोर जोर से खर्राटे ले रहा था कि पत्तो की पत्तियाँ तक काप रही थी और भयभीत पक्षी उडकर वृक्षो के एकदम ऊपरी भागो मे चले गये थे।

हाथियो का नता जोरो से आवाज करता हुआ झील से दूर हट गया। उसकी सूड एक बेजान लत्ते की तरह उसके शरीर से लटक रही थी। क्षण भर के लिए उसने अपने कान उठाये पर उन्हे वह

संभाल न सका और निर्जीव जैसे व फिर गिर गये। धीरे धीरे, और मन्थर गति से, वह इधर उधर घूमा। चारों तरफ उसके साथी पड़े हुए थे, जैसे कि गोलियों से मार कर किसी ने उनको गिरा दिया हो। जिन हाथियों को "वोदका" नहीं मिली थी वे अपने साथियों के इस विचित्र "नुकसान" को आश्चर्य-चकित होकर देख रहे थे। इन हाथियों ने, जो नशे में नहीं थे, चिंतापूर्वक विलाप करना शुरू कर दिया, "शराब में धुत पड़े" अपने साथियों के चारों तरफ वे परिक्रमा करने लगे। उनको उठाने तक की उन्होंने कोशिशें कीं। एक बड़ी मादा हथिनी नेता के पास गई और, अपनी सूंड से उसके सिर को स्पर्श करके, उसने अपनी चिन्ता व्यक्त की। स्नेह और सहानुभूति के इस प्रकाशन के प्रति-उत्तर में हाथी ने निःशक्त भाव से अपनी पूंछ हिलायी, परन्तु उसके घूमने में कोई कमी न आई। वह उसी तरह नशे में घूमता रहा। फिर यकायक उसने अपना सिर उठाया, पूरी ताकत से चिंघाड़ा, और जमीन पर गिर पड़ा। जो हाथी होश में थे वे परेशान होकर उसके चारों तरफ इकट्ठा हो गये। अपने नेता के बिना वहां से वापिस जाने में वे हिचकिचा रहे थे।

जब किसी कदर जोर से बोलते हुए, वैंग ने कहा, अगर ये हाथी जिन्हें नशा नहीं है यहीं बने रहने का फैसला करते हैं तब तो एक समस्या खड़ी हो जायगी। उन्हें हमें मारना पड़ेगा, है न ? थोड़ी देर और हम इन्तजार करें और देखें क्या होता है।

संजीदा हाथियों ने आपस में एक कान्फ्रेन्स सी की। वे विचित्र आवाजें कर रहे थे और अपनी सूंडों को इधर-उधर हिला रहे थे। थोड़ी देर तक यही क्रम चलता रहा। वे अपने नये नेता का चुनाव कर रहे थे। जब तक उन्होंने अपने नये नेता को चुना और उस "रंगस्थली" से, जिसमें उनके "मृत" साथी अब भी उसी तरह पड़े हुए थे, इकहरी पाँति बनाकर खामोशी से धीरे धीरे जाने लगे तब तक सूरज डूबने लगा था और उसके कारण आकाश लाल हो उठा था।

९ रिंग का हाथी बनना

अब पेड़ से उतरने का समय हो गया था। कुछ-कुछ डरते हुए मैंने "रग-स्थली" की तरफ नज़र डाली। वह एक युद्ध-क्षेत्र की तरह दिखलाई पड़ती थी। विशालकाय हाथी चारो तरफ औंधे पड़े थे। उनके बीच बीच मे जगली सुअर पड़े थे। नशे की यह हालत कितनी देर तक चलेगी ? मस्तिष्क को लगाने के आपरेशन के खत्म होने से पहले ही हाथी होश म आ गये तब क्या होगा ? जैसे कि मेरी इस चिन्ता को और बढ़ाने के लिए, बीच बीच म हाथी अपनी सूड़ो को उठाकर इधर उधर हिलाने लगते और सोते-सोते ही चिकियाने जसी आवाजें करते।

परन्तु वैग को इन सब चीजो का भान न था। वे तेजी स पड स उतरे और काम म जुट गय। हमारे अफ्रीकी साथी सोते हुए सुअरा का मारने के काम म लग गये और वैग ने और मैंने ऑपरेशन करना शुरू कर दिया। हर चीज पहले से तैयार कर ली गई थी। वग न जर्राही के ऐसे आले मँगा लिये थे जिनका हाथी के दातो के कठोर तल पर भी उपयोग किया जा सकता था। वे एक हाथी के पास गय, साफ करके तैयार की गई जर्राही की एक छुरी उन्होंने पटी म स निकाली, हाथी के सिर में एक छेद किया, उसके चमडे को उलट दिया और आरी से उसके कपाल को चीरने लगे। एक दो बार हाथी की सूड ऐंठी जिससे मैं एकदम भयभीत हो उठा। वैग ने समझाते हुए मुझे सान्त्वना दी।

"डरने की कोई जरूरत नही है। मैं अपनी निद्राकारी दवा के असर की गारण्टी कर सकता हूँ। हाथी ३ घंटे तक जरूर सोता रहेगा। इतने समय के अन्दर मैं उसके मस्तिक को बाहर निकाल लूगा, ऐसी मुझे आशा है। उसके बाद उससे हमारे लिए कोई खतरा नही रह जायगा।"

व उसके कपाल पर यथा-क्रम आरी चलाते रहे। उनके आले वास्तव मे उच्च कोटि के थे। थोड़ी ही देर म पाश्विका अस्थि के एक भाग को उन्होंने बाहर निकाल लिया।

"अगर तुम कभी हाथी का शिकार करने जाओ, उन्होंने कहा, 'ता इस बात को याद रखना। हाथी को इस छोटी-सी जगह म चाट पहुँचा कर ही मारा जा सकता है। वैग न एक छोटी-सी जगह उसकी आँख और कान के बीच दिखलाई जो हथेली से बडी नही थी। 'रिंग के मस्तिक को मैं पहले ही सावधान कर चुका हूँ कि इस जगह का वह खूब ध्यान रख।"

फिर जल्दी ही वग ने हाथी के सिर से उसके मस्तिष्क के पदाथ का निकाल लिया। किन्तु तभी एक अप्रत्याशित घटना घटी। मस्तिष्क-विहीन हाथी ने हल्की-सी एक गति की और अपन भारी-भरकम शरीर का हिलाया। फिर यह देखकर हमारे आश्चय का ठिकाना न रहा कि वह उठ कर खडा हो गया और चलने लगा। यद्यपि उसकी आँखें खुली हुई थी, परन्तु स्पष्ट लगता था कि वह अपन सामन कुछ देख नही पा रहा था। रास्ते मे पडे अपन साथियो क पास से कतरा कर निकलने की उसने कोई कोशिश नही की, इसलिए वह उनसे टकरा गया और फिर जमीन पर गिर पडा। उसकी सूड और टाँगें जार से ऐंठने अकडन लगी।

अफसोस करत हुए कि सारी मेहनत बेकार हुई मैंने साचा, "क्या अब यह प्राण छोड रहा है ?"

वैग बिना किसी उद्वेग के हाथी क हिलन डुलने के रुकने की प्रतीक्षा कर रह थ। जब वह निस्पन्द हो गया तो उन्होंने फिर आपरेशन का काम शुरू कर दिया।

उन्होने कहा, "हाथी अब मर गया है, उसी तरह जिस तरह कि कोई भी पशु मस्तिष्क के बिना मर जायगा। परन्तु हम उसे फिर जिन्दा कर लेंगे। ऐसा करना मुश्किल नही है। रिंग का मस्तिष्क उठा कर जल्दी से मुझे दो . आशा करनी चाहिए कि उसमे कोई कीटाणु नही लगे है।"

अपने हाथो को अच्छी तरह धोकर हाथी के उस कपाल म स जिसे हम साथ लाये थे मैंने रिंग के मस्तिष्क को निकाला और वग को दे दिया।

मस्तिष्क को कपाल के अन्दर रखते हुए, उन्होने कहा, "लो, काम पूरा हो गया।"

मैंने पूछा, 'क्या वह ठीक बैठ गया ?"

"किंचित छोटा है। परन्तु इससे कोई फक नही पडेगा। अगर मस्तिष्क पेटिका से वह बडा हो गया होता तब स्थिति कही अधिक खराब होती। अब हमे सबसे महत्वपूण कार्य करना है—तन्त्रिका के अन्तागो को जोड कर एक साथ सी देने का काम। प्रत्येक तान्त्रिका से, जिस मैं जोडूगा, रिंग के मस्तिष्क और हाथी के शरीर के बीच सम्पक स्थापित होता जायगा। तुम अब थोडा विश्राम कर लो। चुपचाप बठ कर तमाशा देखो। बस, मेरे काम मे बाधा मत डालना।"

वैंग ने अत्यन्त तेजी तथा सावधानी से काम करना शुरू कर दिया। वास्तव मे वे एक कलाकार थे। उनकी अँगुलियाँ ऐसी क्षिप्रता और दक्षता से गति कर रही थी मानो कोई कलाकार किसी अत्यन्त कठिन सगीत रचना को तन्मय होकर सधे हुए हाथो से बजा रहा था। उनका सम्पूण ध्यान उसी मे केद्रित था। उनकी दानो आँखें एक ही स्थान पर लगी हुई थी। जब भी किसी काम को वे अत्यन्त दत्तचित्त होकर करते थे तो उनकी आखें इसी तरह हो जाती थी। स्पष्ट था कि उनके

मस्तिष्क के दोनो पक्ष एक ही काय कर रहे थे—एक प्रकार से वे एक-दूसरे के नियत्रकोका काम कर रहे थे। अन्त मे, कपर को उन्होने मस्तिष्क के अन्दर ठीक से बठा दिया, धातु की बनी विल्पा से उस बाध दिया, त्वचा का उसके पूव स्थान पर लगा दिया और फिर टाके लगा दिय।

"बहुत बढिया ! अब यदि इसका घाव ठीक से भर जाता है तो त्वचा के ऊपर निशानो के अलावा और कुछ नही रह जायगा। किन्तु मै आशा करता हूँ कि इस काम के लिए रिंग मुझे माफ कर देगा।"

रिंग उन्हे माफ करेगा ! निस्सदेह हाथी अब रिंग बन गया था, अथवा, कहना चाहिए कि, रिंग एक हाथी बन गया था। मैं हाथी के समीप गया—उसके सिर के अन्दर मानवी मस्तिष्क था। कौतूहल से मैं उसकी खुली आँखो के अन्दर झाकने लगा। वे अब भी उतनी ही निष्प्रभ तथा जीवन हीन प्रतीत होती थी जितनी पहले थी।

मैंने पूछा, "इसका क्या कारण है ?" रिंग के मस्तिष्क को तो पूणतया सचेत हाना चाहिए परन्तु उसकी आखें तो काँच के टुकडो जैसी पथराई हुई दिख रही है (मैं उन्हे हाथी या रिंग की आखें न कह सका)।"

वग ने जवाब दिया, "कारण बहुत सरल है। मस्तिष्क से निकलने वाली तत्रिकाओ को सी तो दिया गया है परन्तु वे अभी तक जुडी नही है। रिंग को मन चेतावनी दे दी थी कि जब तक तत्रिका के अन्ताग पूणतया जुड न जायँ तब तक वह कोई हरकत करने की कोशिश न करे। तत्रिकाओ के अन्ताग जल्दी से जल्दी जुड जायँ इसके लिए मैंने हर सम्भव कोशिश की है।"

सूर्यास्त हाने लगा था। झील के किनारे बठे देशी लाग सुअर का मास आग मे भून रहे थ और चटकोर ले ले कर उसे खा रहे

थे। उनमें से कुछ तो उसे कच्चा ही खाये जा रहे थे। अचानक नशे में धुत एक हाथी ने शोर करना शुरू कर दिया। उसकी तेज आवाज ने दूसरों को भी जगा दिया और वे सब उठ कर खड़े होने लगे। वैंग और मैं–दोनों गाड़ियों के पीछे छिपने के लिए तेजी से वहाँ से हट गये। देशी लोग भी हमारे पीछे पीछे वहीं आ गये। हाथी अब भी लड़खड़ा रहे थे, वे अपने मुखिया के पास गये। ऑपरेशन के बाद वह अब भी सो रहा था। उनकी सूंडों ने उसके सारे शरीर को अच्छी तरह टटोला और सूंघा। उन्होंने अपनी पशु-भाषा में आपस में कुछ बातचीत की। मैं भली भाँति कल्पना कर सकता हूँ कि रिंग अगर इस सबको देख और सुन सकता तो उसे कैसा लगता। आखिरकार, हाथी चले गये और हम फिर अपने मरीज के पास पहुँच गये।

वैंग ने हाथी से—जैसे कि वह बात कर सकता था—कहा, "तुम खामोश रहो। मुझे जवाब देने की कोशिश मत करो। अगर तुममें इस बात की शक्ति आ गयी हो तो मैं तुम्हें केवल आंखों की पलकों को खोलने बन्द करने की इजाजत दे सकता हूँ। मैं जो कुछ कह रहा हूँ उसे अगर तुम समझते हो तो दो बार आँखें बन्द करो।"

हाथी ने आंखें बन्द कीं और फिर खोल दीं।

वैंग ने कहा, "बहुत अच्छा! आज तो तुम्हें चुपचाप ही पड़ा रहना पड़ेगा, लेकिन कल मैं तुम्हें उठ जाने दे सकता हूँ। हाथियों के आने जाने के मार्ग को बैरीकेड (आड़) बनाकर हम रोक देंगे जिससे कि वे तथा दूसरे कोई जंगली जानवर तुम्हें तंग न कर सकें। रात में हम आग जला देंगे।"

२४ जुलाई आज हाथी पहले-पहल उठा। वैंग ने उसका अभिनन्दन करते हुए कहा, "बधाई! अब तुम्हें किस नाम से पुकारें? तुम्हारे रहस्य का पता हमें किसी को नहीं देना चाहिए। मैं तुम्हें सपियंस कहूँगा बोलो, तुम्हें पसन्द है?"

हाथी ने सिर हिलाकर स्वीकृति प्रकट की।

वग ने आगे कहा, "हम लोग मूक भाषा मे, अथवा मोस कोड (कूट) के माध्यम से बातचीत करेंगे । तुम अपनी सूड के छोर को हिलाकर बात कर सकते हो 'डौट' ( ) के लिए उसे ऊपर की तरफ हिलाना, 'डश' (—) के लिये अगल बगल म । अथवा, अगर तुम्ह यह अधिक सुविधाजनक जान पडे तो तुम ध्वनि सकेता के जरिय मुझसे बात कर सकते हो । अब ज़रा अपनी सूड को हिलाओ ।"

हाथी ने सूड को हिलाने की कोशिश की, परन्तु वह उसे भोंडे ढग मे ही हिला सका । अपने स्थान से उखड गये किसी अग की तरह वह चारा तरफ निर्जीव-सी लटकती झूलती मालूम होती थी ।

"अभी तुम्ह इसकी आदत नही पडी । देखो, रिंग, इससे पहले तुम्हारे सूड नही थी । अच्छा, अब देखें तुम चलते कम हो ।

हाथी ने चलना शुरू किया । आगे के पैरा की अपेक्षा उसके पीछे के पैर उसके आदेश को अधिक मानते मालूम होते थे ।

वैग ने इस पर टीका करते हुए कहा, "म यह समझता हू कि हाथी बनना अभी तुम्ह सीखना पडेगा । तुम्हारे अन्दर हाथी का मस्तिष्क नही है । परन्तु बहुत जल्दी ही तुम अपने पैरो, सूड और कानो का चलाना सीख जाओगे । निस्सन्देह, हाथी की वत्तिया जन्म जात हाती है वे तो हाथिया की सैकडा, हजारा पीढियो के अनुभव का परिणाम होती है । असली हाथी जानता है कि उसे किसस डरना चाहिए और अपने भिन्न भिन्न दुश्मना मे कसे अपनी रक्षा करनी चाहिए । वह यह भी जानता है कि भोजन और पानी उसे कहाँ मिलेगा । इन चीजो का तुम्ह कोई ज्ञान नही है । तुम्ह अनुभव मे

सीखना पडेगा। इस अनुभव के लिए अनेक हाथियो ने अपने जीवना की कीमत चुकायी है। लेकिन तुम्हे न निराश होने की जरूरत है और न डरने की, सेपियन्स! हम लोग हमेशा तुम्हारे साथ रहेगे। तुम्हारी तबियत ज्यो ही बिल्कुल अच्छी हो जायगी त्योही हम सब एक साथ योरप के लिए रवाना हो जायेंगे। चाहो तो तुम अपनी मातृभूमि जर्मनी मे ही रह जाना, अथवा, अगर चाहो तो, हमारे साथ सोवियत सघ वापिस चले आना। वहा पर तुम जुओलोजिकल गार्डेन (जिन्दा अजायबघर) मे रहोगे। लेकिन यह तो बतलाओ, तुम्हारी तबियत अब कैसी है?"

देखा गया कि सेपियन्स—रिंग के लिए सूड को हिला-डुलाकर सकेत करने की अपेक्षा हल्के से फुफकार करके सकेत करना अधिक आसान था। उसने अपनी सूड से फुफकार की लम्बी और छोटी आवाजें करना शुरू कर दिया। वैग ने सुना और मेरे लिए उनका अनुवाद कर दिया (उन दिनो तक मोर्स कोड को मै नही समझता था)।

"मुझे उतनी अच्छी तरह नही दिखलायी देता मालूम पडता जितनी अच्छी तरह पहले दिखलायी देता था। यह सच है कि अधिक ऊचा होने की वजह से अब मै ज्यादा दूर तक देख सकता हूँ, परन्तु दृष्टि का क्षेत्र सकुचित हो गया है। सुनने और सूघने की शक्तिया आश्चयजनक रूप से सूक्ष्म और तीक्ष्ण बन गयी है। मैंने कभी कल्पना भी नही की थी कि दुनिया मे इतने प्रकार की ध्वनिया और गधें है। मैं हजारो किस्म की नयी, विचित्र सुगधा तथा उनके सूक्ष्म रूपो को सूघ सकता हूँ। मैं अगणित ऐसी ध्वनियाँ सुन सकता हूँ जिनके लिए मानव भाषा मे सम्भवत कोई शब्द ही नही है। सीटी बजाना, कड-कड करना, चू चू करना, चहचहाना, किकियाना, कराहना, भौकना, चीखना चिल्लाना गडगडाहट करना, छनछनाहट करना, खडखडाहट करना, चुरमुराहट करना, तमाचा मारने जैसी आवाज करना, ताली

बजाने जैसी ध्वनि करना—ये तथा कदाचित एकाध दजन और एने शब्द होगे और वस, ध्वनियो को व्यक्त करने वाले शब्दो की सूची एकदम खत्म हो जायगी। परन्तु, उदाहरण के लिए, वृक्षो की छाल म भौंरे और घुन जब छेद करते हो तो उनके उस बेताल सुर के सगीत को, जिसे मैं इतने स्पष्ट रूप मे सुनता हूँ, शब्दो मे किस प्रकार व्यक्त किया जा सकता है ? तथा और तमाम ऐसी ही अगणित आवाजो का कैसे परिचय दिया जाय ?"

वग ने कहा, सेपियन्स, तुम तेजी से प्रगति कर रहे हो।"

अपनी नयी सम्वेदनाओ का वणन करते हुए सेपियन्स—रिंग ने अपनी बात को जारी रखा, "और अ य तमाम जो गधे तथा वासें हैं !—मैं समझ नही पाता कि उन सब चीजो का थोडा भी आभास आपको कस कराऊँ जो मैं अनुभव करता हू। आप वस इतना ही समझ सकते हैं कि प्रत्येक पेड, प्रत्येक वस्तु की अपनी खास गध होती है।' हाथी ने अपनी सूड को नीचा किया और सूघते हुए कहा, "देखिए, पृथ्वी की भी गध है। और इसमे से यहा पडी घास की गध आ रही है। इसे यहा शायद किसी घास-भक्षी पशु ने पानी पीने के लिए जाते समय डाल दिया है। इसमे स जगली सुअर, भस तावे की गध आ रही है। मे नही समझ पाता कि यह गध कहाँ से आयी होगी। आह! यह देखिए, ताव के तार का एक टुकडा यहा पडा है। इसे वैगनर, शायद आपने ही यहाँ गिरा दिया होगा।"

मैंने पूछा, "यह कैसे हो सकता है ? इन्द्रियो की सूक्ष्मता केवल परिखा के सग्रहण करन वाले अगो की सूक्ष्मता से ही नही निर्धारित होती है, वह तो मस्तिष्क के तदनुरूप विकास स भी निर्धारित होती है।'

वैग ने उत्तर दिया, "हाँ, रिंग का मस्तिष्क जब अपन काम का, एक प्रकार से, पूणतया अभ्यस्त हो जायगा तब उसकी इन्द्रिया भी

हाथी की इन्द्रियों की तरह सूक्ष्म रूप से प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त करने लग जायेंगी। अभी तक उसकी इन्द्रिया, वास्तविक हाथी की तुलना मे, सूक्ष्म ज्ञान प्राप्त करने की कई गुना कम क्षमता रखती है। लेकिन श्रोत्र और गन्धीय (सुनने और सूघने के) उपकरणो से रिग को अभी ही हमारी तुलना म कही अधिक शक्ति प्राप्त हो गयी है।" हाथी की ओर मुडकर उन्होंने कहा, "सेपियन्स, तुम्हारी पीठ पर बैठकर अगर हम पहाडी के अपने शिविर की तरफ चलें तो तुम्ह बहुत तकलीफ तो नही होगी?"

सेपियन्स ने अनुग्रहपूर्वक इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया और स्वीकृति मे अपना सिर हिला दिया। हमने उसकी पीठ पर अपने सामान का एक हिस्सा रखा और उसने वैगनर को और मुझे भी अपनी सूड से उठाकर ऊपर बिठा लिया। हम चल दिये। देशी लोग हमारे पीछे पीछे पैदल आये।

"मेरा खयाल है कि कुछ ही हफ्तो म सेपियन्स एकदम चगा हो जायगा। फिर वह हमे बोम ले जायगा, और वहाँ से हम समुद्र के रास्ते घर लौट जायेंगे।"

अपने शिविर को हमने पहाडी पर लगा दिया।

वैग ने सेपियन्स से कहा, "यहाँ पर तुम्हारे लिए खाने की कमी नही है। लेकिन, मेहरबानी करके, कैम्प से बहुत दूर मत जाना, खास तौर से रात के समय। यहाँ तुम्हारे लिए तरह-तरह के खतरे हो सकते हैं। असली हाथी बेशक इन खतरो का आसानी से सामना कर सकता है, पर तुम अभी इन चीजो के अभ्यस्त नही हो।"

हाथी ने सिर हिलाया और अपनी सूड से आस पास के पेडो की शाखाओ को तोडना शुरू कर दिया। यकायक वह बहुत जोर से

चिल्लाया, अपनी सूड को उसन गुडमुड कर लिया और भागता हुआ वैग के पास आ गया।

"क्या हुआ ?" वैग ने पूछा। हाथी ने अपनी सूड को बिल्कुल वैग क चेहरे से लगा दिया।

"च, च !" वैग ने झिडकी देते हुए कहा। उन्होन मुझे अपन पास बुलाया और हाथी की सूड के अँगुली जसे छोर की ओर इशारा करत हुए बोले। "यह छोटी सी अँगुली अधे आदमियो स भी अधिक सूक्ष्म-दर्शी होती है। वास्तव मे, हाथी की यह सबसे अधिक सूक्ष्म दशक इन्द्रिय है। देखो, हमारे सेपियन्स ने अपनी अँगुली मे काँटा लगा लिया ह !"

धीरे से वैग न काटा निकाल दिया। फिर हाथी को चेतावनी देते हुए उन्होने कहा।

"देखो, तुम्हे बहुत सावधान रहन की जरूरत है। घायल सूँड वाला हाथी अपाहिज होता है। सूड को कुछ हो जाने पर तुम देखोगे कि तुम पानी भी नही पी सकते। फिर जब भी तुम्हे प्यास लगगी तुम्ह नदी या झील के पास जाना होगा और हाथियो की तरह सूँड के जरिए पानी लेकर मुह म डालने के बजाय अपने मुह से पानी पीना पडेगा। यहा पर बहुत से कँटीले पौदे ह। थोडा और आगे जाकर तलाश करो, जल्दी ही तुम विभिन्न जाति के पौदो को पहिचानना सीख जाओग।

गहरी सास लेते हुए हाथी ने अपनी सूँड को फिर गोल माल लपेट लिया और जगल की तरफ चला गया।

२७ जुलाई सब कुछ ठीक चल रहा है। हाथी जितना खाता है उस देखकर विश्वास नही होता कि कोई इतना कसे खा सकता ह।

शुरु शुरु मे उसे इस बात का बहुत खयाल था कि वह क्या खाता है और तब सिर्फ घास, पत्तिया और पतली से पतली, कोमल से कोमल शाखाओ को ही वह अपने मुँह मे रखता था। परन्तु, चूकि इतने मे उसे कभी सन्तोष नही होता था, इसलिए जल्दी ही उसने वाह जितनी मोटी शाखाओ को भी तोडना और अपने मुह मे भरना शुरु कर दिया वैसे ही जैसे असली हाथी करता है।

शिविर के आस पास के पेडो की दशा दयनीय है। ऐसा लगता है जैसे उन पर कोई वज्रपात हो गया है, अथवा कोई सवभक्षी टिड्डी दल आकर उन्हे साफ कर गया है! नीचे के पेड-पौदो मे तथा अधिक ऊचे दरख्तो की निचली शाखाओ मे एक पत्ती तक नही बची है। टहनियाँ तोड डाली गयी है, या उनको साफ कर दिया गया है, छाल निकाल ली गई है, जमीन कूडे करकट से ढक गई है। उस पर लीद, टहनिया के टुकडो, छोटे छोटे गिरा दिये गये वृक्षो के तनो का अम्बार लग गया है। सेपियन्स इस तमाम विध्वस के लिये हर समय माफी मागता रहता है, लेकिन, जैसा कि ध्वनि के अपने सकेतो के द्वारा उसने वैग को बताया है, "परिस्थितिया से वह मजबूर है! उन्ही की वजह से उसने यह सब किया है।"

१ अगस्त आज सुबह से सेपियन्स दिखलाई नही दिया। गुरु म वैगनर को इससे कोई चिन्ता नही हुई।

"वह कोई सुई तो है नही जो भूसे के ढेर मे खो जाय! वह हमे मिल जायगा। आखिर, उसे हो ही क्या सकता है? उस पर हमला करने की हिम्मत करे ऐसा कोई जानवर नही है। सम्भवत रात को वह बहुत दूर निकल गया होगा।"

घटे बीतते गये, पर सेपियन्स का कही पता निशान न मिला। अन्त मे उसकी तलाश के लिए एक दल भेजने का हमने फैसला किया।

रास्ते का पता लगाने मे देशी लोग अत्यन्त निपुण हैं। उन्होंने उसके रास्ते का जल्दी ही पता लगा लिया। हम उनके पीछे पीछे चलते गये। एक बूढा देशी आदमी रास्ते भर, केवल हाथी के उन पग चिन्हों को देखकर जिन्हे वह पीछे छोड गया था, टीका टिप्पणी करता रहा और हम समझाता रहा।

"यहाँ पर हाथी ने कुछ घास खाई थी, वहाँ पर उसने उस ताजी झाडी को खाना शुरू किया था। लगता है कि यहाँ पर वह कूदा था, किसी चीज से डर गया होगा, चीते के पग चिन्ह है! यहाँ फिर उसने छलाग लगाई है। इसके बाद उसने दौडना शुरु कर दिया था। उसके रास्ते मे जो आया उसे वह तोडता फोडता निकल गया है। और चीता? वह भी भागा था हाथी से दूर, ठीक उसकी उल्टी दिशा मे!"

हाथी के पग चिन्ह शिविर से हमें बहुत दूर ले गये। यहा वह एक दल्दल क अदर से भागा था, उसके छोडे पग-चिन्हा म पानी है। मालूम हाता है कि कीचड मे धँस गया था, परन्तु वह दौडता गया, अपने परो को कठिनाई के साथ दल-दल म घसीटता गया। फिर हम काँगो नदी के तट पर पहुँच गये। दूसरे तट की ओर तैर कर जाने के लिये हाथी यहाँ पानी म कूद गया था।

हमारे पथ दशक किसी देशी गाँव का पता लगाने चले गये। वहाँ स वे एक नाव ले आये। नदी पार करके हम दूसरे तट पर पहुँच गये, लेकिन अब उसके पग चिन्हा का पता नही मिल रहा था। क्या सेपियन्स डूब गया होगा? हाथी तर सकत हैं लेकिन क्या रिंग भी तैर सका होगा? हाथी की तरह तैरने की कला म क्या उसने दक्षता हासिल कर ली थी? देशी लोगा ने कहा कि हाथी तर कर नीचे की ओर चला गया है। कई मील तक हम धार के साथ-साथ नाव खेते

गये। पर हाथी का पता निशान हमे न मिला। वैग निराश होन लग। हमारा सारा परिश्रम व्यथ गया था। और, वास्तव मे, हाथी का हो क्या गया होगा ? अगर वह जि दा भी है, तो जगल के दूसरे जानवरा के साथ वह रह कैसे सकेगा ?

८ अगस्त पूरे हफ्ते हम हाथी की तलाश करते रहे ह, परतु सब व्यथ। वह कही अन्तर्धान हो गया है, बिना कही छोडे। देशी लोगा का पैसा चुका कर घर लौट जाने के अलावा अब हमारे सामने कोई रास्ता नही है।

१० चौपाये और दोपाये दुश्मन

"अच्छा, मैने डायरी पढ ली," डेनीसोव ने कहा।

हाथी की गदन थपथपाते हुए, वैग ने उत्तर दिया, "बहुत ठीक, उसके आगे का हिस्सा यह है। जिस समय तुम पढ रह थे, सेपियन्स, उफ ह्वाइटी ट्वाइटी, उर्फ रिंग मुझे अपने जोखिम भरे अनुभवो की दिलचस्प कहानी सुना रहा था। मैने तो उसे फिर जि दा देखने की आशा बिल्कुल ही छोड दी थी, परन्तु, लगता है कि, वह रास्ता ढूढता हुआ अपने आप योरप पहुँच गया था। आशु लिपि म लिखे गये मेरे नाट को पढकर फिर तुम इस कहानी को टाइप कर देना।"

डेनीसोव ने नोट-बुक वैगनर के हाथ से ले ली। उसमे तमाम "डैश" और "कौमा" थे। धीरे धीरे उसने पढना शुरू किया। फिर, अपने दुस्साहसी अनुभवो का जो रोमाचकारी इतिहास हाथी न बताया था उसे उसने सीधी लिपि मे लिखना शुरू कर दिया।

सेपियन्स ने वगनर को जो बताया था वह यह है

"हाथी बनने के बाद से मैंने जो जो अनुभव किय हैं उन सबको बता सकना बहुत मुश्किल है। सपने मे भी कभी मैंने यह नही सोचा था कि मै, प्रोफेसर टनर का सहायक, एक दिन अचानक हाथी बन जाऊँगा और अपन जीवन का एक भाग अफ्रीकी जगलो की झाडिया मे बिताऊगा ! फिर भी मैं कोशिश करूँगा कि घटनाएँ जिस तरह घटी थी उसी तरह, क्रम पूवक, आपको बताऊँ।

'उस रात कैम्प (शिविर) से बहुत दूर म नही गया था। वही पास के एक चरागाह म शातिपूवक घास उखाड रहा था। मैं उसे पूरे पूरे गुच्छो मे उखाड लेता, जडो म चिपकी मिट्टी को झाडने के लिए उसको हिलाता, और फिर उस रसीली घास को चबाने लगता। जब भर पेट घास मैं खा चुका तो घास के और मैदानो की तलाश मे म जगल म और अन्दर चला गया। रोशनी काफी थी, चादनी छिटकी हुई थी। जुगुनुएँ, चमगीदड तथा उल्लू की तरह के अपरिचित रात के पक्षी चारो ओर उड रह थे। धीरे धीरे म आगे बढता गया। चलने म मुझे कोई कठिनाई नही हो रही थी। अपन शरीर के भार की चेतना मुझे नही थी। म कम-से कम आवाज कर रहा था। अपनी सूँड से मुझे खुशबू मिली कि मेरे दाहिने और बायें, दोनो तरफ, जगली जानवर ह। लेकिन वे किस प्रकार के थे यह मुझे नही मालूम था। मुझे लगा कि मुझे कोई चीज नही डरा सकती। म दूसरे सभी जगली जानवरो से अधिक मजबूत हूँ। बबर शेर को भी मेरा सम्मान करना चाहिए। परन्तु, इसके बावजूद, हल्की सी सरसराहट भी होती, भागते हुए चूहे अथवा लोमडी की तरह के किसी छोटे से प्राणी की भी जरा सी आवाज आती, तो म भय स आशकित हो उठता। एक छोटा सा सुअर मुझे मिला तो उसे निकल जाने देने के लिए मै एक तरफ खडा हो गया। शायद अपनी शक्ति का अभी तक मुझे पूरा अहसास नही था। परन्तु एक बात से मुझे सान्त्वना मिलती थी म जानता था कि नजदीक ही आदमी थ मेरी सहायता के लिए सदा

तैयार रहने वाले मेरे दोस्त नजदीक ही थे।

"इस प्रकार, धीरे धीरे पैर रखता हुआ, मैं एक छोट से खुले मैदान मे पहुँच गया। घास का एक गुच्छा उखाडने के लिए अपनी सूड को मैं नीचा करने ही वाला था कि अचानक मुझे एक जगली जानवर की गध मिली और मेरे कानो को सुनाई दिया कि वही घास म कुछ सरसराहट हो रही थी। मैंने अपनी सूड ऊपर उठाई, रक्षा की दृष्टि से सावधानी से उसे मोड लिया, और अपने आस पास देखने लगा। अचानक मने देखा कि एक छोटी सी नदी के किनारे की घनी घास मे एक चीता छिपा खडा था। लालच भरी, भूखी नजरो से वह मुझे घूर रहा था। उसका शरीर तना हुआ था, टूट पडने के लिए वह तैयार था। एक क्षण और और वह कूद कर मेरी गदन पर आ गया होता! मैं नही जानता कि मैंने ऐसा क्यो किया, परन्तु मेरे ऊपर आतक की एक भावना सवार हो गयी जिसे मैं कण्ट्रोल न कर सका, और मैं भाग खडा हुआ। मेरा सारा शरीर काँप रहा था। सम्भवत अभी तक हाथी होने का अभ्यस्त मैं नही हो पाया था और एक मानव प्राणी की तरह ही सोचता और अनुभव करता था।

"पेड टट टूटकर मेरे रास्ते मे गिर रह थे। मैं पागल की तरह तेजी से भाग रहा था। अनेक जगली जानवर इसे देखकर डर गये। झाडियो और घास म से वे बाहर निकल आये और चारो दिशाओ मे भागन लग। उनकी भगदड से मेरा डर और भी बढ गया। मुझे लगता था कि वनो का हर जगली जानवर मेरा पीछा कर रहा है। मुझे पता नही कि कब तक मैं इसी तरह भागता रहा। न मुझे यही पता था कि मैं कहा जा रहा हूँ। परन्तु आखिरकार, मुझे एकदम रुक जाना पडा। सामन एक बाधा आ गयी थी—एक नदी बह रही थी। मैं तर नही सकता अथवा, कहना चाहिए कि, जब मैं मनुष्य था तब मैं तर नही पाता था। फिर भी, मैंने सोचा कि चीता मेरे पीछे लगा

हुआ है और, इसलिए, मैं नदी म कद गया और अपने पैरो को इस तरह चलाने लगा जैसे अब भी दौड ही रहा था। मैंने देखा कि मैं तैर रहा था। पानी ने मेरा मिजाज कुछ ठडा किया और म अधिक शान्ति अनुभव करने लगा। परन्तु मेरे अन्दर अब भी वही आशका भरी हुई थी कि सारा जगल भूखे वन्य पशुओ से भरा पडा है और वे तैयार बैठे ह कि ज्योही मैं तट पर पैर रखू त्योही मेरे ऊपर टूट पडें। अस्तु, मैं तैरता ही चला गया। घण्टो पर घण्टे बीतते गये। सूय कभी का निकल चुका था और मैं अब भी तैरता ही चला जा रहा था। नदी के ऊपर लोगो को ले जाती हुई नावें आयी, परन्तु लोगो से मुझे डर नही था—तब तक नही जब तक कि एक नाव से गोली चलने की आवाज मैंने नही सुनी। मेरे दिमाग मे यह खयाल ही नही आया कि वे मेरे ऊपर गोली चला रह थे, इसलिए मैं तैरता ही चला गया। फिर एक और गोली की आवाज़ आयी और अचानक मुझे लगा कि किसी मधु मक्खी ने मेरी गदन के ऊपर काट लिया है। मैंने सिर घुमाया तो एक सफेद चमडे वाले आदमी को देखा। वह अग्रेज की तरह के कपडे पहने हुए था। वह नाव पर बैठा था और देशी लोग डाँड चला रहे थे। मेरे ऊपर वही गोली चला रहा था। अफसोस! मालूम होता है कि इन्सान भी मेरे लिए उतने ही घातक थे जितने कि जगली जानवर!

'फिर म क्या करता? मैं चाहता था कि चिल्लाकर अग्रेज से कहूँ कि वह गोली न चलाए, लेकिन केवल चू चू की ही तरह की एक आवाज मैं कर पाया। निशाने पर अगर अग्रेज की गोली लग गयी तो मैं मर जाऊँगा। आपको याद है कि आपने मुझे उस भेद्य स्थल के बारे मे बताया था—आख और कान के बीच के उस स्थान के बारे मे जहाँ मस्तिष्क रहता है। मुझे आपकी सलाह याद आयी। मने अपना सिर मोड लिया जिससे कि इस स्थल पर गोलियाँ न लग सकें और फिर मैं अपनी पूरी ताकत से किनारे की तरफ तरने लगा।

ल्डखडाता हुआ जिस समय मैं नदी के तट पर चढ रहा था, उस समय एक अच्छा खासा निशाना बन सकता था, लेकिन कम से कम मेरा सिर तो जगल की तरफ घूमा हुआ था।

"दूसरी तरफ, स्पष्ट था कि अग्रेज बडे जानवरो के शिकार के तौर-तरीको से भली भाति परिचित था, इसलिए उसने सोचा कि मेरे पुट्ठे पर गोलियाँ मारना बेकार था। उसने गोली चलाना बद कर दिया। वह शायद इतजार कर रहा था कि मैं उसकी तरफ घूमू और उसके सामने आ जाऊँ और तब वह गोली चलाये। लेकिन मैं तेजी से झाडियो म घुस गया। उस वक्त जगली जानवरो का जरा भी खयाल मेरे दिमाग म नही था।

"जगल अधिकाधिक घना होता गया। लताएँ और गुल्म मेरा रास्ता रोकते थे। थोडी ही देर मे उनमे मैं इस तरह उलझ गया कि उन्ह अपने पास स दूर न कर सका। मुझे रुक जाना पडा। मैं इतनी बुरी तरह से थक गया था कि वही अपनी पीठ के बल पड गया। इस बात की जरा भी चिन्ता मैंने नही की कि, हाथी के रूप म, मुझे वास्तव म इस तरह की चीज करनी चाहिए या नहीं।

"और फिर मने एक भयानक स्वप्न देखा। मैंने स्वप्न म देखा कि मैं युनिवर्सिटी का लैक्चरर हू, प्रोफेसर टनर का सहायक हूँ। मैं बर्लिन की उण्टर डेन लिण्डन पर स्थित अपने छोटे-से अध्ययन-कक्ष मे पहुँच गया था। गर्मी की सुहावनी रात थी। खुली खिडकी से एक एकाकी तारा टिमटिमाता हुआ दिखलाई दे रहा था। नीबू के वृक्षा की खुशबू बाहर से बह-बहकर आ रही थी। छोटी-सी मेज पर एक नीले वैनशियन काँच के गुल्दस्ते मे मीठी व खुशबू वाले लाल गुलनार के कुछ फूल लगे हुये थे। इन मनहर सुगन्धो के बीच, एक बिन-बुलाये मेहमान की तरह एक तेज, अरुचिपूर्ण मीठी-सी खुशबू आई। वह काले मुनक्के

जैसी खुशबू थी। परन्तु मैं पहचान गया कि यह एक जानवर की गध थी। उस समय मैं अगले दिन के लैक्चर की तैयारी कर रहा था। मेरा सिर किताबो के ऊपर थका हुआ था। फिर मैं थोडी देर के लिए ऊँघ गया। लेकिन अब भी दिमाग मे नीबुओ, गुल्नारो और वन्य-पशुओ की गध घूम रही थी। फिर मैंने एक दूसरा भयानक स्वप्न देखा मैं एक हाथी बन गया हूँ और एक उष्ण-कटिबधीय जगल म पहुँच गया हूँ। जगली जानवरो की गध अधिकाधिक तीक्ष्ण होती गई और उसने मुझे जगा दिया। मैं जग गया, या कम से कम मुझे ऐसा ही लगा। परन्तु यह सपना नही था। मैं सचमुच एक हाथी बन गया था, ठीक उसी तरह जिस तरह कि लूसियस एक गधा* बन गया था। अन्तर बस इतना था कि मेरा रूपान्तरण आधुनिक विज्ञान के करिश्मे से हुआ था।

"मुझे दो पैर वाले एक जानवर की गध मिली। यह बास एक अफ्रीकी के पसीने की थी। उसी के साथ एक सफेद चमडी वाले आदमी की भी बास मिली हुई थी। शायद यह वही आदमी था जिसने नाव से मेरे ऊपर गोली चलाई थी। अच्छा, तो वह फिर मेरे पीछे लग गया है! शायद वह किसी झाडी के पीछे छिपा खडा था और उसकी बन्दूक की नली मेरी आख और कान के बीच के उस छोटे से स्थान पर निशाना लगाने की कोशिश कर रही थी।

"मैं फौरन कूद कर खडा हो गया। बास दाहिने हाथ की तरफ से आ रही थी। इसलिए मुझे बाये हाथ की तरफ भागना चाहिये। सो मैंने दौडना शुरू कर दिया। झाडियो को तोडता और रास्ते से अलग ढकेलता हुआ मैं भाग चला। और तब बिना यह जाने कि ऐसा करना किसने सिखला दिया था—मैंने उसी तरह काम किया जिस तरह पीछा करने वाले को गुमराह करने के लिए हाथी करते हैं। खूब शोरगुल

* लूसियस—अपूलियस के सुनहरे गधे का नायक।—स०

के साथ पीछे भागने के बाद, हाथी एकदम स्थिर और खामोश हो जाता है। किसी प्रकार की आवाज सुनाई न देने पर, पीछा करने वाला सोचता है कि हाथी रास्ते म ही रुक गया है। परन्तु, वास्तव म, हाथी उस वक्त भी भाग रहा होता है। बात सिफ इतनी ही होती है कि वह बहुत सावधानी मे, बिल्ली से भी अधिक आहिस्ता से, शाखाओ को हटाता हुआ चलने लगता है। बिल्ली बहुत चालाक होती है परन्तु इसमे वह हाथी का मुकाबला नही कर सकती।

'मैं दो मील तक दौडता ही चला गया। उसके बाद ही मुझमे इतना साहस आया कि मुडकर हवा को सूघू। लागो की बास अब भी आ रही थी, परन्तु मेरा खयाल था कि वे वहा से कम से कम एक मील की दूरी पर थे। मैंने भागना जारी रक्खा।

'उष्ण कटिबन्धीय रात फिर नीचे उतर आइ थी। गर्मी इतनी अधिक थी कि सास लेना मुश्किल था और अँधेरा अन्धेपन की तरह निविड था। अँधेरा होते ही मेरा डर भी लौट आया। मैं चारो तरफ भय स घिर गया। मेरा यह भय भी अन्धकार की ही तरह अनन्त था। बचने के लिए भाग कर मैं कहाँ जा सकता था? मैं कर ही क्या सकता था? एक जगह खडा रहना तो चलते रहने से भी भयानक मालूम पडता था। इसलिए स्थिर, अथक गति से, मैं आगे बढता गया।

"जल्दी ही मैंने देखा कि मेरे पैर पानी मे छप छप कर रहे ह। कुछ कदम और आगे बढा तो मैंने देखा कि मैं एक किनारे पर खडा हुआ हूँ। किस चीज का किनारा? नदी का? झील का? मैंने फिर तैरने का फैसला किया। पानी म कम से कम शेरो और चीतो के हमला से तो मैं निरापद अनुभव कर सकता था! मैं तैरता चला गया। तब, अचानक, मैंने देखा कि मैं तलहटी पर, उथले पानी म खडा हुआ हूँ।

"मेर रास्ते म सोते, छोटी नदियाँ और दलदल आये। घास क अन्दर से छोट छोट, अदृश्य जीव-जन्तु मेरे ऊपर पुकारते थे। बडे बडे मढक डर कर इधर उधर कूद जात थे। सारी रात मैं भटकता रहा और सुबह हाने होत मुझे मान लेना पडा कि मैं एकदम खो गया हूँ।

"कुछ दिन और बीतने के बाद उन चीजो स मेरा डरना खत्म हो गया जो पहले मेरे अन्दर जबदस्त आतक की सृष्टि कर देती थी। यह अजीब चीज थी लेकिन सही थी कि, अपने नये जीवन के प्रथम कुछ दिना तक, मुझे यह भी डर रहता था कि मेरे काँटे गड जायँगे। शायद मरी सूड की अँगुली म एक बार जो वह काँटा लग गया था उसी की वजह से म इतना डरन लग गया था। लेकिन जल्दी ही मुझे पता चल गया कि तेज से तेज, मजबूत से मजबूत काटे भी मेरा बाल बाका नही कर सकते क्योकि मरी कडी खाल एक जिरह बख्तर की तरह मेरी रक्षा करती थी। शुरू के दिनो म मुझे डर रहता था कि कही गल्ती से किसी जहरीले साप के ऊपर मेरा पर न पड जाय। और पहले पहल जब ऐसा हुआ और एक साँप मेरे पर म लिपट गया तथा मुझे काटने की कोशिश करन लगा तो हाथी का मेरा बडा दिल डर के मारे सुन हो गया! लेकिन जल्दी ही मुझे पता चल गया कि साप म मुझे नुकसान पहुँचान की ताकत नही है। उसके बाद से तो साँपो को अपने परो के नीचे कुचलने म मैंने आनन्द का भी अनुभव किया है और, जिस साँप न भी मर रास्ते से हटने म देरी लगाई है, उसे मैंने रौद दिया है।

"परन्तु फिर भी कोई एमी चीज थी जो मेर अन्दर भय की सृष्टि कर दनी थी। रात को मुझे डर लगता रहता था कि बडे जगली जानवर, शेर और चीता, न कही मेरे ऊपर हमला कर दे। मैं उनसे अधिक मजबूत था और साधन भी मर पास उनस बहतर थे, किन्तु

प्रवत्ति नही थी जो ल्डन के काम मे मेरी मदद करती। यहा तक कि दिन मे भी मुझे डर लगता था—वडे जानवरो का, शिकार करन वालो का, खासतौर से सफेद चमडी वालो का। ओह, वे सफेद चमडी वाले लोग! तमाम जगली जानवरो से भी वे अधिक खतरनाक है! उनके फदो और जालो और गडटो का मुझे डर नही था। न आग जलाकर और शोर मचाकर मुझे भयभीत करके ही कोई किसी अहाते के अदर हाक सकता था। जहा तक मेरा सम्बध था, मुझे सिफ छिपे हुये गड्टो का ही डर लगता था कि कही उनमे न मैं गिर जाऊँ। इसलिए अपन आगे के रास्ते को मैं हमशा बहुत ध्यान स देखता हुआ चलता था।

"कोई गाव आता तो उसकी खुशबू मुझे कई मील पहले से मिल जाती थी और मैं पूरी कोशिश करता था कि जिन स्थाना मे आदमी रहते है उनसे अधिक से अधिक दूर रहूँ। गध की अपनी सूक्ष्म अनुभूति के द्वारा भिन्न भिन्न देशी कबीलो को भी मैं पहिचान लेता था। उनमे से कुछ मेरे लिए अपेक्षाकृत अधिक खतरनाक थ और कुछ—कम खतरनाक। कुछ से कोई भी खतरा नही था।

"एक दिन जब मैं अपनी सूड को सामने फैला कर हवा का आनन्द ले रहा था तो मुझे एक नये प्रकार की गध की खुशबू आई। मैं तय न कर सका कि वह किसी जगली जानवर की गध थी या इसान की। अधिक सम्भावना यही थी कि वह किसी आदमी की थी। मेरा कौतूहल जाग उठा। आखिर तो मैं जगल के बारे मे हर चीज को जानन की कोशिश कर रहा था। जिस चीज से भी मुझे खतरा हो सकता था उसके बारे म कुछ न कुछ जानना मेरे लिए जरूरी था। मैं गध के पीछे हो लिया और उसी की दिशा मे ऐस चलने लगा जैसे कोई दिग्-सूचक यत्र द्वारा बनाये जान वाले रास्ते पर चल रहा हूँ। मैं बहुत

सावधानी से चल रहा था। रात हो चुकी थी। यह वह समय था जब अफ्रीकी लोग गहरी नींद में सो जाते हैं। मैं अपने रास्ते पर चलता गया और गति अधिकाधिक तेज होती गई। मैं चुपके चुपके जा रहा था। साथ ही साथ, आगे के रास्ते को भी चौकसी से देखता जाता था।

"सुबह होते होते मैं जंगल के छोर पर पहुँच गया। घने लता-गुल्मों के बीच अपने को छिपाये रखते हुए, मैंने सामने के खुले मैदान पर दृष्टि दौड़ाई। एक पीला-सा चाँद जंगल के ऊपर लटका हुआ था। कई नीची-नीची नुकीले कोनों वाली झोपड़ियों पर उसकी धूमिल, मटमैली रोशनी पड़ रही थी। इस तरह की झोपड़ियों में मझोले कद के आदमी की ही गुजर हो सकती थी और वह भी केवल झुककर ही उनके अन्दर प्रवेश कर सकता था। वातावरण निस्तब्ध था। कहीं कोई कुत्ता तक नहीं भौंक रहा था। मैं ओट ही ओट आगे बढ़ा। मन ही मन मैं आश्चर्य कर रहा था कि इन नन्ही नन्ही झोपड़ियों में, जो बच्चों द्वारा बनाये जाने वाले गुड्डे-गुड़िया के घरौंदों जैसी लगती थीं, कौन रहता होगा।

"अचानक मैंने देखा कि आदमी से मिलता जुलता एक छोटा सा जीव जमीन के एक छेद में से चढ़कर बाहर निकला। वह सीधा खड़ा हो गया और धीमे से उसने सीटी बजायी। उसकी आवाज सुनकर एक और जीव एक पेड़ की शाख से कूदकर जमीन पर आ गया। फिर दो और जीव वहीं नमूदार हो गये। वे अपेक्षाकृत एक बड़ी झोपड़ी के इर्द गिर्द जो लगभग ५ फुट ऊँची रही होगी, जमा हो गये और एक कान्फ्रेंस जैसी करने लगे। आसमान से सूर्य की पहली किरणें फूटीं तो मैं उन बौनों को अच्छी तरह देख सका—इन विचित्र जीवों के लिए इसी शब्द का प्रयोग होता है! तब मैं समझा कि भटककर मैं दुनिया के इन सबसे नाटे लोगों के एक गाँव में आ

पहुँचा हूँ। उनकी त्वचा हल्के भूरे रंग की थी, उनके बाल लगभग लाल थे। उनके शरीर सुंदर और सुडौल थे, लेकिन उनकी ऊँचाई ३ या ४ फुट से अधिक न थी। इनमें से कुछ "बच्चों" के घनी घुंघराली दाढ़िया थीं। वे ऊँची, तेज, चीखती हुई-सी आवाजों म जल्दी जल्दी बात करते थे।

"यह दृश्य बहुत मनोरंजक था, फिर भी मुझे डर लग रहा था। इन बौनों ने मेरे अन्दर ऐसे जबदस्त भय का सचार कर दिया था कि उनके स्थान मे अगर दैत्यों से मेरा सामना हो गया होता तो शायद मुझे ज्यादा अच्छा लगता। वास्तव म तो किसी सफेद चमडी वाले आदमी स मिलना भी मैं बेहतर समझता। ये बौने यद्यपि इतने छोटे होते हैं परन्तु हाथी के वे सबसे भयकर शत्रु हैं। इस बात को हाथी बनने से पहले से ही मैं जानता था। ये लोग अत्यन्त कुशल तीरंदाज होते हैं और बर्छी या नेजा चलाने मे उनका सानी नही होता। वे जहर मे बुझे तीरो का इस्तेमाल करते है। इनमे स एक भी तीर लग जाय तो हाथी की मृत्यु हो सकती है। वे चुपचाप पीछे से आ पहुँचते हैं, हाथी के पिछले पैरो पर जाल फेंक देते ह, अथवा एडी के सिरे मे तेज चाकू घुसेडकर उसे काट देते हैं। अपने गाँवो के इद गिद जहर म बुझे काटो और लकडियो को वे बिखरा देते ह।

"मैं जल्दी से मुडा और उतनी ही तेजी से दौडने लगा जितनी तेजी से चीते के पास से भागते समय दौडा था। अपने पीछे मैंने आवाजें और तेजी से पीछा करने वालो का शोर सुना। रास्ता अगर समतल रहा होता तो आसानी से मैं उन्हे पीछे छोड देता। लेकिन जगल से भागते समय मुझे अनेक अलघ्य अडचनो का सामना करना पडता था। और जो लोग मेरा पीछा कर रहे थे वे बन्दरो की नाई चपल, छिपकलियो की तरह गतिशील, तथा बोरजोई कुत्ते की तरह कभी न थकने वाले थे। वे तेजी से दौड रहे थे—कोई भी चीज जसे

उनके लिय बाधा नही थी । मेरा पीछा करन वाले अब और करीब आ गये थे उन्होन कई भाले मेरी तरफ फक, लेकिन घने पेड पौधा ने मुझे बचा लिया । मैं बुरी तरह हाफ रहा था और थकान के मारे किसी भी समय जमीन पर गिर जा सकता था । लेकिन व छोटे लोग न तो कभी ठोकर खाते थे, न गिरते थे, और न एक क्षण के लिए भी रुकते थे । व बराबर मेरा पीछा किये जा रहे थे ।

मैंने काफी कडुवे अनुभवा के बाद समझा कि हाथी बनना कोई आसान काम नही है । हाथी जसे विशाल और बलशाली जानवर का सपूर्ण जीवन—जीवन के लिए एक अनवरत सघष होना है । यह सघष क्षण भर के लिए भी मद्धिम नही पडता । मुझे लगा कि इस बात की बहुत ही कम सम्भावना है कि कोई हाथी दरअसल १०० साल या इससे भी अधिक समय तक जीवित रह सके । उन्ह जितनी चिन्ताओ का सामना करना पडता है उन्ह देखत हुए, निश्चय ही, उन्ह इन्साना से बहुत पहले मर जाना चाहिए । लकिन सभव है कि असली हाथी इतनी चिन्ता न करत हा जितनी मैं कर रहा था । मेरा मानवी मस्तिष्क अत्यधिक तना हुआ था, वह बहुत आसनी से उत्तेजित हो उठता था । मैं आप से सच-सच कहता हू कि उन क्षणा म इस जीवन से, जिसम मत्यु बराबर मेरा पीछा करती रहती थी, मुझे मौत कही अधिक अच्छी मालूम होती थी । मैं सोचता तो फिर क्या मैं आत्म-समर्पण कर दू ? तो क्या मैं रुक जाऊँ और दो पाँव वाले अपने सघातको के जहर बुझे नेजा और तीरा का शिकार बन जाऊँ ? इसके लिए मैं लगभग तैयार हो गया था । तभी मेरी इच्छा बदल गयी ! अचानक मेरी सूड को हाथिया क एक गोल की तेज गन्ध मिली । मुझे बहुत आश्चय हुआ । तो क्या हाथियो के बीच मैं सुरक्षित हो सकता हूँ ?

'घना जगल विरल होने लगा । धीरे धीरे वह ग़ायब हो गया और घास के मदान आ गये । मैदान म दूर-दूर ऊँचे पड खडे थे जिनम पीछा करने वाला क तीरा मे बचन मे मुझे अब भी मदद मिलती थी ।

"आडा-तिरछा चलता हुआ, तेज़ी से मैं आगे बढ़ता गया। बौना के लिए जगल मे जितनी आसानी थी उतनी यहा न थी। यद्यपि अपने पीछे काफी चौडा रास्ता मैं छोडता चला आ रहा था, फिर भी, घास के मैदान के पौधों और उसकी घासो के मजबूत डठलो की वजह से, वे तेज़ी से आगे नही बढ पा रहे थे। हाथिया को म देख तो नही पा रहा था, लेकिन उनकी गध अधिकाधिक तेज होती जा रही थी।

"रास्ते मे मुझे गहरे गड्ढे मिले। उनमे हाथी फँसे हुए थे। वे बालू म बैठी हुई मुर्गियो की तरह लगते थे। समय-समय पर मुझे लीद के ढेर मिल जाते। पडा के पहले ही झुण्ड के पास जब मैं पहुँचा तो मैंने देखा कि वहाँ हाथियो का एक गोल जमीन पर फैला पडा था। कुछ दूसरे हाथी पेडो के पास खडे थे। उनकी सूडो म पडो की शाखाएँ थीं जिन्हे वे पखा की तरह हिला रहा थ। हाथियो की दुमे भी हिल रही थी। उनके कान छातो की तरह ऊपर की ओर उठे हुए थे। दूसरे कुछ हाथी पास के ही सोते मे नहा रहे थे। हवा की दिशा मेरे विरुद्ध थी, इसलिए हाथियो को मेरी गध नही मिल सकी थी। परन्तु जब उन्होने मेरे पैरो की आवाज सुनी तब तो जोर का रौला ही मच गया। आप कल्पना भी नही कर सकते कि फिर क्या हालत हुई होगी। सारे हाथी पागलो की तरह चिंघाडते हुए नदी के किनारे इधर उधर दौडने लगे। उनके नेता ने अपने पीछे के लोगो को बचाने की फिक्र करने के बजाय, खुद ही दुम दबाकर भागना शुरू कर दिया। वह कूद कर पानी म घुस गया और तैर कर दूसरे किनारे निकल गया। हथनियाँ अपने बच्चो के लिए चिन्तित थी। यद्यपि उनके बच्चे वयस्क जानवरो के ही बराबर थे फिर भी उनकी माओ ने उन्हे बचाने की कोशिश की। पीछे के हाथियो की रक्षा करने का काम हथनियो के ही जिम्मे पडा। मैं सोच रहा था कि बात क्या है क्या मेरे अचानक वहाँ जा पहुँचने से वे इस तरह भयभीत हो उठे थे? अथवा, पागलो जैसी

अपनी कूद-भाग के दौरान मे उन्होने किसी और खतरे का आभास पा लिया था—उस खतरे के अलावा जिसकी वजह से मै भाग रहा था ?

"अपनी पूरी शक्ति से मैं पानी मे कूद पडा और कई हथनियो से, जो अपने बच्चा को लेकर चल रही थी, पहले ही मैंने नदी पार कर ली। मैंने कोशिश की कि आगे निकले जाऊँ जिसस कि उन तमाम हाथियो का दल मरे और मेरा पीछा करने वालो के बीच आ जाय। निस्सन्देह, यह मेरी स्वार्थान्धता थी। लेकिन म देख रहा था कि हथनियो को छोडकर अन्य सब हाथी भी इसी तरह का काम कर रहे थे। मुझे आवाज मिली कि बौने दौडते-दौडते नदी के पास तक आ गये ह। उनकी चू चू करती आवाजें हाथिया की चिंघाडा के साथ मिलकर भारी कोहराम पैदा कर रही थी। वहाँ पर कोई अत्यत दुखान्त घटना घट रही थी, परन्तु मै इतना डरा हुआ था कि पीछे की ओर देखन की भी हिम्मत न कर सका। खुले मैदान मे मैं दौडता ही चला गया। इस बात का मुझे आज तक पता नही लग सका कि बौना तथा दन्तावार पशुओ के बीच नदी के तट पर हुई उस लडाई का अन्त किस प्रकार हुआ था।

"हाथिया के साथ-साथ मैं कई घटा तक दौडता रहा। मैं इतना थक गया था कि उनका साथ देना मुझे बहुत भारी पड रहा था। किन्तु मैंन फैसला कर लिया था कि चाहे जो हो म पीछे न रहूँगा। अगर हाथी मुझे अपने साथ ले लेंगे तो मेरा जीवन अपक्षाकृत अधिक निरापद हो जायगा। वे उस स्थान को भी जानते थे और, मरी अपेक्षा, अपने दुश्मना को भी वे अधिक अच्छी तरह पहचानत थे।

११ हाथियो के गोल मे

"आखिरकार मुखिया हाथी रुका। अन्य हाथियो न भी ऐसा ही

किया। घूमकर हम सबने अपने चारो तरफ नजर दौडाई। पीछा करने वाले अन्तर्धान हो गय थे। केवल दो छोटे हाथी और एक हथिनी हमारे पीछे दौडती चली आ रही थी।

"जब तक पीछे के तमाम हाथी हमारे पास नही आ गये और सबने थोडा-बहुत विश्राम नही कर लिया तब तक मेरी उपस्थिति की ओर जैसे किसी ने ध्यान नही दिया। इसके बाद उनम से एक दो हाथी मेरे पास आये और अपनी सूडो से उन्होन मुझे सूघने का प्रयत्न किया। उन्होने मुझे अच्छी तरह ऊपर-नीचे देखा, या चुपचाप केवल मेरी परिक्रमा करके चले गये। उन्होन मुलायम, बुडबुडाती हुई सी आवाज की जैसे कि मुझसे कुछ पूछ रहे थे। लकिन म जवाब न दे सका। मै उन आवाज़ो के अर्थ को भी न समझ सका जो वे कर रहे थे। मैं यह भी न समझ पाया कि आवाज़ें इनकी नापसन्दगी को ज़ाहिर कर रही थी या उनके सन्तोष को।

"सबसे ज्यादा मैं उनके मुखिया हाथी से डरता था। में जानता था कि वैगनर द्वारा आपरेशन किये जाने से पहले मैं भी एक मुखिया हाथी था। अगर यह वही गोला हुआ? अगर नये मुखिया हाथी ने नेतृत्व का फैसला करने के लिए मेरे साथ लडना शुरू कर दिया? में आप से सच कहता हूँ कि मैं बहुत घबडा गया था, और जब वह दैत्याकार, बलशाली मुखिया हाथी मेरे पास आया और सयोगवश उसका दात मेरी बगल मे लग गया तब तो मेरे होश ही फाख्ता हो गये। किन्तु मैं बिल्कुल नम्र ही बना रहा। उसने मुझे दूसरी बार खोदा, जैसे कि लडने के लिये चुनौती दे रहा था। लेकिन मैंने चुनौती अस्वीकार कर दी और एक तरफ को हट गया। तब हाथी ने अपनी सूड को मोड लिया और, ओठो के बीच हल्के से रखकर, उसने उसे अपने मुह के अन्दर भर लिया। बाद मे मुझे पता चला कि यह हाथियो के चिन्ता या आश्चर्य प्रकट करने का तरीका है। मुखिया हाथी स्पष्ट-

तया मेरी विनम्रता से आश्चर्य मे पड गया था , उसकी समझ म नहीं आ रहा था कि मरे साथ किस तरह का सलूक करे। लेकिन चूंकि तब तक मैन हाथिया की भाषा नही सीखी थी, इसलिये, यह सोचकर कि इस प्रकार शायद वह मरा स्वागत कर रहा था, मने भी अपनी सूड को उसी तरह अपने मुह मे भर लिया। हाथी ज़ोर से चिल्लाया और वहा से हट गया।

"अब मैं हाथी की हर आवाज का समझता हूँ। मैं जानता हूँ कि मुलायम, गडगडाहट करती हुई सी आवाज और किकियान जैसी आवाज, दाना ही उनके सतोष को जाहिर करती हैं। भय जोर की, गजना करती हुई आवाज के द्वारा व्यक्त किया जाता है, और अचानक डर को सक्षिप्त तज आवाज़ के द्वारा। सबसे पहले जब मैं उनके सामने पहुँचा था तो हाथिया के गोल ने इसी तरह की सक्षिप्त, तेज आवाजे की थी। घायल हो जान अथवा गहन पीडा मे हान के कारण जब व आवश म होते है, तब व गले स गहरी आवाजें करते है। एक हाथी नदी के किनारे छूट गया था, बौने ने जब उस पर हमला किया था ता उसन इसी तरह की करुण आवाज की थी। सम्भवत किसी जहर-बुझे बाण ने उमे घातक रूप स घायल कर दिया था। हाथी जब किसी दुश्मन पर प्रहार करत है तब वे एक तेज, चुभान वाली चिंचियाती हुई सी आवाज करते हैं। हाथिया के शब्द भण्डार के केवल बुनियादी "शब्दा" को मैं यहाँ बता रहा हूँ—उन 'शब्दा' को जा उनकी अधिक महत्वपूण सम्वदनाओ की अभिव्यक्ति करत ह। परन्तु इन 'शब्दा' के अथ म काफी बारीक फक भी हाते ह।

"शुरू-शुरू म म बहुत डरता था कि हाथी समझ जायेंगे कि म साधारण हाथी नही हूँ आर व मुझे गाल स भगा देंग। कदाचित उनका लगा भी कि मरा मामला कुछ ठीक नहीं है। परन्तु, जसा कि देखा गया, उनका रुख मेरी तरफ शान्तिपूण था। व मरे साथ एक एस

बच्चे जैसा व्यवहार करते थे जिसका ठीक से विकास नही हुआ है। उनका खयाल था कि मेरा दिमाग तो बिल्कुल ठीक नही था, लेकिन मैं किसी का नुकसान नही पहुँचाऊँगा !

'मेरा जीवन अब काफी नीरस था। सब जगह हम इकहरी ही पांति बनाकर जाते थे। सुबह १० और ११ के बीच हम आराम करने लगते और ३ बजे तक आराम करते रहते। उसके बाद फिर खाने के लिए निकल जाते। रात को भी हम कुछ घंटे आराम करते थे। कुछ हाथी लेट जाते थे, ऊँघते तो लगभग सबके सब थे, लेकिन एक हाथी हमेशा पहरे पर तैनात रहता था।

"लेकिन मैं किसी तरह से अपने को इस बात के लिए राजी नही कर पाता था कि अपने शेष जीवन को हाथियो के ही गोल के साथ बिता दू। मानव प्राणियो के सम्पर्क के लिए मैं तरसता था। मेरी शक्ल एक हाथी जैसी हो सकती थी, लेकिन रहना मुझे शान्तिपूर्वक और निश्चित भाव से साधारण लोगो के साथ ही पसन्द था। मैं खुशी खुशी सफेद चमडी वाले लोगो के पास चला जाता, लेकिन मुझे डर था कि मेरे दाँतो के लिए वे मुझे मार डालेंगे। मैं स्वीकार करता हूँ कि मैंने पूरी कोशिश की थी कि अपने दाँतो को खराब कर दू जिससे कि इन्सान की नजर म वे बेकार हो जायें। लेकिन इसका कोई परिणाम न निकला। हाथी के दात या तो अटूट होते है, या फिर मैं जानता नही था कि उन्हे कैसे तोडा जाता है और इसलिए एक महीने से भी अधिक समय तक मैं हाथियो के साथ इधर-उधर घूमता रहा।

"एक दिन हमलोग एक खुले मैदान मे चर रहे थे। हमारे चारो तरफ घास का सीमाहीन मैदान फैला हुआ था। मैं पहरे की 'ड्यूटी' पर था। तारो भरी रात थी। चांद नही था। गोल मे अपेक्षाकृत खामोशी थी। और भी अच्छी तरह से सुन सकने तथा रात की गन्धो को सूघने के उद्देश्य से मैं कुछ दूर निकल गया। परन्तु विभिन्न घासो,

छोटे छोटे सरीसृपो (उरगा) तथा अन्य अहानिकर प्राणियो के अलावा और किसी चीज़ की गन्ध मुझे न मिली। यकायक कुछ दूरी पर, जैसे कि बिलकुल क्षितिज पर, एक रोशनी कौंध उठी। फिर वह बुझ गयी, एक बार फिर चमकी और अब उसमे से लपटें फूट पड़ी।

कुछ क्षण बीते और फिर, पहले शोले के बायें तरफ, एक दूसरी रोशनी चमक उठी। फिर कुछ और दूरी पर, तीसरी और चौथी लपटें भभक उठी। रात मे पड़ाव डालने वाले बड़े जानवरो के शिकारियो की रोशनिया ये नही थी। रोशनिया बराबर बराबर फासले पर जल रही थी। उनको देखकर ऐसा लगता था जैसे किसी राजमार्ग पर किसी ने लैम्पो की एक पाति जला दी हो। फिर, उसी क्षण, दूसरी तरफ की आगो से इसी प्रकार की झिलमिलाती हुई रोशनियाँ मुझे दिखलाई पडी। हम आगो की दो पातो के बीच मे थे। मुझे लगा कि जल्दी ही इस राजमार्ग के एक छोर पर आगो की दोनो पातो के बीच मे, शिकारी गोलिया चलाना और चिल्लाना शुरू कर देंगे और उसके दूसरे छोर पर, गड्ढा या बाड़ा का घातक जाल लगा होगा जो हमारा इन्तजार कर रहा होगा। वहा गड्ढे होगे या बाड़े—यह इस पर निर्भर करता था कि शिकारी लोग हम जिन्दा पकडना चाहते थे अथवा मुर्दा। अगर हम गड्ढा मे गिर जायगे तो हमारा एकाध पैर टूट जायगा और फिर हम मारे जाने के अलावा और किसी मसरफ के न रह जायेंगे। दूसरी तरफ, बाड़ा के अदर एक भयकर गुलामी का जीवन हमारा इन्तजार कर रहा था। हाथी आग से डरते हैं। आम तौर से, कोई शोर सुनकर जब वे जागते हैं तो वे कायरता दिखलाते है और आग तथा शोर गुल वाली दिशा की उल्टी तरफ को भाग खडे होते हैं। लेकिन वहाँ पर—उस दिशा मे—खामोश खन्दक या मृत्यु उनकी प्रतीक्षा करती रहती है।

"पूरे गोल मे इस परिस्थिति को केवल मैं ही समझता था। परन्तु

क्या यह कोई फायदेमन्द चीज़ थी ? मैं क्या करूँ ? आगे की तरफ जाऊँ ? वहाँ मुझे हथियार बन्द लोग मिलेंगे। सम्भव है कि, अगर सौभाग्य मेरा साथ दे, मैं वहाँ से घेरे का ताड कर बाहर निकल जाऊँ। लेकिन तब फिर मैं गोल से अलग हो जाऊँगा और एकाकी हाथी की तरह मुझे जीवन शुरु करना पडेगा। फिर, देर सबर से, कोई गोली, कोई जहर-बुझा तीर, अथवा किसी वन्य पशु का विषैला दांत मेरा काम तमाम कर देगा !

"मैं अब भी हिचकिचाहट महसूस कर रहा था। किन्तु दरअसल, बिना इस चीज़ को समझे ही, मन ही मन मैंने अपने बारे मे फैसला कर लिया था। मैं दूसरे हाथियो से कुछ दूर हो गया था जिससे कि जब जागे हुए गोल की भगदड शुरु हो तो हाथियो के शरीरो के भँवर मे फस जाने की विपत्ति मुझ पर न आ पडे !

"अब शिकारियो ने शोर गुल मचाना, ताशे और नगाडे बजाना, झाँझें बजाना, सीटियो की आवाजें करना तथा गोलियां चलाना शुरु कर दिया। मैं खूब ज़ोर से चिंघाडा। हाथी जाग उठे और पूरी ताकत से चीखते हुए भयाक्रान्त होकर इधर उधर भागने लगे। उस भयानक कोलाहल से धरती कांप उठी। जानवरो ने अपने चारो तरफ देखा। उन्होने अनुभव किया कि आग की लपटे अधिकाधिक उनके समीप आती जा रही थी। वास्तव मे वे अधिकाधिक नज़दीक लायी जा रही थी। हाथियो ने चीखना चिल्लाना बन्द कर दिया और एक दिशा मे भागने लगे। परन्तु शिकारियो की आवाज और तेज़ हो गई और तब वे उल्टी दिशा मे विनाश की ओर, दौडने लगे। सच है कि मृत्यु अभी इतनी नज़दीक न थी। शिकार कई दिना तक चलता है। आग की लपटें चारो तरफ से उन्हे घेरती जायेंगी, शिकारी नज़दीक और, और नज़दीक आते जायेंगे, और हाथियो को धीरे धीरे तब तक आग की ओर व हाँकते जायेंगे जब तक कि, अन्ततोगत्वा, वे गड्ढा या बाडा मे नहीं पहुँच जायेंगे !

"लेकिन मैं हाथियों के साथ नहीं गया। मैं अकेला रह गया। जिस घबड़ाहट-भरे आतंक ने पूरे गोल को अपनी गिरिफ्त में ले लिया था वह मेरी हाथी की तन्त्रिकाओं के अन्दर भी घुस गया था और, उनके ज़रिए, मेरे मानवी मस्तिष्क में जा पहुँचा था। डर मेरे सचेत मस्तिष्क पर एक प्रकार से हावी हो गया था। गोल के पीछे पीछे मैं भी दौड़ने ही वाला था, परन्तु इसे रोकने के लिए मैंने अपने सारे मानवी साहस को बटोरा, अपनी सारी इच्छा शक्ति लगा दी। नहीं! ज़रूरी है कि मेरा मानवी मस्तिष्क मेरे हाथी के भय पर काबू करे, मांस, रुधिर और अस्थियों के उस विशाल पर्वत को पराजित कर दे जो मुझे विनाश की ओर खींच ले जाने की कोशिश कर रहा था

"एक लौरी ड्राइवर की तरह काम करते हुए, अपनी "लौरी" के "सचालक पहिए" को मैंने मोड़ दिया और सीधा नदी की तरफ चलने लगा। पानी में छप से गिरने की एक ज़ोर की आवाज़ हुई एक प्रपात जैसी ऊँची फुहार उठी, और फिर एकदम खामोशी छा गयी पानी ने हाथी के मेरे खौलते हुए खून को ठंडा कर दिया। तर्क की विजय हुई थी। हाथी के मेरे पैर अब तक की "लगाम" के बन्धन में थे। आज्ञाकारी ढंग से वे नदी के मिट्टी कीचड़ भरे तल पर आहिस्ता आहिस्ता चल रहे थे।

"एक दरियाई घोड़े की तरह मैंने अपने को एकदम पानी के अन्दर डुबाये रखने का फैसला किया। यह एक ऐसी चीज़ थी जिसे करने का किसी मामूली हाथी को कभी ख़याल भी नहीं आ सकता था। मैंने सोचा कि पानी के अन्दर मैं अपनी सूँड़ के छोर से सांस लेता रहूँगा। कोशिश भी कम से कम मैंने ऐसी ही की किन्तु पानी मेरी आँखों और कानों में लगता था। बीच बीच में अपने सिर को बाहर निकाल कर मैंने सुनने की कोशिश की कि क्या हो रहा है। शिकारी और नज़दीक आ गये थे। मैंने फिर पानी में डुबकी लगा ली। अन्त में, शिकारी बिना मुझे देखे ही चले गये।

"इस लगातार डर और चिन्ता की अब हद हो चुकी थी। इससे अधिक सहन करने की शक्ति मुझमे नही रह गयी थी। इसलिए मैंने फ़ैसला किया कि और चाहे जो हो जाय, परन्तु बडे जानवरो का शिकार करने वाला के हाथो मे अपने को कभी नही पडने दूगा। किसी फैक्टरी की तलाश मे, कागो नदी मे तैरता हुआ, मैं नीचे की ओर जाऊँगा। स्टैनलीपूल तथा बोम के बीच ऐसी कई फैक्टरियाँ हैं। मैं किसी फार्म (खेत) या फैक्टरी मे पहुँच जाऊँगा और पूरी कोशिश करके वहाँ के लोगो को यह बताने की चेष्टा करूँगा कि मैं कोई जगली हाथी नही हूँ। मैं उन्हे बताऊँगा कि मैं एक "ट्रेण्ड" हाथी हूँ। तब वे मुझे मारेंगे नही और न भगा ही देंगे।



१२ हाथी रात के चोरो की सेवा मे

"मैंने देखा कि इस योजना को अमली रूप देना जितना मैंने सोचा था उससे कही ज्यादा कठिन था। जल्दी ही कागो नदी की मुख्य धार मे मैं पहुँच गया और उसी के साथ-साथ तैरने लगा। दिन मे मैं नदी के किनारे के पास-पास चलता था, लेकिन रात को मैं धार के साथ बीचोबीच बहता था। मेरी यात्रा काफी निरापद थी। नदी के इस भाग मे नावें चलती हैं, परन्तु जगली जातियाँ उसके किनारो के पास आने मे डरती हैं। लगभग एक महीने तक धार के साथ मैं नदी मे तैरता रहा, अपनी इस पूरी यात्रा मे शेर की गर्जना मुझे सिर्फ एक बार सुनायी दी थी और, एक बार, मेरा सामना, अथवा कहना चाहिए कि टक्कर, एक दरियाई घोडे से हो गयी थी जो काफी अप्रिय थी।

"यह घटना रात को घटी थी। मैं पानी मे लोट रहा था, केवल मेरे नथुने पानी के ऊपर थे। मैंने उस भोंडे-भद्दे जीव को देखा नही

था, लेकिन तैरते तरत में उससे टकरा गया था। उस वक्त ऐसा लगा था जैसे कोई जहाज किसी बहते हुए हिमखण्ड से टकरा जाय। वह पूरे तौर से पानी के अन्दर चला गया, उसकी कुन्द सी थोथनी मेरे पट मे लगन लगी जिससे मुझे तकलीफ हो रही थी। तेजी के साथ तैरकर मै उससे दूर चला गया। इसी बीच उस दरियाई घोडे न ऊपर आकर मुह निकाला क्रुद्ध हाकर जार से आवाज की और मुझे पकडने के लिए मेर पीछे पीछे तैरन लगा। फिर भी, मै साफ निकल भागा। मैं तरता ही चला गया तब तक जब तक कि लुकुगी न पहुँच गया। लुकुगी म बेल्जियनो की एक बडी फैक्टरी थी—अथवा, उसके झडे को देखकर, मुझे ऐसा ही लगा था।

"बहुत तडके ही म जगल से बाहर निकल आया और, अपने सिर को हिलाता हुआ एक मकान की तरफ जाने लगा। लेकिन इससे मेरा कोई फायदा नही हुआ। दो बडे बडे कुत्ते मेरे पीछे पड गये और खूखार ढग मे भौंकने लगे। तभी सफेद कमीज पहन हुए एक आदमी मकान से निकला, किन्तु मुझे देखते ही तेजी से वह फिर अन्दर घुस गया। अहाते के उस तरफ से कई हब्शी चिल्लात हुए आये और मकान मे छिप गये। और फिर राइफिल की दो गोलियो की आवाज गूज उठी। तीसरी के लिए मैंने इन्तजार नही किया। मजबूरन उस जगह को मैंने छोड दिया और जगल की तरफ लौट आया।

"एक रात मै एक विरल तथा निजन जगल म से जा रहा था। मध्य अफ्रीका मे इस तरह के जगल बहुत है। हरियाली अन्धकारपूण दिखलायी देती थी, पैरो के नीचे की जमीन दलदल-भरी थी, पेडो के तन काले थे। हाल ही मे भारी वर्षा हुई थी और भू मध्य रेखा के आस पास के स्थान के खयाल से रात काफी ठडी थी। हल्की-हल्की ठडी हवा बह रही थी। दूसरे हाथियो की ही तरह सीलन से मैं भी परेशान हो उठता हूँ यद्यपि मेरा चमडा मोटा है। जब भी पानी बरसता है

अथवा आबोहवा सील्न भरी होती है, तो अपने को गम रखने के लिए मैं चलने लगता हूँ और बराबर चलता रहता हूँ।

"मैं कई घंटे चल चुका था, तभी मेरी नजर एक कैम्प फ़ायर (अलाव) पर पडी। जिस भाग मे मैं था वह बहुत बीहड था, वहाँ कोई हब्शी गाव तक नही दिखलाई देता था। फिर कैम्प-फायर किसने जलायी होगी ? मैं और तेज़ी से चलने लगा। आखिर, जगल का अन्त हो गया और मेरे सामने घास का एक वृक्ष विहीन विशाल मैदान था। कुछ ही दिन पहले वहाँ जगल की आग लगी रही होगी। इसलिए घास अपनी स्वभाविक ऊँचाई तक अभी तक नही बढ पायी थी। जगल से लगभग आध मील के फासले पर एक पुरानी, टूटी फूटी झोपडी खडी थी, उसके पास एक कैम्प फायर जल रही थी। वहा दो आदमी मौजूद थे जो स्पष्ट रूप से योरोपियन मालूम हो रहे थे। उनमे से एक आग पर चढे कढाव मे पक रहे भोजन को चला रहा था। एक तीसरा आदमी भी था, एक खूबसूरत-सा आदमी। वह स्पष्ट रूप से वहाँ का कोई देशी था और अर्द्ध-नग्नावस्था मे था। काँसे की एक सुडौल मूर्ति की तरह वह आग के ही समीप खडा हुआ था।

"धीरे धीरे, अपनी आँखें उनके ऊपर जमाये हुए, मैं आग की तरफ गया। ज्यो ही उनकी नजर मेरी तरफ़ हुई त्योंही, एक ट्रेण्ड (प्रशिक्षित) हाथी की तरह, उनके सामने मैं अपने घुटनो पर बैठ गया जिससे कि वे मेरी पीठ पर जो चाहे रख लें। उनमे जो छोटा आदमी था उसने फौरन राइफिल उठा लिया। वह धूप का टोप लगाये हुए था। उसका साफ इरादा मुझे गोली मार देने का था। परन्तु ठीक उसी क्षण देशी आदमी ने अपनी टूटी फूटी अग्रेजी मे चिल्लाकर उसे ऐसा करने से रोक दिया।

'उसे मारो मत ! वह एक अच्छा, सीखा सिखाया हाथी है !" यह कहकर वह मेरी तरफ दौडा।

सफेद चमडी वाले आदमी ने, निशाना लते हुए, डाटकर उससे कहा, "सामने से हट जा, नही तो मैं तुझे भी छेद डालूगा ! ए, क्या नाम है तेरा ?"

देशी आदमी ने वहाँ से जरा भी हटे बिना जवाब दिया, "म-पैपो" । वह मेरे और भी करीब आ गया जैसे कि मेरे और गोली के बीच वह अपने शरीर को कर देना चाहता था ।

मेरी सूड को थपथपाते हुए, उसने कहा, "आप देखते नही, महाशय कि यह एक पालतू हाथी है !"

"ए, बनमानुष के बच्चे ! सामन स हट जा !" राइफिल वाले आदमी ने चिल्ला कर कहा । "मैं उसे गोली मारन जा रहा हूँ ! एक, दो "

"बकाला, रुको !" सफेद चमडी वाले दूसरे आदमी ने, जो लम्बा और पतला था, उससे कहा । "म पैपो ठीक कहता है । हमने हाथी के काफी दात इकट्ठे कर लिये है । उन्हे मठाडी तक भी ले जाना सस्ता, या आसान न होगा । यह हाथी पालतू है । हम उसके मालिक के बारे म पूछ-ताछ नही करेंगे और न इस बात को ही जानन की कोशिश करेंगे कि रात म वह इधर उधर कैसे भटक रहा है । हम उसका सदुपयोग कर सकत है । हाथी एक टन तक का बोझ उठा सकता है, गोकि इतना बोझ लाद कर वह बहुत दूर नही चल सकता । लेकिन आधा टन तो वह बहुत मजे म ले चल सकता है । एक हाथी स ३० या ४० कुलियो का काम अच्छी तरह लिया जा सकता है । और देखा, इसके लिए हमे एक टका भी नहीं खर्च करना पडा । फिर जब हमारा काम पूरा हो जायगा तब हम इस भी मार लेंगे और इसके सुदर दाँतो को भी अपने सग्रह मे जोड लेंगे ! समझे ?"

बकाला खीझता हुआ उसकी बात को सुनता रहा । इस बीच

निशाना लगाने की भी उसने कई कोशिशें की। लेकिन जब उसके साथी न हिसाब लगाकर बताया कि हाथी का इस्तेमाल करने के बजाय अगर वे कुलियो को काम पर रक्खेगे तो उन्ह कितना खच करना पडेगा, तब वह ठडा पड गया और आखिर मे अपनी राइफिल उसने नीचे रख दी।

देशी आदमी की तरफ चिल्लाते हुए उसने कहा, "ही, तुम, तुम्हारा नाम क्या है ?"

"म-पैपो", फौरन उसे जवाब मिला। बाद म मुझे पता चला कि देशी आदमी से बकाला हमेशा इन्ही शब्दा मे बात करता था, और वह भी सदैव, इसी तरह से, "म" के ऊपर जोर देता हुआ, ऐसे जवाब देता था जैसे कि स्वयम अपने नाम का उच्चारण करने म उसे कुछ कठिनाई होती थी।

"इधर आओ। हाथी को चलाओ।"

म-पैपो ने आग के और पास आने का इशारा किया तो उसकी बात को मानकर खुशी-खुशी मैं उसकी तरफ चला गया।

"इसे हम क्या नाम दें, क्यो ? भगोडा ठीक है न—क्यो कौवस, तुम क्या कहते हो ?"

"मैंने कौवस की तरफ दखा। उसका रग नीला था। उसकी नाक खास तौर से बहुत नुमाया थी, एसी मालूम होती थी जसे कि अभी किसी ने नीली वार्निश के डिब्बे म स उसे निकाला हो। अपने नीले-से शरीर पर वह एक नीली ही कमीज पहने हुए था। कमीज गले के पास खुली हुई थी और उसकी बाहें कुहनियो तक मुडी हुई थी। उसकी आवाज भारी थी और वह भरभराते, तुतलाने ढग से बात करता था। उसका बात करन का ढग भी मुझे नीला ही मालूम पडता था।

उसकी बैठी हुई आवाज भी, उसकी कमीज की ही तरह, बदरग प्रतीत होती थी।

बकाला की बात से सहमत होते हुए उसने कहा, "अच्छी बात है, उसको 'भगोडा' नाम ही दे दो।"

आग के पास पडी हुई फटे कपडो की एक गठरी मे तभी एक गति जैसी हुई और एक धीमी मोटी आवाज ने पूछा

"यह सब क्या हो रहा है ?"

"अच्छा, तो तुम अब भी जिन्दा हो ! और मैं तो समझ बैठा था कि तुम सिधार गय", बकाला ने चीथडा की गठरी को सम्बोधित करते हुए उदासीन भाव से कहा।

गठरी मे फिर हरकत हुई और एक बडी-सी भुजा ने कपडो के ढेर को एक तरफ को हटा दिया। एक लम्बा चौडा, अच्छे डील-डौल वाला आदमी उसमे से निकल कर अपने हाथो के सहारे बैठ गया। उसका बदन थोडा थोडा लडखडा रहा था। उसका चेहरा एकदम पीला था। उसकी लाल-लाल सी दाढी अस्त-व्यस्त थी। साफ मालूम होता था कि वह बहुत बीमार है उसका चेहरा मरे आदमी की तरह विवर्ण था। उसकी निस्तेज आँखा ने मुझे देखा और वह हल्के मे मुस्कराया।

उसने कहा, "तीन आवारा लोगा म एक और जुड गया ! सफेद चमडी—काला दिल ! काली चमडी—सफेद दिल ! यहाँ केवल एक ईमानदार आदमी है—और वह एक बकूवा ! ' वह फिर जैसे जीवन हीन होकर पड गया।

"वह बर्रा रहा है,' बकाला ने कहा।

"पर उसकी सन्निपाती बकवास बहुत अपमान जनक है," कौवस ने जवाब दिया। "वह पहेलियाँ बुझाता है एक ईमानदार आदमी—और

वह एक वक्वा ! तुम समझते हो न कि इसका क्या मतलब है ? म-पैपो वक्वा कबीले का है। प्रमाण के लिए उसके दातो को देख लेना ही काफी होगा उसके ऊपर के छेदक दन्त निकाल दिये गये हैं। वक्वा जाति का यही रिवाज है ! बस सिर्फ वही ईमानदार है, हम सब बदमाश है !"

"ब्राउन भी। उसकी चमडी हम सब के चमडा से अधिक सफ़ेद है, इसलिए उसका दिल और भी काला होगा। ब्राउन, तुम भी बदमाश हो।"

लेकिन ब्राउन ने जवाब नही दिया।

"वह फिर बेहोश हो गया।"

बहुत अच्छा, और अगर वह मर गया तो और भी अधिक अच्छा होगा। हमारे लिए अब वह किसी काम का नही रह गया वह केवल एक अडचन है।"

"लेकिन अगर वह चगा हो गया तो वह हम दो के बराबर उपयोगी होगा।"

"यह जैसे कोई बडे सन्तोष की बात है ! तुम्हारी समझ मे यह क्या नही आता कि वह व्यर्थ मे हमारा हिस्सा बँटायगा।"

बेहोशी की ही हालत मे ब्राउन फिर कुछ बुदबुदाया तो बात-चीत रुक गयी।

"हो, तुम, तुम्हारा क्या नाम है ?"

"म-पपो "

"हाथी के दानो पैरो म अडगा लगाकर उसे पड से बाँध दो जिससे वह भाग न सके।"

"नही, यह भागेगा नही"—मेरे पैर को थपथपाते हुए म-पैंपो ने जवाब दिया।

"अगले दिन सुबह अपने नये स्वामियो को मैंने जरा और अच्छी तरह से देखा। सबसे अच्छा मुझे म पैंपो लगा। वह हमेशा खुश दिल और मुस्कराता रहता था। उसके सफेद-सफेद दात चमकते रहते थे, यद्यपि ऊपर के दोनो छेदका के न होने की वजह से उनका रूप कुछ बिगड गया था। स्पष्ट लगता था कि म पैंपो को हाथियो से स्नेह है। वह मेरी बहुत देख भाल करता था। मरे कानो, आखो और टागो तथा चमडे की भारी भारी तहो को वह बराबर धोता था। मेरे लिए वह खान की अच्छी-अच्छी चीज लाता था—स्वादिष्ट फल और बेर। इन्हे वह खास तौर से मेरे ही लिए ढूढ कर लाता था। ब्राउन अब भी बीमार था, इसलिए वह कसा आदमी है इसका मुझे कोई ठीक अदाजा न हो सका। उसका चेहरा तथा अपने साथियो के साथ बातचीत करने का उसका सीधा-सादा और खरा ढग मुझे आकर्षित करता था। परन्तु बकाला और कौक्स के लिए तो निश्चित रूप से मेरे अन्दर घृणा पैदा हो गयी थी। खास तौर से बकाला ने मेरे ऊपर एक बहुत ही विचित्र तथा अप्रिय छाप डाली थी। वह एक गन्दा फटा सा सूट पहनता था। सूट बहुत अच्छी तरह कटा हुआ था और बहुत अच्छे कपडे का बना हुआ था और हो सकता है कि किसी अत्यन्त धनी यात्री का रहा हो। मुझे लगता था कि सूट और तम्बू दोना ही चीजो को बकाला अनुचित तरीको स कही से उडा लाया था। हो सकता है कि उसन किसी मशहूर ब्रिटिश पयटक को लूट लिया हो और फिर उसकी हत्या कर दी हो। उसकी बढिया राइफिल भी किसी अग्रेज की हो सकती थी। और अपनी चौडी पटटी मे वह एक बडा सा रिवाल्वर तथा भयानक रूप से लम्बा चौडा एक चाकू पास रखता था। वह कोई पुर्तगाली या स्पेन का वासी था, कोई एसा भगोडा मुजरिम जिसका न कोई देश था, न परिवार, न कोई निश्चित पशा।

"कोवस, जिसकी शक्ल फीके, उड गये नीले रग जैसी थी, निश्चित रूप से कोई ऐसा अग्रेज था जो अपने देश के कानूनो के डर से यहाँ से भाग आया था। ये तीनो हाथी के दाँतो के चोर थे। हाथियो का वे केवल उनके दातो के लिए शिकार करते थे। उन्ह न किन्ही कानूनो की परवाह थी, और न देशो के सीमान्तो की।

"म-पँपो उनके गाइड (पथ-प्रदशक) तथा सहायक का काम करता था। यद्यपि वह एकदम नौजवान था, परन्तु हाथियो को पकडने की विद्या का वह विशेषज्ञ था। ठीक है, उसके काम के तरीके भोंडे और बबरता-पूर्ण थे, किन्तु और किन्ही तरीको से उसका परिचय नही था। वह उन्ही तौर-तरीको का इस्तमाल करता था जिन्ह उसने अपने पूवजो से सीखा था। और जहाँ तक दूसर लोगो का सवाल था, उन्हें इस बात की कोई परवाह नही थी कि हाथी मारे कैसे जाते हैं। वे उन्हें आग के घेरे के अन्दर बन्द करके अधमरी और अध जली हुई हालत म पकडते थे, व उन्ह ऐसे गड्ढो म फसाकर पकडते थे जिनम नीचे नुकीली धार वाले छडा जैसे डडे लगे रहते थे, वे उन्ह तुत फुत गोली मार देते थे, वे उनके पीछे के पैरा की शिराओ को काट देते थे, वे पडो के ऊपर म भारी भारी लट्ठे गिरा कर उन्हें बेहोश कर देते थे। वे बस उन्हें किसी तरह मार डालते थे। इसमे म पँपो उन्ह बहुत मदद देता था।

१३ नगोड़े की शरारत

"एक दिन ब्राउन—जो यद्यपि पहले की अपेक्षा अब अच्छा हो गया था परन्तु हाथियो का शिकार करने जाने के लिए अब भी बहुत कमजोर था,—कोवस, और म-पाम्पो मरी पीठ पर चढ गये और हम लोग कई मील दूर के एक स्थान की ओर चल दिए। पिछले दिन

एक हाथी मारा था और उसी के दात लेने के लिए हम जा रहे थे। कौक्स और बकाला का ख्याल था कि उनकी बात सुनने वाला वहाँ कोई नही था, इसलिए वे खुलकर बातें कर रह थे। उनकी नजर म तो मैं सिफ एक लद्दू जानवर था।

बकाला कह रहा था, "खैरी रग के उस बन्दर को—क्या नाम है उसका—हम पाँचवाँ हिस्सा देना पडेगा। यही समझौता है।"

कौक्स बोला, "फिर भी इसमे मुनाफा होगा।"

"फिर जो कुछ बच रहगा उसे हमे तीन हिस्सों मे बाटना पडेगा तुम्हारा, मेरा और ब्राउन का हिस्सा बनेगा। अगर ४० स ५० मार्क फी पौण्ड के हिसाब से हाथी दात बिका "

"इतना मिलने की कोई उम्मीद नहीं है। व्यापार की बातें तुम बिलकुल नही समझते। एक मुलायम या मरे हुए दात की किस्म होती है और दूसरी किस्म सख्त या जीवित हाथी दात की होती है। पहली किस्म का हाथी दात मुलायम बस कहलाता भर ही है, वास्तव मे, वह बहुत सख्त और सफेद और बढिया होता है। बिलियर्ड की गेंदा, पियानो के पुर्जों और कघे कघियो मे उसी का इस्तमाल किया जाता है। उसकी कीमत बहुत होती है। लेकिन यहा के हाथियो से उस तरह के दाँत नही निकलत। उस तरह के हाथी-दात के लिए तुम्ह पूर्वी अफ्रीका जाना पडेगा। हा, वहाँ पर यह खतरा है कि किसी हाथी का मारने से पहले तुम्हारी हड्डियाँ ही वहीं मुलायम न बन जायें। यहाँ के हाथी दात बडे, चटकील और पारदर्शी हात हैं। इनका इस्तेमाल सिफ छाता और छडिया की मूठा के बनान के लिए ही किया जा सकता है। सस्ती किस्म की कघियाँ भी इनमे बन सकती है।"

"फिर इस सबका फायदा क्या है? फिर यह सब हम कर किसलिए रहहें?" बकाला न पूछा।

"बेकार के लिए नही ! किसी का फायदा इससे होगा ही। हम चार आदमी शिकार करते ह और अगर अपने मुनाफे को हम दो आदमी आधा-आधा बाट लें तो सौदा बिलकुल बुरा न रहगा !"

"यह विचार मेरे दिमाग मे पहले ही से मौजूद है।"

"सोचने विचारने का काम तुम्हारा नही है, तुम्हे तो सिफ काम करना है। एक या दो दिन के अन्दर ब्राउन चगा हो जायगा और तब उसको ठिकाने लगाना असम्भव होगा। वह ललमुहाँ शैतान सांड की तरह तगडा है। और म पैपो बन्दर की तरह फुर्तीला है। उन दोनो की हम एक ही बार मे सफाई कर देनी है। इस काम के लिए सबसे अच्छा समय रात का होगा। और सुरक्षा की दृष्टि से अच्छा यह होगा कि पहले उन्हे हम खूब शराब पिला दें। उनके लिए अब भी काफी शराब हमारे पास है।"

"कब ?"

"लो, हम पहुँच गये "

"वह अभागा हाथी एक गहरे खड्डे के अन्दर एक करवट पडा हुआ था। उसके पेट को तीन दिन पहले एक तेज भाले से फाड दिया गया था। पर उसमे अब भी जान बाकी थी। बकाला ने गोली मारकर उसे खत्म कर दिया। वह कौक्स को लेकर खड्डे मे उतर गया और हाथी के दाँतो को कुल्हाडी से काटने लगा। इस काम मे उनका लगभग सारा दिन लग गया। हाथी-दाँतो को रस्सियो मे बाँधकर जब उन्होंने मेरी पीठ से बाँधा तो सूरज डूबने लगा था। हम लोग वापिस चल पडे।

कौक्स ने बीच मे ही टूट गयी अपनी बातचीत को जब दुबारा शुरू किया तो कैम्प सामने दिखलायी देने लगा था।

उसने कहा, "इस काम मे अब और देर करने की जरूरत नही है। आज रात को ही हम उसे पूरा कर देना चाहिए।"

"लेकिन कैम्प मे जब वे पहुँचे तो निराश हो गए। उन्हे यह देखकर आश्चय हुआ कि ब्राउन वहाँ नही था। म पैंपो ने बतलाया कि "महाशय" की तबियत काफी अच्छी हो गयी थी, इसलिए व शिकार खेलने निकल गये ह। उसने कहा कि सम्भवत रात का व नही लौटेंगे। बकाला ने धीरे से गाली दी। हत्या के काम को किसी दूसरे समय के लिए मुल्तवी कर देना पडा।

अगले दिन बहुत सुबह ही, जब कौक्स और बकाला सो ही रहे थे, ब्राउन लौट आया। वह म-पैंपो के पास गया और धीरे-से उसके कधे पर उसन हाथ रखा। म-पैंपो पहरा दे रहा था। वह मुस्कराया तो उसके दाँत चमक उठे। ब्राउन उसे एक तरफ बुलाकर ले गया, फिर उसे वह मेरे पास लाया और उससे बोला कि मेरे ऊपर सवार हो जाय। म-पैंपो ने इशारा किया तो मैं घुटनो के बल बैठ गया और वे दोनो मेरे ऊपर सवार हो गये। उन्ह जगल के किनारे-किनारे लेकर मैं चलने लगा।

"मैं उन्ह एक भेंट दना चाहता हू। व समझते है कि मैं बीमार हूँ, लेकिन मैं बिलकुल चगा हूँ। पिछली रात मैंने एक विशालकाय हाथी को मारा था। उसके दाँत बहुत शानदार है। बकाला और कौक्स उन्ह देखकर हैरत मे पड जायेंगे।"

उगते हुए सूर्य के प्रकाश की किरणो मे मैंने देखा कि नदी के तट के समीप, काफी झाडियो के बीच, एक विशालकाय हाथी की लाश एक करवट पडी है।

दाँतो को निकालने का काम जब पूरा हो गया तो हम लोग कम्प के लिए रवाना हो गये—वहाँ मौत हमारा इन्तजार कर रही थी।

ब्राउन और म-पैंपो को तो फौरन मौत के घाट उतार दिया जायगा और मुझे कुछ दिनो के बाद मारा जायगा। इसमे कोई सन्देह नही कि मैं इन आदमियो के पास से कभी भी भाग जा सकता था। लेकिन चूँकि मेरे लिए फौरन कोई खतरा नही था और मैं चाहता था कि, अगर सम्भव हो तो, ब्राउन और म-पैंपो को बचा लू, इसलिए मैंने भागने की कोई कोशिश नही की। मुझे म-पैंपा के लिए खास तौर से दु ख होता था। वह इतना खुश दिल और मस्त नौजवान था, उसका शरीर एपोलो (यूनानियो के सूय-देवता) के समान सुन्दर था। लेकिन मैं उन्हे चेतावनी दे किस तरह सकता था ? उनके सिर पर जो खतरा मँडरा रहा था उसके बारे मे मैं उन्हे बतला नही सकता था परन्तु, कदाचित्, कैम्प मे उन्हे फिर वापिस ले जाने से तो मैं इनकार कर ही सकता था ?

फौरन, अत्यन्त तेजी से, मैं उस रास्ते से मुड पडा और कागो नदी की दिशा मे दौडने लगा। मैंने सोचा कि नदी के पास पहुँचने पर बहुत मुमकिन है कि हमे कोई इन्सान मिल जायें, अगर ऐसा हो गया तो उनके साथ ब्राउन किसी सभ्य देश को लौट जा सकेगा। लेकिन उसकी समझ मे नही आया कि मैं इस तरह क्या जिद कर रहा हूँ और उसने मेरी गर्दन पर लोहे के नुकीले अकुश से मारना शुरू कर दिया। अकुश की नोक ने मेरे चमडे को छेद कर लहू-लुहान कर दिया। मेरी त्वचा अत्यन्त सम्वेदन शील है और उसमें आसानी से जहर पैदा हो जाता है। मुझे याद आ गया कि नाव से उस अग्रेज ने जब मेरे ऊपर गोली चलायी थी तब उस गोली के घाव को भरने मे कितना लम्बा समय लगा था। मैं सुन रहा था कि म-पैंपो ब्राउन से बार-बार प्रार्थना कर रहा था कि मेरी गर्दन की त्वचा मे वह अकुश न घुसाये। लेकिन उसकी आज्ञा का उल्लघन करने की वजह से वह मुझ पर इतना क्रुद्ध था कि म-पैंपो की बात सुनकर वह और भी जोरो से तथा और भी अधिक गहरे तक अकुश से प्रहार करने लगा।

मुझे समझाने के लिए म पैंपो ने स्वयम् अपनी भाषा म सान्त्वना के शब्द कहने शुरु कर दिय। मैं उसकी भाषा का एक शब्द भी नही समझता था। परन्तु आवाज के स्वर को आदमी और जानवर सभी एक-समान समझ जाते है। इसलिए वह क्या चाहता था इसे मैं भी समझ गया था। वह आगे की तरफ़ झुका और उसने मेरी गदन को चूमा। बेचारा म-पैंपो! काश, वह जान सकता कि वह मुझसे क्या करने के लिए कह रहा था!

"मार कर इसका यही अन्त कर दो।" चिल्लाकर ब्राउन ने उससे कहा। "यह भगोडा अगर लाने-ले जाने का काम भी नही करना चाहता, तो उसकी कोई जरूरत नही है। फिर केवल उसके दात काम के रह जाते हैं। लाड से जानवर बिगड गया है। सचमुच यह काहिल भगोडा है। बहुत सभव है कि यह अपने मालिको को कही छोडकर *यहाँ भाग आया हो, और अब यह हमारे पास से भी भाग* जाना चाहता है। पर देखें, यहाँ से यह कैसे भागता है! उसके भागने से पहले ही उसकी आँख और कान के बीच मैं एक गोली दाग दूंगा।"

इन शब्दो को सुनकर मेरे अन्दर एक कँपकपी दौड गयी। ब्राउन हाथियो का शिकारी था, हाथी की पीठ पर से अगर वह निशाना लगाएगा तो उसका निशाना चूक नही सकता। फिर मैं अपने को मार दिया जाने दू, या इन लोगो को इनकी निश्चित मौत के मुह मे ले जाऊ? मैं सुन रहा था कि म पैंपो ब्राउन की चिरौरी कर रहा है कि वह मेरी जान बख्श दे। लेकिन वह अग्रेज हठ पकड चुका था। उसने अपने कधे से राइफिल भी उतार ली।

कोई अशुभ घटना घटे इसके पहले ही मैं अचानक मुड पडा और फिर तेजी से कम्प की तरफ़ चलने लगा। ब्राउन न हँसते हुए कहा, "मालूम होता है कि जानवर हमारी जबान को समझता है और जान गया था कि मैं क्या करने जा रहा हूँ।"

विनीत भाव से चुपचाप कुछ कदम तक मैं चलता रहा, फिर तेजी से ब्राउन को मैंने अपनी सूंड से पकड़ लिया, हवा मे उसको एक चक्कर खिलाया और फिर जमीन पर पटक दिया। इसके बाद म पैंपो को पीठ पर लिये हुए मैं जगल मे घुस गया। ब्राउन चिल्लाता और गालियाँ बकता रहा। वास्तव म, उसे चोट नही लगी थी, लेकिन बीमारी की वजह से वह अब भी कमजोर था, इसलिए जल्दी से वह उठ नही सका। इसी स्थिति का मैंने फायदा उठाया और मैं जगल के अन्दर पहुँच गया।

मैंने सोचा, "अगर दोनो को नही बचा सकता तो कम से कम म-पैंपो को तो मैं बचा ही लूँगा।"

लेकिन वह देशी आदमी भी उन कैम्प वालो के साथ ही रहना चाहता था। महीनो से हाथियो का शिकार करते हुए अपने जीवन को बिना मतलब ही नही वह जोखिम मे डालता आया था। अब उसका हिस्सा मिलने वाला था। मुझे चाहिए था कि म पैंपो को नीचे उतारकर अपनी सूड स उसे दबाये रखता, लेकिन यह खयाल उस वक्त मुझे नही आया था। मुझे विश्वास था कि मेरी पीठ की ऊँचाई स नीचे कूदने म वह हिचकिचाएगा। परन्तु वह नवयुवक बन्दर की तरह फुर्तीला था और इसलिए उसने काम भी अनोखा किया। जिस समय मैं जगल के पास स गुजर रहा था, उसन ऊपर की एक डाल पकड ली और कूदकर पेड पर अन्तर्धान हो गया। अब म-पैंपो मेरी पहुँच स बाहर था, इसलिए पेड के नीचे चुपचाप खडा होकर मैं उसका इन्तजार करन लगा तभी मुझे आहट मिली कि चुपके-चुपके ब्राउन मेरे पीछे आ रहा है। फिर तो मैं वहाँ से भागा और उसके गोली चलान स पहले ही झाडियो म आख हो गया।

अन्त म वे चले गए। परन्तु मैं उन्हे यों ही मरने के लिये छोड नहीं देना चाहता था। इसलिए थोडी देर प्रतीक्षा करने के

फिर कम्प के रास्ते पर लौट गया, और वहा से थोडा-सा चक्कर लगाकर उनसे पहले ही कैम्प मे पहुँच गया । कौक्स और बकाला ने जब देखा कि मेरी पीठ पर बढिया हाथी के दात तो लदे हुए हैं किन्तु सवार नही है तो वे अत्यधिक आश्चय म पड गये ।

दातो के रस्सो को खोलते हुए कौक्स ने पूछा, "क्या हाथियो और जगली जानवरा ने ही ब्राउन और म-पँपो मे हमे छुटकारा दिला दिया ?"

परन्तु उनकी खुशी बहुत थोडी देर ही रह सकी। इसी समय कोसता गालियाँ बकता हुआ ब्राउन वहाँ आ पहुँचा । म पपो उसके साथ था । ब्राउन ने जब मुझे देखा तो उसके मुह से गालिया का एक नया फौवारा फूट पडा । उसने उन लोगो को बताया कि उसके साथ मैंने कसी बेजा हरकत की थी । उसने उन्हे समझान की कोशिश की कि वे मुझे उसी वक्त मार दें । लेकिन कौक्स हमेशा पैसे-कौडी का हिसाब करके सब काम करता था, इसलिए वह इस चीज के खिलाफ था । वह चुपचाप अपना काम करता रहा । उसने और बकाला न कहा कि इस बात से वे बहुत प्रसन्न हैं कि ब्राउन फिर अच्छा हो गया है और सकुशल कैम्प लौट आया है । उन्हे इस बात से और भी ज्यादा खुशी है कि अपने साथ वह हाथी के दाँता का इतना शानदार जोडा भी ले आया है ।

१४ चार लाशें और एक जोड़ा हाथी दाँत

वे सब जल्दी ही लेट गये। म पँपो एक छोटे बच्चे की तरह सो गया । ब्राउन बिल्कुल चूर चूर हो गया था, इसलिए वह भी गहरी

नींद में सो गया। कौवस मौके का इन्तजार कर रहा था और बकाला भी, स्पष्टतया जागता हुआ, अपने कम्बल के नीचे बेचैन कुलबुला रहा था। कई बार बकाला ने अपना सिर उठाया और क्या स्थिति है यह पूछते हुए कौवस की तरफ देखा। कौवस ने अपना सिर हिलाकर बताया कि अभी समय नहीं हुआ है।

जंगल के उस पार डूबता हुआ चाँद दिखलायी दे रहा था। उसका मद्धिम धूमिल प्रकाश मैदान पर पड रहा था। तभी वहीं से करुण क्रन्दन का स्वर आया, जैसे कहीं कोई बच्चा रो पडा हो। जंगल में कहीं किसी छोटे प्राणी को किसी जंगली जानवर ने पकड कर शायद अपने दाँतों के बीच दबोच लिया था। ब्राउन की नींद इस चीत्कार से भी नहीं टूटी। वह गहरी निद्रा में खोया हुआ था। कौवस ने सिर से इशारा किया और बकाला, जो उसकी हर गति विधि पर आँखें गडाये था, एकदम उठ पडा। उसका हाथ पीछे की अपनी जेब के रिवाल्वर पर पहुँच गया। मैंने फैसला किया कि मुझे भी अब कुछ करना चाहिए। मैंने वही हरकत की जो अपने दुश्मन को डरवाने के लिए भारतीय हाथी हमेशा करते हैं, अपने सूंड के छोर को मैंने जमीन से लगाया और जोर से फूंक दिया। परिणाम-स्वरूप, एक विचित्र, भयावनी आवाज गूँज उठी। वह कडकने और गडगडाने और गुर्राने के बीच की सी एक आवाज थी। उसमें इतना जोर था कि उसे सुनकर मुर्दे भी जाग उठते, और ब्राउन तो अभी जिन्दा ही था।

'यह भेरी इस वक्त कौन शैतान बजा रहा है ?', सिर को ऊपर उठाते हुए उसने पूछा। नींद से खुलती-बन्द-होती उसकी आँखें देखने का प्रयास कर रही थीं। बकाला फौरन जमीन पर बैठ गया।

'यह तुम क्या कर रहे हो ? 'जिग' नाच किया रहे हो ?', ब्राउन ने पूछा।

"मैं अरे मैं मैं इस शैतान हाथी ने मुझे जगा दिया। कमबख्त, भाग जा, यहा से।" लेकिन मैं भागा नही, और थोडी देर बाद, जब ब्राउन फिर गहरी नीद मे सो गया था, मैंने फिर वही आवाज की। कौक्स पहले से ही ब्राउन के पास पहुँच चुका था, उसका रिवाल्वर तना हुआ था—तभी अपनी पूरी शक्ति से मैं चिंघाड उठा। ब्राउन कूद कर उठ खडा हुआ, मेरे ऊपर झपटा और अपनी हथेली से मेरी सूड को उसने ज़ोर से एक तमाचा लगाया। मैंने अपनी सूड ऊपर उठा ली और एक तरफ को हट गया।

वह चिल्लाया, "मैं इसकी हत्या किये बिना नही रहूँगा। बदमाश कही का! हाथी नही है यह, यह तो पूरा शैतान है। म पपो! इस जानवर को हाँक कर किसी दल दल मे ढकेल दो और ए, तुम, रिवाल्वर से क्या कर रहे हो?" सन्देह के साथ कौक्स को देखते हुए उसने एकदम उससे पूछा।

"मैं हवा मे कुछ गोलियाँ दागने जा रहा था जिससे कि यह भगोडा और दूर भाग जाय।"

ब्राउन फिर जमीन पर लेट गया। और फिर ऊँघने लगा। मैं कैम्प को देखता हुआ वहाँ से कुछ ही कदमो के फासले पर खडा था।

मुझे घूसा दिखाते हुए, कौक्स फुफकारा और बोला, 'इस हाथी का सत्यानाश हो।"

म-पपो ने कहा, "उसे जगली जानवर की हवा लग गई है।" वह बेचारा मुझे बचाने की कोशिश कर रहा था। वह क्या जानता था कि जो बात वह कह रहा था वह सत्य के कितने नज़दीक थी। निस्सदेह, मैं इसलिए चिंघाडा था कि मुझे जगली जानवरो की हवा मिल गयी थी—क्रूर, दो टाँगो वाले जानवरो की हवा!

कौवस ने अन्त में जब बकाला को इशारा किया तो लगभग सुबह हो आयी थी। वे तेजी से झपटे — कौवस ब्राउन की तरफ, बकाला म-पैपो की तरफ। साथ-साथ वे गोलियाँ चलाते जा रहे थे। म-पैपो के अन्दर से एक करुण, रात वाले उस नन्हे प्राणी की ही तरह की हृदय विदारक क्रन्दन-भरी आवाज निकली। फिर लड़खड़ाता हुआ वह उठ खड़ा हुआ, उसने अपने को सम्हालने की कोशिश की और फिर जमीन पर गिर गया। उसके पैर ऐंठने लगे। ब्राउन के अन्दर से कोई भी आवाज नहीं निकली। यह सब काम इतनी फुर्ती से हुआ था कि मुझे इतना भी वक्त नहीं मिल सका था कि उन अभागों को चेतावनी दे सकता

परन्तु ब्राउन अब भी जीवित था। एकाएक अपनी दाहिनी कोहनी के बल उसने अपने को ऊपर उठाया और कौवस पे, जो उसके ऊपर झुक ही रहा था, गोली मार दी। कौवस वहीं धराशायी हो गया। ब्राउन ने उसके शरीर की ओट ली और बकाला पर गोली दागी।

१५ एक सफल चाल

"मेरे सौभाग्य के द्वार पहले पहल तब खुले जब मैं किसी तरह मठादी पहुँच गया। एक शाम की बात है। समुद्र से कागा (नदी) की द्राणी को अलग करने वाले पहाड की चोटियों के पीछे सूर्य डूब रहा था। मैं जंगल में था जो नदी से बहुत दूर नही था। मेरे मस्तिष्क में उदासी भरे विचार घूम रहे थे। मुझे इस बात का दुख होने लगा था कि हाथियो के झुण्ड के साथ—उस बाडे में क्यो नही मैं चला गया था। ऐसा किया होता तो जलावतन की तरह आज मैं इधर उधर भटकता न फिरता होता या तो मेरे सारे भौतिक कष्टो का अन्त हो गया होता या फिर मैं एक ईमानदार, कामकाजी हाथी बन गया होता। दाहिनी तरफ, जंगल की घाटियो के बीच से डूबते हुए सूरज की किरणो में नदी चमकती हुई लाल लाल दिखलायी दे रही थी। बायी तरफ रबड के विशाल वृक्ष थे जिनकी छाल रबड निकालने के लिए जगह जगह कटी हुई थी। स्पष्ट था कि इंसान भी वहाँ से बहुत दूर न होगा।

"१०० गज के करीब और मैं चला हूँगा कि मडशिफ ज्वार बाजरे, केला, अनन्नासों गन्ने और तम्बाकू के खेतो में पहुँच गया। गन्ने और तम्बाकू के पादो के बीच से बने मार्ग पर सावधानी से मैं आगे बढ़ता गया। अन्त में, मैं एक खुले मैदान में पहुँच गया जहाँ बीचोबीच एक मकान बना हुआ था। मकान के पास कोई नही दिखलायी देता था, लेकिन वहाँ से थोडी ही दूरी के फासले पर दो बच्चे'हूपल्ला खेल रहे थे। उनमे एक लडका था और एक लडकी। उनकी अवस्था सात या आठ साल रही होगी।

"उन्होंने मुझे वहाँ आते नही देखा था। मैं अपने पिछले पैरो पर खडा हो गया और उनका हैमान के लिए किस्यिान की मी एक मशालिया

आवाज की ओर खिसकता हुआ उनके सामने नाचने लगा। बच्चों ने जब मुझे देखा तो आश्चर्य चकित होकर वे वहीं खड़े हो गये। यह देख कर कि मेरा सामना होने पर वे रोये नहीं थे और न भाग ही गये थे, मुझे इतनी जबदस्त खुशी हुई कि मन और भी उछल कूद तथा किलोल करना शुरू कर दिया। मैंने उन्हें ऐसे-ऐसे तमाशे दिखाये जैसे कोई प्रशिक्षित हाथी भी कभी नहीं दिखला सकता। सबसे पहले अपनी खुशी लड़के ने जाहिर की। वह खूब जोर जोर से हँसने लगा। फिर उस छोटी लड़की ने भी तालियाँ बजानी शुरू कर दीं। मैं लगातार नाचता और खेलकूद करता रहा। पहले मैं अपने आगे के परों पर खड़ा होता, फिर पीछे के पैरों पर, और फिर तरह-तरह की छलांगें लगाता और उन्हें मुग्ध करने के लिए कूदता फांदता।

"धीरे धीरे बच्चों का डर कम हो गया और वे मेरे और नजदीक आ गये। अन्त में मैंने अपनी सूड आगे बढ़ा कर लड़के को इशारा किया कि वह उस पर बैठ जाये तो मैं उसे झूला झुला दूं। थोड़ी देर हिचकिचाने के बाद वह मेरी मुड़ी हुई सूड के छोर पर बैठ गया और झूलने लगा। फिर मैंने उस नन्हीं बाला को भी झूला झुलाया। सच बात तो यह है कि उन नन्हे-नन्हे उन्मुक्त श्वेत बच्चों के साथ मुझे इतना अच्छा लगा कि उनके साथ खेलने में मैं बिल्कुल खो गया। एक लम्बा, दुबला-पतला आदमी नजदीक आया तो मैंने उसे आते हुए नहीं देखा। आगन्तुक का रंग पीला-पीला था, उसकी आँखें गढ़े में थीं। साफ था कि उष्ण कटिबन्धीय बुखार के हमले के बाद अच्छा होकर वह अभी ही उठा था। वह भौंचक खड़ा हुआ यह तमाशा देख रहा था। स्पष्ट था कि उसके आश्चर्य का ठिकाना न था।

"पापा पापा!", लड़का ज़ोर से चिल्लाया, "देखो तो हम कैसा अच्छा हॉइटी-टवॉइटी मिल गया है।"

हॉइटी-ट्वॉइटी!", भर्रायी हुई आवाज में यन्त्रवत् पिता

वह उसी तरह चुपचाप खडा रहा, उसके हाथ ढीले-ढाले-से उसके शरीर से लटक रह थे। उसकी समझ मे नही आ रहा था कि क्या करे। अदब के साथ झुककर मैंने उसे हाथियो की सलामी दी। फिर मैं उसके सामने घुटना पर बैठ गया। उस आदमी ने मेरी सूड पकड कर हिलायी और फिर धीरे से मुस्कराया।

आनन्द विभोर होते हुए मैंने सोचा, 'आह! तो आखिरकार मैं सफल हो गया!"



और हाथी की कहानी का यही पर अन्त हो गया। दरअसल सम्पूर्ण इतिहास भी यही खत्म हो सकता है, क्योकि इसके बाद उसका क्या हुआ यह कोइ विशेष दिलचस्पी की चीज़ नही है। बहरहाल, वैगनर, डेनीसाव और हाथी पयटन के लिए स्विजरलैण्ड चले गये और वहाँ उन्होने खूब ही मजा किया। पयटको को यह देखकर बडा आश्चय हुआ कि 'ववियें' की सरहद के आस-पास, उस जगह हाथी खूब घूमता फिरता था, जहाँ कभी रिंग को घूमना फिरना बहुत प्रिय लगता था। कभी-कभी वह जिनेवा की झील म नहाने भी जाता था। परन्तु, दुभाग्य से, उस वप जाडा जल्दी आ गया और एक विशेष माल्गाडी के डिब्बे म बैठकर इन लोगो को जल्दी ही बर्लिन वापिस लौट जाना पडा।

ह्वॉइटी-ट्वाइटी अब भी बुश सकस मे अपने करतब दिखा रहा है और अपना ८०० पौण्ड का राशन ईमानदारी से कमा रहा है। उसके हैरतअगज कारनामा को देखने के लिए न केवल बर्लिन के नर-नारी और बच्चे, बल्कि अनेक विदेशी भी विशेप यात्राएँ करके दूर-दूर से बर्लिन आते हैं। व सब उस "अद्‌भुत प्रतिभा सम्पन्न हाथी" का देखने के लिए व्यग्र रहते हैं। वैज्ञानिका म आज भी इस बात की बहस छिडी

हुई है कि उसमे इस तरह की प्रतिभा कहा से आयी है। कुछ लोग कहते है कि यह सब केवल एक "चाल" है, कुछ उसे "औपाधिक प्रतिवत" बतलाते है, कुछ दूसरे हैं जो उसे "सामूहिक सम्मोहन की क्रिया" की सज्ञा देते है।

जुग अब बहुत शिष्ट और विनम्र रहता है। हाथी की अब वह खूब अच्छी तरह देखभाल करता है। अपने दिल के अन्दर, वास्तव मे जुग ह्वॉइटी-टवॉइटी से अब डरता है। वह उसके सारे कामो को शैतान के काम समझता है। किन्तु इस चीज का फैसला अब आप खुद करें हाथी हर रोज अखबार पढता है। एक दिन जुग की जेब से "पेशेन्स" खेलने के ताशो की एक गड्डी उसने चुपचाप निकाल ली। आपका क्या ख्याल है—उनसे उसने क्या किया ? एक दिन जुग जब हाथी के पास गया तो उनसे देखा कि एक भारी से बहुत बडे उल्टे हुए पीपे के ऊपर ताश बिछाकर वह "पेशेन्स" खेल रहा था ! जुग ने यह बात किसी से नही कही, वह नही चाहता कि लोग उसे झूठा समझें !



यह कहानी एफिम आइवनोविच डेनीसोव के लेखो के आधार पर लिखी गयी है। इसकी पाण्डुलिपि को पढ़कर आई० एस० वगनर ने इसमें निम्न शब्द और जोड दिये थे

> "ये सब चीजें वास्तव मे हुई थीं। आप से प्रार्थना है कि इस सामग्री का जमन भाषा में भूलकर भी कभी अनुवाद न करें। रिंग के भेद को कम से कम उन लोगो से तो गुप्त ही रखा जाना चाहिए जो उससे घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित हैं।"



"सुरोम, अथवा मानव निर्मित दानव की कहानी" के रचयिता स्त्रूगात्स्की ब धु पेशे से लेखक नहीं हैं।



बोरिस स्त्रूगात्स्की (जन्म १९३३) एक खगोल विज्ञ हैं जो सोवियत सघ की पुल्कोवो वेधशाला की कम्प्यूटर (गणक) प्रयोगशाला मे काम करते हैं, और अरकादी स्त्रूगात्सकी (जन्म १९२५) एक भाषा शास्त्री हैं जिनका विशेष विषय जापानी भाषा है। वे अनुवादक और समालोचक भी हैं।

कि तु सोवियत सघ की शायद ही कोई ऐसी वज्ञानिक पत्रिका होगी जिसके पाठक इन दोनो भाइयों के नाम तथा उनकी अत्य त लोक प्रिय वज्ञानिक कहानियो से अपरिचित हो।

"रोबटो" (मशीनी मानवों) तथा बाहय अ तरिक्ष के अजनबियो के विषय मे उ होने अनेक मनोरजक कहानिया लिखी हैं।



अरकादी और बोरिस स्त्रूगात्स्की अपने खाली समय मे इस तरह की कहानियाँ लिखते हैं।

कहने की आवश्यकता नहीं कि इन कहानियो के पीछे सोवियत विज्ञान की अदभुत तथा बहुमुखी प्रगति का गहन अध्ययन होता है। कल्पना की मनहर तथा उदात्त उडानो मे सजोयी जानेवाली उनकी सामग्री का आधार विभिन्न विज्ञानों की प्रगतिका वतमान स्तर ही होता है। इसीलिए, रोचक होने के साथ साथ ये अत्यत शिक्षापूण भी होती हैं।

ले० अरकादी स्त्रूगात्स्की तथा
बोरिस स्त्रूगात्स्की

सरोम
अथवा मानव-निर्मित दानव की कहानी

[१]

सरोम उकता गया था !

वास्तव में, किसी रसहीन एकसुरी स्थिति, अथवा स्वयं अपने प्रति किसी आन्तरिक असन्तोष की प्रतिक्रिया से ऊबकर तंग आ जाने की क्षमता केवल मानव और कुछ पशुओं में ही होती है। जब ऐसा होता है तो फिर जीवन में कोई रुचि नहीं रह जाती। परन्तु तंग आने के लिए जरूरी है कि ऐसी कोई चीज हो जो तंग आ जाती हो—कोई सूक्ष्म, पूर्णतया संगठित ऐसा तन्त्रिका-तन्त्र हो जो उकता उठता हो ! उसके लिए जरूरी होता है कि उसका पास यह जान कि सोचा कैसे जाता है अथवा, कम-से-कम, तकलीफ कैसे सही जाती है। शब्द के साधारण अर्थ में, सरोम के कोई तन्त्रिका-तन्त्र नहीं था, और वह सोच भी नहीं सकता था। तकलीफ सहने की बात तो उससे और भी दूर थी। वह सिर्फ देख सकता था, याद रख सकता था, और काम कर सकता था। इसके बावजूद, वह उकता गया था, एक दम तंग आ गया था !

मोटे तौर से कहा जाय तो इसकी सारी वजह यह थी कि आचायजी के चले जाने क बाद उसके पास याद करने के लिए कोई नई चीज नही रह गयी थी। और, दरअसल, स्मृतियो का सग्रह करना ही सरोम के अस्तित्व का उद्देश्य था। अधिक स अधिक देखने और स्मरण रखने की उसके अन्दर एक अदम्य आकाक्षा थी, इसके सम्बन्ध म उसके अन्दर एक अमिट कौतूहल भरा हुआ था। अवकाश और काल मे घटित होने वाली वह प्रत्येक चीज तथा उसका वह प्रत्येक घटना प्रवाह उसकी दिलचस्पी का विषय था—जिसकी उसकी १५ म से किसी भी इन्द्रिय से उसे सम्वेदना प्राप्त हो सकती थी। कोई अज्ञात तथ्य अथवा घटना प्रवाह सामन नही नजर आत थे, ता आवश्यक था कि उनकी तलाश की जाय।

अपने आस पास की स्थिति की एक एक विशेषता से, एव एक छाया तक से सरोम परिचित था। उस लम्बे चौडे चौकोर कमरे स तो वह अपने जीवन के प्रथम क्षण से ही परिचित था जिसकी दीवाले भूरी और खुरदरी थी, छत नीची थी, और जिसमे लोहे का एक दरवाजा लगा हुआ था। उसम हमेशा गम धातु तथा चिकनई लगे हुए पृथक्करण की गन्ध भरी रहती थी। सिर के ऊपर यहीं एक धीमी दबी हुई सी भिनभिनाहट होती रहती थी। उस विशेष यत्रो की सहायता के बिना लोग नही सुन सकते थे परन्तु सराम उसको खूब अच्छी तरह सुनता था। छत म लगे लम्प बुझे हुए थ, परन्तु सरोम अव रक्त प्रकाश (infra red light) तथा अपने स्थिति निर्देशका (locators) के पास पहुँचने वाले कम्पना (vibrations) की सहायता स कमरे का अच्छी तरह देख सकता था।

तो सराम उकता गया था। इसलिए उसन निणय किया कि नय अनुभवो की तलाश म निकला जाय। आचाय जी का गय आधा घटा बीत चुका था और अपने अनुभव स सरोम जानता था कि वे बहुत

जल्दी नहीं लौटेंगे। यह चीज़ बहुत महत्वपूर्ण थी, क्योंकि एक बार बिना आज्ञा पाये ही सरोम ने कमरे का एक चक्कर लगा लिया था और, बाद में, आचार्य जी को जब इस बात का पता लगा था तो उन्होंने ऐसा इन्तज़ाम कर दिया था कि कौतूहल के कारण उसे चाहे जितना कष्ट हो किन्तु वह अपने किसी स्थिति निर्देशक शृङ्ग (locator horn) को भी नहीं हिला सकता था। स्पष्टतया, अब ऐसी किसी चीज़ का डर नहीं था।

सरोम लड़खड़ाया और भारी-भारी कदमों से आगे बढ़ चला। रबड़ के उसके भारी तल्लों के वज़न से सीमेंट का फ़र्श इस तरह चरमरा उठा कि उसकी आवाज़ सुनने के लिए स्वयं सरोम एक क्षण रुक गया। यहाँ तक कि उसे अच्छी तरह समझने के लिए वह झुक गया। परन्तु प्रकम्पित सीमेंट के अन्दर से जो ध्वनियाँ निकल रही थीं उनमें कुछ भी अपरिचित न था। इसलिए, सरोम तेजी से फिर सामने की दीवाल की तरफ चला गया। वह बिल्कुल उसके पास तक चला गया। वहाँ पहुँचकर उसने उसको सूंघा। दीवाल से सीलन भरे कंक्रीट की तथा ज़ंग आलूदा लोहे की बू आ रही थी। नया कुछ नहीं था। तब सरोम पीछे की ओर घूमा। घूमते समय लोहे की अपनी तेज़ कोहनी से उसने दीवाल को खरोंच दिया। फिर कोणाकोणि उसने कमरे को पार किया और दरवाज़े के सामने जाकर खड़ा हो गया। दरवाज़े को खोलना इतना आसान न था, इसलिए कुछ देर तक सरोम ताले की जाँच-पड़ताल करता रहा। जो कुछ वह देख रहा था उसकी तुलना वह उन चीज़ों से कर रहा था जिनसे वह पहले से ही परिचित था। अन्त में, अपने बायें हाथ के दन्तुरित पंजे को उसने आगे बढ़ाया और ताले के छोटे-से लीवर को चतुराई से पकड़ कर घुमा दिया। एक धीमी, लम्बी, ककर्श आवाज़ के साथ दरवाज़ा खुल गया। तो यह कुछ दिलचस्पी की चीज़ थी! कई मिनट तक दरवाज़े का खोलना और बन्द करना सरोम वहीं खड़ा रहा। पहले वह यह काम जल्दी-

जल्दी कर रहा था, बाद म धीरे-धीरे करने लगा। साथ-साथ वह सुनता और याद भी करता जा रहा था। फिर वह ड्योढी के बाहर निकल आया। उसने देखा कि सामने एक सीढी थी। वह एक सँकरी सीढी थी। सीढियाँ पत्थर की बनी हुई थी और काफी ऊँचाई तक चली गयी थी। क्षण ही भर मे सरोम ने गिन लिया कि पहली मजिल तक १८ सीढिया ह। पहली मजिल पर एक रोशनी जल रही थी। सरोम जानता था कि सीढियाँ क्या होती है। आहिस्ता आहिस्ता वह उन पर चढने लगा। पहली मजिल से ऊपर एक दूसरी सीढी, जो लकडी की बनी हुई थी, जाती थी। उसम १० सीढिया थी। दाहिनी तरफ को एक चौडा-सा रास्ता था। क्षण भर तक हिचकिचाने के बाद सरोम दाहिनी तरफ ही मुड गया। ऐसा उसने क्यो किया, यह वह स्वय नही जानता था। यह रास्ता भी सीढी से कोई अधिक दिलचस्प न था। हाँ, सीढियाँ अपेक्षाकृत सकरी जरूर थी।

गलियारे स गम-गम हवा आ रही थी। वह अब रक्त राशनी का प्रकाश था। प्रकाश फर्श के ऊपर खडे कमानीदार बलनो मे से विकिरत हो रहा था। भाप द्वारा किये जान वाले कन्द्रीय तापन (central heating) के विकिरक (radiators) सरोम न इसस पहले कभी नही दखे थे। जो भी हो, कमानीदार बेलनो का देखकर उसकी दिलचस्पी बढ गयी। वह उनकी तरफ झुका और उनम मे एक को उसन अपन दोना पजा स पकड लिया। किसी तेज धातु के चटकने जसी आवाज आयी। फिर किसी चीज के पिसने की सी आवाज आयी। गम भाप का एक घना बादल उठा और छत तक पहुच गया। यह बादल सूय के एक टुकडे की मानिन्द तेजी स दमक रहा था। सराम के पैरा क पास स उबलते हुए पानी की एक धार फूट पडी। उसने उस बेलन (सिलेण्डर) को उठाया, अपने सिर के पास तक ले गया और नजदीक से उसकी परीक्षा करन लगा। इसके बाद अपने सीने की पट्टिका म स अपने सूक्ष्म प्रहस्तना (micro manipulators) के लचीले परीक्षक अगा (feelers) का उसने निकाला और

सावधानी में नली के फटे हुए किनारे की जाँच पड़ताल करने लगा। फिर अपने परीक्षक अंगों को उसने अन्दर छिपा लिया। वेलन फर्श पर गिर पड़ा। और सरोम के रबड़ के भारी भारी तल्ले पानी के गड्ढों में से छप छप, छप छप करते हुए आगे बढ़ गये। वह रास्ते के एकदम अन्त तक चला गया। वहाँ एक छोटे-से दरवाजे पर लाल लाल अक्षरों में चमक रहा था "खबरदार! विशेष कपड़े पहने बिना अन्दर आने की सख्त मनाही है!" सरोम ने इन शब्दों को पढ़ा। "खबरदार" शब्द को वह जानता था, परन्तु वह यह भी जानता था कि इस शब्द का सम्बन्ध हमेशा इन्सानों से होता है। उससे, यानी सरोम से, उसका कोई ताल्लुक नहीं हो सकता था। उसने एक हाथ बढ़ाकर दरवाजे को धक्का दिया।

हाँ, यहाँ बहुत कुछ ऐसा था जो दिलचस्प और नया था। वह एक बड़े-से हॉल (कक्ष) के द्वार पर खड़ा था। कक्ष धातु, पत्थर और प्लास्टिक की चीजों से भरा था। उसके बीचो-बीच एक मीटर ऊँचा कंक्रीट का एक चबूतरा था। वह एक चौरस चौकी की तरह लगता था। उसके ऊपर लोहे या शीशे का पत्तर चढ़ा हुआ था। उससे अनेक केबुल (मोटे तार) दीवालों की तरफ जाते थे। दीवालों पर संगमरमर की पटियाँ लगी हुई थीं जिनके ऊपर अनेक यन्त्रों तथा बिजली के स्विचों की मूठें चमाचम चमक रही थीं। कंक्रीट की चौकी के चारों तरफ ताँबे के तार का घेरा था, और छत से, चमकती हुई, कुहनियों की तरह की बहुत-सी छड़ें लटक रही थीं। छड़ों के छोर पर कुछ उसी तरह के चिमटे और पंजे बने हुए थे जिस तरह के सरोम की भुजाओं में थे।

संगमरमर के फर्श पर धीरे धीरे चल कर सरोम ताँबे के तार के घेरे के पास पहुँच गया। उसने उसकी परिक्रमा की, फिर चुपचाप खड़ा हो गया। फिर एक बार और उसने उसकी परिक्रमा की। तार

वे जाल के अन्दर से बाहर निकलने का कोई रास्ता उसे नही दिखलायी दिया। इसलिए उसने अपना पैर उठाया और बिना किसी प्रयत्न के उसके अन्दर से निकल गया। तांबे के जाल के टूटे टुकडे उसके कंधो से लटक रहे थे। परन्तु कंक्रीट की चौकी की तरफ दो ही कदम बढने के बाद वह रुक गया। उसका सिर, जो स्कूल के ग्लोब (धरती के गोले) की तरह गोल था, सावधानी से इधर उधर देखने लगा। उसके ध्वानिकी सग्राहको (acoustic receptors) के आबनूस के बने छद (shells) आगे निकल आये और जोरो से हिलने लगे। उसके स्थिति निर्देशक शृग (locator horns) भी प्रकम्पित हो उठे। चौकी के शीशे के ढक्कन से अव-रक्त प्रकाश विकिरित हो रहा था—यह चीज इस तापित कक्ष म भी स्पष्ट रूप से दिखलायी देती थी। परन्तु, इसके अतिरिक्त, उसम से किसी प्रकार का पार नील-लोहित (अल्ट्रा वायलेट) विकिरण भी हो रहा था। सरोम को एक्सरे और गामा किरणो के प्रकाश म अच्छी तरह दिखलायी देता था। उसे लगा कि वह ढक्कन पारदर्शी था और उसके नीचे एक सकरा, अथाह कुआँ था जिसम चमकती हुई धूल भरी थी। उसकी स्मृति की गहराइयो के अन्दर अचानक जसे यह आदेश कौंध गया "इस जगह से फौरन हट जाओ!" सरोम को यह नही मालूम था कि यह आडर कब दिया गया था, या किसने दिया था। हो सकता है कि जिस समय वह अस्तित्व म आया था, उसी समय से उसे इसकी जानकारी थी, उसी तरह जिस तरह कि उन अन्य चीजो से भी, जिन्ह उसने कभी देखा या अनुभव किया था, उसे नही अधिक जानकारी थी। किन्तु सरोम ने आदेश का पालन नही किया। कौतूहल ने उसे विवश कर दिया था। वह चौकी पर झुका, पजा जैसे अपने हाथो को उसने कुछ आगे बढाया और थोडे-से प्रयत्न से ढक्कन को ऊपर उठा लिया।

गामा किरणो की चकाचौंध के कारण उसे कुछ नही दिखलायी दिया। उनकी बौछार म उसकी आँखो के सामने अँधेरा छा गया।

सामरमर के नियन्त्रण पट्टों (कन्ट्रोल पैनल्स) पर लाल-लाल डरावनी रोशनियाँ चमकने लगीं। जोरों से एक सीटी बजने लगी। अपने हाथों की पारदर्शी सिल्टुटों के अन्दर से क्षण भर के लिए उसने कंक्रीट के बने गड्ढे के अन्दर नजर डाली। फिर ढक्कन को उसने फेंक दिया और धीमी, भरभराती-सी आवाज में कहा

"यहाँ से जल्दी भागो ! खतरा है ! "

कक्ष में जोर की एक प्रतिध्वनि गूंज उठी और फिर वह खतम हो गयी। सरोम ने अपने शरीर के ऊपरी भाग को १८०° घुमा लिया और तेजी से दरवाजे की ओर बढ़ गया। नियन्त्रक गणक के विकिरण शील कणों की बौछार से उसे जो आघात पहुँचा था उसकी वजह से कंक्रीट की चौकी से वह दूर भाग गया था। इसमें कोई शक नहीं था कि निर्दय से निर्दय किरणें भी, कणों की अधिक से अधिक शक्तिशाली मार भी सरोम को तनिक भी क्षति नहीं पहुँचा सकती थी, रीएक्टर (Reactor) के सक्रिय क्षेत्र के अन्दर होने पर भी उसको कोई बड़ा नुकसान नहीं हो सकता था। लेकिन, सरोम का निर्माण करते समय, आचार्य ने उसके अन्दर यह इच्छा भर दी थी कि तीक्ष्ण विकिरण के स्रोतों से उसे अधिक से अधिक दूर रहना चाहिए।

सरोम गलियारे में निकल गया। अपने पीछे सावधानी से उसने दरवाजा बन्द कर दिया। भाप-जन्य तापन की व्यवस्था से सम्बन्धित कमानीदार बेल्न पर खड़े होते हुए उसने देखा कि वह फिर वहीं पहली मंजिल पर पहुँच गया था जहाँ सीढ़ियाँ खतम हो जाती थीं। वहाँ तुरन्त उसकी नजर एक आदमी पर पड़ी जो तेजी से स्वचालित सीढ़ियों से नीचे उतर रहा था।

आचार्य जी की तुलना में यह बहुत ही नाटा प्राणी था। वह ढीले ढाले, हल्के रंग के कपड़े पहने था। उसके बाल असाधारण तौर से लम्बे थे और उनका रंग सुनहरा था। सरोम ने इस तरह पा-

आदमी पहले कभी नही देखा था। उसने हवा म सूघने की कोशिश की। उसे श्वेत बकाइन की सुपरिचित सुगध ही उसमे मिली। कभी कभी आचाय के पास से भी ऐसी ही सुगध आती थी, परतु वह धीमी होती थी।

सीढियाँ जहाँ खत्म होती थी उस जगह पर आधा अधकार था, पर लडकी के पीछे जो सीढी थी वह तेज प्रकाश से रौशन थी। सरोम की विशाल काया की भौडी रूप-रेखा पर लडकी की नजर फौरन पडी। परन्तु उसके कदमो की आहट सुनकर वह रुक गयी और क्रुद्ध होकर बोली

"कौन है ? इवाशेव, क्या तुम हो ?"

'नमस्कार, आप कसी हैं ?" सरोम ने तुतलाते हुए उत्तर दिया।

लडकी बेसाख्ता चीख पडी। उसने देखा कि अधकार मे से कोई आदमी उसकी तरफ बढा आ रहा था। आदमी का सिर चमक रहा था, आँखें संकरी और पथरायी हुइ-सी थी, कधे अत्यधिक चौडे तथा जिरह-बख्तर स ढँके हुए थ, और उसकी भुजाएँ मोटी तथा जुडी हुइ-सी थी। सरोम लकडी के जीने की आखिरी सीढी की तरफ बढा। लडकी फिर जोरो से चीख उठी।

सरोम के अभिनन्दन के जवाब म मनुष्य ने कुछ न कहा हो—ऐसा इससे पहले कभी न हुआ था। परन्तु, यह विचित्र ऊँची तीक्ष्ण और अन्दर तक भेदन वाली तथा निश्चित रूप से सवथा अथहीन आवाज़ तो उन किन्ही भी जवाबो स नही मिलती थी जिनस सरोम परिचित था। सराम का कौतूहल बढा और वह और भी सकल्प पूण ढग से भागती लडकी के पीछे चलने लगा। उसके पैरो के नीचे लकडी की सीढियाँ चरचराने और खडखड होने लगी।

'पीछे हट !", लडकी जोर से चिल्लायी।

सरोम रुक गया। फिर सुनने के लिए उसने अपना सिर झुका लिया।

"पीछे हट, ओ राक्षस! पीछे हट!!"

सरोम "पीछे हटो!" की आज्ञा का अर्थ जानता था। इसका अर्थ था कि अपने शरीर के ऊपरी भाग को एक बार वह पूरा घुमाये और उल्टी दिशा में तब तक चलता जाय जब तक कि दूसरा—"ठहरो!" का आदेश उसे न मिले। लेकिन इस तरह की आज्ञाएँ आम तौर से आचार्य जी ही उसे दिया करते थे। इससे भी बड़ी बात यह थी कि सरोम अभी चीज़ों का और भी पता निशान लेना चाहता था। उसने फिर ऊपर चढ़ना शुरू किया और छोटे-से, प्रकाश-भरे कमरे के दरवाज़े पर जा पहुँचा।

"पीछे हट! पीछे हट!! पीछे हट!!!", लड़की चिल्लायी।

इस बार सरोम नहीं रुका, परन्तु वह अब बहुत धीरे धीरे चलने लगा। कमरे की चीज़ों में उसे दिलचस्पी हो रही थी वहाँ दो लिखने पढ़ने की मेज़ें थीं, कुर्सियाँ थीं, नक्शा बनाने वाले ड्राफ्टमेन का एक तख्ता था, किताबों की एक आल्मारी थी और मोटी-मोटी कई फाइलें थीं। सरोम जिस समय बक्सों को हटाने, फाइलों को खोलने और उनकी नीली दफ्तियों के किनारों पर काली भारतीय स्याही में साफ-साफ लिखे विवरणों को ज़ोर-ज़ोर से पढ़ने में लगा हुआ था, उसी समय वह लड़की चुपचाप वहाँ से अगले कमरे की तरफ़ खिसक गयी। वहाँ एक सोफे के पीछे छिप कर तेज़ी से उसने टेलीफोन से रिसीवर को उठा लिया। सरोम ने इसे देख लिया, क्योंकि उसकी गर्दन के पीछे भी देखने का यंत्र लगा हुआ था। परन्तु, लम्बे बालों-वाली उस छोटी-सी लड़की में उसे अब कोई दिलचस्पी नहीं रह गयी थी। फ़र्श पर फैले हुए काग़ज़ों के ऊपर पैर रखता हुआ, वह आगे बढ़ गया। उसके पीछे लड़की ज़ोर-ज़ोर से टेलीफोन में कह रही थी

"क्या निकोलाई पेत्रोविच बोल रहे है ? मैं गाल्या हूँ ! निकोलाई पत्रोविच, तुम्हारा सरोम बाहर निकल आया है और हमारे ऊपर चढा आ रहा है। सरोम ! उलियाना-रौबट–मामा हाँ, हा, मैं नहीं जानती मैंने तो उसे रीएक्टर क बडे कक्ष से बाहर आते समय ही देखा था हा,हाँ, रीएक्टर मे कमरे म वह गया था क्या ? नही, एसा तो नही मालूम होता।"

सरोम ने सुनना बन्द कर दिया। वह बाहर बरामदे मे निकल गया और वहा एक स्थान पर खडा होकर अपन स्थिति निर्देशको के काले शृङ्गो का तेजी से इधर उधर घुमाने लगा। वह अचम्भे म पड गया। सामने की दीवाल पर काई बडी सी चीज टँगी थी जो चमचमा रही थी और ठडी मालूम हाती थी। अब रक्त प्रकाश मे वह एक भरे, अभेद्य सम चतुभुज के समान दिखलायी पडती थी और साधारण प्रकाश की किरणा म वह चमकती हुई चाँदी जैसी सफेद बन जाती थी। परन्तु सरोम जिस चीज स परेशान था वह यह नही थी। उस विचित्र सम-चतुभुज के अन्दर एक काला राक्षस खडा था जिसका सिर स्कूली ग्लोब (पृथ्वी के गोले) की तरह गोल था। उस पर लग सीग हिल रह थे। सरोम यह न समझ सका कि वह कहा है। उसकी दष्टि के दूरी-मापक (distance meter) न उस सूचित किया कि उसो और उस अपरिचित वस्तु क बीच १२ मीटर ८ सण्टीमाटर का फासला था, परन्तु उसके स्थिति निर्देशक ने इसे गलत बतलाया। "वहाँ कोई भी चीज नहीं है। ६ मीटर ८ सण्टीमीटर के फासले पर केवल एक चिकना, लगभग ऊध्वाधर तल है।' सरोम न इस तरह की काई भी चीज पहल कभी नही देखी थी, और न इससे पहले उसके स्थिति निर्देशक और दाष्टिक ग्रहीता (Visual receiver) न ही इस तरह की परस्पर विरोधी सूचनाएँ उस कभी दी थी। गुरु स ही उसक शरीर मे काई एसी चीज लगा दी गयी थी जा माँग करती थी कि जिस किसी भी चीज को उस स्पर्श करना हो उस पहल स ही वह साफ

और सुगम्य कर दे। इसलिए सकल्प-पूर्वक वह फिर आगे बढ़ने लगा। अपने दिमाग़ में वह इस मामले से सम्बधित नियम को नोट और स्मरण करता चला जा रहा था "दृष्टि के दूरी मापक यत्र के अनुसार फासला स्थिति-निर्देशक द्वारा बताये गय फ़ासले से दुगुना होता है " वह शीशे के अदर घुसता चला गया। शीशा टूट गया और उसके टुकडे तथा छिपटियाँ चनचन करती हुइ चारो तरफ फैल गयी। सामने दीवाल पाकर सरोम रुक गया। स्पष्ट था कि अब और कुछ करने को यहाँ शेष नही रह गया था। उसने पलास्टर को खरोचा, सूघा, फिर वह घूम पडा और बाहर के दरवाजे की तरफ चल दिया। ड्यूटी पर जो आदमी था उसकी तरफ उसने कोई ध्यान न दिया। ड्यूटी वाले आदमी का चेहरा चादर की तरह सफ़ेद हो गया था और वह लगातार खतरे की घटी बजा रहा था। बाहर बर्फ का तूफान गरज रहा था। बाहर निकलते ही वह सफ़द अधकार मे खो गया।

[२]

निकोलाई पेत्रोविच ने टलीफोन का रिसीवर जब नीचे रखा तो पिस्कूनाव बाहर के कमरे म पहले ही स पहुँच चुके थे। वह जल्दी जल्दी समूर के अपन बडे कोट को पहनने की कोशिश कर रहे थे।

"तुम कहाँ जा रहे हो ?"

"वही ! मैं वहीं जा रहा हूँ "

'ठहरो, पह्ले हम तय करना होगा कि क्या करना है। अगर हम

भारी यन्त्र ने बिजली घर के अन्दर उछल-कूद करनी शुरू कर दी, तब तो "

"बात अगर केवल बिजली घर तक ही हो तो भी उतना बुरा नही होगा," रियाब्किन ने कहा। "परन्तु अगर वह प्रयोगशाला के अन्दर घुस गया? और गोदाम के अन्दर? और कहीं, खुदा ना ख्वास्ता, उसकी नजर इधर, बस्ती की तरफ घूम गयी, तब क्या होगा?"

निकोलाई पेत्रोविच गभीर सोच विचार मे पड गये थे। पिस्कूनोव दरवाजे की मूठ पर हाथ रखे हुए बेचैनी के साथ कभी इस पैर, कभी उस पैर पर खडे होकर इतजार कर रहे थे।

कोस्टको ने डरते डरते कहा, "हमे जल्द से जल्द वहाँ पहुँच जाना चाहिए—हम सब को। हम उसको ढूढ निकालना चाहिए और फिर उसे पकड लेना चाहिए।"

पिस्कूनोव ने क्रोध से केवल उसकी तरफ देखा, परन्तु, समूर के अपने कोट के हुको को लगाते हुए, रियाब्किन ने क्रोध-पूर्वक जैसे अपने ही से कहा,

"उसे पकड लो—कहना बडा आसान है! और आपकी समझ मे इसे हम करेंगे कैसे? क्या उसके पाजामे के नाडे को पकड कर उसे रोक लेंगे? उसका वजन आधा टन है! उसकी भुजा की मारने की शक्ति ६०० पौंड मे भी अधिक है! कास्टेन्को, अच्छा हो कि तुम अपना मुह बन्द ही रक्खो। तुम यहाँ नये-नये आये हो, तुम कुछ जानते नहीं।"

तभी निकोलाई पेत्रोविच ने दृढतापूर्वक कहा, "लो, मने रास्ता निकाल लिया। हम लोग निम्न प्रकार काम करेंगे। मैं हास्टल फोन

कर दूंगा और विद्यार्थियों से कहूँगा कि व सब वहाँ आ जायें। तुम, रियाब्किन, कार पार्क की तरफ चले जाओ। लेकिन, मुसीबत तो यह है कि आज शनिवार है, वे सब क्लब गये होंगे। पर चिन्ता न करो, जल्दी जाओ, और तीन ड्राइवरों को कहीं से खोज लाओ। हमें कैटरपिलर बुलडोज़रों को बाहर निकालना पड़ेगा। ठीक है न, पिस्कूनोव ?"

"हाँ, ठीक है, और अब जल्दी करो। केवल "

"पिस्कूनोव, तुम इस्टीच्यूट (संस्थान) चले जाओ। सरोम का पता लगाओ और कार-पार्क को फोन से फौरन सूचित कर दो। कोस्टेन्को, तुम इनके साथ चले जाओ। और साथियो ! देखो, बहुत सावधानी से काम करना। बस, अगर बस शैतान को सिर्फ फाटक से बाहर जाने से हमने रोक लिया, तो समझ लो हम कामयाब हो गये "

व सब झपट कर बाहर निकल गये। अपने ओवर-कोटों को वे चलते चलते ही पहनते गये। रियाब्किन से ठोकर लगी और उसका सिर कोस्टेन्को की पीठ से लड़ गया। फलस्वरूप, कास्टेन्को जमीन पर बुरी तरह गिर गया।

"धत् तेर की !"

'क्या बात है ? क्या तुम्हारा चश्मा खो गया है ?"

"नहीं, सब ठीक है।'

भयानक हवा चल रही थी। जमीन पर पड़ी भूरी बर्फ के बादल उठ-उठ कर उड़ रहे थे। टेलीफोन के तारों में भी उसका क्रन्दन सुनायी दे रहा था। बिजली के ऊँचे खोम्भों व तारों को सहारा देने वाले लोहे के खोखटों के अन्दर प्रवेश करते वह सीटी-जैसी ओर की

आवाज़ कर रही थी। मकानों की खिडकियों के अन्दर से प्रकाश के कोमल पीले-पीले सम चतुर्भुज निकल कर उडती हुई बर्फ के ऊपर अपना अक्स डाल रहे थे। शेष सारी चीजें अगम्य अंधकार में डूबी हुई थी।

"अच्छा, मैं चला," रियाबिकिन ने कहा। "देखिए, आप लोग सावधानी से जाइएगा, बेकार का जोखिम न उठाइएगा।"

वह फिर टकराया और गिर पडा। थोडी देर तक वह बर्फ में इधर उधर गिरता-लडखडाता रहा और बर्फ के तूफान, सरोम, तथा इस अभागे काण्ड से सम्बंधित हर व्यक्ति को जी भर कोसता रहा। फिर हल्के रंग के समूर का उसका कोट संस्थान के फाटक के पास दिखलायी दिया और फिर हिम के ज़ोर के एक चक्रवात में वह ओझल हो गया।

पिस्कूनोव और कोस्टेन्को मुख्य मार्ग की ओर चल दिये।

कोस्टेन्को ने मन ही मन बुदबुदाते हुए कहा, "मेरी समझ में नहीं आता कि ट्रैक्टरों से क्या फायदा होगा।"

"फिर, तुम्हारा क्या सुझाव है ?" पिस्कूनोव ने पूछा।

"मेरा मतलब यह नहीं है   मेरी तो कुछ समझ में नहीं आ रहा है। आप क्या अपने सरोम को नष्ट कर देना चाहते हैं ?"

पिस्कूनोव ने ठण्डी साँस ली।

उन्होंने कहा, "हम सरोम को सिर्फ़ रोक देना चाहते हैं।"

उन्होंने अपने ओवरकोट के पिछले हिस्से को पकड लिया और हिमपात के अन्दर से डगमगाते-लडखडाते हुए आगे बढने लगे। कोस्टेन्को पीछे पीछे चलने लगा। वह अत्यन्त हत प्रभ तथा एकाकी अनुभव

कर रहा था। सामने बर्फ से ढका मैदान था, और उसके आगे मुख्य मार्ग। बिजली घर मुख्य मार्ग की दूसरी तरफ बना हुआ था। पिस्कूनोव ने नजदीक वाला रास्ता चुना। खुले मैदान में यह उस जगह से जाता था जहाँ एक नयी इमारत बनाने के लिए पिछले पतझड़ में खुदाई का काम हुआ था। कास्टेल्को ने सुना कि जब पिस्कूनोव उस जगह की बर्फ से ढकी ईंटों और धातु की छड़ों के ढेर से टकराकर गिरे तो धीरे धीरे किसी को कोस रहे थे। आगे बढ़ना बहुत कठिन था। इंस्टीच्यूट (संस्थान) की खिड़कियों से प्रकाश की जो रेखाएँ आ रही थीं बर्फ की तहों के अंदर से वे मुश्किल से ही दिखलायी पड़ती थीं।

अन्त में, कोस्टको ने कहा, "जरा देर थम जाइए। ईश्वर की कसम, रास्ता बहुत ही दुर्गम है। रुक कर हम जरा साँस तो ले लें।"

पिस्कूनोव उसकी बगल में बैठ गये। वे सोचने लगे, आखिर हो क्या गया है? सरोम को जितनी अच्छी तरह वे जानते थे उतनी अच्छी तरह इंस्टीच्यूट का दूसरा कोई व्यक्ति नहीं जानता था। उस शानदार मशीन की हर डिवरी, हर विद्युदग्र (electrode), हर लेन्स उनके हाथ से गुजरा था। उन्होंने सोचा था कि हर सम्भव परिस्थिति में उसकी हर गतिविधि का हिसाब वे लगा सकते थे और पहले से ही बता दे सकते थे। और अब, देखो तो क्या हो गया है! सरोम अपने कमरे से "अपनी मर्जी से" निकल गया है और बिजली घर के आस-पास चहलकदमी कर रहा है!! ऐसा क्या?

सरोम का सारा क्रिया-कलाप उसके "मस्तिष्क" से निर्धारित होता था। उसका यह मस्तिष्क जरमेनियम, पोलोनियम तथा प्लेटिनम का बना एक असाधारण रूप से मस्तिष्क तथा सुकुमार यन्त्र है। एक साधारण कम्प्यूटर (गणक) में दसियों हजार पार्ट्स ज्यादा

वे सामान्य अंग होते हैं जो संकेतों को ग्रहण करते हैं, नोट करते हैं और फिर बता देते हैं, लेकिन सरोम के "मस्तिष्क" में तो तक़रीबन एक करोड़ अस्सी लाख कोशिकाएँ काम करती है। अनगिनत परिस्थितियों की प्रतिक्रियाएँ तथा, परिस्थितियों के परिवर्तनों के नाना स्वरूप उनमें "अंकित" हैं, भिन्न भिन्न प्रकार की कार्रवाइयों की एक विशाल संख्या की पूर्ति करने की क्षमता की उनके अन्दर व्यवस्था की गयी है। फिर "मस्तिष्क" पर, निर्धारित कार्यक्रम पर किस चीज़ का प्रभाव पड़ गया होगा ? आणविक मोटर के विकिरण का ? नहीं, मोटर तो जरकोनियम, गैडोलिनियम तथा बोरोन इस्पात के एक शक्तिशाली आवरण से ढका हुआ था। वास्तव में, इस आवरण को कोई नहीं भेद सकता है। उसके अन्दर एक भी न्यूट्रान, गामा किरणों की ऊर्जा का एक भी क्वाटम् प्रवेश नहीं कर सकता। फिर क्या उसके ग्रहीता में कोई नुक्स हो सकता है ? नहीं, ग्रहीते तो आज शाम को ही बिलकुल ठीक अवस्था में थे। फिर इसका कारण किसी तरह स्वयम् "मस्तिष्क" ही होगा। तो क्या कार्यक्रम ? यह नया, जटिल कार्यक्रम जिसके लिए पिस्कूनोव स्वयम उत्तरदायी थे ? उसके कार्यक्रम का अंकन गलत बस, यही वजह होगी !

धीरे धीरे पिस्कूनोव उठकर खड़े हो गये।

"स्वतःस्फूर्त प्रतिवर्त !" उन्होंने घोषणा करते हुए कहा। "निस्सदेह, यह स्वतःस्फूर्त प्रतिवर्त का ही करिश्मा है ! मूर्ख कहीं का !"

कोस्टेन्को ने भय से उनकी तरफ देखा। माजरा क्या है।

"आपकी बात मैंने नहीं समझी।" वह बोला।

"लेकिन मैं तो समझ गया। बात बिल्कुल साफ़ है। ऐसा कौन सोच सकता था ? सब कुछ इतनी अच्छी तरह से चल रहा था !"

हुउवड़ा पर उठते हुए कोम्टेको ने जोर से कहा, "उधर देखिए ! वह क्या हो रहा है !"

इन्स्टीच्यूट के ऊपर का भूरा-काला आकाश झिलमिलाती हुई एक तेज नीली लौ से उदभासित था और उसके पीछे बर्फ के चक्रवात के अन्दर से, काली-काली इमारतों की भयावनी परछाइयाँ नजर आ रही थीं। वे अद्भुत रूप से स्पष्ट तथा, इसके बावजूद, कुछ अजीब तरह से अवास्तविक लगती थीं। रोशनियों की जो पतली-सी माला संस्थान की सीमाओं का आभास देती थी वह यकायक उभरी और फिर अन्धकार में विलीन हो गयी।

पिस्कूनोव ने भराई आवाज में कहा, "यह ट्रान्सफार्मर (परिणामित्र) था ! उसका खेल खत्म हो गया। उप बिजली घर रीएक्टर टावर के बिल्कुल सामने है। सरोम वहीं पहुँच गया है पर चौकीदार वहाँ क्या करा रहे हैं . . ?"

"चलिए, हमलोग दौड़ चलें।" कोम्टेको ने सुझाव दिया।

वे साथ-साथ दौड़ने लगे। लेकिन यह सहल न था। सामने से तेज हवा आ रही थी। बर्फ से ढंके गड्ढों में उनके पैर फँस फँस जाते थे। वे गिरते, उठते, और फिर गिर पड़ते।

पिस्कूनोव ने जैसे आवाहन करते हुए कहा, "आओ, जरा तेजी से चलें।"

उनके अन्दर जो तूफान उठ रहा था उसकी वजह से और हड्डियों तक को कँपाने वाले तीखे पवन की वजह से उनकी आँखों में आँसू बहने लगे। ये उनके चेहरे पर लुढ़कने लगे। उनकी बरौनियों में उनके जमकर बर्फ बन गये थे जिसकी वजह से उनके लिए देखना भी मुश्किल हो गया था। उन्होंने बारटेको की बाँह पकड़ी और उसे खींचते हुए आगे बढ़ने लगे। भारी आवाज में सब भी . . . रहे थे "जल्दी करो, जल्दी करो !"

इस्टीच्यूट के ऊपर प्रकाश की जो तेज कौंध दिखलाई दी थी उसे, स्पष्ट था कि, बस्ती में भी लोगों न देखा था। "सायरन" (घण्टा), खतर की सूचना दे रहा था। चौकीदारों के मकानों में रोशनियां जल उठी थीं। "सर्चलाइट" की तेज, चकाचौंध पैदा करने वाली एक रोशनी मैदान में इधर से उधर कुछ टटोलती हुई-सी दौड़ रही थी। अंधकार में छिप बर्फ के ढूहों को उसने रौशन कर दिया, बिजली के हाई-टेन्शन वाले तारों के चरखेदार सहारों को आलोकित कर दिया, फिर इस्टीच्यूट के चारों तरफ बनी ईंटों की दीवाल के ऊपर फिसलती हुई सर्चलाइट की वह रोशनी आगे बढ़ी और उसके फाटक के ऊपर जाकर रुक गयी। फाटक से छोटे छोटे, काले-काले से प्राणी तेजी से आ-जा रहे थे।

"वह कौन है, वहाँ ?", हाँफते हुए कोस्टको ने पूछा।

पिस्कूनोव रुक गये। उन्होंने अपनी आँखें मलीं और बोले, 'चौकीदार ! शायद मिलीशिया भी आ गयी है ! '

"फाटक — उसे उन्होंने बन्द कर दिया है," उन्होंने कहा। ऐसा कहते समय उनका गला भर आया। "पर, शाबाश ! इसका मतलब हुआ कि सरोम अब भी वहीं है।'

स्पष्ट था कि अब सबको सावधान कर दिया गया था। इस्टीच्यूट की दीवालों के आस-पास अब तीन सर्चलाइटों की तेज रोशनियाँ चारों तरफ घूम रही थीं। नीले प्रकाश में हिम के टुकड़े नाच रहे थे। पवन के शोर और हल्ले के बीच भी लोगों के चिल्लाने की आवाजें सुनायी दे रही थीं। किसी ने क्रोध में आकर जोर से गाली दी। आखिरकार इंजिनों की घड़घड़ाहट सुनायी दी और कैटरपिलरों के चलने की झनकार भी ऊपर उठी। कार-पार्क के अन्दर से दैत्याकार बुल्डोजर ट्रैक्टर भयंकर शोर करते हुए बाहर निकल रहे थे।

पिस्कूनोव ने कहा, "कोस्टेंको, देखो। ध्यानपूर्वक देखना। अब हम मानव इतिहास का सबसे असाधारण हमला देखने जा रहे हैं। ध्यान से देखो।"

कोस्टेंको ने बगल में पिस्कूनोव की तरफ देखा। उसे लगा कि उस महान इंजीनियर के चेहरे से अश्रुधार बह रही थी। हवा के कारण भी ऐसा हो सकता था।

अब कैटरपिलरों के चलने की धनवार करती आवाज पीछे में नहीं, बल्कि उनकी दाहिनी तरफ से आने लगी थी। ट्रैक्टर मुख्य मार्ग पर पहुँच गये थे। उनकी सामने की झिलमिलाती रोशनियां थोडी थोडी दिखलायी देने लगी थीं। उनसे जाहिर होता था कि ट्रैक्टरों की संख्या पाँच थी।

आहिस्ता से पिस्कूनोव ने कहा, "एक के खिलाफ पाँच-पाँच! उसके बचने की अब कोई गुंजाइश नहीं है। लाखों में एक भी इसका अवसर नहीं है। उसकी खोपडी की स्वतःस्फूर्तिता अब उसकी कोई मदद नहीं कर सकेगी।"

अचानक वातावरण बिल्कुल बदल गया। पहले-पहल तो कोस्टेंको की समझ में कुछ न आया। हिम का झंझावात अब भी उसी प्रकार गरज रहा था, सूखी बर्फ के बादल अब भी जमीन से लिपटते-टकराते चल रहे थे। ट्रैक्टरों के इंजिन अब भी बमुरौवत और खौफनाक ढंग से आवाजें कर रहे थे। परन्तु मैदान के ऊपर सर्चलाइटों की रोशनी के चक्कर अब बन्द हो गये थे। उनकी रोशनी फाटकों के ऊपर स्थिर थी। फाटक खुले हुए थे और उनके आस-पास कोई नहीं था।

कोस्टेंको ने आश्चर्य में कहा, "मामला क्या है।"

"नहीं, वह निकल तो नहीं ग "

पिस्कूनोव ने वाक्य पूरा नहीं किया। बिना एक भी शब्द और वह व दोनों साथ-साथ इंस्टीच्यूट की तरफ दौड़ने लगे। जब फाटक के और उनके बीच केवल कुछ सौ कदमों का फासला रह गया, तो पिस्कूनोव को, जो आगे थे, राइफिल लिये एक आदमी मिल गया। वह आदमी डर से चिल्लाने लगा और भागने ही जा रहा था कि पिस्कूनोव ने उसका कन्धा पकड़ लिया।

उन्होंने पूछा, "क्या बात है ?"

मिलीशिया के आदमी ने भयभीत हालत में चारों तरफ नजर दौड़ाई, फिर कुछ गालियाँ बुदबुदायी, और अपने को सभालने की कोशिश करने लगा।

"वह बाहर निकल गया!" उसने कहा। "बाहर भाग गया! फाटकों को तोड़ दिया और सीधे बाहर निकल गया! मकायेव उसके नीचे कुचलते-कुचलते बचा। मदद के लिए लोगों को मैं बस्ती से लाने जा रहा हूँ।"

"वह किधर गया ?"

मिलीशिया के आदमी ने हाथ से अस्पष्ट इशारा करते हुए बायीं दिशा की ओर बताया।

"शायद उस रास्ते से। मुख्य मार्ग से।"

"तब फिर रास्ते में उस ट्रैक्टरों से भिड़ना पड़ेगा। आओ, चलो।"

अगले ही मिनट जो चीज घटी वह ऐसी थी कि अपने जीवन के अन्तिम दिन तक वे कभी न उसे भूल सके। अन्धकार के पर्दे में आवन में से अचानक कोई विशालकाय और आकृति-विहीन चीज निकल पड़ी और उनकी तरफ बढ़ने लगी। उसकी टिमटिमाती हुई लाल और हरी रोशनियों की चकाचौंध से उनकी आँखें झपकने लगी। और तभी एक तीक्ष्ण भारी-सी आवाज गूँज उठी

"नमस्कार, आप कुशल से तो हैं ?"

"सरोम, अब रुक जाओ।" हठात पिस्कूनोव के मुँह से जोर से जैसे एक चीख निकल पड़ी।

कोस्टको ने देखा कि मिलोशिया का सनिक भाग रहा है। उसने देखा कि पिस्कूनोव अपने हाथ उठा कर उस दत्याकार आकृति का घूँसा दिखला रहे हैं। लेकिन भाप में लिपटा हुआ, यह भयावना पुतला अपने मोटे-मोटे-लट्ठे जैसे पैरों को उठाता हुआ, उनके पास से गुजर गया, और बर्फ के तूफान में ओझल हो गया।

[३]

सरोम ने अपने पीछे सावधानी के साथ दरवाजा बन्द किया, जैसा कि अगर दरवाजा टूटा नहीं होता था तो वह हमेशा करता था। वह आगे बढ़ा और रुक गया। उसके चारों तरफ आवाजें, जबर्दस्त हलचल, तथा किरणें थीं। रेडियो-तरंगों के रंगीन बहुरूप-दर्शी प्रकाश में दमकती हुई रात्रि अत्यन्त मोहक लग रही थी। उसके आगे, लगभग ४० फुट के फासले पर, एक नीची-सी इमारत थी जिसकी खिड़कियाँ चौड़ी और लोहे की सलाखों से ढकी हुई थीं। उसकी दीवालों से तेज अव रक्त प्रकाश निकल रहा था। इमारत के अन्दर से धीरे धीरे एक लगातार भनभनाहट की सी ध्वनि आ रही थी। हिम के लगातार टुकड़े हवा में चक्कर काट रहे थे। सरोम के धातु की पट्टियों से ढके शरीर पर, जो आणविक मोटर के ताप से गर्म था, बर्फ के टुकड़े गिरते थे और फौरन गलकर हवा में उड़ जाते थे।

मरोम ने अपना सिर घुमाया और निर्णय किया कि जाँच पडताल की दृष्टि से सामने की यह नीची-सी इमारत ही सबसे दिलचस्प चीज होगी। ओट की तरफसे जाने वाले मार्ग पर चलते हुए इमारत का द्वार फौरन उसने ढूढ लिया। इमारत के चारो तरफ देवदार के छोटे छोटे वृक्ष लगे थे। थोडा रुककर उसने उनमे से एक को तोड लिया और उसको ध्यान से देखा। इसके बाद उसने दरवाजा खोला और उसके अन्दर दाखिल हो गया।

छोटे से मरे कमरे के अन्दर एक मेज के इर्द गिर्द दो आदमी बैठे थे। उनकी नजर जब उसके ऊपर पडी तो भयभीत होकर वे अपनी जगहो से उछल पडे और आँखें फाड-फाडकर उसकी तरफ देखने लगे। मरोम न अपने पीछे दरवाजा बन्द कर दिया (उसने चटखनी तक लगा दी) और फिर उनके सामने आकर खडा हो गया।

'आप लोग अच्छी तरह तो हैं ?", उसने पूछा।

'कामरेड पिस्कूनोव कहाँ हैं ?" उनमे से एक आदमी ने आश्चय से पूछा।

"कामरेड पिस्कूनोव बाहर गये हुए है। आपका कोई सन्देश हो तो मुझे दे दीजिए। आपके बारे म मैं उनसे क्या कहूँ ?" मरोम ने उपेक्षापूर्ण उत्तर दिया।

लोगो म उसकी दिलचस्पी नही थी। उसका ध्यान दीवाल के पास एक कोने म गुडमुड पडे छोटे-से एक पक्वरे प्राणी की तरफ चला गया था। 'श्रमन, जि दादिल, मजबूत गाय वाला है, आदमी नही है," मरोम न उसके बारे में सोचा था।

उस प्राणी को सम्बोधित करते हुए मराम ने कहा, 'नमस्कार, आपका मिजाज कैसा है ?"

"गर र-र र," एक हलाग प्राणी के साहस से उस जीव ने उत्तर दिया। अपने तेज, सफेद दांतों को उसने बाहर निकाला और फिर और भी अधिक सिमिटकर कोने में चिपक गया।

सरोम कुत्ते को देखने में इस तरह भूला हुआ था कि इस बात की तरफ उसने जरा भी ध्यान न दिया कि मिलीशिया के आदमियों ने मेज और अलमारी के पीछे खड़े होकर चालाकी से अपनी नाकें बंदी कर ली थी और जल्दी जल्दी अपनी पिस्तौलों को निकाल रहे थे।

दयनीय स्वर में कूं-कूं करता और दुम को अपनी टांगों के बीच छिपाता हुआ कुत्ता सरोम के पास से खिसक गया। परंतु सरोम में कुत्ते से कहीं अधिक फुर्ती थी। दुनिया के किसी भी फुर्तीले जानवर से वह अधिक फुर्तीला था। उसका धड़ बिजली की तेजी से चुपचाप आधा घूम गया, उसकी लम्बी भुजा दूरबीन की तरह आगे तक फैल गयी और उसके हाथ ने लपक कर उस नन्हें-से कुत्ते की पीठ को दबोच लिया। उसी समय एक गोली की आवाज गूंज उठी। मिलीशिया के आदमियों में से किसी एक की तमंचाओं ने बिल्कुल जवाब दे दिया था। गोली सरोम की पीठ पर लगे जिरह-बख्तर से पटें से जोर से टकरायी और फिर सरसराकर दीवाल में जा पड़ी। कुछ प्लास्टर निकल कर नीचे गिर पड़ा।

मिलीशिया के दूसरे सैनिक चिल्लाये

'सिडारेन्को, खुदा के वास्ते यह बंद करो!'

सरोम ने कांपते हुए कुत्ते को छोड़ दिया और उन लोगों की तरफ घूमने लगा जो अपने रिवाल्वरों से हमला करने के लिए तैयारी कर रहे थे। उनके चेहरे पीले हो रहे थे, फिर भी वे गोली चलाने के लिए

एनदम सन्नद्ध थे। उसने कौतूहल मे चारो तरफ सूघा। हवा म धुआ विहीन बारुद की एक अपरिचित-सी बू थी। कुत्ता मिलीशिया के लोगो के पैरो के पास जाकर गुटमुड पड गया था। किन्तु अब तक सरोम की उसमे दिलचस्पी भी खत्म हो चुकी थी। घूम कर वह अगले दरवाजे की तरफ बढा। उस दरवाजे के ऊपर एक कपाल और जांघ की दो आडी-आडी रखी हड्डियो का चित्र बना हुआ था। उनके बीच मे बिजली की एक दँतीली लाल रेखा निकलती दिखलायी गई थी। मिलीशिया के लोगो ने देखा कि सरोम की चिमटो जैसी अँगुलिया ताले की कुण्डी के घर म कुछ कर रही थी। आश्चय स उनकी घिग्घी बँध रही थी। अचानक दरवाजा खुल गया। होश म आते हुए फिर वे उसके पीछे दौड पडे।

वे चिल्लाये, 'ठहरो! वापिस लौट जाओ।"

लोहे का यह राक्षस ट्रान्सफामर (परिणामित्र) को क्या गत बना देगा इस खयाल से उन्हे इतना भय लगा कि वे सब कुछ भूल गये और उसके भारी कवच को पकड कर लटक गय। लेकिन सरोम ने उनकी तरफ जरा भी ध्यान न दिया। उनकी कोशिशो का उसके ऊपर रत्ती भर भी प्रभाव नही पडा। उनकी कोशिश कुछ ऐसी ही थी जैसे कि वे किसी चलते हुए ट्रैक्टर को रोकने का प्रयास करते। उनम से एक ने दूसरे को ढकेल कर एक तरफ किया और बिल्कुल नजदीक स निशाना लेकर सरोम के सिर पर दन-दन दो गोलियाँ दाग दी। उप बिजली घर के तीव्र प्रकाश म आलोकित कमरा गोलियो की कम्पन आवाज स प्रकम्पित हो उठा।

सराम किंचित लडखडाया। दाहिनी तरफ से उसके ध्वानिकी सग्राहक की आयताकार पट्टिका टूट कर टुकडे-टुकडे हो गयी। ध्वनि निर्देशक का घुमा हुआ शृग टूट गया और लुज पुज होकर उसके तार म हिलता हुआ नीचे लटकने लगा। उन म टूट पाँच की आवाज आयी।

सरोम को इससे पहले कभी ऐसे हमले का अनुभव नही हुआ था। आत्म परिरक्षण की सहज-बुद्धि उसमे नही थी। लोगो से लडने का उसे कोई अनुभव नही था, न हो ही सकता था। किन्तु सरोम मे इस बात की क्षमता थी कि तथ्यो का मिलान कर ले, उनसे तर्क-पूर्ण निष्कर्ष निकाल ले और फिर अपने काय के लिए ऐसा रास्ता निकाल ले जिसमे उसकी अधिक से अधिक सुरक्षा हो। चिन्तन की इन प्रक्रियाओ को पूरा करने मे एक सेकण्ड के छोटे अश से भी कम उसे लगा। अगले ही क्षण वह घूम कर उन आदमियों की तरफ बढने लगा। उसके खूँखार चिमटे जसे हाथ खौफनाक ढग से उनकी तरफ बढे हुवे थे।

मिलीनिया के लोग अलग-अलग हो गये। उनमे से एक भागकर स्विच बोर्ड के पीछे चला गया। दूसरा कूद कर सबसे समीप के ट्रान्सफामर के इस्पात के भारी ढक्कन के पीछे छिप गया और अपने रिवाल्वर को जल्दी-जल्दी फिर से भरने लगा।

वह चिल्लाया, "सिडोरेंको ! दौडकर आफिस जाओ और फोन के जरिये खतरे की सूचना दे दो।"

लेकिन सिडोरेंको के लिए दरवाजे के पास तक जाना सम्भव न था। सरोम आदमी से कही अधिक तेजी से आगे बढा। मिलीनिया के उस सैनिक ने स्विच-बोर्ड के पीछे से जरा सा मुह निकाला ही था कि दो डग बढाकर सरोम उसके सामने पहुँच गया। तब उन दोनों आदमियो ने फैसला किया कि मिल कर भाग जायें। यह कोशिश भी बेकार हो गयी। स्विच-बोर्ड से ट्रान्सफामर के पास सरोम झपटकर एक्सप्रेस गाडी की तेजी से पहुँच गया।

हडबडाता हुआ स्विच-बोर्ड के पास पहुँच कर सरोम जब उससे टकराया तो उसके दो टुकडे हो गये और तिरछिया और कांच की

एकदम सन्नद्ध थे। उसने कौतूहल से चारों तरफ सूंघा। हवा में धुआं विहीन बारूद की एक अपरिचित-सी बू थी। कुत्ता मिलीशिया के लोगों के पैरों के पास जाकर गुडमुड पड गया था। किन्तु अब तक सरोम की उसमें दिलचस्पी भी खत्म हो चुकी थी। घूम कर वह अगले दरवाजे की तरफ बढ़ा। उस दरवाजे के ऊपर एक कपाल और जांघ की दो आड़ी-आड़ी रखी हड्डियों का चित्र बना हुआ था। उनके बीच में बिजली की एक दँतीली लाल रेखा निकलती दिखलायी गई थी। मिलीशिया के लोगों ने देखा कि सरोम की चिमटा जैसी अँगुलियां ताले की कुण्डी के घर में कुछ कर रही थीं। आश्चर्य से उनकी घिग्घी बँध रही थी। अचानक दरवाजा खुल गया। होश में आते हुए फिर वे उसके पीछे दौड पडे।

वे चिल्लाये, 'ठहरो! वापिस लौट जाओ।"

लोहे का यह राक्षस ट्रान्सफार्मर (परिणामित्र) की क्या गत बना देगा इस खयाल से उन्हें इतना भय लगा कि वे सब कुछ भूल गये और उसके भारी कवच को पकड़ कर लटक गये। लेकिन सरोम ने उनकी तरफ जरा भी ध्यान न दिया। उनकी कोशिश का उसके ऊपर रत्ती भर भी प्रभाव नहीं पड़ा। उनकी कोशिश कुछ ऐसी ही थी जैसे कि वे किसी चलते हुए ट्रैक्टर को रोकने का प्रयास करते। उनमें से एक ने दूसरे को ढकेल कर एक तरफ किया और बिल्कुल नजदीक से निशाना लेकर सरोम के सिर पर दन दन दो गोलियाँ दाग दीं। उप बिजली घर के तीव्र प्रकाश से आलोकित कमरा गोलियों की कर्कश आवाज से प्रकम्पित हो उठा।

सरोम किंचित लड़खड़ाया। दाहिनी तरफ के उसके ध्वानिकी मग्राहक की आबनूस की पट्टिका टूट कर टुकड़ टुकड़ हो गयी। स्थिति निर्देशक का सुका हुआ श्रृंग टूट गया और लुज पुज होकर अपने तार में हिलता हुआ नीचे लटकने लगा। छत से टूटे कांच की आवाज आयी।

सरोम को इससे पहले कभी ऐसे हमले या अनुभव नहीं हुआ था। आत्म-परिरक्षण की सहज-बुद्धि उसम नहीं थी। लागा से लडन का उसे कोई अनुभव नहीं था, न हो ही सकता था। किन्तु सरोम मे इस बात की क्षमता थी कि तथ्यो का मिलान कर ले, उनसे तर्क-पूर्ण निष्कर्ष निकाल ले और फिर अपने काय के लिए ऐसा रास्ता निकाल ले जिसम उसकी अधिक से अधिक सुरक्षा हो। चिन्तन की इन प्रक्रियाओ को पूरा करने म एक सेकण्ड के छोटे अश से भी कम उसे लगा। अगले ही क्षण वह घूम कर उन आदमियो की तरफ बढने लगा। उसके खूखार सिमटे जैसे हाथ खौफनाक ढग से उनकी तरफ बढे हुये थे।

मिलीशिया के लोग अलग-अलग हो गये। उनम से एक भागकर स्विच बोर्ड के पीछे चला गया। दूसरा कूद कर सबसे समीप के ट्रान्सफामर के इस्पात के भारी ढक्कन के पीछे छिप गया और अपन रिवाल्वर को जल्दी जल्दी फिर से भरने लगा।

वह चिल्लाया, "सिडोरको ! दौडकर आफिस जाओ और फोन के जरिये खतरे की सूचना दे दो।"

लेकिन सिडोरन्को के लिए दरवाज़े के पास तक जाना सम्भव न था। सरोम आदमी से कहीं अधिक तेज़ी से आगे बढा। मिलीशिया के उस सैनिक ने स्विच-बोड के पीछे से जरा सा मुह निकाला ही था कि दो डग बढाकर सरोम उसके सामने पहुँच गया। तब उन दोनो आदमियो न फैसला किया कि मिल कर भाग जायें। यह कोशिश भी फेल हो गयी। स्विच-बोड से ट्रान्सफामर के पास सरोम झपटकर एक्सप्रेस गाडी की तेज़ी से पहुँच गया।

हडबडाता हुआ स्विच-बोर्ड के पास पहुँच कर सरोम जब उससे टकराया तो उसके दो टुकडे हो गये और खिडकियो और काच की

छत म गोलियो ने जो छेद कर दिये थे उनम मे सी नी करती हुई हवा आने लगी।

अन्त म, सराम इस खेल स भी ऊब गया। उसने उन लोगा को यो ही छोड दन का फैसला किया। ट्रासफामर के सामन खड होकर, जान बूझकर उसने हाथ उसके ढक्कन के नीचे रख दिये। इस अवसर का लाभ उठाकर मिलीशिया के सिपाही सिर पर पर रखकर दफ्तर की ओर भाग लिये। उसी क्षण किसी चीज क गिरन की काना का फाडनेवाली आवाज आयी। आँखा को चौंधियाने वाली एक नीली रोशनी ने आस पास की तमाम चीजा को रौशन कर दिया और फिर पूववत पूण अधकार छा गया। जलती हुई धातु, धुएँ और गम गन वार्निश की तीखी बू कमरे क अदर से बाहर फूट पडी। मिलीशिया के लोगो के कान जैस बहर हो गये थे। डर से व चुपचाप दुबक गय थे। यकायक उनकी समझ मे नही आया कि हो क्या गया था। फिर किसी के भारी भारी कदमो स दफ्तर का फश लरज उठा और अधेरे म स ही एक भारी सी आवाज आयी

'नमस्कार, आप का मिजाज कसा है ?'

चटखनी के खोले जाने की आवाज हुई। चरमर करता हुआ दरवाजा खुल गया। एक क्षण के लिए उस धुधले सम चतुभुत चौखटे के अदर से लोहे के उस दत्य का रूप दिखलायी दिया, और फिर दरवाजा दुबारा बद हो गया।

सरोम इन्स्टीच्यूट के मदान म चहलकदमी कर रहा था। अपन परो को वह खूब ऊपर हवा म उठाता और फिर बफ म गहरे तक धँस जान देता था। इन्स्टीच्यूट पूणतया अधकार मे डूब गया था। अपने अव रक्त प्रकाश से भी सरोम को कोई मदद नही मिल रही थी। सिफ स्वयम् अपने पेट और टाँगो के आस-पास एक मद्धिम सा प्रकाश वह

देख पा रहा था। वहाँ बर्फ के नन्हे-नन्हे टुकड़े टकराते थे और तुरन्त गलकर भाप बन जाते थे। इमारतों के बीच मानवों की कुछ हल्की हल्की स्फुर दीप्त परछाइयाँ जैसी आती जाती दीख रही थीं। अपने स्थिति निर्देशक के आदेशों के आधार पर अपनी दिशा तय करके सरोम आगे बढ़ता गया, यद्यपि उसका एक शृंग गोली से उड़ चुका था और फासलों का सही-सही पता लगाना अब उसके लिए एक तरह से असम्भव हो गया था।

बस्ती की दूर दिखलायी पड़ने वाली रोशनियों में उसकी खास तौर से दिलचस्पी थी। बस्ती स्वयम् बर्फ के तूफान के अन्दर से मुश्किल से ही दिखलायी देती थी। सर्च-लाइटों की चमकीली नीली रोशनियाँ वहीं से आ रही थीं। वह दीवाल के पास तक चला गया, वहाँ कुछ हिचकिचाया, फिर बाँयी ओर घूम पड़ा। वह अच्छी तरह जानता था कि दीवालों में हमेशा दरवाजे होते हैं। जल्दी ही उसने देखा कि वह फाटक के पास पहुँच गया है। फाटक के बड़े बड़े दरवाजे लोहे के बने थे। किन्तु इससे भी महत्वपूर्ण चीज इस वक्त यह थी कि वे बन्द थे। फाटक के दरवाजों में एक दरार थी जिसमें से उस तरफ की घबराहट-भरी आवाजें सुनायी दे रही थीं। दरार में से एक चमकीली नीली रोशनी भी उस तरफ चमकती दिखलायी दे रही थी।

"नमस्कार," सरोम ने कुछ गुर्राते हुए कहा और फाटक को धक्का दिया। फाटक नहीं खुले। वे मजबूती से बन्द थे। दूर कहीं से धातु की घनघन करती आवाज आयी। फाटक के बाहर निश्चय ही कोई बहुत दिलचस्प चीज हो रही थी। सरोम ने और भी जोर से धक्का दिया। वह फिर पीछे को हटा, सिर को पीछे की तरफ किया और फिर फाटक की तरफ झपटा। छाती के कवच से उनको उसने जोर का धक्का दिया। इस बीच, फाटक के उस पार की आवाजें एकदम खामोश हो गयी थीं। फिर हकलाते हुए जोर से किसी ने कहा

"पीछे जाओ ! हां, दबो ! उस शैतान पर गोली मत चलाना !"

"नमस्कार, आपका मिजाज कैसा है ?" सरोम ने कहा और एक बार फिर झपट कर फाटक पर टूट पडा। इस बार दरवाजे टूट गये। कंक्रीट की दीवाल मे लगे कब्जो की अपेक्षा डिबरिया अधिक मजबूत मालूम होती थी, क्योकि फाटक के दरवाजे कब्जो से निकल कर खेल के तख्तो की तरह बर्फ पर सपाट पडे थे। उनके ऊपर पर रखता हुआ सरोम आगे बढ गया। भागते मिलीशिया के सनिकों से वह आगे निकल गया और खुले मैदान मे बर्फ का जो भयानक तूफान गरज रहा था उसमे घुस गया।

लम्बे लम्बे डग उठाता हुआ वह आगे बढता गया। सूखी बर्फ के विशाल समुद्र से पटे हुए ऊबड-खाबड मैदान के ऊपर अपने सन्तुलन को बनाये रखना उसके लिए कठिन हो रहा था। एक स्थान पर उसने देखा कि उसके पैर के नीचे कुछ नही है और वह जमीन पर गिर पडा। उसके नीचे कुचल कर बर्फ भुरकुस बन गयी। इससे पहले वह कभी नही गिरा था। इसके बावजूद, अगले ही क्षण उसने अपनी भुजाओ को पूरा फैलाकर जमीन पर टेक दिया और सीधे खडे होने की कोशिश करने लगा।

एक बार फिर खडे हो जाने के बाद, उसने चारो तरफ नजर दौडाई। आगे की तरफ मकानो की टिमटिमाती हुई रोशनिया दिखलायी दे रही थी। बायी तरफ, अधेरे मे से तीन मानवी आकृतियाँ बाहर निकलती दिखलायी पडी। उनसे कुछ और आगे उसने देखा कि गरजते हुए इजिनो के साथ बुलडोजरो की एक पक्ति तेजी से फाटक की तरफ बढती चली आ रही है। सरोम बायी तरफ को मुड गया। जब वह आदमियो के पास से निकला तो उसने उनका अभिनन्दन किया और फौरन पहचान गया कि उनमे उसके आचार्य जी भी है। आचार्य चाहे तो उसमे चलने की शक्ति छीन ले सकते है—यह बात सरोम को

अच्छी तरह याद थी, और इसलिए वह और भी तेजी के साथ चलने लगा। उसके पीछे चक्रवात की तरह बर्फ का जो तूफान घूम रहा था आचार्य जी उसी में विलीन हो गये।

वह जमीन के एक समतल, चिकने भाग में पहुँच गया। सिर से पैर तक उसका सारा शरीर एक तेज रोशनी में चमक रहा था। धातु के भारी-भरकम राक्षस, जिनके सामने बचाव के लिए मोटे-मोटे पट्टे लगे हुए थे, गडगडाते हुए दुर्दम्य गति से उसकी तरफ बढते आ रहे थे। क्रोध से फुफकारते हुए वे आकर एकदम उसके सामने ठहर गये।

सबसे आगे के बुलडोजर से सरोम का केवल ५ कदम का फासला था। उनको देखकर सरोम अपने सिर को धीरे-धीरे एक ओर से दूसरी ओर घुमा रहा था और बार-बार कह रहा था

"नमस्कार, आप कुशल से तो हैं ?"

[४]

निकोलाई पत्रोविच ट्रैक्टर से कूदकर नीचे आ गये।

ड्राइवर घबडाकर चिल्लाया, "आप कहाँ जा रहे हैं ?"

तभी पिस्कूनोव सडक पर आ गये। उनके कपडे अस्त-व्यस्त थे, बाल सीधे खडे हुए थे (उनका टोप उडकर कहीं खुले मैदान में पडा था), उनके हाथ कोट की जेबों में थे और कोट के बटन खुले हुए थे। इसी हालत में उन्होंने बुलडोजर की परिक्रमा की और सरोम के सामने आकर खडे हो गये। उन दोनों के दर्म्यान ५ कदम से अधिक का

फासला न था। सरोम के विशाल आकार के सामने महान इंजीनियर छोटे से लगते थे। सरोम के बगल के हिस्से आगे की रोशनियों में चमक रहे थे। भाप में लिपटा उसका पट चिकना और नम नजर आता था। काच की छोटी छोटी आखो, मग्राहका के चौकने काना तथा स्थिति निर्देशक के सीग के साथ उसका गोल गाल सिर एक बडी लौरी के बदसूरत हास्यास्पद चेहरे की तरह लगता था, उसी तरह के चेहरे की तरह जिसे लेकर गाव के लडके अक्सर लडकियो को डरवाया करते है। उसका सिर स्थिर गति से इधर से उधर घूम रहा था और उसकी आँखें पिस्कूनोव की प्रत्येक गति पर लगी हुई थी।

"सरोम !" पिस्कूनोव ने चिल्लाकर उसे सम्बोधित किया।

सरोम ने अपना सिर हिलाना रोक दिया। ऊपर से जुडी हुई उसकी भुजाएँ नीचे गिर कर उसके शरीर से चिपक गयी।

'सरोम, मेरा हुक्म मानो !"

'आज्ञा दीजिए" सरोम ने जवाब दिया।

कोई डरता हुआ सा आहिस्ता से हसा।

पिस्कूनोव आगे बढे और दस्ताने से ढके अपने हाथ को उन्हाने सरोम के सीने पर रख दिया। उनकी अँगुलियाँ उसके कवच के ऊपर तेजी से चलती हुई उनकी सबसे महत्वपूर्ण चीज को ढूढने लगी। वे उस स्विच को ढूढ रही थीं जो सरोम के मस्तिष्क के गणना तथा विश्लेषण करने वाले भाग का सम्बध उसकी शक्ति तथा सचलन की व्यवस्था से जोडता था। इसके बाद एक विचित्र चीज हुई, ऐसी चीज जिसकी केवल पिस्कूनोव ने आशका की थी। उन्हे भय भी सबसे अधिक इसी का था। स्पष्ट था कि सरोम की स्मृति में कही पर यह चीज जमी हुई थी कि आचार्य की इस तरह की कारवाई से उसका चलना

फिरना एकदम रुक जायगा। इसलिए, पिस्कूनोव की अँगुलियाँ स्विच के पास पहुँचने ही वाली थी कि सरोम तेज़ी से घूम पडा। वह एक तरफ को कूद गया। कूदते समय उसकी एक भारी कवचधारी भुजा पिस्कूनोव के सिर के ऊपर से लगभग उसे स्पर्श करती हुई तेज़ी से गुज़र गयी। इसके बाद वह मुख्य मार्ग की तरफ चला गया और आहिस्ता आहिस्ता पीछे की दिशा में चलने लगा। सबसे पहले जिसे इस गंभीर स्थिति का ज्ञान हुआ वह निकोलाई पेत्रोविच थे। सबसे पहले उन्हीं को होश आया।

"हो अरे तुम लोग बुल्डाज़रों को दाहिने और बायें ले जाओ। फाटक की ओर जाने वाले रास्ते पर उसे रोक दो। वह उधर न जाने पाये। पिस्कूनोव ! हो, पिस्कूनोव ! " वे बेतहाशा चिल्लाये।

परन्तु पिस्कूनोव का उसका चिल्लाना नहीं सुनायी दे रहा था। वे जैसे सख्त में आ गये थे। बुल्डाज़र सड़क के दोनों तरफ से सरोम को घेरने के लिए बढ़ने लगे तो वे भी बर्फ के तूफ़ान में घुस पड़े और तेज़ी से उस के पीछे दौड़ने लगे।

तेज, ऊँची, फटी हुई आवाज में वे चिल्लाये, "ठहर जा सरोम ! ठहर जा, ए सुअर। मेरा कहना मान। वापिस लौट जा।"

उनकी साँस उखड़ गयी थी। वे ज़ोर ज़ोर से हाँफ रहे थे। लेकिन सरोम अपनी रफ्तार को अधिकाधिक तेज़ करता जाता था जिससे उनके बीच का फासला धीरे धीरे बढ़ रहा था। आखिरकार पिस्कूनोव रुक गये। निराश भाव से अपने हाथों को उन्होंने जेबों में रख लिया, और कन्धे टेढ़े करके उसे दूर आँखों से ओझल होते देखते रहे। निकोलाई पेत्रोविच और रियाबिकिन दौड़कर उनके पास आ गये। कास्ट्को भी थोड़ी देर बाद वहीं पहुँच गया।

निकोलाई पेत्रोविच ने किंचित क्रोधपूर्वक पूछा, "आप जा कहाँ रहे है ?"

पिस्कूनोव ने जवाब नही दिया।

अन्त मे जैसे बुदबुदाते हुए उन्होंने कहा, "नही, वह अब कोई बात नही सुनेगा। तुम समझते नही, निकोलाई ? अब वह किसी की आज्ञा नही मानेगा। स्पष्ट है कि यह स्वत स्फूर्त प्रतिवर्त की देन है।"

निकोलाई पेत्रोविच ने सिर हिलाकर सहमति प्रकट की।

"मेरा भी ऐसा ही खयाल हो रहा था।"

रियाब्किन ने बीच ही मे कहा, "मैं भी यही सोचता हूँ ! यह कुछ उसी तरह की बात है कि किसी रेलगाडी को स्वयम अपना मार्ग और समय तय करने के लिए आप छोड दें।"

"पर यह स्वत स्फूर्त प्रतिवर्त क्या है ?" डरते डरते कोस्टेन्को ने पूछा।

उसे कोई जवाब नही मिला।

"परन्तु, फिर भी, सबके बावजूद, मैं यही कहूँगा कि यह एक अदभुत वस्तु है।' निकोलाई पेत्रोविच ने अपनी नाक साफ की और रूमाल को फिर जेब मे भर लिया। 'यह तो तै है कि अब वह आज्ञा नही मानेगा ! तब फिर हमे "

"चलो, हम चले !" पिस्कूनोव ने जैसे कुछ सकल्प करते हुए कहा।

इसी बीच बुलडोजरो ने एक अर्द्ध चक्र सा बना लिया था। सरोम को, जो सडक पर मजे मजे चला जा रहा था, उन्होंने घेरना शुरू कर दिया। उनम मे एक सडक पर बढकर उसके आगे निकल गया उसका

पिछला भाग फाटक की तरफ था। दूसरा बुलडोजर सरोम को पीछे से पकडने की कोशिश कर रहा था। अन्य उसे अगल-बगल से घेरने की चेष्टा मे थे। दो बायीं तरफ़ से और एक दाहिनी तरफ से। सरोम कुछ देर से देख रहा था कि उसे घेरा जा रहा है, लेकिन सम्भवत: इस बात को उसने कोई महत्व नही दिया था। बेलौस वह सडक पर बढता गया तब तक जब तक कि उसका सीना सामने के बुलडोजर से नही छू गया। जो हल्का-सा धक्का लगा उससे ट्रैक्टर डगमगा गया। ड्राइवर ने, जिसका चेहरा तांत की तरह तन गया था, उत्तोलका (लीवरो) को मजबूती से पकड लिया। सरोम एक क़दम पीछे की तरफ हटा और फिर दुबारा आगे की ओर झपटा। लोहे ने लोहे से टक्कर ली। आग की रोशनियो के प्रकाश म बर्फ के कणो के बीच चिनगारियाँ उडती दिखलायी दी। पल ही भर मे पीछे के बुलडोजर ने भी सरोम को ढकेलना शुरू कर दिया। वह एकदम सीधा खडा था। उसका सिर अपनी धुरी पर धीरे धीरे इस तरह से घूम रहा था जिस तरह कि स्कूल का ग्लोब घूमता है। उसके सीने के कवच-पट्टे मे से उसके सूक्ष्म प्रहस्तन काले सापो की तरह बाहर निकल आये। लोहे के कवच के ऊपरी हिस्से को उन्होंने जल्दी-जल्दी टटोला और फिर अन्तर्धान हो गये। दो तरफ से दो और बुलडोजर आकर उसके पास खडे हो गय। पीछे हटने के आखरी रास्ता को भी उन्होने मजबूती से काट दिया। अब सरोम एक बन्दी था।

"इजीनियर साथियो! साथी पिस्कूनोव! अब मैं क्या करूँ?" पहले ट्रैक्टर का ड्राइवर बोला।

"साथी पिस्कूनोव बाहर गये हुए हैं। उनके लिए आपका क्या सन्देश है?" सरोम ने बीच मे ही उत्तर दिया।

फिर बडी शान से उसने अपना हाथ ऊपर उठाया और बुलडोज़र को जोर से एक तमाचा लगा दिया। इसके बाद फिर उसने उसे

लगातार पीटना शुरू किया। हर प्रहार के साथ वह थोड़ा सा झुक जाता था उसी तरह जिस तरह कोई बौक्सर (घूसेबाज) ट्रेनिंग लेते समय झुक झुककर प्रहार करता है। धातु की अँगुलियों वाले हाथों के सबल घूसों के हर प्रहार की झनझनाहट के साथ चिनगारियों की बहुत-सी फुलझड़ियाँ ऐसी जल उठती थीं।

पिस्कूनोव, निकोलाई पत्रोविच, रियाब्किन और कास्टको सब वहाँ दौड़ आये। घबड़ाकर रियाब्किन ने कहा, "हमें फौरन कुछ करना होगा, वर्ना वह अपने हाथ-पैर तोड़ लेगा।"

एक भी शब्द कहे बिना पिस्कूनोव ट्रैक्टर के पहियों के ऊपर चढ़ गये। उनका कोट पकड़कर रियाब्किन उन्हें वापिस खींचने की कोशिश करता ही रहा।

पिस्कूनोव गुस्से से चिल्लाये, "यह क्या बदतमीजी कर रहे हो?"

"देखिए, आप ही अकेले ऐसे व्यक्ति हैं जो सरोम के यंत्र विधान की छोटी से छोटी चीज़ तक से परिचित हैं। अगर कहीं वह आपको कुचल दे। यह किस्सा तो महीनों तक चलता रह सकता है। अच्छा हो यदि इस काम को कोई दूसरा आदमी करे।"

"तुम बिलकुल ठीक कहते हो," उससे सहमति प्रकट करते हुए निकोलाई पेत्रोविच ने कहा। "मैं जाऊँगा।"

इंजीनियरों के पास एक मजदूर आगे आया।

उसने सुझाव देते हुए कहा, "अच्छा हो यदि आप हममें से किसी को चुन लें। हम लोग कम उम्र के हैं, और अधिक फुर्तीले हैं।"

"उसे मैं करूँगा," क्रोध व्यक्त करते हुए कोस्टेंको ने कहा।

निकोलाई पत्रोविच ने मुस्कराते हुए उन सब की तरफ देखा।

"और यह तुममें से किसको मालूम है कि क्या करना है?"

उसे कोई उत्तर नहीं मिला।

"देखा, तुमने ! सिर्फ मुझे ही मालूम है कि क्या करना है। और अगर कुछ हो जाय .. अगर मैं तो लैबोरटरी के कार्यकर्त्ताओं को काम में लगा देना। परन्तु पिस्कूनोव को उसके पास मत जाने देना।"

उसने अपने ओवरकोट को उतार कर एक तरफ डाल दिया और ट्रैक्टर के ऊपर चढ़ गया। पिस्कूनोव ने झटका देकर रियाब्किन से अपने को छुड़ा लिया।

"मुझे छोड़ो, रियाब्किन ! यह क्या बेवकूफी करते हो ? उसे मैं खुद करूँगा "

रियाब्किन खामोश हो गया। लेकिन कोस्टेंको ने दूसरी तरफ से पिस्कूनोव के कंधे को खूब मजबूती से पकड़ लिया। पिस्कूनोव ने क्रोध में अपने होठ काट लिये और निकोलाई पेत्रोविच को देखते हुए चुपचाप खड़े रहे।

लेकिन अब सरोम के ऊपर पागलपन सवार हो गया था। उसके शरीर का नीचे का भाग बुल्डोजरों की मजबूत गिरिफ्त में था, परन्तु उसका ऊपर का भाग आजादी से इधर उधर घूम सकता था। वह बिजली की तेजी से एक तरफ से दूसरी तरफ घूम रहा था और इस्पात की उसकी मुट्ठियाँ लोहे के ऊपरी पट्टे के ऊपर धडाधड प्रहार कर रही थीं। गहरी बर्फ में उसके चारों तरफ भाप के फुफकारे उड रहे थे। "उसके घूंसे की प्रहार शक्ति ६५० पौण्ड है," कोस्टेंको को याद आया।

अपने दांतों को कसकर दबाकर, निकोलाई पेत्रोविच बुल्डोजरों के बीच में सरोम के पैरों के पास घुस गया और उपयुक्त क्षण की प्रतीक्षा करने लगा।

लोहे के लोहे से लड़ने और टकराने से जो शोर हो रहा था उसमें

उसके कान दुख रहे थे। वह जानता था कि सरोम ने उसे देख लिया है, क्योंकि उसकी चौकन्ना और चमकती शीशे की आँखें बराबर घूम-घूमकर उसकी तरफ देखती थी।

"स्थिर रहो, सीधे खडे रहो," निकोलाई पेत्रोविच ने आहिस्ता से कहा। "सरोम, मेरे मुन्ने, चुपचाप खडे रहो। अब तो ठण्डा हो जा, बदमाश!"

घूँसो से अब एक दूसरी तरह की आवाज आती मालूम होने लगी। कोई चीज टूट गयी थी, या तो सरोम की मजबूत भुजा, या बुल्डोजर का लौह कवच! अब एक भी क्षण देर करने की गुन्जायश नही थी। वह कूद कर सरोम के घूँसे के नीचे पहुँच गया और एक तरफ से उसके चिपक गया। इसके बाद सरोम ने सबको आश्चर्य मे डाल दिया। उसकी भुजाएँ ढीली होकर नीचे गिर गयी। कडकडाहट बन्द हो गयी। मैदान मे गर्जते बर्फ के तूफान का शोर और ट्रैक्टरो के इजिनो की घर-घर आवाज फिर सुनायी देने लगी। निकोलाई पेत्रोविच का मुह पीला पड गया था और उसके बदन से पसीना छूट रहा था। ऐसी हालत मे वह सीधा हुआ और अपने हाथ को उसने सरोम की छाती पर रख दिया। 'फिट' की एक खोखली-सी आवाज हुई। सरोम के कन्धे की हरी और लाल रोशनिया बुझ गयी।

'अब सारा खेल खत्म हो गया।" पिस्कूनोव ने धीमे से कहा और अपनी आँखें बन्द कर ली।

सब लोग जोर जोर से बातें करने लगे। लोगो के हँसने और मजाक करने की आवाजें आने लगी। ड्राइवरो ने सरोम के नीचे से निकलने मे निकोलाई पेत्रोविच की मदद की। वे उसे अपने हाथो मे उठाकर ले आये। पिस्कूनोव ने उसे छाती से लगा लिया।

यकायक उन्होंने कहा, "अब इन्स्टीच्यूट चलो। हम बहुत काम

करना है। एक हफ्ते, या एक महीने की जरूरत होगी। उसके अन्दर की सारी मूर्खता को निकाल बाहर करके हमें उसको एक सच्चा सरोम—एक सवत्रोपयोगी रोबट मशीन (स रो म) बनाना होगा।"

[५]

कोस्टेन्को ने पूछा, "सरोम को वास्तव में हो क्या गया था ? और यह 'स्वत स्फूर्त प्रतिवर्त' कौन-सी बला है ?"

निकोलाई पेत्रोविच रात भर नही सोये थे, इसलिए थके और उनींदे थे। फिर भी उन्होने उसे समझाना शुरू किया।

"देखो, सरोम की रचना अन्तग्रहीय सचलन बोर्ड के आदेश पर की गयी थी। सचलन की अन्य मशीनो से वह भिन्न है। उनमे से जटिल से जटिल मशीनो से भी वह भिन्न है, क्योंकि वह ऐसी परिस्थितियो में काम करने के उद्देश्य से बनाया गया है जिनकी भविष्य का कार्यक्रम निर्धारित करने वाला बडे से बडा प्रतिभाशाली आदमी भी पहले से ठीक ठीक कल्पना नही कर सकता। उदाहरण के लिए, यह कौन जानता है कि शुक्र ग्रह के ऊपर कैसी परिस्थितियाँ हैं ? हो सकता है कि वहाँ सागर ठाठें मारते हो। अथवा, वह रेगिस्तानो, जगलो, या उबलते हुए कोलतार से ढका हो। अभी वहाँ आदमी भेज सकना असम्भव है, अत्यन्त खतरनाक है। वहाँ 'सरोमो' को, दर्जनो सरोमो को भेजा जायगा। लेकिन उनके अन्दर क्या कार्यक्रम बनाकर लगाया जायगा ? सारी कठिनाई तो यही है कि, यन्त्रों के सचलन तथा नियत्रण विज्ञान के वर्तमान स्तर पर, अभी तक यह सभव नही है कि मशीन को निरपेक्ष रूप से 'सोचना' सिखा दिया जाय "

"और इसका क्या मतलब हुआ ?"

"अच्छा, समझो कि हम किसी अज्ञात स्थान की जाँच पड़ताल करने के लिए एक सचलन मशीन भेज रहे हैं। हम वहाँ की भूमि के स्वरूप, उसमें खनिज पदार्थों की उपस्थिति, वहाँ के पेड़-पौधों और पशुओं, आदि की जानकारी प्राप्त करना चाहते हैं। मशीन को काम दिया जाता है कि वह उस स्थान का चक्कर लगाये, फिर उत्तर से दक्खिन तक उसके आर-पार जाय। अगर हमें यह मालूम हो कि उक्त जगह मेज की तरह समतल है, तो उसके सचलन और नियन्त्रण यन्त्र की रचना एकदम सादा हो सकती है। एक-दो सग्राहक (receptors), एक वलय दिक्सूचक (gyrocompass), कुछ योजित्र (relays) और बस। राजकीय फार्मों में काम करने वाले टैक्टरों तथा स्वयचालित कम्बाइनों के अन्दर इस तरह के दसियों हज़ार यन्त्र विधान काम कर रहे हैं। लेकिन यह बात केवल वहीं के लिए हो सकती है जहाँ जगह अपेक्षाकृत समतल तथा, एक प्रकार से, बिना किन्हीं गड्ढे गढ़ियों के हो। परन्तु अगर हमें यह न मालूम हो कि वह जगह कैसी है, तब क्या होगा ? अगर वहाँ पर घाटियाँ, गहरी नदियाँ, और दलदल हों ? तब हमारी मशीन के लिए खतरा होगा कि वह टूटकर चकनाचूर हो जाय, डूब जाय, अथवा धँस जाय। ऐसी स्थितियों का सामना कर सकने के लिए आवश्यक है कि मशीन में और अधिक संश्लिष्ट 'मस्तिष्क' लगाया जाय, उसमें और भी अधिक व्यापक कार्यक्रम की व्यवस्था कर दी जाय। उदाहरण के लिए, मशीन को यह 'सिखलाना' सम्भव है कि वह उन जगहों का पता लगा ले जहाँ से नदियों को पार किया जा सकता है। गहरी जगहों में जाने से अथवा किसी कगार के किनारे पहुँचने से रोकने की भी शिक्षा उसे दी जा सकती है। रुकावटों से बचने अथवा, अगर सम्भव हो, तो उनको पार करने की शिक्षा भी उसे दी जा सकती है। हमारे सरोम की तरह, अथवा उसकी बाँहों और टाँगों की तरह सतुलन की एक सशक्त व्यवस्था के रूप में विभिन्न युक्तियों से उसे इस काम के

लिए तस किया जा सकता है वास्तव म, सरोम को भुजाएँ और टाँगे हमन इसीलिए दी थी, पहिए और कटरपिलर के जजीरदार पैर सब जगह काम नही दे सकते।"

अधीरता से बीच मे ही बात काटते हुए, कोस्टेन्का ने कहा, "यह तो बिल्कुल साफ ह, मैं जो जानना चाहता हूँ वह यह है कि "

अविचलित रूप से निकोलाई पत्रोविच उसी तरह कहते गये, "अब, सुनो। मान लो कि मशीन के अन्दर हम ऐसी कुन्जी भर देत ह कि दीवाल सामन आय तो वह किस तरह से उसका मुकाबला करे। मशीन को दीवाल स दूर रहना होगा। लेकिन हमन इस बात का खयाल नही किया कि उस जगह पर घने जगल हो सकते है। मशीन जगल को ही एक दीवाल 'समझ लेती है' और उससे बचने की कोशिश करन लगती है—और यह तब जबकि वह बडी आसानी से उसके अन्दर से सीधी निकल जा सकती थी।"

"यह तो स्पष्ट है," कोस्टेन्को ने कहा।

"अथवा, यह डर कर कि मशीन किसी दलदल मे न फँस जाय, हम उसे दलदल भरे स्थाना से दूर रहने की 'शिक्षा' देते है। और फिर अगर मशीन किसी निरापद, जुते हुए खेत, बालू, अथवा घास के मैदान को देख कर पीछे हट जाती है, तब क्या होगा? हमारे लिए आवश्यक है कि मशीन को 'सिखायें', इस तरह 'सिखायें' कि हर परिस्थिति में, अनहोनी से अनहोनी परिस्थितिया मे भी, ऐसी परिस्थितियो मे भी वह काम कर सके जिनका हमको भी, जो उसका कार्यक्रम निर्धारित करते हैं ज़रा भी आभास नही है। मशीन के अन्दर ऐस नये गुणो का समावेश करना आवश्यक है जिनसे इस बात को 'समझने' की क्षमता उसमे पैदा हो जाय कि झाडियों को, चाहे वे दीवाल की तरह ही मालूम पडती हो, उनके अन्दर घुस कर पार किया जा सकता है। यद्यपि दलदल से यह सकेत आ सकता है कि "यहाँ की ज़मीन

सख्त नही है," पर उसमे इस बात की क्षमता होनी चाहिए कि वह समझ ले कि ऐसा सकेत केवल दलदल से ही नही आता है।

सक्षेप मे, आवश्यक है कि मशीन को इस तरह से बनाया जाय कि वह ऐसे सीधे-सीधे तार्किक नतीजो से आगे भी समझना सीख जाय कि हर 'भूमि जो पक्की नहीं है वह दलदल है,' अथवा "प्रकाश हर जिस रुकावट को पार न कर सके वह दीवाल है"। परन्तु मशीन को यह सब कैसे 'सिखलाया' जा सकता है ? इसलिए पिस्कूनोव ने सुझाव दिया कि एक ऐसी मशीन की सृष्टि की जाय जो स्वय अपना कायक्रम बनाने की क्षमता रखती हो। सरोम के 'मस्तिष्क' मे एक कायक्रम रखा गया था। बुनियादी तौर से इसका लक्ष्य स्मरण-शक्ति की खाली कोशिकाओ को भर देने का था। दूसरे शब्दो मे, सरोम के अदर प्रयोग करने की उत्कट 'अभिलाषा' भर दी गयी थी, जो कुछ नया है उसके सम्बध मे जानने की जबदस्त इच्छा उसमे भर दी गयी थी। इस कायक्रम को (इसे हम आतरिक कायक्रम कहते है) बुनियादी कायक्रम के ऊपर जोड दिया गया था। यह उसके साथ मिलकर काम करता था। पिस्कूनोव ने हिसाब लगाया था कि सरोम जब किसी नयी, अप्रत्याशित वस्तु के सामने आ जायगा तो वह उसके सामने से भाग नही जायगा, उपेक्षापूवक उसे वही छोड कर दूसरी तरफ नही निकल जायगा, बल्कि, बुनियादी कायक्रम की सम्भावनाओ की परिधि के अदर रहते हुए भी, इस नयी चीज की वह जाच पडताल करेगा और, अगर उसके ऊपर काबू पाया जा सकता है, तो उस पर काबू पा जायगा, अथवा बुनियादी कायक्रम के हित म उसका उपयोग कर लेगा। कहने का अथ यह हुआ कि, प्रत्येक नयी घटना के सम्बध मे किस तरह का सबसे उपयुक्त व्यवहार करना चाहिए—इसका चुनाव बिना मनुष्य की सहायता से सरोम स्वयम कर लेगा। दुनिया मे चेतना का यह सब से पूण नमूना है। परन्तु जो परिणाम निकला वह अनपेक्षित था। मेरे कहने का मतलब यह है कि सैद्धान्तिक रूप से तो हमने इस

तरह की घटना की बात को मान लिया था, परन्तु व्यवहार मे
खैर सक्षेप मे, बुनियादी कायक्रम के साथ, आन्तरिक कायक्रम के मेल से बाह्य प्रभावो के प्रति मशीन की प्रतिक्रिया की हजारो नयी अज्ञात सम्भावनाए पैदा हो गयी थी। पिस्कूनोव ने उनको स्वत स्फूर्त प्रतिवर्तों का नाम दिया है। अपने-आप पैदा होन वाले छोट छोटे कायक्रम, अगर इस चीज को इस भाति कहा जा सके, बुनियादी कायक्रम को भूल गय , आन्तरिक कायक्रम ही निर्णायक कायक्रम वन गया, और 'सरोम स्वयम् अपनी मर्जी के मुताबिक काम' करने लगा।"

'फिर अब क्या करना है ?"

निकोलाई पेत्रोविच ने अँगडाई ली और जभाई लेते हुए कहा, "अब हम कोई दूसरी तरकीब सोचेंगे।" 'मस्तिष्क' की विश्लेषक-क्षमता को और उसकी सग्राहक व्यवस्था को हम और पूर्ण वनायेंगे "

"और स्वत -स्फूर्त प्रतिवत का क्या होगा ? क्या उसम किसी की दिलचस्पी नही है ?"

"अहा ! पिस्कूनोव ने पहले से ही उसके बारे मे कुछ सोच रक्खा है। सक्षेप मे अनवेपित ग्रहो पर अब भी सबसे पहले सरोम पैर रक्खेगा और सागरा की अनजानी गहराइया के अदर भी सवप्रथम उतरने वाला वही होगा। लोगो को यह जोखिम नही उठाना पडेगा
कोस्टेन्को, सुनो, चलो अब चलें, चलें न ? तुम अब हम लोगो के साथ ही काम करोगे और इसके बारे मे सब कुछ जान जाओगे—इसका मैं तुम्ह विश्वास दिलाता हूँ।"

एलेक्ज़ेण्डर काज़न्तसेव

"दूसरी दुनिया का मुसाफिर" नाम की जिस कहानी के आधार पर इस पुस्तक का नाम पड़ा है उसके रचयिता एलेक्ज़ेण्डर काज़न्तसेव हैं। उनका जन्म १९०६ मे हुआ था।



एलेक्जेण्डर काजन्तसेव साहस तथा विज्ञान की कहानिया लिखने मे अद्वितीय हैं। 'द ब्लेजिंग आइलड" (दहकता द्वीप), "नार्दन जेट्टी" (उत्तरी तट), "आर्कटिक ब्रिज" (उत्तरी पुल) आदि उनकी पुस्तकें अत्यन्त प्रसिद्ध हैं।

इस सग्रह मे श्री काजन्तसेव की एक और रचना मगल का वासी" भी सग्रहीत है। "दूसरी दुनिया का मुसाफिर" तथा "मगल का वासी"—इन दोनों कहानियो का काजन्तसेव साहित्य मे विशेष स्थान है।

यह बात सबसे पहले श्री काजन्तसेव ने ही १९४६ मे कही थी कि टुगस (साइबेरिया) मे जो उल्काश्म गिरा था वह उल्काश्म था ही नहीं—वह मगल से आया हुआ एक अन्तरिक्ष यान था, जो किसी अशुभ सयोग से पृथ्वी पर उतरने से पहले ही जल कर भस्म हो गया था।

काजन्तसेव ने अनेक प्रमाणो के साथ यह स्थापना की थी। उनकी इस स्थापना के सामने आते ही सोवियत सघ तथा अन्य देशों मे इस विषय को लेकर एक जबदस्त बहस छिड गयी थी। यह बहस आज भी उसी तरह जारी है।

"दूसरी दुनिया का मुसाफिर' इसी रोचक स्थापना पर आधारित कहानी है।

लेखक
एलेक्जेण्डर काज़न्तसेव

दूसरी दुनिया का मुसाफिर*

एक दिन बोरिस येफ़ीमोविच ने मुझसे कहा, "आज शाम हम लोग वैज्ञानिकों के साथ बैठकर गप शप करेंगे।"

मैं जानता था कि जहाज के ऊपर पुरा भूगर्भ शास्त्री निज़ोवस्की के अलावा, हमारे साथ वासीलियेव नाम के एक भूगोल वक्ता भी थे। वे उस अभियान के इन्चार्ज थे जो सुदूर के द्वीप पुंज की तरफ अन्वेषण-कार्य के लिए जा रहा था।

फिर एक खगोल विज्ञ भी हमारे साथ जहाज पर थे। जोर्जी सोडोव जब उस्तिय के पास लंगर डाले पड़ा था तभी वे उस पर आये थे। जोर्जी सोडोव वहाँ एक अभागे कप्तान को अपनी कुछ डोंगियाँ दे रहा था। एक तूफान में इस कप्तान के जहाज़ की छोटी किश्तियाँ गायब हो गयी थीं। उस दिन बहुत सुबह से ही मैं डेक पर चला गया था जिससे कि, चाहे दूर से ही सही, प्रधान स्थल को एक नज़र देख लूँ। महीनों बीत गये थे जबसे हमने ज़मीन नहीं देखी थी—और अब वह क्षितिज के पास दिखलायी दे रही थी—बस एक सँकरी, धुंधली पट्टी की तरह। फिर भी आखिर थी तो वह उसी विशाल महाद्वीप की तट रेखा न!

*जिस वैज्ञानिक जानकारी तथा जिन परिकल्पनाओं को खगोल विज्ञ द्वारा यहाँ प्रस्तुत किया गया है उन पर २० फरवरी, १९४८ को मास्को में हुई एस्ट्रोनामीकल सोसायटी की एक बैठक में गंभीर विचार विनिमय हुआ था। पत्र-पत्रिकाओं में यह बहस आज भी चल रही है। —सं०

उसी समय हमने देखा कि उषा काल के आकाश की तरह के नारंगी वर्ण के जल को चीरती हुई एक मोटर बोट हमारी तरफ बढ़ती चली आ रही थी।

जहाज के अधिकारी ने, जो अपनी देख रेख में डोंगियां को नीचे उतरवा रहा था उनको देखते ही कहा, "लो, कुछ और मुसाफ़िर आ गये! वे तीनों खगोल विद्या सम्बन्धी अभियान के सदस्य हैं।"

"खगोल विद्या सम्बन्धी अभियान? यहां उत्तर में वह क्या कर रहा है?"

जहाज के अधिकारी ने कोई जवाब नहीं दिया।

मोटर बोट आकर जहाज के बगल में लग गयी और रस्सी की सीढ़ी से तीन आदमी ऊपर चढ़ आये। उनमें से पहला एक नाटा सा,

---

क्या दूसरे ग्रहों पर जीवन सम्भव है?

हां, सम्भव है। मनुष्यों से बसी हुई कई दुनियाओं के अस्तित्व का विचार सबसे पहले मध्य युग में गियोर्डानो ब्रूनो ने प्रस्तुत किया था। इस विचार को पेश करने के अपराध में उस वक्त के पोंगापंथियों ने १७ फरवरी, १६०० को रोम के फूलों के चौक में उस वैज्ञानिक को जिन्दा जला दिया था।

विश्व की भौतिकवादी धारणा इस चीज को स्वीकार करती है कि दूसरे ग्रहों में, जहां परिस्थितियां उसके अनुकूल हों, जीवन की उत्पत्ति तथा उसका विकास सम्भव है।

जीवन के जिन स्वरूपों को हम जानते हैं उनके अस्तित्व के लिए पहली और सबसे प्रमुख आवश्यक परिस्थितियां निम्न हैं ताप जो +१०० सेण्टीग्रेड से अधिक और −१०० सेण्टीग्रेड से कम न हो, कार्बन, जो कि जीवित प्राणियों की शरीर रचना का एक घटक अंग है,

चौडी हड्डियो वाला तथा दुबला पतला आदमी था जिसका चेहरा पतला था जो धूप से काला पड गया था। वह सीग की कमानी का चश्मा लगाये था और आगे को कुछ निकला हुआ-सा उसका माथा उसके चेहरे को एक विचित्र सा भाव प्रदान कर देता था। मैंने देखा कि असाधारण रूप मे लम्बी उसकी आखें कुछ तिरछी थी।

जब वह कुछ दूर था तभी अत्यन्त विनम्रता के साथ झुककर मुझे उसने *नमस्कार किया और फिर नज़दीक आकर अपना परिचय दिया।*

"येवजेनी अलेक्सीइच श्राइमाव, खगोल विज्ञ। हम लोग उच्च अक्षाशो म कुछ अवपण करने निकले है। और, यह नताशा हैं। मेरा मतलब है, नतालिया जोर्जीयेवना ग्लेगोलेवा, वनस्पति विज्ञ।"

रुई की बडी जैसा कोट और पतलून पहने हुए एक लडकी ने धीरे

मौजूद हो, आक्सीजन, जो जीवित शरीर की ऊर्जा सम्बधी मूलभूत प्रतिक्रियाओ म मुख्य भूमिका अदा करती है, मौजूद हो, पानी मौजूद हो, और, अन्त मे, ग्रह के वातावरण म जहरीली गसें न हो।

विश्व के अनगिनत तारा तथा सम्भाव्य ग्रह-मण्डलो म ढूढन पर केवल असाधारण स्थितियो म ही ये तमाम परिस्थितियाँ देखी जा सकती हैं। किन्तु ठीक इसीलिए कि सितारो और उनके सम्भावित ग्रहो *की सख्या इतनी अनगिनत है, इस बात की सम्भावना भी* अत्यधिक बढ जाती है कि ये तमाम परिस्थितियाँ ब्रह्माण्ड के सहस्त्रा, और कदाचित् दसियों लाखो स्थानो मे मौजूद हो सकती ह।

हमारी विशप दिलचस्पी अपने पडोसिया मे—स्वयम अपने सौय परिवार के ग्रहो म है। उनके तल पर जो स्थितिया ह उनका पता हमें काफी सही-सही मिल सकता है।

सौर्य परिवार के ग्रहो मे से बडे ग्रहो को तो उन ग्रहो की सूची स फौरन अलग कर दिया जाना चाहिए जिन पर जीवन हा सकता है।

स मुझसे हाथ मिलाया। उसकी आँखों के इद गिद काले निशान पड़े हुए थे। एसा लगता था कि थक कर वह चूर चूर हो गयी थी। जहाज के कप्तान का सहायक, नतायव उस फौरन उस कमरे म ले गया जो उसके लिए तैयार करवा कर रखा गया था।

तीसरा यात्री एक नवयुवक था। वह बिलकुल लडका लगता था। वह इस भाव से उन लोगो के सामान के मोटर बाट से निकाले जाने की निगरानी कर रहा था जैसे कोई बहुत बडा काम कर रहा हो।

"ज़रा होशियारी स काम करो। वे नाजुक आले है, वैज्ञानिक उपकरण है!" वह चिल्ला चिल्लाकर कह रहा था। 'अरे, दखकर! क्या तुम्हारी समझ म नही आता? वे बहुत ही नाजुक औजार ह।"

आखिरकार सारी साज-सज्जा लाकर 'डेक' पर रख दी गयी।

उदाहरण के लिए शनीचर बृहस्पति वरुण तथा वारुणी (नेपच्यून) को लीजिए व शाश्वत हिम स ढके रहते है और उनके वायु मण्डल ज़हरील है। सूय से सबसे दूर के ग्रह, प्लूटो (यम) म अनन्त रात रहती है। वह अभेद्य कोहरे से ढका रहता है। बुध पर, जो सूय के सबसे समीप ह, रत्ती भर भी हवा नहीं है। उसका एक पक्ष सदा सूय की तरफ रहता है और इसलिए जलकर क्षार क्षार हो गया है। उसके दूसरे पक्ष मे अनन्त अधकार तथा ब्रह्माण्ड शीत का अखण्ड साम्राज्य रहता है।

जीवन की उत्पत्ति के लिए सबसे उपयुक्त परिस्थितियाँ पृथ्वी, शुक्र तथा मगल पर पायी जाती है।

इन तीनो ग्रहो का ताप उस सीमा स आगे नही जाता जिसके अन्दर जीवन सम्भव है। पृथ्वी की ही तरह शुक्र और मगल का भी अपना-अपना वायु मण्डल है।

शुक्र के वायुमडल की सरचना का अनुमान करना कठिन है, क्योकि वह सदैव बादलो के अविच्छिन्न घटाटोप से ढका रहता है। फिर भी,

उसमे मुझे एसी कोई चीज नही दिखलायी दी जो टेलिस्कोप (दूरबीन) की तरह की हो।

यहाँ उत्तर ध्रुव मे खगोल-वेत्ताओ के अभियान का क्या काम है ? ऐसा तो हो नही सकता कि यहाँ से तारे कुछ अधिक स्पष्ट दिखलायी देते हो। हमारा जहाज डिक्री द्वीप के बंदरगाह मे लगर डाले पडा था। इस मौके का लाभ उठा कर, बोरिस ऐफीमोविच ने इन वैज्ञानिक मेहमानो को अपने दीवानखाने मे आमन्त्रित कर लिया।

खाने के भडारे की लडकी कात्या किसी गुप्त गोदाम मे से भुनी हुई मछलियाँ ले आयी। कैप्टन की निजी ब्राण्डी भी मेज पर आ गयी।

वैज्ञानिको ने, जिनमे वनस्पति विद् नताशा भी थी, खूब जी भर कर खाया पिया। सो चुकने के बाद नताशा मे भी अब जान आ गयी

उसके वायु मण्डल के ऊपरी स्तरों मे ज़हरीली गैसो का पता चला है। स्पष्टतया शुक्र के वायु मण्डल मे कार्बन डाई-ऑक्साइड की मात्रा अत्यधिक है। कार्बन डाई-ऑक्साइड प्राणि-जीवन के लिए तो घातक होती है, किन्तु निम्न वर्ग के पौधो के विकास के लिए वह अत्यन्त लाभदायक होती है।

शुक्र पर प्रारम्भिक जीवन का अस्तित्व हो, यह असम्भव नही है, परन्तु अभी तक इस चीज को प्रमाणित नही किया जा सकता।

पृथ्वी के दूसरे पडौसी—मगल की बात सर्वथा भिन्न है।

मगल बरहकीक्त है क्या ?

मगल पृथ्वी के लगभग आधे आकार का एक ग्रह है। सूर्य से पृथ्वी की अपेक्षा वह डयोढे फासले पर है।

मगल को अपनी धुरी के ऊपर घूमने मे २४ घण्टे ३७ मिनट लगते है।

थी और उसके गाल लाल-लाल हो उठे थे।

त्राइमोव से मैंने पूछा, "कृपया क्या मुझे आप यह बतायेंगे कि खगोल विद्या सम्बधी आपके इस अभियान का वास्तव म उद्देश्य क्या है ?"

कुछ और मछली अपनी प्लेट म रखते हुए त्राइमाव न जवाब दिया, "यह प्रमाणित करना कि मगल पर जीवन का अस्तित्व है !" मैं जस कुर्सी से उछल पडा।

"मगल पर ? आप मजाक कर रहे है !"

त्राइमाव न अपने गोल चश्मे के अन्दर से मेरी तरफ आश्चय पूवक देखा।

उसकी धुरी कक्षा (orbit) के तल (plane) की आर लगभग उतनी ही झुकी हुई है जितनी कि पृथ्वी की झुकी है। फलस्वरूप, मगल पर भी वही मौसम होते हैं जो पृथ्वी पर होते ह ।

यह बात प्रमाणित की जा चुकी है कि मगल क इर्द गिद एक वायु मण्डल है। इस वायु मण्डल म ऐसी कोई गसें नही पायी गयी ह जा जीवन के विकास के लिए हानिकारक हो।

मगल म कावन डाई ओक्साइड की लगभग उतनी ही मात्रा पायी जाती है जितनी पृथ्वी पर। उसके वायु मण्डल म आक्सीजन की मात्रा पृथ्वी के वायु मण्डल म पायी जान वाली आक्सीजन की मात्रा के सभवत लगभग १००वें भाग के बराबर है।

मगल की जलवायु कठोर और कष्टदायक है। ऊपर की कहानी म उसका जो विवरण दिया गया है वह सही है।

मगल की अवस्था उतनी ही है जितनी कि पृथ्वी की है और वह भी विकास की उन सब मजिलो से गुजरा है जिनसे पृथ्वी गुजरी है।

"मजाक मैं क्यो करूँगा ?

मैंने पूछा, "तो क्या वास्तव म आप लोग यहाँ से मगल का प्रेक्षण कर सकत हैं ?"

"नही, वष के इस काल म आम तौर से मगल साफ-साफ नही दिखलायी देता ।

"तो क्या आप यह कह रहे हैं कि ये लोग आसमान की ओर देखे बिना ही यहा उत्तर ध्रुवीय प्रदेश मे मगल का अध्ययन करना चाहत है ?" मने हठपूवक पूछा ।

"मगल से सम्बधित हमारा अध्ययन काय अल्मा-अता की वेधशाला मे हो रहा है, लेकिन यहा पर "

जिस समय वह ठण्डा हो रहा था तथा उसके प्रथम सागरो का निर्माण हो रहा था उस समय वह बादलो के अविच्छिन्न घटाटोप से ढका हुआ था—ठीक उसी तरह जिस तरह शुक्र आज उनसे आच्छन्न है । पृथ्वी भी अपने अगार युग (Carboniferous period) मे बादलो के एस ही घटाटोप से आवत्त थी ।

ग्रह के विकास के इस "कोष्ण" ('warm') काल म मगल के तल का ताप सूय पर उस प्रकार नही निभर करता था जिस तरह कि उसी काल मे पृथ्वी का ताप भी उस पर नही निभर करता था । उस समय मगल की हालत हर तरह से पृथ्वी जैसी ही थी और, जैसा कि हम जानते हैं, पृथ्वी की यह हालत उसके आदिम सागरो के अन्दर जीवन के उदय के लिए सवथा अनुकूल थी ।

सम्भव है कि मगल मे भी इसी तरह की जीवन क्रिया का विधान हुआ हो ।

कोष्ण काल मे, अगार युग के अश्ववार (horse tails) जैसे प्रथम

"हाँ, फिर यहा पर क्या हो रहा है ?"

"हम लाग मगल पर जीवन के अस्तित्व के प्रमाण की खोज कर रह है।"

निजोवस्की न विस्मय से कहा "यह अत्यत मनोरजक वात है ! बचपन स ही मगल की नहरा मे मेरी दिलचस्पी रही है ! शियापरेली, लावेल—ही तो वे वैज्ञानिक थे न जिहान मगल का अध्ययन किया था ?"

उपदेशात्मक ढग से श्राइमाव ने इस सूची मे जोडा, "तिखोव, गब्रिल आर्द्रयानोविच तिखोव।"

"इस नये विज्ञान की—तारा वनस्पतिशास्त्र की स्थापना उहान ही की थी !" नवयुवती न उत्साहपूवक बताया।

पौदो तथा जीवन के अय आदिम स्वरूपा का विकास हो गया था।

केवल इसके बाद के ही कालो मे, जब बादला का घटाटाप छिन विच्छिन हो गया था, मगल क वायु मण्डल के कण उड गये थे और उसक तल पर एसी परिस्थितिया पदा हा गयी थी जा पृथ्वी की परिस्थितियो से भिन है। मगल की गुरुत्वाकपण शक्ति (gravitational force) पृथ्वी की अपेक्षा कम थी, इसीलिए उसके वायु-मण्डल के कण, जो उससे टूटकर भागने की निरतर चेष्टा करते आ रहे थे वहाँ से उड जाने मे सफल हुए थे।

परन्तु, विकास-क्रम मे, जीवित प्राणी अपन का इन नयी परिस्थितिया के भी अनुकूल बना ले सकते थे।

किन्तु वायु मण्डल का खोने के अलावा, मगल अपना पानी भी खो बैठा। उसका सारा जल भाप बनकर वायु मण्डल म उड गया और फिर अवकाश (Space) मे गायब हो गया।

"तारा वनस्पतिशास्त्र ?" मैंने पूछा। "तारा—एक सितारा और फिर वनस्पतिशास्त्र ? इनके बीच सम्बन्ध क्या है।"

नताशा जोर से हँस पडी।

"निस्सन्देह, तारा वनस्पतिशास्त्र है!" उसने कहा। "यह दूसरे ग्रहों की वनस्पति के अध्ययन का विज्ञान है!"

"मंगल पर, " क्राइमोव बीच में ही बोल पड़ा।

नताशा ने सगर्व बतलाया, "कजाक सोवियत समाजवादी प्रजातन्त्र की हमारी अकादमी में अब इस नये सोवियत विज्ञान, तारा-वनस्पति शास्त्र का एक विभाग काम कर रहा है।"

मैं यह क्या सुन रहा हूँ ? खगोलवेत्ता,—और उत्तरी ध्रुव क्षेत्र

क्रमशः मंगल जल-विहीन रेगिस्तानों से आच्छन्न एक ग्रह बन गया।

आज उसके तल पर धुंधले धुंधले धब्बे दिखलायी देते हैं। इन्हें कभी समुद्र कहा गया था। परन्तु प्राचीन काल में मंगल में कभी अगर समुद्र थे भी तो उनको विलुप्त हुए अब एक लम्बा ज़माना बीत गया है। वहां पर किसी खगोल-वेत्ता को कभी उस तरह के हल्के धब्बे नहीं दिखलायी दिये हैं जिस तरह के पानी के तल पर दिखलायी देने चाहिए। मंगल के ध्रुवों (Poles) के पास के प्रदेश बारी-बारी से एक ऐसे पदार्थ से ढक जाते हैं जो, अपनी परावर्तन शक्ति (reflecting power) की दृष्टि से, पृथ्वी की हमारी बर्फ की तरह मालूम होता है।

सूर्य की किरणें जब किसी ध्रुवीय प्रदेश (polar region) को गरमाती हैं तो उसकी सफेद टोपी का आकार छोटा हो जाता है और वह एक मटमैली पट्टी से (जो स्पष्ट रूप से गीली मिट्टी मालूम होती है) घिर जाता है। उसके ध्रुवीय प्रदेशों की यह सफेद टोपी (जो०

मे ?" कैप्टन ने पूछा ।

क्राइमोव ने बताना शुरू किया, "असल मे, बात यह है । हमे वैसी ही परिस्थितिया ढूंढ निकालनी है जैसी कि मगल पर मिलती है । पृथ्वी की तुलना म मगल सूय से कोई डेढ गुना अधिक फासले पर है । उसका वायु मडल उसी प्रकार विघनित (rarefied) है जिस प्रकार कि १५ किलोमीटर की ऊँचाई पर स्थित यहाँ का वायु-मडल है । मगल की जलवायु कठोर तथा अत्यन्त कष्टदायक है ।"

बीच मे बोलते हुए नताशा ने कहा, "जरा सोचिये तो, उसकी भू-मध्यरेखा पर दिन के समय तापमान शून्य से २०° सण्टीग्रेड ऊपर होता है और रात को—७०° सेण्टीग्रेड !"

"बहुत कठिन हालत है," कैप्टन ने कहा ।

ए० तिखोव की और सूक्ष्म जाँच-पड़ताल ने प्रकट किया है कि इस टोपी का रग हरा है) उस बफ से मिलती जुलती मालूम होती है जिसके ऊपर तुषार (Snow) की चादर न हो ।

जब ठड होने लगती है तब ग्रह की हिम की टोपी बडी होने लगती है और उसके चारा तरफ की मटमैली गोट नजर से गायब हो जाती है । इससे यह निष्कष निकाला गया है कि मगल के वायु-मडल मे थोडी मात्रा मे पानी की जो भाप मौजूद है वह उसके ध्रुवीय प्रदशो पर बफ के रूप मे गिरती है और वहाँ की भूमि को लगभग ४ इन्च मोटी हिम की एक तह स ढक देती है ।

जब गम होने की क्रिया शुरू होती है तो बफ पिघल जाती है और उससे निकला जल या तो जमीन के अन्दर जज्ब हो जाता है, या किसी तरकीब से ग्रह के ऊपर उस फैला दिया जाता है ।

मगल के प्रत्येक ध्रुव पर बारी-बारी से यही क्रिया घटती है । बफ़ जब दक्षिणी ध्रुव पर पिघलती है तब उत्तरी ध्रुव पर वह जमने

"मध्यक्षेत्र मे," क्राइमोव ने बात को फिर जारी करते हुए कहा, "जाडो मे दिन और रात दोनो मे तापमान शून्य से ८०° सेन्टीग्रेड नीचे रहता है (और मगल पर भी ठीक वैसे ही मौसम होते है जैसे यहाँ पृथ्वी पर मे होते है)।

"कुछ उसी तरह की हालत है जैसी तुर्कीस्व प्रदेश मे होती है," पहली बार बोलते हुए भूगोल-वेत्ता ने कहा।

"हाँ, मगल की जलवायु बहुत सख्त है। लेकिन क्या यहाँ उत्तर ध्रुवीय क्षेत्र मे भी उसी तरह के तापमान नही मिलते ?" क्राइमोव को इस विषय म बात करना अच्छा लगता था। स्पष्ट था कि अपने तारा-वनस्पतिशास्त्र मे उसकी गहरी दिलचस्पी थी।

जहाज के कैप्टन ने कहा, "अब मैं समझा कि आप लोग यहाँ

लगती है और उत्तरी ध्रुव पर जब वह पिघल्ती है तब दक्षिणी ध्रुव पर वह जम जाती है

नक्षत्र-वनस्पति शास्त्र क्या है ?

यह सोवियत का एक नया विज्ञान है जिसकी सृष्टि हमारे एक अत्यन्त प्रमुख खगोल-वेत्ता, गेव्रिल आद्रियानोविच तिखोव ने की है। तिखोव सोवियत सघ की विज्ञानो की अकादमी के करेस्पोन्डिग सदस्य हैं।

तिखोव पहले वह वैज्ञानिक थे जिन्होंने प्रकाश के एक रगीन फिल्टर (छनन) के माध्यम से मगल की तस्वीरें खीची थी। इनके आधार पर वे यह बताने म सफल हो गये थे कि वर्ष की विभिन्न ऋतुओ मे उक्त ग्रह के विभिन्न भागो का रग वास्तव मे कैसा रहता है।

वे धब्बे खास तौर से दिलचस्पी की चीज थे जिन्हे कभी समुद्रो की सज्ञा दी गयी थी। वसन्त ऋतु मे इन धब्बो का रग हरापन लिये हुए नीला होता है, ग्रीष्म ऋतु मे बदल कर वह हल्का भूरा हो जाता है

किसलिए आये है ।"

"उत्तर ध्रुवीय प्रदेश मे जीवन है," खगोल वेत्ता ने बात जारी रक्खी। "और मगल पर उसके लिए इससे भी अधिक अनुकूल परिस्थितिया मौजूद है। उदाहरण के लिए, उसके ध्रुवीय वृत्त (polar circles) मे, जहा कई-कई महीने तक सूय नही डूबता, तापमान दिन रात शून्य से लगभग १५° सेन्टीग्रेड ऊपर रहता है। पेड पौधा की उत्पत्ति के लिए यह अत्युत्तम परिस्थिति है।"

"तो क्या मगल पर वास्तव मे पेड-पौदे है ?" मै पूछने का लोभ सवरण न कर सका।

'अभी तक हमे कोई प्रत्यक्ष प्रमाण इसका नही मिला है," आइमोव ने कुछ गोल माल ढग से जवाब दिया।

और शीतकाल म गहरा भूरा होता है। मगल पर होने वाले इन परिवतनो की तुलना तिखाव ने साइबेरिया के सदा हरे रहने वाले टैगा (कोणधारी वनो) के रगा मे होने वाले परिवतनो स की। वसन्त मे हरे या धुधले नीले वण का दिखलायी देने वाला टैगा ग्रीष्म ऋतु मे भूरा हो जाता है और जाडे के दिना म उसका रग गहरा भूरा हो जाता है।

साथ ही साथ, मगल के विशाल मैदाना का रग अपरिवर्तित रूप से सदा लाली लिये हुए हरा भूरा ही बना रहता है। हर तरह से वह पृथ्वी के रेगिस्ताना के रग से मिलता जुलता मालूम होता है।

मगल के जिन धब्बो का रग बदलता है वे वनस्पति से लदे विस्तृत प्रदेश हैं—इस चीज को साबित करने की जरूरत थी।

वणक्रम दर्शी (स्पेक्ट्रसकोप) की मदद से मगल पर वण हरिम (chlorophyll) की खोज करने की कोशिशें सफल नही हुई हैं। अगर यह सिद्ध हो जाय कि उसमे वण हरिम मौजूद है तो प्रकाश-सश्लेषण

कैप्टन न फिर सबके गिलासो मे ब्राण्डी भर दी ।

"खगोल विद्या का निश्चय ही एक अच्छा पेशा है । हम नाविको तथा ध्रुव प्रदेशो के अवपका के अन्दर अपने विषय मे वात करन की एक आदत जैसी होती है । शायद आप लोग भी, भूगोल वेत्ता आप, और निज़ोवस्की, आप, और खासतौर से हमारे खगोल वेत्ता मित्र हमे बतायेगे कि आप लाग वैज्ञानिक किस प्रकार बन गये है," बोरिस ऐफीमोविच न सुझाव दिया ।

निज़ोवस्की ने कहा, "बताने का है ही क्या ! मै स्कूल गया, फिर विश्वविद्यालय, फिर स्नातकोत्तर शाध-काय के एक विद्यार्थी के रूप मे काम करने लगा, बस—इतनी ही सी तो बात है ।'

वैलेण्टीन गैव्रिलोविच वासीलियेव ने कहा, "मुझे तो एक नशे ने वैज्ञानिक बना दिया—नई चीजा को जानने के नशे न, घूमन फिरने के

(photosynthesis) की तथा जमीन के पौदो का वहा अस्तित्व होने की वात भी सिद्ध हो जायगी ।

जैसा कि कहानी मे बतलाया गया है, पृथ्वी के पौदा की यह विशेषता है कि अव रक्त किरणा से जब उनकी तस्वीर खीची जाती है तब चित्र मे वे सफेद दिखलायी देते हैं जैसे कि वे बफ से ढके हो अगर मगल के वे प्रदेश भी, जिन पर वनस्पति के होने की बात कही जाती है, अव रक्त किरणो स ली गयी तस्वीरा म उसी तरह से सफेद दिखलायी दें तो इस बात म कोई सन्देह नही रह जायगा कि मगल पर भी वनस्पति मौजूद है ।

परन्तु, मगल की नयी तस्वीरो से इन साहसी अनुमानो की पुष्टि नही हुई है ।

लेकिन जी०ए०तिखाव इससे भी हताश नहीं हुए । उन्होंने दक्षिण और उत्तर की जमीन के पौदा के परावतन गुणा (reflecting properties)

नदो ने। अपने अनोखे देश मे मै सब जगह पैदल और साइकिल से भटक आया हूँ। और अब मैं उत्तर ध्रुवीय प्रदेश मे हूँ। जब कभी थोडा रुककर आदमी सोचने लगता है कि हमारे विशाल देश का कितना बडा भाग अब भी घूमने-फिरने के लिए पडा हुआ है, उचित ढग से उसका अन्वेषण करना अब भी बाकी है तो मन पर एक अद्भुत भाव छा जाता है।" फिर अपने गिलास को ऊपर उठाते हुए भूगोलज्ञ ने कहा, "अपने अनन्त, अत्यन्त सुन्दर देश के मगल के लिए!" और अपने गिलास को उसने खाली कर दिया।

हम सबने भी ऐसा ही किया।

"और आप, आप कैसे वैज्ञानिक बन गये?" ग्राइमोव को सम्बोधित करते हुए कैप्टन ने पूछा।

का तुलनात्मक परीक्षण किया।

इस परीक्षा से जो परिणाम निकले वे आश्चय मे डालने वाले थे। अव रक्त उष्मा की किरणो से ली गयी तस्वीरो मे, केवल वे ही पौदे सफेद दिखलायी देते थे जो उष्मा की अव रक्त किरणो का उपयोग किये बिना ही उन्हें वापिस लौटा देते थे। उत्तर के पौदे (उदाहरण के लिए बदरी और सेवार की किस्मे) उष्मा की किरणो का परावतन (वापिस) नही करते थे, बल्कि उनका अवशोषण कर लेते थे। ये किरणें उनके लिए अनावश्यक न थी। अव रक्त किरणो से ली गयी तस्वीरो म उत्तर के पौदे सफेद नही दिखलायी देते थे, ठीक उसी तरह जिस तरह कि मगल की कथित वनस्पति के प्रदेश चित्रो मे सफेद नही आते थे।

इस जाच पडताल के आधार पर तिखोव ने यह बुद्धिमतापूण निष्कर्ष निकाला कि जीवन परिस्थितियो को अपने अनुकूल बनाने की क्रिया के दौरान मे, पौदे उन किरणो का अवशोषण करने की क्षमता उपार्जित कर लेते हैं जिनकी उन्हें आवश्यकता होती है और उन किरणो का वे परावतन कर देते हैं जिनकी उन्हें आवश्यकता नहीं होती। दक्षिण

ग्राइमोव अत्यन्त गम्भीर हो उठा।

विचारो मे डूबते हुए और अपने हाथ से अपनी आगे निकली भौंहो को सहलाते हुए, उसने शुरू किया, "इसकी बडी टेढी मेढी कहानी है। उसे बताने म बहुत समय लगेगा।"

हम सब ने उसे मनाना शुरू कर दिया। नताशा तो जैसे अपने नेता को आँखो से ही खाये जा रही थी। साफ था कि उसे भी उनके पिछले जीवन के बारे मे कुछ नही मालूम था।

"बहुत अच्छा, फिर मैं आप लोगो को बतलाऊगा," आखिरकार राजी होते हुए ग्राइमाव न कहा। "मैं एवेन्की के एक खानाबदोश तम्बू मे पदा हुआ था। एवेन्की लोग टुगस कहलाते थे।"

'तो आप एक इवेंक हैं!' आश्चय से नताशा ने कहा। ग्राईमाव ने सिर हिलाकर हामी भरी।

मे जहा बहुत धूप हाती है पौदा को वण क्रम (spectrum) की उष्मा किरणो (heat rays) की आवश्यकता नही होती और वे उनका परावतन कर देते है, परन्तु उत्तर मे, जहाँ सूय से बहुत कम गर्मी मिलती है, पौदे इस तरह की ऐय्याशी नही कर सकते, और इसलिए सूय के वण क्रम की समस्त किरणो का अवशोषण कर लेने का वे प्रयत्न करते हैं। मगल पर, जहाँ की जलवायु विशेष रूप से कष्ट प्रद है और जहाँ सूय का प्रकाश तेज नही होता, यह स्वाभाविक ही है कि पौदे अधिक से अधिक किरणा का अवशोषण करने का प्रयत्न करें। इसलिए, इस विशेष दृष्टि से, मगल के पौदे पृथ्वी के दक्षिणी पौदो से अगर नही मिलते तो यह बात बिलकुल समझ मे आने वाली है। ये हमारे उत्तर ध्रुवीय (Arctic) पौदा से अधिक मिलते-जुलते हैं। तिखोव के शिष्या ने ध्रुवीय क्षेत्रो तथा ऊँचे पवतो मे जो अन्वेषण यात्राएँ की थी भी तिखोव के इन निष्कर्षों को बल मिला था।

"एवेन्की के एक तम्बू म मेरा जन्म उसी साल हुआ था जिस साल कि टैंगा म   सम्भवत आप ने उस टुगस उल्कापिण्ड के बारे मे तो सुना ही होगा जो टैंगा मे गिरा था ?"

"थोडा सा सुना है । पर उसके बारे मे हम और अधिक बताइए। वह बडी दिलचस्प चीज है," प्राथना करत हुए निजावस्की ने उनसे कहा ।

नाइमोव ने उल्लासपूवक कहानी आगे बढायी, "वह एक असाधारण घटना थी । एक दिन हजारा लोगा ने देखा कि टैंगा के ऊपर आसमान म आग की एक गेंद चल रही थी । उसकी रोशनी सूय से भी अधिक चमकीली थी । फिर आग का एक स्तम्भ उठा और निरभ्र आकाश को भेदता हुआ ऊपर चला गया । उसके बाद एक धक्का लगा । इस धक्के के जोर की

इस निष्कप पर पहुँचने के क्रम म तिखोव ने इस चीज का भी कारण ढूढ निकाला कि मगल पर वण हरिभ (chlorophyll) क्या नही मिला था ।

इस समस्या के और अधिक अध्ययन से तिखोव का यह विश्वास अधिकाधिक बढता गया कि मगल तथा पृथ्वी के पौदो के विकास म पूण समानता है । मगल के रेगिस्तानी विस्तारा मे उन्होंने वनस्पति के ऐसे प्रदेश ढूढ निकाले ह जिनकी परावतन-शक्ति ठीक उन पौदा जैसी ही है जो सोवियत सघ के मध्य एशियाई रेगिस्तानो मे पैदा होते है ।

तिखोव की वे रिपोर्टें भी महत्वपूण हैं जिनमे उन्होंने बतलाया है कि मगल के रेगिस्तानो के किन्ही प्रदेशो मे वसन्त ऋतु के आरम्भ-काल मे फूलो की बहार दिखलायी देती है । रग और रूप मे फूलो की बहार वाले मगल के ये प्रदेश मध्य एशिया के उन विशाल रेगिस्तानी प्रदेशा से बहुत समानता रखते हैं जो कुछ काल के लिए खसखस के लाल फूलो की एक अन्त हीन चादर से ढँक जाते हैं ।

किसी भी ज्ञात चीज से तुलना नहीं की जा सकती। उसकी गडगडाहट सारी दुनिया म गूज गयी थी। दुघटना-स्थल मे हजार किलोमीटर के फासले पर भी उसकी आवाज खूब सुनायी दी थी। यह चीज लिखी हुई मौजूद है कि कास्क के नजदीक, घटना-स्थल से लगभग ८०० किलोमीटर की दूरी पर, उसकी वजह से एक रेलगाडी रुक गयी थी। इजिन के ड्राइवर ने बाद मे बताया था कि उसे ऐसा लगा था जैसे कि उसकी गाडी मे ही कोई भारी विस्फोट हो गया था। सारी पृथ्वी पर एक अपूर्व प्रभजन फैल गया था। छतें उड गयी थी और विस्फोट की जगह से ६०० किलोमीटर तक की परिधि मे तमाम बाडे गिर गये थे। और भी दूर-दूर तक चौकों के बतन हिल उठे थे और घडिया बद हो गयी थी—ठीक उसी तरह जिस तरह कि भूकम्पों के समय होता है। इस आघात को अनेक भूकम्प लेखी स्टेशनों (seismological stations) ने अकित किया था। ताशकन्द, जेना (जमनी) और इकुटस्क, आदि

हाल म शुक्र पर वनस्पति के अस्तित्व के सम्बध म भी तिखाव ने कुछ अत्यन्त मनोरजक विचार प्रस्तुत किये हैं। शुक्र पर चूकि आवश्यकता से कही अधिक उष्णता मौजूद है इसलिए उसके पौदा को—अगर उनका वास्तव मे कही अस्तित्व है—सूय के वणक्रम के समस्त ऊष्मीय (thermal) भाग को परावर्तित (वापिस) कर देना चाहिए, अर्थात्, उन्ह लाल-लाल दिखलायी देना चाहिए। सोवियत के खगोल-वत्ता बाराबशेव ने पुल्कोवो वेधशाला मे यह खोज निकाला था कि शुक्र के बादलो के आवरण के पीछे पीली और नारगी किरणें मौजूद हैं। इस खोज के आधार पर तिखोव ने कहा कि सम्भवत ये किरणें उस लाल वनस्पति का प्रतिबिम्ब (परावतन) हैं जो शुक्र पर फैली हुई है।

अभी तक जी० ए० तिखोव के विचारो से सब वैज्ञानिक सहमत नही हैं। अब यह कजाक सोवियत समाजवादी प्रजातत्र के विज्ञानो की अकादमी के नक्षत्र—वनस्पतिशास्त्रीय विभाग का काम है कि दूसर

के केन्द्रो म उसकी रिपोट पहुची थी। इन सभी स्थाना म उन लोगों की रिपोर्टें इक्टठी की गयी थी जिन्हाने चीजा का स्वयम् देखा था।'

"वास्तव मे, वह क्या था ?" निजावस्की ने पूछा। "पृथ्वी पर एक उल्का पिण्ड के टकराने का धक्का ?'

"उस समय ऐसा ही सोचा गया था," गोल मोल ढग स ग्राइमोव ने जवाब दिया। "उससे उठी हवा की तरग ने पथ्वी की दा बार परिक्रमा की थी। उसे लन्दन तथा अन्य स्थाना के वायुदाबमापी यत्रो (barographs) ने दज किया था।

"टैगा की दुघटना के बाद चार दिन और चार राता तक सारी दुनिया मे विचित्र चीजा दिखलायी दती रही थी। आकाश मे बहुत ऊपर दीप्तिमय बादल दिखलायी दिय थ। उनकी वजह से सारे योरप

ग्रहा पर और, सबस पहले, मगल पर जीवित वनस्पति के अस्तित्व के और अधिक अकाट्य प्रमाणा को वह ढढ निकाले।

क्या मगल पर नहरें हैं ?

सबसे पहले इन विचित्र आकृतियो की खोज १८७७ की प्रथम महान् वियुति (Opposition) के समय शियापरेली न की थी। उन्ह व बिल्कुल सीधी सीधी ऐसी रेखाएँ मालूम पडी थी जिनसे उक्त ग्रह पर एक जाल-सा बिछ जाता है। उन्हान उन्ह नहरें कहा। इस विचार का बहुत सावधानी से सबसे पहले उन्हीने रक्खा था कि य नहरें वास्तव मे उक्त ग्रह के समझदार निवासिया द्वारा कृत्रिम रूप स बनायी गयी नहरे हैं।

बाद के परीक्षणो से इन नहरा के अस्तित्व के सम्बध म सन्देह पैदा हो गया था। बाद के प्रेक्षक उन्ह देखने म भी असफल रहे थे।

प्रमुख खगोल वेत्ता लावेल न ता मगल पर जीवन क अस्तित्व का

मे और यहाँ तक कि एल्जियस मे रातें इतनी आलोकमय हो उठी थी कि अर्द्धरात्रि मे भी अखबारो को पढा जा सकता था। ठीक वही हालत थी जैसी लेनिनग्राद मे श्वेत रातो के समय होती है।"

"यह कब की बात है ?" कैप्टन ने पूछा।

न्याइमोव ने उत्तर दिया, "उसी साल की जिस साल मैं पैदा हुआ था। १९०८ की। उस समय सारे टैगा मे एक अग्निमय प्रभजन दौड गया था। ६० किलोमीटर की दूरी पर, वैनोवर के कारखाने मे लोग अचेत हो गये थे। उन्हे ऐसा लगा था जैसे कि उनके ऊपर के कपडो मे आग लग गयी हो। हवा की तरग ने असख्य बारहसिंगो को हवा मे उडा दिया था, और जहाँ तक टैगा के पेडो की बात है मेरी बात का यकीन कीजिए, मैं उसी इलाके से आता हूँ और

पता लगाने के काय मे अपना सारा जीवन ही लगा दिया था। अरीज़ोना के रेगिस्तान म इस काम के लिए उन्होने एक विशेष वघशाला कायम की थी। वहाकी हवा कीपार-दशकता (transparency) प्रेक्षणो के लिए विशेष रूप से अनुकूल थी। लावेल की शोधो न शियापरेली की खोज की पुष्टि कर दी थी और उनके अस्थायी विचारो को और आगे विकसित किया था।

लावल न नहरो की एक भारी सख्या ढूंढ निकाली और उनका अध्ययन किया। इन नहरो को उन्हाने मुख्य नहरो और सहायक नहरो मे विभाजित किया। मुख्य नहरें (जो सबसे अधिक साफ-साफ दिखलायी देती थी और जिन्हे उन्होंने दोहरी नहरें कहा था) वे है जो ध्रुवो से–भूमध्य रेखा से होती हुइ–दूसरे गोलार्द्ध तक जाती है, और सहायक नहरें वे है जो एक वृहत चक्र की चापा (arcs) के अन्दर से मुख्य तथा बीच के प्रदेशो को काटती हुइ विभिन्न दिशाओ मे जाती है। उनका कहना था कि ये नहरें ग्रह तल पर सबसे छोट रास्त स

उल्कापिण्ड की तलाश म भी दूसरा के साथ मैंने अनेको वप लगाये है। ३० किलोमीटर की त्रिज्या (radius) के अ दर सारे पेड जड से उखड गये थे—उनमे से एक एक ! ६० किलोमीटर की त्रिज्या के अन्दर जहा जहा ऊँचे स्थान थे वहा के पेड धराशायी हो गये थे।

"इस प्रभजन ने जितनी बबादी ढायी थी उतनी पहले कभी नही देखी गयी थी। एवे की लोग कष्ट ग्रस्त टैगा की ओर अपने बारहसिंगो गल्ले के गोदामा तथा नष्ट सम्पत्ति की तलाश मे दौड पडे थे। वहाँ उन्ह जा मिला वह कवल जली हुइ लाशें थी ! मुसीबत ने मेरे बाबा नुचेटकन के तम्बू को भी अपना निशाना बनाया था। मेरे पिता क्षत विक्षत टैगा मे उन्ह ढूढने गये। वहाँ उन्होने देखा कि पानी का एक जबदस्त स्तम्भ जमीन से ऊपर की ओर उठ रहा था। कुछ दिनो बाद मेरे पिता भयकर कष्ट म मर गये। ऐसा लगता था जैसे कि वे

होकर बहती हैं (मगल एक ऐसा ग्रह है जिसकी भूमि समतल है। उस पर पवत नही हैं और न उसके उच्चावचन (relief) म कोई उल्लेखनीय परिवतन दिखलायी देते हैं)।

लावेल ने नहरो की दो व्यवस्थाएँ खोज निकाली। उनम से एक का सम्बध पिघलती हुई बफ के दक्षिण ध्रुवीय प्रदेश से है, और दूसरी का इसी तरह से उत्तरी ध्रुव प्रदेश से। नहरो की ये व्यवस्थाएँ बारी बारी से दिखलायी पडती हैं। जब उत्तर की बफ पिघलती है तब उत्तरी बफ से निकलने वाली नहरें दिखलायी देती हैं। जब दक्षिणी बफ पिघलती है तब दक्षिणी बफ से बनी नहरें दष्टि के सामने आती है।

इस सब के आधार पर, लावेल ने यह निष्कप निकाला कि ये नहरें मगल के निवासियो द्वारा तैयार की गयी सिंचाई की एक विशाल व्यवस्था का अग हैं। मगल निवासियो ने नहरो के इस विशाल तन्त्र का निर्माण इसलिए किया होगा जिससे कि ध्रुवीय हिम आवरणा

जल गये हो और उन्हें उसी से तकलीफ हो रही थी। इसके बावजूद, उनकी त्वचा पर जलने का कोई निशान न था। पुराने लोग भयाक्रान्त थे। उन्होंने कहा कि टैगा को श्राप लग गया है, वहाँ कोई एवेंकी न जाय। उन्होंने उसे अभिशप्त स्थान बताया। ओझा लोगों ने कहा कि अग्नि और बिजली का देवता, ओगुडी, वहां पृथ्वी पर उतर आया है। कहा गया कि वहाँ जो कोई जायगा उसे वह अदृश्य अग्नि से जलाकर भस्म कर देगा।

"तीसरे दशक के आरंभ में एक रूसी वैज्ञानिक कुलिक वनोवर की फैक्टरी मे आये," क्राइमोव ने कहानी को आगे बढाते हुए कहा। "वे उस उल्का पिण्ड का पता लगाना चाहते थे। एवेंकी लोगो ने उनके साथ जाने से इंकार कर दिया। पर वे अंगारा के दो शिकारियों को पैसा देकर अपने साथ ले जाने में सफल हो गये। और, मैं भी उनके

के पिघलने से जो पानी उत्पन्न होता है उसका वे उपयोग कर सकें। लावेल ने हिसाब लगाया कि मंगल की पानी पम्प करने वाली व्यवस्था की शक्ति नियाग्रा प्रपात की शक्ति से ४,००० गुना अधिक होगी। लावेल को लगा कि इस बात से उनके विचारों की पुष्टि होती है कि नहरें, धीरे धीरे, उसी क्षण से दृष्टि आने लगती है जिस क्षण से हिम का पिघलना शुरू होता है। ऐसा लगता है कि उनमें से ज्यों-ज्यों पानी नीचे की तरफ बहता है त्यों त्यों वे लम्बी होती जाती हैं। हिसाब लगाकर यह स्थापित किया गया कि लम्बी होती हुई नहर (अथवा उसका पानी) मंगल पर ४,२५० किलोमीटर का फासला ५२ दिन में तय कर लेती है। इसका अर्थ हुआ कि १ घंटे में वह ३.४ किलोमीटर बडी हो जाती है।

लावेल ने यह भी साबित किया कि नहरें जिन स्थानों पर एक-दूसरे को काटती हैं उन स्थानों पर ऐसे स्थल हैं जिन्हें नखलिस्तान कहा जा सकता है। लावेल मानते हैं कि ये नखलिस्तान वास्तव में

साथ हो गया। मै नौजवान था और रूसी अच्छी तरह जानता था। फैक्टरी मे मैंने कुछ सीखा था और दुनिया मे किसी चीज से मैं डरता नही था।

"कुलिक के साथ हम लोग दुर्घटना के केन्द्र-स्थल पर पहुँच गये। उसने देखा कि तमाम असख्य पेड, दसियो लाखो उखडे पेडो के तने, वहा पडे हुए थे और उन सब की जडें एक ही दिशा की ओर, दुर्दैवपात के केन्द्र की ही दिशा की ओर इंगित कर रही थी। जब हमने स्वयम् केन्द्र स्थल की जाच-पडताल की तो हम और भी अधिक आश्चर्य मे पड गये, क्योकि उस स्थान पर जिस पर गिरने वाले उल्का पिण्ड के कारण सबसे अधिक विनाश होना चाहिए था सारा जगल एकदम सीधा खडा हुआ था। वह चीज न केवल मेरे लिए बल्कि रूसी वैज्ञानिक के लिए भी सर्वथा अगम्य थी। इसे मैं उनके चेहरे के भाव को देखकर ही भाप गया था।

मगल निवासियो के बडे-बडे केन्द्र है, उनके शहर है।

परन्तु, लावल की स्थापनाओ को आम तौर से स्वीकार नही किया गया। नहरो के अस्तित्व तक के सम्बन्ध मे सन्देह व्यक्त किया गया। जब अधिक शक्तिशाली दूरबीनो के द्वारा मगल की जॉच पडताल की गयी तो सीधी, अटूट नहरो के रूप मे बनी हुई कोई चीज वहाँ नही मिली। केवल चित्तियो के अलग-थलग कुछ समूह देखे गये। आँख जान-बूझकर उन्हे सीधी रेखाओ मे जोडने का प्रयत्न करती मालूम हुई।

फिर नहरो को दृष्टि भ्रम का परिणाम बताया जाने लगा। उन्हे केवल कुछ प्रेक्षक ही देख पाते थे।

परन्तु, जाच पडताल की वस्तुगत पद्धति से इस कार्य मे अधिक सहायता मिली।

पुल्कोवा वेधशाला मे काम करते समय, जी० ए० तिखोव ने मगल

"पेड खडे तो सीधे थे, परन्तु वे सब मरे हुए पेड थे।—उनके न शाखाएँ थी और न टहनियाँ और न उनके ऊपर के फुलगे थे। वे जमीन मे गडी हुई बडी बडी वल्लियो की तरह मालूम पडते थे।

"दरस्ता के जगल के बीचोबीच पानी था—एक झील या दलदल की तरह की चीज।

"कुलिक ने समझ लिया कि उल्का पिण्ड के गिरने से जो छेद बना होगा वह यही है।

"अत्यत सरल तथा स्नेहपूर्ण ढग से हम शिकारियो को समझाते हुए, जैसे कि हम उनके वैज्ञानिक सहायक हो, उन्होंने बताया कि अमरीका के एरीज़ोना के रेगिस्तान मे किसी स्थान पर एक विशाल विवर (crater) है जिसका व्यास लगभग १ मील तथा गहराई लगभग

की नहरो की तस्वीरें खीचीं। उनकी तस्वीरें खीचनेवाले दुनिया के वे प्रथम वैज्ञानिक बन गये।। फोटो की प्लेट आँख नही है, इसलिए उसस गल्ती नहीं हो सकती।

हाल के वर्षों म नहरों की तस्वीरें खींचने का काम और भी बडे पैमाने पर किया गया है।

उदाहरण के लिए, १९२४ की वियुनि (पडभान्तर) के समय, ट्रैमिलर ने मगल की नहरा की १,००० से अधिक तस्वीरें खींची थी। फिर और जो तस्वीरें खीची गयी उनसे नहरों के अस्तित्व की पुष्टि हो गयी।

अत्यन्त दिलचस्प चीज इन रहस्यपूर्ण नहरों के रग की जाँच पडताल थी। हर प्रकार से उनका रग मगल की वनस्पति के अविच्छिन्न प्रदेशों के परिवर्तित होते हुए रग से मिलता है।

नहरों की चौडाई (जो १०० से ६०० किलोमीटर तक है) का हिसाब लगाने से यह विचार उत्पन्न हुआ कि वे "नहरें, अथवा पानी से

६०० फुट है। यह विवर एक विशालकाय ख पिण्ड के गिरने से, उसी तरह के एक उल्का पिण्ड के गिरने से हजारो वप पहले बना था जसा कि यहाँ पर गिरा है। इसीलिए पता लगाना अत्यावश्यक है। तभी मे मेरे अदर एक उत्कट अभिलाषा पैदा हो गयी थी कि रूसी प्रोफेसर की सहायता करूँ।

'अगले वप कुलिक फिर टगा आये। इस बार उनके साथ अवेषण के लिए वडी टुकडी थी। उन्होने अनेक मजदूरो को नौकर रक्खा। कहने की जरूरत नही कि उनके साथ शामिल होने वाला मे मैं सबम पहला आदमी था। हमने उल्का-पिण्ड के टुकडो की खोज शुरू की। मुदा जगल के बीच के दलदल के पानी को निकालकर हमने उसे सुखा दिया, हमने तमाम खाली और खोखले स्थानो की अच्छी तरह परीक्षा की, परन्तु न सिफ उल्का पिण्ड का ही हमे कही कोई पता चिह्न न

भरे हुए, काटकर जमीन पर बनाये गय खुले स्थान' नही है, बल्कि हरियाली की पट्टिया है। पिघलती हुई बफ का पानी ज्यो ज्यो पानी को ले जाने वाले विशाल नलो मे से आगे बढता है (३ ४ किलोमीटर फी घटे के हिसाब मे। इसी रफ्तार के साथ कालातर में वनस्पति की वद्धि की भी एक लहर फैलती जाती है), त्यो-त्यो हरियाली की ये पट्टियाँ भी क्रमश सामने आती जाती हैं। मौसमो के परिवतनो के साथ-साथ हरियाली की ये पट्टियाँ (वन या खेत) भी अपना रग बदलती जाती है।

इस मान्यता मे कि वहाँ पर जमीन मे गडे हुए पानी के ऐसे नल हैं जिनम जगह जगह कुआ के रूप मे खुले मुह बने हुए हैं—दोनो ही प्रकार के प्रेक्षक तुष्ट हो सकते हैं वे जिन्होने नहरें देखी थी और वे जिन्होने रेखाएँ नही, बल्कि सीधी पाँता मे स्थित केवल अलग-अलग बिदु ही देखे थे। ये बिदु नहरो द्वारा कृत्रिम रूप से सीची जाने वाली वनस्पति के उन स्थानो के नखलिस्ताना जसे मालूम होते हैं जिनमे पानी के नलो को तल के ऊपर ले आया गया है।

मिला, बल्कि उसके द्वारा बनाया गया कोई विवर भी हम नही मिल सका।

"दस वर्ष तक कुल्कि हर साल टैगा आते रहे। दसो साल उनकी निष्फल खोज मे मैंने उनका साथ दिया। परन्तु, उल्का पिण्ड अन्तर्धान हो गया था।

"कुल्कि का अनुमान था कि उल्का पिण्ड दलदल मे आ गिरा था और उसका विवर भी उसी म खो गया था। लेकिन हमने जमीन के नीचे, खूब गहरे तक खुदाई की। खोदते-खोदते नीचे हम सदा जमी रहने वाली चट्टान के अक्षत स्तर तक पहुँच गये। पर उल्का पिण्ड का पता निशान न था। हमने उस अक्षत स्तर में छेद किया तो छिद्र म से पानी की एक धार फूट पडी। उल्का-पिण्ड अगर इस जमी हुई तह के नीचे धम गया होता और उसने इसे पिघला दिया होता, तो फिर यह

यह विचार कि मगल मे जमीन के नीचे लगाय गय नलो का इस्तमाल किया जाता है इसलिए और भी स्वाभाविक मालूम होता है कि वहाँ पर वायु मण्डल के हल्के दाब की जो परिस्थितियाँ है उनमे पानी के कुड का यदि खुला रखा जायगा तो उसका परिणाम यह होगा कि तीव्र वाष्पन स कुण्ड का पानी जल्दी ही खत्म हो जायगा।

नहरा के स्वरूप क सम्बध म यह बहस अब भी चल रही है, किन्तु उनके अस्तित्व के सम्बध में अब कोई सन्देह नही व्यक्त किया जाता।

कुछ वैज्ञानिक, जो इतनी साहसपूर्ण बात नही कहना चाहते कि मगल पर जो नहर हैं उन्हें वहाँ के प्रबुद्ध निवासियो ने बनाया है इन "नहरो" को ज्वालामुखी के विस्फोटो स बनी दरारें मानना अधिक उचित समझते हैं। परन्तु, इस तरह की दरारें सौर परिवार क दूसरे किसी भी ग्रह मे नही देखी गयी हैं। इस परिकल्पना का यह भी एक दोष है कि, जब तक यह न मान लिया जाय कि वहाँ पर पानी का पम्प

दुवारा नही इस तरह की बन सकती थी। पृथ्वी अब शीतकाल मे भी लगभग ६ फुट के नीचे नही जमती।

"अभियान के दूसरे वर्ष के बाद कुलिक के साथ मैं मास्को चला गया और वही पढने लगा। किन्तु हर साल गर्मियो म मैं अपने घर आता और उल्का पिण्ड की तलाश करता। कुलिक की भी कोशिशें बराबर जारी रही। मैं हमेशा उनके साथ रहा। अब म टगा का एक अद्ध शिक्षित शिकारी नही रह गया था। मैं विश्वविद्यालय म पढता था। मैंने बहुत काफी पढ़ लिया था और वैज्ञानिक क्षेत्रो मे स्वयम् भी आलोचना का थोडा-बहुत काम करने लगा था। परन्तु कुलिक से इस विषय म मैंन कुछ नही कहा। मैं जानता था कि वे कसे लौह सकल्प के साथ, कितने उत्कट विश्वास के साथ अपने उल्का पिण्ड की तलाश कर रहे थे। उसके सम्बध मे उन्होने कुछ कविताएँ भी लिखी थी

करके भेजने की कोई ऐसी अत्यन्त शक्तिशाली व्यवस्था है जा ध्रुवीय जल को भूमध्य रेखा के उस पार—दूसरे गोलार्द्ध तक भेज देती ह, तब तक यह भी नही बताया जा सकता कि नहरो म से जो पानी जाता है उसका क्या कारण है।

कुछ खगोल वेत्ताओ का विचार इससे भिन्न है। उनको लगता है कि ज्यामिति की दृष्टि से एकदम शुद्ध दिखने वाली मगल की रगीन पट्टियाँ, जिनकी लम्बाई और रग बदलते रहते है किन्ही ऐसे जीवित प्राणियों के जीवन-व्याय के चिह्न है जिनका मानसिक विकास उच्चतम स्तर तक पहुँच गया है। उनके विचार मे, मगलवासियो का यह मानसिक विकास पृथ्वी के निवासियो के मानसिक विकास से किसी भी प्रकार कम नही है।

टुगस की १९०८ की विनाशकारी घटनाकी क्या परिस्थिति थी?

इरकुटस्क के भूकम्पलेखी केन्द्र तथा इरकुटस्क वेधशाला के सम्वाद-दाताओ की, अर्थात् १,००० स अधिक ऐस लोगा की साक्षी के आधार

फिर भला उनसे कैसे मैं यह कह सकता था कि मैं पक्के तौर से इस नतीजे पर पहुँच गया था कि वहाँ कभी कोई उल्का पिण्ड नही गिरा था ?"

निज़ोवस्की ने विस्मय से भर कर कहा, "आपका क्या मतलब ? क्या उल्का पिण्ड वहाँ कभी गिरा ही नही था ? फिर दुघटना के जो निशान वहाँ हैं वे कहाँ से आये हैं और वहाँ पर जो सहस्त्रो चोट खाये पेड पडे है उनका क्या कारण है ?"

"दुघटना हुई थी, यह सही है। लेकिन उल्का-पात नही हुआ था," नाइमोव ने किंचित प्रभावपूर्ण ढग से कहा। "इस विषय मे मैंने बहुत सोचा है कि दुघटना के केन्द्र स्थल पर पेड खडे कैसे रह गये होगे। जब कोई उल्का पिण्ड गिरता है तो विस्फोट किस वजह से होता है ? उल्का पिण्ड पृथ्वी के वायुमडल मे ३० से ६० किलोमीटर प्रति

पर जिन्होने उक्त घटना को स्वयम् अपनी आँखो से देखा था, निम्न बातें प्रमाणित हो चुकी हैं

३० जून, १९०८ को, बहुत सुबह के समय, एक अग्निमय पिण्ड (जो एक वृहत उल्का पिण्ड की तरह लगता था) आकाश से बहुत तेजी के साथ भागता हुआ गुज़रा था। अपने पीछे वह कोई ऐसी चीज़ छोडता गया था जो गिरते हुए उल्का पिण्ड की तरह की लगती थी।

स्थानीय समय के अनुसार ठीक ७ बजे, टँगा की वैनोवर फैक्टरी के समीप, अपनी तेज रोशनी से लोगो को अन्धा-जसा बनाता हुआ आग का एक गोला दिखलायी दिया। यह गोला सूय से भी अधिक चमकदार मालूम होता था। थोडी ही देर मे गोले ने अग्नि के एक स्तम्भ का रूप ग्रहण कर लिया। यह स्तम्भ निरभ्र आकाश मे खूब ऊपर तक उठता चला गया।

इससे पहले जब उल्कापात होता था तब इस तरह की कोई भी चीज़ कभी देखने म नही आती थी। न ऐसी कोई चीज़ उसी समय

सैकिण्ड की अन्तरिक्ष-गति से दनदनाता हुआ प्रवेश करता है। अपनी वृहत सहति (mass) तथा विराट गति के कारण उसके अन्दर विशाल गतिज ऊर्जा (Kinetic energy) होती है। पृथ्वी से टकराकर उल्का पिण्ड जब रुक जाता है तो यह समस्त ऊर्जा उष्मा में बदल जाती है जो भयंकर रूप से शक्तिशाली विस्फोट होता है उसका कारण यही क्रिया होती है। परन्तु हमारे इस मामले में, ऐसी कोई भी चीज नहीं हुई थी। पृथ्वी और उल्का पिण्ड के बीच कोई टक्कर नहीं हुई थी। यह बात मुझे स्पष्ट थी। फिर मुर्दा लकड़ी की वहां मौजूदगी की वजह से मेरे दिमाग में यह खयाल आया कि विस्फोट हवा में, लगभग ३०० मीटर की ऊँचाई पर, और ठीक इन्हीं पेड़ों के ऊपर, हुआ था।"

"यह कैसे ? हवा में कैसे ?" निज़ोवस्की ने जैसे अविश्वासपूर्वक पूछा।

घटित हुई थी जब कुछ वर्ष पूर्व, सुदूर पूर्व में ऊपर से आता हुआ एक विशालकाय उल्का-पिण्ड हवा में ही जलकर गायब हो गया था।

प्रकाश के इस विचित्र दृश्य के बाद जोर की एक आवाज सुनायी दी थी। बिजली की कड़कड़ाहट की तरह की यह आवाज कई बार चारों तरफ गूंज गयी थी और गड़गड़ाती हुई बहुत देर तक उसी तरह सुनायी देती रही थी। यह आवाज दुर्घटना के स्थल से १,००० किलोमीटर तक की दूरी पर स्पष्ट सुनायी दी थी।

इस भयंकर शोर के बाद एक विभ्रान्त प्रभन्जन उठा था। सैंकड़ों किलोमीटर की परिधि में उसने तमाम मकानों की छतों तथा छप्परों को उड़ा दिया था और बाड़ों को उखाड़ कर धराशायी कर दिया था।

मकानों को उसके कारण उसी तरह की क्षति पहुँची थी जैसी जबरदस्त भूकम्पों से पहुँचती है। पृथ्वी के कम्पनों को इर्कुटस्क, ताशकन्द और जेना (जर्मनी) आदि के अनेकों भूकम्प-लेखी केन्द्रों ने नोट किया था। इर्कुटस्क में (जो दुर्घटना-स्थल के समीप है) दो कम्पन नोट

"विस्फोट की तरग तमाम दिशाओ मे फैल गयी थी," श्राइमोव ने निश्चय-पूवक कहा । 'पड जहाँ पर उसके सामने थे, अर्थात, विस्फोट के एकदम नीचे थे, वहा तरग की वजह से पेड गिरे नही । तरग ने सिफ उनकी तमाम टहनिया शाखाओ को उडा दिया और उनके फुनगा को गिरा दिया । तरग का प्रहार जहाँ तिरछा, किसी कोण पर पडा वहाँ ३० से ६० किलोमीटर की त्रिज्या (radius) के अन्दर के तमाम पेड उखड गये । विस्फोट ऊपर, केवल हवा म ही, हुआ होगा ।"

"वाक, वात तो यही सच्ची मालूम होती है,' निज्रोवस्की न गम्भीरतापूवक अपनी ठुड्डी को सहलाते हुए कहा ।

"परन्तु हवा म किस तरह का विस्फोट हो सकता था ?" खगोल वेत्ता ने जैसे अपन से हो तक करते हुए पूछा । 'क्योकि गतिज ऊर्जा

किये गय थे । दूसरा कम्पन पहले की तुलना म कुछ कमजोर था और इसलिए केद्र के डायरेक्टर ने कहा था कि उसका कारण हवा का वह धक्का था जो कुछ विलम्ब के बाद इर्कुट्स्क पहुँचा था ।

इस धक्के को लन्दन मे भी नोट किया गया था । पथ्वी की उसन दो परिक्रमाएँ की थी ।

दुघटना के तीन दिन बाद तक, योरप और उत्तरी अमरीका के ऊपर ८६ किलोमीटर की ऊचाई पर अवदीप्त (luminescent) बादल दिखलायी पडे थे । उनकी रोशनी मे रात के समय भी तस्वीरें खीची जा सकती थी और अखबार पढे जा सकते थे ।

उस समय साइबेरिया म अकादमीशियन ए० ए० पोल्कानोव मौजूद थे । वस्तुआ का प्रेक्षण तथा अकन करने की उनमे अद्भुत प्रतिभा थी । उन्होने अपनी डायरी म उस समय लिखा था "आकाश बादलो की एक घनी तह से आच्छन्न है । अब भी खूब जोरो से वर्षा हो रही है । साथ ही साथ, एक असाधारण प्रकाश भी फैला

उष्मा मे नही बदली थी और न एसा हो ही सकता था। इस समस्या को लेकर मैं परेशान था।"

"विश्वविद्यालय मे अन्तर्ग्रहीय सचरण (inter planetary communication) का हमारा एक दल था। शियोलकोव्स्की और द्रव आक्सीजन तथा हाइड्रोजन के सचयो से लस उनके अन्तर्ग्रहीय राकेट मे मेरी बहुत दिलचस्पी थी। एक दिन मेरे दिमाग मे एक विचार आया—यह बहुत साहसिक विचार था। कुलिक यदि मेरे साथ होते तो मैं फौरन उनसे उसके बारे मे बात करता, लेकिन युद्ध आ गया था। अपनी अवस्था के बावजूद, लियोनिड एलेक्सियेविच कुलिक ने मोर्चे पर जाने के लिए अपना नाम लिखा दिया और वहाँ लडते हुए व मारे गय ।"

क्षण भर तक ग्राइमोव चुप रह। फिर उन्होन कहना शुरू किया

वास्तव म, यह रोशनी इतनी तज है कि बाहर उसमे आदमी अखबार के छोटे टाइप को भी बहुत आसानी से पढ सकता है। चाद के निकलन का यह समय नहीं ह, फिर भी बादल एक प्रकार की पीलिमा युक्त हरी रोशनी से आलोकित है। यह रोशनी कभी-कभी गुलाबी वर्ण धारण कर लेती है।" अकादमीशियन पोल्कानोव न रात के जिस रहस्यपूर्ण प्रकाश को दखा था वह अगर सूय का प्रतिबिम्बित प्रकाश होता तो वह पीलिमा-युक्त हरा तथा गुलाबी न होता, बल्कि सफेद होता।

बीस वर्ष बाद, सोवियत काल म, दुर्घटना-स्थल पर कुलिक का अभियान गया था। इस अभियान ने अनक वर्षों के शोध-काय के आधार पर जो निष्कर्ष निकाले थ उनका खगोल-वत्ता ने ऊपर की कहानी मे सही-सही विवरण दे दिया है।

यद्यपि यह चीज अधिक आसानी से मान ली जाती है कि वह एक विशाल उल्का-खण्ड था जो टुगस टैगा मे गिरा था, परन्तु उससे निम्न

"मैं मोर्चे के एक दूसरे भाग मे था। मैं अक्सर बडे गोलो का हवा मे विस्फोट होते देखा करता था। मेरा यह विश्वास अधिकाधिक दृढ होता गया कि टैंगा का वह विस्फोट वास्तव मे हवा म ही हुआ था और वह विस्फोट पृथ्वी पर उतरने की कोशिश करने वाले किसी अन्तरिक्ष यान के इधन का ही विस्फोट हो सकता था।"

"अन्तरिक्ष-यान क—किसी दूसरे ग्रह से आये अन्तरिक्ष यान का ?" निजोवस्की ने अपनी कुर्सी से उछलकर जोर से पूछा।

भूगोल वेत्ता अपनी कुर्सी पर और टिक कर बैठ गया। कैप्टन ने घुड़घुड़ाहट की-सी आवाज की और अपने गिलास की ब्राण्डी खत्म कर दी। नताशा आखें फाड फाड कर त्राइमोव को ऐसे देख रही थी जैसे कि इससे पहले उसने उसे देखा ही नही था।

बातो का कोई उत्तर नही मिलता

(अ) उल्का पिण्ड के कोई अश नही मिले हैं,

(आ) किसी प्रकार का विवर या खन्दक कही नही बना है,

(इ) दुघटना-स्थल के केन्द्र पर खडे हुए पड मौजूद है,

(ई) उल्का पिण्ड के गिर चुकने के बाद भी जमीन के नीचे के पानी मे दाब है,

(उ) दुघटना के बाद के आरभिक दिना मे पानी फौवारे की तरह फूटकर ऊपर निकलने लगा था,

(ऊ) दुघटना के समय आखो को चौंधियाने वाला सूय की तरह का पिण्ड दिखलायी दिया था,

(ए) दुघटना के फौरन बाद उस स्थान पर जो एकेकी लोग गये थे उनके ऊपर अजब तरह की मुसीबतें टूट पडी थीं।

टुगस टैंगा म हुए विस्फाट का बाह्य स्वरूप परमाण्विक विस्फोट के स्वरूप से एकदम मिलता है।

"हा, वह वाह्य अवकाश स आन वाला कोई आगन्तुक था ! वह दूसरे ग्रह से, सम्भवत मगल से, आन वाला एक अतरिक्ष यान था ! केवल मगल के ही बारे म आदमी कह सकता है कि वहाँ जीवन ह । उस समय मेरा खयाल था कि अन्तरिक्ष यान के द्रव हाइड्रोजन तथा आक्सीजन के भडारा मे ही विस्फाट हुआ होगा, क्योकि अन्तरिक्ष उडाना के लिए केवल इसी प्रकार का ईंधन काम मे आ सकता है । पहले मैन यही सोचा था "

"क्या ? आपका मतलब है कि अब आप ऐसा नही सोचते ?" विस्मय से भरकर नताशा ने पूछा । उसके स्वर म स्पष्ट निराशा झलक रही थी । साफ था कि वाह्य अन्तरिक्ष से आय मुसाफिर की बात उस बहुत भा रही थी और वह उसी की बात को सुनना चाहती थी ।

'हा, अब मेरा विचार दूसरा है," नाइमोव ने शान्त भाव से कहा ।

अगर यह मान लिया जाय कि टैगा के ऊपर हवा मे इस तरह का विस्फाट वाकई हुआ था तो निम्न बाता की सफाई हा जायगी

० केन्द्र-स्थल के पेड इसलिए सीधे खडे रह गये थे कि विस्फोट मे धाके न उन पर ऊपर से प्रहार किया था । इस प्रहार स उनकी ऊपरी शाखाएँ तथा फुनगियाँ कट गयी थी ।

०० अवदीप्त बादला का कारण हवा के ऊपर उन रेडियाएक्टिव (रेडियम धर्मी) पदार्था के अवक्षेपा का प्रभाव था जो ऊपर की आर उड गये थे ।

००० टैगा म जो दुघटनाएँ हुइ थी व उन रेडियम धर्मी कणा का परिणाम थी जो भूमि पर पडे थे ।

०००० परमाण्विक विस्फोट के ताप (२ करोड डिग्री सण्टीग्रेड) की हालत म, पृथ्वी के वायु मण्डल म तेज़ी से आते हुए बाहर के किसी पिण्ड का पूणतया उत्सादन (Sublimation) तथा वाष्प म परिवतन हो जाना बिल्कुल स्वभाविक है । और फिर, उसके बाद, किसी बची हुई चीज का मिलना निस्सदेह मुश्किल स ही सम्भव था ।

"जापान के परमाण्विक विस्फोटो ने मुझे स्पष्ट कर दिया है कि उस अन्तरिक्ष-यान मे किस प्रकार का इधन रहा होगा ।

"युद्ध समाप्त हो जाने के बाद मैंने फिर मगल की समस्या की ओर ध्यान देना शुरु किया । मैं यह प्रमाणित करना चाहता था कि उस ग्रह पर जीवन है । मैंने तिखोव की देख रेख मे अध्ययन करना शुरू कर दिया । और, इसीलिए, आज मैं यहा हूँ, इस अभियान के साथ । इस अभियान का काम है कि इस बात का अध्ययन करे कि उत्तरी ध्रुव प्रदेश के पेड पौदे उष्मा की किरणा का कैसे अवशोषण करते है ।"

'और इससे क्या सिद्ध हो जायगा ?" कैप्टन के मुह से बरबस ये शब्द निकल पडे ।

"बहुत दिन पहले, पिछली शताब्दी म ही, तिमिरियाजेव ने यह

००००० दुर्घटना के तुरन्त बाद फौवारे की तरह पानी की जो धार ऊपर उठी थी उसका कारण वे दरारें थी जो जबदस्त धाक के परिणाम स्वरूप जमी हुई चट्टान के स्तर मे पैदा हो गयी थी ।

क्या किसी रेडियम धर्मी उल्का पिण्ड का विस्फोट सम्भव है ?

नही, इस तरह की चीज सम्भव नही है । उल्का-पिण्ड जिन तत्वो के बने होते है वे नही हैं जो पृथ्वी पर पाये जाते हैं । उदाहरण के लिए, उल्का पिण्डा म यूरेनियम की मात्रा एव प्रतिशत के लगभग दो खरबवें भाग के बराबर होती है । परमाण्विक झडन के साथ कोई क्रिया-शृखला (चेन रीएक्शन) सम्भव हो इसके लिए आवश्यक होना है कि उल्का पिण्ड शुद्ध यूरेनियम का हो—और उसका यूरेनियम भी यूरेनियम २३५ के बहुत ही विरल रूप मे पाये जाने वाले समस्थानिक (आइसोटोप) के रूप म हो । यह अपने शुद्ध रूप म अभी तक कहीं नही मिला है ।

प्रस्ताव रखा था कि मगल पर पण हरिभ (chlorophyll) का पता लगाने की कोशिश की जाय। उससे साबित हो जाता कि मगल पर हरे हरे जो वे क्षेत्र दिखलायी देते हैं, जिनका रग ऋतुओ के अनुसार उसी प्रकार बदलता रहता है जिस प्रकार कि पृथ्वी की वनस्पति का रग बदलता है, दरअसल पेड पौधो से लदे हरे-भरे क्षेत्र है।"

"फिर, क्या पण हरिभ का पता मिला ?"

"नही, दुभाग्य से ऐसा नही हुआ। मगल पर वर्ण-क्रम (spectrum) की ऐसी कोई अवशोषण पट्टिका नही मिली जिसमे पण-हरिभ का पता चलता। इसके अतिरिक्त, मगल के हरे भरे इलाको की जब अव-रक्त किरणो से तस्वीर खीची जाती है तब वे पृथ्वी के वनस्पति क्षेत्रो की नाई सफेद नही दिखलायी देते। हर बात से यही प्रकट होता मालूम पडता है कि कि मगल पर किसी प्रकार की वनस्पति नही है। परन्तु गब्रिल आद्रियानोविच तिखोव ने एक अदभुत सुझाव दिया है।

इसके अतिरिक्त, अगर इस अत्यन्त अनहोनी चीज की भी हम कल्पना कर लें कि "परिष्कृत" रूप मे यूरेनियम–२३५ का एक टुकडा अपनी स्वाभाविक हालत मे कही था, तो भी यह बात चल नही सकेगी, क्योकि यूरेनियम–२३५ अपने शुद्ध रूप मे कभी रह ही नही सकता अपने किन्ही न किन्ही परमाणुओ के आकस्मिक विस्फोट के कारण वह अपने-आप विघटित हो जाता है। इस तरह का पहला आकस्मिक विस्फोट होते ही, सम्पूर्ण काल्पनिक उल्का पिण्ड तुरन्त टूट कर छिन्न-विच्छिन्न हो जायगा।

अगर यह मान लिया जाता है कि उक्त दुघटना का कारण कोई परमाण्विक विस्फोट था, तो अनिवाय रूप से हमे यह भी मानना पडेगा कि वह विस्फोट कृत्रिम साधनो से प्राप्त किये गये किन्ही रेडियम धर्मी (रेडियो एक्टिव) पदार्थों के कारण हुआ था।

इस प्रकार की तस्वीरा मे पृथ्वी की वनस्पति सफ़ेद क्या मालूम पडती है ? क्योकि वह उष्मा की उन किरणो को लौटा देती है (उनका परावतन कर देती है) जिनकी उसे अवश्यकता नही होती। परन्तु मगल पर सूय का प्रकाश तेज नही होता। इसलिए वहाँ की वनस्पति को सारी की सारी उष्मा का उपयोग करने की कोशिश करनी पडती है। उसके हरे-हरे क्षेत्र अव-रक्त किरणो म सफेद नही दिखलायी देते—इसका कारण क्या यह नही हो सकता ?

"वास्तव म, उत्तर ध्रुवीय प्रदेश म हम खगोल-वेत्ताओ के आने का यही कारण है। हम पता लगाना चाहते है कि उत्तर ध्रुवीय प्रदेश की वनस्पति उष्मा किरणो का परावतन करती है या नही।"

"अच्छा, तो क्या यह उनका परावतन करती है ?" हम सबने एक साथ ही पूछा।

रेडियो एक्टिव (रेडियम धर्मी) इंधन का उपयोग करने वाला अन्तरिक्ष यान कहाँ से आया होगा ?

हमसे सबसे नजदीक का तारा, जिसके बारे मे माना जाता है कि उसके इद-गिद एक ग्रह मण्डल है, राजहस (Cygnus) नक्षत्र (Constellation) मे स्थित है। सबसे पहले उसे पुल्कोवो के खगोल वेत्ता डीश ने देखा था। पृथ्वी से वह नौ प्रकाश वर्षों के फासले पर है। इस दूरी को तय करने के लिए आदमी को प्रकाश की चाल से पूर नौ वप तक उडत रहना पडेगा ! निस्सन्देह, इस तेज चाल से कोई भी अन्तरिक्ष यान नही चल सकता। आदमी सिफ यही कह सकता है कि इस चाल के कितने पास तक पहुँचा जा सकता है। हम जानते हैं कि भूत (द्रव्य) के मूल कण—इलेक्ट्रान—३ लाख किलोमीटर प्रति सैकिण्ड की चाल से चलते है। यदि हम यह भी मान लें कि, किसी दीघ-कालीन आवग (impulse) के परिणाम-स्वरूप, कोई अन्तरिक्ष

"नही। नही करती! उत्तरी पड पौदे पूणतया उसका अवशोषण कर लेते है, ठीक उसी तरह जिस तरह कि मगल के पेड पौद करते है," नताशा जोर से बोल पडी। उसकी आखें चमक रही थी। "हम प्रमाणित कर सकते है कि मगल पर जीवन मौजूद है, कि व वहा के हरे भरे शकुल के विशाल वन हैं, कि मगल की प्रसिद्ध नहरें दरअसल १०० से ६०० किलोमीटर तक चौडी हरियाली की पट्टिया है!"

अपनी सहायक की बात को बीच मे ही रोकते हुए, खगोल वेत्ता ने कहा, 'जरा, एक मिनट के लिए रुक जाओ, नताशा।

'नहरें?" निज़ोवस्की न फिर पूछा। 'तब फिर वे वहाँ हैं। लेकिन अभी थोडे ही दिन पहले तो लोग कह रहे थे कि वह सब मात्र दृष्टि भ्रम का प्रताप था!'

यान इस चाल को प्राप्त कर सकता है, तब भी हम देखेंग कि हमार ग्रह से निकटतम तारे तक की दूरी का तय करने मे भी उसे कई दशक लग जायेंगे। परन्तु यहा आइसटाइन का विरोधाभास (paradox) हमारी सहायता करता है। उन लागो के लिए जो प्रकाश की चाल के आस पास की चाल से उडेंगे, समय अपक्षाकृत अधिक धीरे धीरे बीतेगा—उनके लिए, उनकी अपक्षा जो उस उडान को देख रहे होंगे, समय कही अधिक धीरे धीरे बीतेगा। दशको तक उडते रहने के बाद वे देखेंग कि उसी बीच पृथ्वी पर का जीवन अनेक सहस्राब्दिया से गुजर चुका है।

जिन प्राणिया के बारे म हम जानते नही ह उनके सम्बन्ध म समय की कोई बात करना कठिन है, किन्तु यदि पृथ्वी से ऐसी किसी उडान की कल्पना हम करें ता जो यात्री उस उडान म जायेंगे उन्ह उसम अपना पूरा जीवन ही खपा दना होगा। सफर म वे एकदम वृद्ध हो जायेंगे। और अधिक दूर के तारा तथा उनके ग्रहा तक पहुँचने के प्रयत्न म उनकी क्या स्थिति होगी इसका तो यहा उल्लेख करना भी व्यर्थ है।

"मगल की नहरो की तस्वीरें खीची जा चुकी है और तस्वीरें झूठ नही बोलती। १,००० से अधिक नहरो की तस्वीरें खीची जा चुकी है। उनका अध्ययन किया गया है। यह सिद्ध किया जा चुका है कि मगल के ध्रुवो की बफ जैसे जैसे पिघलती है वैसे ही वैसे उसकी वे नहरें दिखलायी देने लगती है और धीरे धीरे ध्रुवो से लेकर भू मध्य रेखा तक लम्बी फैलती जाती ह।"

"वनस्पति की पट्टिया साढे तीन किलोमीटर प्रति घटे की रफ्तार से लम्बी होती है," नताशा बीच मे ही बोल उठी। उससे अब चुप नही रहा जा रहा था।

यानी उसी रफ्तार से जिस रफ्तार से भँवर मे पानी की धारा चलती है ?" आश्चय विमूढ भूगोलवेत्ता ने प्रश्न किया।

इसलिए, यह मानना अपेक्षाकृत अधिक वास्तविकतापूण होगा कि टूगस की वह उडान हमारे ही किसी अधिक नजदीक के ग्रह से, सम्भवत मगल से, की गयी थी!

तारा नाविकी (astronautics) की साक्षी क्या बताती है ?

सूय के चारो ओर मगल एक दीघ वृत्त (ellipse) मे घूमता है। उसकी परिक्रमा वह ६८७ भौमिक दिनो (१ ८८०८ भौमिक वर्षो) मे पूरी करता है।

पृथ्वी और मगल की कक्षाएँ (orbits) ऐसे स्थान पर एक-दूसरे के समीप आती ह जहाँ से पृथ्वी ग्रीष्म ऋतु मे गुजरती है। हर दो वष पर मगल से इस स्थान म पृथ्वी मिलती है, किन्तु खास तौर से समीप व दोनो १५-१७ वर्षो मे केवल एक बार आते है। उस समय इन ग्रहो के बीच की दूरी ४० करोड किलोमीटर से घटकर ५ करोड ५० लाख किलोमीटर रह जाती है (यही महान् वियुति या पडभान्तर का समय होता है)।

"हा, ठीक उसी रफ्तार से," खगोल वेत्ता ने पुष्टि की। "यह बात अदभुत मालूम पडती है कि वनस्पति की पट्टियो का पूरा का पूरा जाल आदश रूप से सीधी रेखाओ से बना है। उसकी मुख्य रेखाएँ, ठीक धमनिया की तरह, ध्रुव की गलती हुई बफ मे निकलकर सीधे भू मध्य रेखा की तरफ जाती हैं।"

"फिर तो निस्सन्देह यह सिंचाई की नहरा का ही एक विशाल जाल है। मगलवासियो ने अपने खेता की सिंचाई के लिए उसकी रचना की है। और हमने उन्हे नहरें मान लिया है। किन्तु, दरहकीकत, नहर वहा नही है—वहा पथ्वी पर बिछे हुए बडे बडे नल है," उत्साह म बहते हुए निजोवस्की ने कहा।

मुस्कराते हुए नाइमोव न उसकी गल्ती सुधारी, "पृथ्वी पर नही, मगल पर लगाये गय नल।"

परन्तु इसस यह नही समझ लिया जाना चाहिए कि किसी अन्तरिक्ष यान के लिए केवल इतना फासला तय कर लेना ही काफी होगा।

प्रत्येक ग्रह स्वयम अपनी कक्षा म भी घूमता है। पृथ्वी ३० किलो मीटर प्रति सैकिण्ड की चाल स घूमती है और मगल २४ किलोमीटर प्रति सैकिण्ड की चाल से।

राकेट अन्तरिक्ष यान जब पृथ्वी को छोडता है तब उसकी चाल पृथ्वी की उसकी कक्षा की चाल के बराबर होती है। और वह ग्रहा के बीच के सबसे छोटे माग की लम्ब दिशा म जाता है। अन्तरिक्ष यान का सीधी रेखा मे उडाने के लिए आवश्यक होगा कि कक्षा के साथ वाली उसकी पार्श्विक चाल (lateral speed) को खत्म कर दिया जाय। इसके लिए व्यथ म ऊर्जा की बहुत भारी मात्रा खच करनी पडेगी। इसलिए कक्षा की चाल का उपयोग करते हुए एक वक्र रेखा

"फिर इसके मानी हुए कि मगल पर जीवन है ! फिर तो आपकी बात सही है," निज़ोवस्की ने आगे कहा।

"अभी तक निश्चय-पूवक हम केवल इतना ही कह सकते है कि मगल पर जीवन का होना असम्भव नही है।"

"फिर तो हो सकता है कि १९०८ मे मगलवासी सचमुच ही उडकर पृथ्वी पर आये हो," कैप्टन ने कहा।

"हाँ, हो सकता है कि उस समय वही यहा आये थे," अविचलित भाव से ग्राइमोव ने उत्तर दिया।

"मगलवासी और पथ्वी पर ! कैसी अद्भुत बात है।" वारिस-एफीमोविच ने जोर से अपने पाइप का कश खीचते हुए कहा।

म उडना कही अधिक लाभदायक होता है। बस, अन्तरिक्ष यान मे सिफ उतनी चाल और जोड दी जानी चाहिए जितनी ग्रह से उसे छुटकारा दिलाकर आगे ले जाने के लिए आवश्यक होनी है।

मगल से छिटककर बाहर निकल आने के लिए ५ १ किलोमीटर प्रति सैकिण्ड की चाल की आवश्यकता होती है, और पृथ्वी के प्रभाव से इसी तरह बाहर निकल जान के लिए ११ ३ किलोमीटर प्रति सैकिण्ड की चाल की जरूरत होती है।

सोवियत के एक प्रमुख तारा-नावीय विशेषज्ञ, स्टनफेल्ड ने, १९०७ और १९०९ की वियुतियों (पडभान्तरा) को घ्यान मे रखते हुए, एक अन्तरिक्ष-यान के नौ चालन सम्बन्धी मार्गों तथा उसकी उडानो के समयो का सही-सही हिसाब लगाया है। उनके निष्कष बतलाते हैं कि कोई अन्तरिक्ष-यान मगल से यदि सबसे उपयुक्त समय पर रवाना होकर और इधन की अधिक से अधिक बचत करता हुआ पृथ्वी पर आन का प्रयत्न करता तो उसे या तो १९०७ में या १९०९

"मगल मरते हुए जीवन का ग्रह है। आकार मे वह पथ्वी से छोटा है और उसके गुरुत्वाकर्षण का वल भी पथ्वी से कम है इसलिए अपने असली वायुमडल को वह सुरक्षित न रख सका। उसके वायु मण्डल के कण उससे टूट-टूटकर छिटक गये और बाह्य अवकाश मे उड गये। मगल की हवा विघनित हो गयी उसके समुद्रा का वाष्पन होने लगा, और उसकी हवा की वाष्प बाह्य अवकाश की गहराइयो मे विलीन हो गयी। पूरे मगल पर इतना कम पानी रह गया कि उसे अकेली हमारी वैकाल झील मे रख दिया जा सकता है।"

'तब फिर वे हमारी पथ्वी पर कब्जा करने के उद्देश्य से यहाँ उड-कर आये थे,' निज़ोवस्की ने अपना फैसला सुनाते हुए कहा। "हमारे हरे-भरे ग्रह को वे हथिया लेना चाहते थे!'

"हा जैसे कि खुद हमारे यहा हिटलरो, ट्रूमैनो और मेकाथरा की की कोई कमी है," गुर्राते हुए से लहजे मे जहाज के कैप्टन ने कहा। "अब हमे मगलवासियो से भी निपटना पडेगा!'

मे यहाँ पहुचना चाहिए था—१९०८ म तो किसी भी तरह नही! परन्तु, वह अतरिक्ष यान, १९०८ म यदि पृथ्वी और शुक्र की वियुति (opposition) का उपयोग करता हुआ शुक्र से चलता तो उसके अन्तरिक्ष-यात्रियो को पृथ्वी पर ३० जून, १९०८ को पहुँचना चाहिए था!

यह बहुत ही पक्का सयोग है। उसके आधार पर बहुत ही महत्व पूर्ण निष्कर्ष निकाले जा सकते है।

इसके आधार पर कहा जा सकता है कि मगल के निवासी यदि १९०९ की महा वियुति (महा षडभान्तर) से ठीक पहले, १९०८ म, पृथ्वी पर पहुँच जाते तो वे देखते कि उनके लिए मगल पर वापिस लौट जाने के लिए उस समय यहाँ सबसे उपयुक्त परिस्थितियाँ मौजूद थी।

'मेरा ख्याल है कि आपका विचार गलत है। जैसे तथा अन्य प-चनी लेकर दुनियाओं के नजदीक आने की जब कल्पना करते हैं तब उनके दिमागों में सिर्फ यातना और युद्धों की ही बात आती है। मुझे लगता है कि, मंगल की जल-व्यवस्था की वस्तु-स्थिति को जानकर और मंगल वासियों के वृहत् सिंचाई के साधनों की रचना को देखकर, उनकी सामाजिक व्यवस्था के सम्बन्ध में भी हम कुछ निष्कर्ष निकाल सकते हैं। स्पष्ट है कि उनकी सामाजिक व्यवस्था ऐसी है जिसके अन्तर्गत वहाँ की जल-व्यवस्था को पूरे ग्रह के पैमाने पर, नियोजित ढंग से, चलाया जा सकता है।'

"तो क्या आपका यह कहना है कि वहाँ एक आदर्श सामाजिक व्यवस्था की स्थापना हो गयी है?' निकोवस्की ने उससे पूछा।

क्या मंगल से कोई संकेत प्राप्त हुए थे ?

खगोल-विद्या के क्षेत्र में नये विचार नामक संग्रह में एक लेख छपा था जिसका शीर्षक था, "मंगल और उसकी नहरें।" यह संग्रह १९०९ की महान् वियुति (महा पडभान्तर) के ठीक बाद निकला था। इसके उक्त लेख में १९०९ में मंगल से आये प्रकाश-संकेतों (light signals) के देखे जाने की बात कही गयी थी।

इस शताब्दी के तीसरे दशक के आरम्भ काल में, पृथ्वी और मंगल की वियुति के समय, मंगल से आते रेडियो संकेतों (radio signals) के सम्बन्ध में जो सनसनीखेज बातें चारों तरफ सुनायी देती थीं उनसे सब परिचित हैं।

वे दिन रेडियो इन्जीनियरिंग के प्रारम्भिक विस्तार तथा [illegible] सेटों के बाजार में पहले-पहल आने के दिन थे। रेडियो इन्जीनियरिंग के विकास की स्थापना प्रतिभाशाली वैज्ञानिक पोपोव ने की थी।

अपनी पुस्तक, अन्तर्ग्रहीय यात्रा के परिशिष्ट ३ में पाई०

"विचार-शील प्राणिया के सामाजिक जीवन के विकास का परिणाम इसके अलावा और कुछ हो ही नही सकता," भूगाल वेत्ता ने सविश्वास कहा।

काइमोव ने उनकी बात की पुष्टि करते हुए कहा, "निस्सन्देह, बात ऐसी ही है। लेकिन मगल से पानी बरावर गायब हो रहा है। उनके निवासियो के लिए इस बात की व्यवस्था करना आवश्यक है कि भविष्य की उनकी पीढ़िया के जीवन का क्रम बदस्तूर चलता रहे—ठीक उसी तरह जिस तरह कि हमारे समकालीन लाग यहाँ पर भविष्य की पीढिया केजीवन को सुरक्षित बनाने से सम्बधित समस्याआ की ओर ध्यान दे रहे हैं। मगल वासिया के लिए आवश्यक है कि मगल के लिए कही से पानी प्राप्त करें। पानी है ! वह मगल के सबसे नजदीक के ग्रहो पर है और बहुतायत से है। खास तौर स पृथ्वी पर उसकी कोई कमी नही

ने लिखा है कि १९२० और १९२२ म, जब मगल पृथ्वी के समीप था,तब पृथ्वी के वायरलेस सेटो म ऐसे सकेत आ रहे थे जिनसे साफ था कि वे पृथ्वीके रेडियो स्टेशना द्वारा भेजे गये नही हो सकते थे [उसके दिमाग मे मुख्यतया इन सकेता का तरग दध्य (वेव लैंग्थ) था। पृथ्वी के प्रपक स्टेशना (ट्रान्समिटिंग स्टेशनो) का तरग-दध्य उन दिना बहुत ही सीमित था] । इसीलिए कहा जाता था कि वे सकेत मगल से आये थे।

मार्कोनी और उनके इजीनियरो की इन चीजा म गहरी दिलचस्पी थी। इसलिय मगल के इन सकता को सुनने के लिए, एण्डीज तथा अटलाटिक सागर मे उन्होने विशेष अभियान सगठित किय थे। मगल के सकेता को मार्कोनी ने ३,००,००० मीटर की तरग पर सुनने की चेष्टा की थी।

मगल पर विस्फोट

१९५६ म, पृथ्वी और मगल की महान् वियुति के बाद, पुल्कोवो

है। ग्रीनलड को लीजिए। वह बफ की तीन किलोमीटर मोटी तह से ढका हुआ है। इस बफ को अगर हटा दिया जाय तो योरप की जलवायु भी काफी सुधर जाय। मास्को के आस पास के देहाता म तब नारगिया पैदा होने लगें। और इस बफ को अगर मगल पर ले जाया जाय तो वहाँ वह पिघल जायगी और उस सम्पूण ग्रह को ५० मीटर गहरे जल की तह से ढक देगी। पहले के सागरा के रिक्त स्थाना को वह लगभग पूणतया भर देगी और करोडा वष के लिए ग्रह मे फिर जीवन आ जायगा।" —

"तब फिर मगल वासी पृथ्वी का केवल पानी ही चाहते हैं, स्वयम् पृथ्वी को हडपने का वे कोई इरादा नही रखते ?" निजावस्की ने पूछा।

आपका विचार बिल्कुल सही है। वास्तव मे, पृथ्वी की जीवन

वेधशाला के डायरेक्टर और सोवियत सघ की विज्ञानो की अकादमी के करेस्पोण्डिग सदस्य, ए० ए० मिखाईलोव ने लेनिनग्राद के वैज्ञानिका के क्लब की लेस्नोया मे हुई एक बैठक के सम्मुख रिपोट देते हुए बताया था कि पुल्कोवो वेधशाला मे मगल के एक अत्यत शक्तिशाली विस्फाट की सूचना अकित हुई थी। जब हम इन दो बातों पर विचार करते हैं—कि विस्फोट के परिणामो का दूरबीनो के द्वारा सचमुच प्रेक्षण किया गया था और मगल पर किसी भी प्रकार के ज्वाला मुखी पवतो का अस्तित्व नही है, तब स्पष्ट हो जाता है कि उस धडाके का कारण परमाण्विक विस्फाट ही हो सकता था। और किसी चीज की अपेक्षा इसी की अधिक सभावना है। फिर यह कल्पना करना कठिन है कि मगल ग्रह पर ऐसा कोई आणुविक विस्फोट हुआ था जिसे वहाँ के लोगो ने सचेत रूप से न सगठित किया हो। बहुत सम्भव है कि वह विस्फोट किसी निर्माण-काय के सम्बन्ध मे किया गया हो। इस भाँति,

परिस्थितियाँ मगल की जीवन परिस्थितियो से इतनी भिन्न है कि मगल वासी हमारी पृथ्वी पर न तो अच्छी तरह सास ही ले सकेंगे और न कही घूम फिर सकेंगे, उनका वजन यहा दो गुना हो जायगा। जरा कल्पना तो कीजिए कि यदि आपका वजन दुगना हो जाय तो आपको कैसा लगेगा ? इसलिए मगल वासियो को पृथ्वी को फतह करने की कोई जरूरत नही है। इससे भी बडी बात यह है कि, चूकि उनकी सस्कृति का स्तर बहुत ऊँचा हो गया है और उनके यहाँ एक आदर्श सामाजिक व्यवस्था की स्थापना हो चुकी है, इसलिए युद्धो की उनकी जानकारी सम्भवत केवल उनकी ऐतिहासिक शोधो तक ही सीमित होगी। यहाँ वे आयेंगे तो मित्र के रूप मे ही आयेंगे—सहायता के लिए, हमसे बर्फ मागने के लिए।"

"ग्रहो की मित्रता !" निक्रोवस्की ने आह्लाद से भरते हुए कहा। "लेकिन ग्रीनलैण्ड की बर्फ को मगल तक कैसे ले जाया जा सकता है ?"

पुल्कोवो वेधशाला के ये प्रेक्षण भी मगल पर प्रबुद्ध जीवन का अस्तित्व होने के पक्ष मे एक प्रमाण का काम कर सकते हैं।

इस परिकल्पना का इतिहास क्या है ?

इस परिकल्पना का उल्लेख सबसे पहले ए० काजतसेव की "विस्फोट" नामक कहानी मे हुआ था कि १९०८ मे टुगस टैगा मे जो विस्फोट हुआ था वह एक अन्तरिक्ष-यान का परमाणविक विस्फोट था (देखिए पृथ्वी की परिक्रमा, १९४६)।

२० फरवरी, १९४८ को कहानी लेखक ने अपनी इस परिकल्पना को मास्को के ग्रह गति-दर्शक यत्र के भवन (Moscow Planetarium) मे हुई अखिल सघीय खगोल विद्या सोसायटी की एक बैठक मे प्रस्तुत किया था।

मास्को के ग्रह गति-दर्शक यत्र विभाग ने इस परिकल्पना का

"धातु का बना हुआ अन्तरिक्ष यान यदि अन्तर्ग्रहीय यात्रा कर सकता है, तो बर्फ का बना हुआ, अथवा बर्फ से भरा हुआ अन्तरिक्ष यान भी ऐसा ही कर सकता है। यदि दसियों लाख ऐसे अन्तरिक्ष यान पृथ्वी से मंगल भेजे जायें तो ग्रीनलैण्ड की पूरी बर्फ को वे अवश्य वहां पहुँचा दे सकते हैं। जाहिर है कि यह काम संभवतः फौरन, एकबारगी नहीं हो सकता, उसके पूरे होने में शायद शताब्दियाँ लग जायेंगी और इसी दर्म्यान मंगल अपने को नयी परिस्थितियों के अनुकूल भी बना लेगा। ये परिस्थितियां पहले की परिस्थितियों से निश्चय ही बेहतर होंगी। और अन्तरिक्ष यान के लिए जितनी शक्ति की जरूरत होगी वह आणविक ऊर्जा से उसे प्राप्त हो जायगी।'

"आणविक ऊर्जा से!' भूगोल वेत्ता ने कहा। "तब फिर आप को पूरा विश्वास हो गया है कि टुंगस टैगा में जिस इंधन का विस्फोट हुआ था वह वास्तव में परमाण्विक इंधन ही था।

"टुंगस के उल्का पिण्ड की पहेली" का रूप देकर अपने प्रदर्शनों के द्वारा प्रचारित किया था।

बाद में, १९४८ में, युवकों के लिये तकनीक नामक पत्रिका के अंक संख्या ९ में कुछ प्रमुख खगोल-वेत्ताओं ने एक पत्र प्रकाशित किया था। इस पत्र में टुंगस टैगा में अन्तरिक्ष राकेट के विस्फोट वाली परिकल्पना के सत्य होने की सम्भावना की बात को उठाने और भी मजबूती से कहा था। जिन वैज्ञानिकों ने इस परिकल्पना का समर्थन किया था उनमें पुल्कोवो वेधशाला के डायरेक्टर तथा सोवियत संघ के विज्ञानों की अकादमी के करेस्पौंडिंग सदस्य-प्रोफेसर ए० ए० मिखाईलोव, अखिल संघीय खगोल विद्या सोसायटी की मास्को शाखा के अध्यक्ष—प्रोफेसर पी० पी० परेनागो, अध्यापन सम्बन्धी विज्ञानों की अकादमी के करेस्पौंडिंग सदस्य—प्रो० बी० ए० वोरोन्त्सोव वेल्यामिनोव, प्रोफेसर के० एल० बय्येव, प्रो० एम० वाई० नावोकोव,

" हाँ, मुझे पूरा यकीन है कि वह आणुविक इधन ही था। इसके अनेक प्रमाण है। जो कुछ म पहले कह चुका हूँ उसम कुछ चीजे और मैं जोड दे सकता हूँ। आपको अवदीप्त बादलो की बात याद है? उनसे जो प्रकाश निकलता था वह सूय की परावर्तित सफेद रोशनी से अधिक था। रातो मे एक हगी हरी और गुलाबी सी रोशनी दखी गयी थी। यह रोशनी बादलो के अन्दर से उनको भेदकर बाहर निकल आयी थी। अन्तरिक्ष यान म ज्यो ही विस्फोट हुआ था त्यो ही उसका सारा द्रव्य वाष्प बन गया था। भाप बनकर वह हवा मे ऊपर उठ गया था। रेडियो धर्मी पदाथ के बचे हुए हिस्सो का विघटन-काय वहाँ ऊपर भी जारी रहा था। वही हवा की दीप्ति का कारण था। आप याद करें कि लुछेटकन का बेटा कैसे मरा था। उसके शरीर पर जलने के कोई निशान नही थे। उसकी मृत्यु का कारण भी निश्चय ही विकिरणशीलता

तथा और भी कई लोग थे।

बाद म प्रो० ए० ए० मिखाईलोव ने टुगस की दुघटना के सम्बध म स्वयम अपना एक स्वतन्त्र मत भी पेश किया था। उन्होने सुझाव दिया था कि टुगस का उल्का पिण्ड वास्तव म एक पुच्छल तारा (comet) था। परन्तु उनके इस सुझाव को बहुत समथन नही मिला था।

कुलीक के एक सहायक, वी० ए० साइटिन का विचार था कि टुन्गास की दुघटना का कारण ऊपर से आया कोई उल्का पिण्ड नही था, बल्कि भयकर चक्रवात था। परन्तु इस व्याख्या से दुघटना-स्थल की उत्पत्ति तथा उससे सम्बधित ब्यौरे की अन्य अनेक बाता की सफाई नहीं होती।

अकादिमीशियन फेसेन्कोव तथा सोवियत सघ की विज्ञाना की अकादमी की उल्का पिण्ड समिति के वैज्ञानिक सचिव, क्राइनोव, प्रो० स्टेन्यूकाविच, अस्तापाविच तथा उल्का पिण्ड के अन्य विशेषज्ञा की बराबर यह राय रही है कि टुगस टगा म वास्तव मे लगभग १०

थी। परमाण्विक विस्फोट के थोड़ी ही देर बाद वह लाज़िमी तौर से शुरू हो जाती है।"

"यह सब तो उससे बहुत मिलता है जो नागासाकी और हिरोशिमा में हुआ था," भूगाल वेत्ता ने कहा।

"लेकिन उडकर हमारे पास जो लोग आ रहे थे वे कौन थे, और वे मर क्या गये थे ?" नताशा ने पूछा।

क्षण भर के लिए काइमोव अपने विचारों की दुनिया मे खो गये। फिर उन्होंने कहा,

"मैंने अन्तरिक्ष यात्रा के प्रमुख विशेषज्ञों से पूछा था कि हिसाब लगाकर वे मुझे बतायें कि मंगलवासियो के लिए मंगल से पृथ्वी पर

लाख टन के वजन का एक भारी उल्का पिण्ड गिरा था। इस सम्बंध मे और सभी मतो को उन्होंने दृढता-पूर्वक अस्वीकार किया है।

वायुगतिकी सम्बन्धी (aerodynamical) जाँच पड़ताल

टुंगस में उल्का पिण्ड की इस समस्या में बहुतेरे लोगों की दिलचस्पी थी। श्रेष्ठ सोवियत ग्लाइडरो के डिजाइनर (अभिकल्पक) तथा एण्टोनोव दल के वायुगतिकी विशेषज्ञ और हवाई जहाजों के डिजाइनर के रूप में विख्यात ए० वाई० मोनोत्सकोव ने इस समस्या को शुद्ध रूप से वैज्ञानिक तरीक़े से हल करने की चेष्टा की थी। उन्होंने इर्कुटस्क वेधशाला के सवाददाताओ, यानी स्वयम् अपनी आँखों से देखने वाले बहुसख्यक लोगों के बयानों का विश्लेषण किया और फिर उस चाल का पता लगाने की कोशिश की जिससे वह तथाकथित "उल्का-पिण्ड" विभिन्न ज़िलो के ऊपर से गुजरा था। उड़ान के प्रक्षेप-पथ (trajectory) को अंकित करते हुए तथा उस समय को दिखलाते हुए जिस पर प्रक्षेप पथ के विभिन्न बिन्दुओं पर दर्शकों ने उक्त उल्का-

आने के लिए सबसे उपयुक्त समय कब होगा। असल म, बात यह है कि १५ वष मे एक बार मगल विशेष रूप से पृथ्वी के समीप आ जाता है।"

"पिछली मतबा ऐसा कब हुआ था ?"

"१९०९ म !" नताशा ने उत्तेजित होते हुए कहा।

'तब तो हिसाब ठीक नही बैठता," निराश होकर कप्टन ने कहा।

"अगर आप जानना ही चाहते है, तो उसका हिसाब सचमुच ठीक नही बैठता। मगलवासियो के लिए पथ्वी पर आने के लिए १९०७ या १९०९ का समय उपयुक्त होता, पर जून ३०, १९०८ तो किसी भी तरह इस काम के लिए अनुकूल नही था।'

"कैसे अफसोस की बात है!" ठडी साम भरते हुए निजोवस्की न कहा।

पिण्ड को देखा था, उन्होने एक नक्शा तैयार किया। मोनोत्सकोव के नक्शे से जो निष्कष निकला वह अनपेक्षित था। उसस पता चला कि पृथ्वी के समीप आते समय "उल्का पिण्ड' ने अपनी गति धीमी कर ली थी। मोनोत्सकोव ने उस चाल का हिसाब लगाया जो "उल्का पिण्ड" की उस समय थी जब वह विस्फोट-स्थल पर था। इस हिसाब से पता चला कि उस समय उसकी चाल ०७ किलोमीर प्रति सैकिण्ड थी (३० से ६० किलोमीटर प्रति सैकिण्ड नही, जैसा कि पहले सोचा गया था!)। वास्तव मे, उस समय उसकी चाल किसी आधुनिक जेट हवाई जहाज की चाल के लगभग बराबर थी। यह चीज इस निष्कष के पक्ष मे कोई साधारण महत्व की दलील नही है कि, जसा कि मानोत्सकोव का कहना है, "टुग्स का उल्का पिण्ड" दरअसल किसी प्रकार का एक "उडन तश्तरी" था—वह एक अन्तग्रहीय अन्तरिक्ष यान था। अगर इस चाल मे कोई उल्का पिण्ड ही नीचे गिरा था तो,

आइमोव किंचित मुस्कराये । फिर बोले,

"किन्तु जरा रुकिए । अभी मैंने बात पूरी नही की है । अन्तरिक्ष यात्रियो की गणना ने एक अद्भुत सयोग की ओर हमारा ध्यान दिलाया है ।'

"अच्छा, वह क्या है ?"

"अन्तरिक्ष-यान अगर शुक्र से उडकर आता तो उसके लिए ३० जून, १९०८ का दिन ही सबसे उपयुक्त होता ।

"और टगा की वह दुघटना किस दिन घटी थी ?"

'३० जून, १९०८ के दिन ।'

"या खुदा ।" निजोवस्की के मुह से बेसाख्ता निकला । "तब क्या वे शुक्र के निवासी थे ?"

स्पष्ट है कि टँगा म उतना जबदस्त विनाश करने के लिए वायुगतिकी (aerodynamics) के अनुसार उसकी सहति (mass) १० लाख टन नही जो कि खगोल-वेत्ताओ का अनुमान था, बल्कि १ अरबटनहोना चाहिए थी और उसका व्यास १ किलोमीटर होना चाहिए था । यह बात उस वक्त किये गये प्रेक्षणो के साथ मेल नही खाती । उडते उल्का पिण्ड ने आकाश को ढक नहीं दिया था । स्पष्ट है कि टँगा म जिस ऊर्जा ने विनाश ढाया था वह ताप की ऊर्जा नही थी । अधिक सम्भावना इस बात की है कि वह नाभिकीय (nuclear) ऊर्जा थी जो अन्तरिक्ष-यान के इधन क परमाण्विक विस्फोट म से निकली थी । अन्तरिक्ष-यान पृथ्वी से नही टकराया था ।

यह विवाद वज्ञानिक है अथवा अवज्ञानिक ?

जो लोग उल्का-पात वाली परिकल्पना का समथन करते हैं उन्होंने

"नही, मेरा खयाल ऐसा नही है परन्तु, यह चीज बडी दिलचस्प है कि अन्तरिक्ष यात्रा के विशेषज्ञ बताते हैं कि शुक्र से पृथ्वी पर उडकर आने के लिए उस समय आश्चयजनक रूप से अनुकूल परिस्थितियाँ थी। राकेट यदि वहां से २० मई, १९०८ को चल देता और, सारे समय अपने को उन दोनो के बीच रखते हुए, उसी दिशा मे उडता रहता जिसमे शुक्र और पृथ्वी हैं तो वह शुक्र और पृथ्वी की वियुति से कुछ दिन पहले ही पहुँच जाता।"

"तब तो असदिग्ध रूप से वे शुक्र के ही निवासी थे। अब इसम सन्देह की कोई गुजाइश नही रह गयी।" गमजोशी से निज़ोवस्की ने कहा।

परन्तु खगोल-वेत्ता ने आपत्ति करते हुए दृढता से कहा, "नही, मेरा खयाल ऐसा नही है शुक्र के ऊपर कार्बन डाई ऑक्साइड की मात्रा

इस परिकल्पना का बराबर विरोध किया है कि तुगस टैगा मे किसी दूसरे ग्रह से आने वाले अन्तरिक्ष यान का विस्फोट हुआ था। उनके तर्क निम्न प्रकार हैं

(१) इस बात से इन्कार करना कि वह उल्का पात था अवैज्ञानिक है (क्यो ?)।

(२) उल्का पिण्ड निश्चय ही गिरा था, परन्तु वह दलदल के अन्दर धँस गया था।

(३) एक विवर (crater) बना था, लेकिन दलदल भरी भूमि की वजह से वह फिर ढक गया था।

ये तर्क अगस्त, १९५१ मे लिटरेटरनाया गजेटा मे प्रकाशित, 'उल्का पिण्ड अथवा मगल का अन्तरिक्ष-यान ?" नामक एक लेख में अकादिमीशियना फेसेन्कोव तथा क्राइनाव ने प्रस्तुत किये थे।

इस लेख के प्रकाशन का प्रभाव उसके लेखक जो चाहते थे उसका

अत्यधिक है । इस बात के भी कुछ चिह्न मिले हैं कि वहाँ ज़हरीली गसें भी मौजूद हैं । इसलिए शुक्र के ऊपर उच्च रूप से विकसित किसी प्राणि-जीवन की कल्पना करना कठिन है ।"

"फिर भी यहाँ उडकर तो व आय ही थे । इसका मतलब हुआ कि उनका अस्तित्व तो है ही," ज़ोर देते हुए निज़ोवस्की ने कहा । आप कही यह तो नही कहने जा रहे हैं कि मगलवासी शुक्र से होकर यहाँ आये थे
"

आपने विल्कुल ठीक अनुमान लगाया है ।, मेरा ठीक एसा ही ख़याल है ।"

यह तो बडी विचित्र बात है ।" एकदम परास्त होते हुए निज़ोवस्की ने कहा । "पर इस बात के आपके पास प्रमाण क्या है ?"

एकदम उल्टा हुआ था । उससे मगल की अन्तरिक्ष-यान वाली परिकल्पना का दसियो लाखो पाठको को तुरन्त पता चल गया था । उक्त पत्र के दफ्तर म भारी सख्या मे चिट्ठियाँ पहुची थी । उनम से कुछ म कहा गया था और उनकी इन बातो म कुछ सार भी था कि

(अ) वास्तव म अगर एक उल्का पिण्ड गिरा था और दलदल उसे लील गया था तो अब वह कहाँ है ? दलदल की गहराइयो म उस चुम्बकीय औज़ारो की मदद से क्यो नही ढूढा जा सका है ? उल्का-पिण्ड जब गिरते हैं तो उनके टुकडे हमेशा इधर उधर फैल जाते हैं, फिर इस उल्का पिण्ड के टुकडे क्यो नही वहाँ फैले थे ?

(आ) अगर कोई विवर वहाँ बना था तो वह अरिज़ोना के उल्का पिण्ड के विवर से, अर्थात् १ ५ किलोमीटर व्यास के तथा १०८ मीटर तक गहरे विवर से, छोटा नही हो सकता था, अ

"प्रमाण है। यह मानना पूर्णतया युक्तिपूर्ण लगता है कि ऐसे पानी की तलाश मे जिसका वे उपयोग कर सकें, मगल्वासियो ने निर्णय किया था कि अपने पडौस के दोनो ग्रहो, शुक्र और पृथ्वी की वास्तविक स्थिति का वे पता लगायें। पहले, सबसे उपयुक्त समय पर, वे उडकर शुक्र गये और फिर २० मई, १९०८ को, वे शुक्र से पृथ्वी के लिए चल पडे। स्पष्ट है कि अन्वेषक यानी रास्ते मे ही अकाल मृत्यु के मुह मे पहुँच गये—कास्मिक किरणो की क्रिया के फलस्वरूप। ऐसा या तो किसी उल्का पिण्ड से टकरा जाने के कारण हुआ होगा, अथवा किसी और वजह से। वह एक मुक्त अन्तरिक्ष-यान था। हर तरह से वह पृथ्वी की ओर आनेवाले एक उल्का पिण्ड जैसा ही था। यही कारण है कि अपनी चाल को ब्रेक लगाकर कम किये बिना ही वह सीधे हमारे वायुमडल मे उडता चला आया था। हवा के घर्षण की वजह से वह गर्म हो गया, उसी तरह जिस तरह कि एक उल्का पिण्ड गर्म हो जाता है। उसका

यदि यह विवर, जैसा कि उल्का पिण्डो के विशेषज्ञ अधिकार पूर्वक कहते हैं, दलदल वाली भूमि के नीचे गायब हो गया था, तो दुर्घटना के केन्द्र पर किसी विवर के खनन का कोई भी चिह्न क्या नहीं है? और इससे भी अधिक, फिर वहाँ के पीट (जीणक) की तह तथा शाश्वत हिम का तल कैसे अक्षत बने रहे हैं? हिम के इस स्तर को गल जाना चाहिए था। विवर को ढके रखने वाली दलदल भरी जमीन" फिर से किस वजह से इस तरह जम गयी है जैसे कि पृथ्वी पर एक बार फिर हिम युग आ गया था?

जैसा कि लोगो को मालूम है, उल्का पिण्ड के विशेषज्ञो ने इन प्रश्नो के कोई उत्तर नहीं दिये हैं न वे दे ही सकते हैं।

टुगस के उल्का पिण्ड की पहेली का विस्मयकारी समाधान

वर्षों बीत गये। टुगस टैगा मे, जहाँ उल्का पिण्ड के गिरने की

बाह्य आवरण पिघल गया और उसका आणुविक इधन ऐसी स्थिति म पहुँच गया जिसमे क्रिया शृङ्खला सम्भव हो गयी। हवा मे एक भयकर परमाण्विक विस्फोट हुआ। इस भाँति, दूसरी दुनिया के मुसाफिर ठीक उसी दिन मर गये जिस दिन कि, जैसा कि ठीक-ठीक हिसाब करने से अब मालूम हुआ है, उनके राकेट का पृथ्वी पर उतरना चाहिए था। सम्भव है कि उस दिन की मगल पर भी अत्यत चिन्तापूबक प्रतीक्षा की जा रही थी।"

"ऐसा आप क्यो सोचते हैं ?"

"क्योकि, १९०९ मे महा वियुति के ही समय, हमारी पृथ्वी के अनक खगोल वत्ताओ ने मगल के ऊपर प्रकाश की भीमकाय लपटें देखी थी और उन्हे देखकर वे अत्यन्त उद्वेलित हो उठे थे।"

बात कही गयी थी, फिर कोई पयटक नही गये। लेकिन लोगो की जबदस्त दिलचस्पी उसमे बनी रही। हो सकता है कि इसका कारण यही रहा हो कि उसके साथ बाह्य अवकाश सम्बधी यह परिकल्पना जुडी हुई थी। इसलिए १९५७ मे, उल्का पिण्डो के विशेषज्ञो को इस प्रश्न को फिर पत्रो म उठाना पडा। श्राइनोव ने कोम्सोमोल्सकाया प्रावदा मे तथा प्रो० स्टेन्यूकोविच ने शान्ति की रक्षा में नामक पत्रिका म यह सनसनीखेज घोषणा की कि टुन्गस के उल्का-पिण्ड की पहेली का आखिरकार समाधान हो गया है। उन्होने कहा कि इस बात मे कोई सन्देह नही रह गया है कि वहाँ उल्का पिण्ड ही गिरा था, केवल यह विघटित होकर हवा मे विलीन हो गया था! अर्थात आखिरकार, उल्का पिण्ड के विशेषज्ञो ने अब यह दावा करना छोड दिया था कि कोई ख-पिण्ड पृथ्वी पर आकर उससे टकराया था और उसके कारण जो विवर बना था वह 'खो गया" था! परन्तु नही! उन्हे यह तकपूण दलील भी अस्वीकार थी। उल्का पिण्ड के विशेषज्ञ तो केवल यह कहना चाहते थे कि उल्का पिण्ड का एक भाग

"क्या वे उनके सकेत हो सकते थे ?"

"हाँ, कुछ लोगो ने सकेतो की बात कही थी, परन्तु अविश्वासियो की आपत्तियों के कोलाहल म उनकी आवाजें डूब गयी थी।"

नताशा ने जैस सुमाते हुए कहा, "सम्भवत अपने अन्तरिक्ष यात्रियो के पास व सकेत भेज रह थे।"

"सम्भव है," खगोल वेत्ता ने जवाब दिया। "उक्त घटना के बाद १५ वष बीत गये। तब तक यानी १९२४ तक, रूसी वैज्ञानिक पोपोव द्वारा निकाला गया रेडियो अस्तित्व में आ गया था। और इसलिए, १९२४ की वियुनि के समय, अनेक रेडियो सेटो मे विचित्र सकेतो की ध्वनि प्राप्त हुई थी। मगल से आने वाले रेडियो-सकेतों का फिर बडा ही हल्ला मचा था। कुछ लोगो ने कहा कि वह सब मार्कोनी का

हवा मे ही विघटित हो गया था। इस दावे के प्रमाण के रूप म रिपाट दी गयी कि विज्ञानो की अकादमी के तहखानों में मिट्टी से भरे कुछ पुराने टीन मिले हैं जो किसी समय टुगस के दुघटना-स्थल से लाये गय थ। इन परित्यक्त टिनो के विश्लेषण से पता चला है कि उनकी मिट्टी मे घातु की धूल के कुछ कण थे। इन कणो का आकार १ मिलीमीटर के एक छोट से भाग के बराबर था। उनके रसायन विश्लेषण स पता चला कि उनम लोहा था, ७ प्रतिशत निकिल था और लगभग ०७ प्रतिशत कोबल्ट था। १ मिलीमीटर के १००वें भाग के बराबर आकार के छोटे छोट चुम्बकशील गोल ाा (magnetic spherules) भी उसमे थे। ये गोल्क हवा म पिघल्ती हुई धातु की उपज थे। परन्तु यह घोषणा कि टुगस की दुघटना की पहली हल हो गयी है जरा जल्दबाजी म की गयी साबित हुई!

वास्तव म, उल्का पिण्ड क विशेषज्ञ यदि इस बात स सहमत होन के लिए बाध्य हो गय है कि यह उल्का पिण्ड पृथ्वी से टकराया नही

मजाक था। परन्तु मार्कोनी ने उससे इन्कार किया। किन्तु फिर, मार्कोनी खुद उन सनसनीखेज कहानियों के शिकार हो गये। उन्होंने खुद भी मंगल के संकेतों को सुनने की कोशिश की। इसके लिए उन्होंने एक विशेष अभियान संगठित किया। लेकिन उनके हाथ कुछ नहीं लगा। वे विचित्र संकेत किसी ऐसे तरंग-दैर्घ्य (वेव-लैंग्थ) पर आ रहे थे जिस पर पृथ्वी के रेडियो-स्टेशन काम नहीं करते, इसलिए उनकी भाषा को कोई न समझ सका।"

"फिर अगली वियुति के समय क्या हुआ ?" निज़ोवस्की ने उत्तेजनापूर्ण ढंग से पूछा।

"१९३९ में कुछ नहीं दिखलायी दिया—न खगोल-वेत्ताओं को, और न रेडियो विशेषज्ञों को। हो सकता है कि पिछली वियुति के समय मंगलवासी स्वयम् अपने अन्तरिक्ष यात्रियों के साथ सम्पर्क

था, बल्कि, किसी अज्ञात कारण से, वह धूल में परिवर्तित हो गया था, तो फिर यह पूछना सर्वथा उचित होगा कि धूल में वह क्यों परिवर्तित हो गया था ? अगर पृथ्वी से कोई खपिण्ड नहीं टकराया था तथा उल्का पिण्ड की गतिज ऊर्जा ताप ऊर्जा में नहीं रूपान्तरित हुई थी तो फिर टुंगस टैगा में विस्फोट किस चीज की वजह से हुआ था ? और, उल्का पिण्ड यदि विघटित नहीं हुआ था तो वह विशाल ऊर्जा कहाँ से पैदा हुई थी जिसने टैगा के सैकड़ों वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में पेड़ों को उखाड़ दिया था ? उल्का-पिण्ड के विशेषज्ञ, जो उक्त दुर्घटना के उल्का पिण्ड वाले मत से हठपूर्वक चिपके हुए हैं इन तमाम सर्वथा स्वाभाविक प्रश्नों का कोई उत्तर नहीं देते, न वास्तव में इनका कोई उत्तर हो ही सकता है।

प्रसंगवश हम यह भी बता दें कि टुंगस टैगा की मिट्टी के नमूनों में धातु की जो धूल मिली थी वह इस बात का किसी भी तरह नहीं प्रमाणित करती थी कि बिना किसी शंका-सन्देह के वह किसी उल्का

स्थापित करने का प्रयत्न करते रहे हो और बाद मे, मुमकिन है, वे इस नतीजे पर पहुच गये हो कि वे लोग नष्ट हो गये है।"

"यह सब कितना तर्क युक्त लगता है—और कितना हृदय स्पर्शी है!" निज़ोवस्की ने कहा।

क्षण भर चुप रहने के बाद, काइमोव फिर बोले, "मगल की अगली वियुति १९५४ म पडेगी। मैं नही कह सकता कि अतग्रहीय अवकाश म कास्मिक किरणो से शरीर की रक्षा करने की समस्या का हल निकालने म मगलवासी उस समय तक सफल हो जायेंगे या नही मैं नही जानता। व्यक्तिगत रूप से मैं तो और ही चीजो की आशा करता हूँ। आणुविक ऊर्जा को हम लोग समझने लग गये हैं। समीप भविष्य म हम लोग खुद अन्तरिक्ष की उडानो पर जाने का विचार करने लगेंगे।'

पिण्ड की ही अवशिष्ट थी। उल्का पिण्डो की विशिष्टता के रूप म उनका जो लौह ढाचा होना है उसका कही कोई चिन्ह नही मिला था। अत्यधिक सम्भावना इसी बात की है कि जो धूल मिली है वह विस्फोट से विनष्ट हो गये किसी अतग्रहीय राकेट के ढाँचे का ही अवशिष्ट अग है। अवशिष्टो की रासायनिक सरचना इस बात का समर्थन करती है।

जैसा कि हम देखते हैं, इस व्याख्या को ठुकरा देना बहुत कठिन है कि टुन्गस की दुर्घटना का कारण कोई आणुविक विस्फोट था। जिज्ञासु मन को विज्ञान की आनस डिग्रियो का हवाला देकर नही शान्त किया जा सकता, खासतौर से जब कि य डिग्रियाँ टुगस टैगा मे हुए भयानक रूप से शक्तिशाली विस्फोट की असदिग्ध वास्तविकता से ही इन्कार करती हो! जिज्ञासु मस्तिष्क इस बात के लिए व्यग्र तथा आतुर है कि टुगस के उल्का पिण्ड की पहेली का वैज्ञानिक लोग सच्चा समाधान ढूढ निकालें।

"क्या आप मगल जायँगे ?" इस कल्पना से किंचित भयभीत होते हुए नताशा ने पूछा।

"हाँ, मुझे पूरा विश्वास है कि मैं मगल की यात्रा करूँगा। बुद्धिमान व्यक्तियो का विकास, विज्ञान का विकास—पृथ्वी की अतुल्नीय रूप से अधिक अनुकूल परिस्थितियो म हो रहा है। मगल की परिस्थितियो स इनकी जरा भी तुलना नही की जा सकती। इसलिए मुझे विश्वास है कि हम लोग उनसे पहले उडकर वहाँ जा सकेंगे और हमारी यात्रा उनकी यात्रा से अधिक सफल होगी "

श्राइमाव थोडी देर तक खामोश रहे। फिर जोरो से हसने लगे।

"तो अब आप लोग समझ गये कि मैं क्यो खगोल वेत्ता बन गया हूँ। मेरा खयाल है कि मैंने जितना सोचा था उससे भी अधिक आपको

इस पहेली का समाधान हम कसे कर सकते हैं ?

टुगस टँगा मे एक अभियान भेजा जाय तो उसके निष्कष अत्यन्त महत्त्वपूण होंगे।

टुगस टँगा में आणुविक विस्फोट हुआ था या नही, इस प्रश्न का समाधान हो सकता है। इसके लिए आवश्यकता सिफ इस बात की है कि जहाँ वह दुर्घटना घटी थी वहाँ की जाँच-पडताल की जाय, वहाँ की रेडियो एक्टीविटी (विकिरणशीलता) की परीक्षा की जाय। पृथ्वी के साधारण स्थानो मे कितनी रडियो एक्टीविटी (विकिरणशील्ता) होती है इसका एक माप (प्रतिमान) मौजूद है। गीगर गणकों (Geiger Counters) की सहायता से किसी भी स्थान पर हुए आणुविक विकिरण की निश्चित मात्रा का पता लगा लिया जा सकता है।

जिस समय विस्फोट हुआ था उस समय, दुघटना के क्षेत्र में, यदि कोई जबदस्त रेडियो-एक्टिव विकिरण (यानी एक आणुविक विस्फोट)

बनला दिया है। यह इस ब्राण्डी की कृपा है!"

"एक क्षण रुकिए," निजोवस्की ने कहा, "मैं पुरा भूगभ शास्त्री हूँ। हड्डिया के भग्नाशो को देखकर एसे किसी भी प्राणी का चित्र हम तैयार कर दे सकते हैं जो कभी भी पृथ्वी पर रहा हो। क्या आप यह नही बता सकते कि मगल का प्रबुद्ध प्राणी देखने मे कैसा लगता होगा? आप तो उसके जीवन की सारी परिस्थितियो से परिचित हैं। हम बतलाइए कि अन्तरिक्ष से आने वाला वह मुसाफिर देखने मे कैसा रहा होगा।"

शाइमोव मुस्कुराये।

"इसके बारे म भी मैंने थोडा-बहुत विचार किया है। आप चाह तो मैं आप को अवश्य बतलाऊँगा। यहाँ मैं बतला दू कि

हुआ था तो, लाजिमी था कि उसके कारण न्यूटानों (परमाणु के टूटने पर बाहर गिरने वाले मूल कणो) की जो बाढ आयी होगी उसके लकडी तथा जमीन के अन्दर स गुजरने की वजह से कुछ विशेष परिवतन होते। जिन्ह 'नामाङ्कित परमाणु" (labelled atoms) कहा जाता है, उन्ह अपने अधिक भारी नाभिको (nuclei) के साथ प्रकट हो जाना चाहिए था। उडते हुए न्यूट्राना म से कुछ को इन भारी नाभिको मे बन्दी बन जाना चाहिए था। य नामाङ्कित परमाणु उन तत्वा के अधिक भारी सम-स्थानिक (प्रकार) [isotopes (varieties)] होते हैं जो सामान्यतया पृथ्वी पर मिलते हैं। जस कि, उदाहरण के लिए, साधारण नाइट्रोजन, धीरे धीरे स्वयम्-स्फूत रूप से विघटित होता हुआ भारी कार्बन मे रूपान्तरित हो जा सकता है। अन्य भारी सम स्थानिक (isotopes) भी इसी प्रकार विघटित होते हैं। इस स्वयम्—स्फूत विनाश की क्रिया को भी उन्हीं गीगर गणक की सहायता से जाना जा सकता है।

यदि टुगुस्का ढेंगा के क्षेत्र म इस बात को सिद्ध करना सम्भव हो

आपके एक सह-कर्मी, पुरा भूगभशास्त्री और लेखक प्रोफेसर येफ़ेमोव ने इस विषय मे जो बातें कही हैं उन्हे मैंने पढा है। उन्होंने जो कुछ लिखा है उसके अधिकाश से मैं सहमत हूँ एक ही मस्तिष्क केन्द्र हो और, उसके नजदीक ही, त्रिविम (stereoscopic) दृष्टि तथा श्रवण की इन्द्रियाँ हो यह सब आवश्यक है। किन्तु फिर, इसका अथ हुआ कि मगलवासी को बिल्कुल सीधा होना चाहिए जिससे कि अपने इद गिद के स्थान को वह अधिक से अधिक दूर तक देख सके। जहाँ तक उसके बाहरी रग रूप का सवाल है तो मगल की जलवायु बहुत कठोर है, वहाँ के ताप मान मे बहुत तीव्र परिवतन होते रहते हैं। इसलिए मगलवासी सभवत बहुत सुन्दर नही होंगे। उनके शरीर के ऊपर किसी प्रकार का एक सुरक्षात्मक आवरण होना चाहिए—चर्बी की कोई मोटी तह, रोओ की कोई मोटी-सी तह, अथवा बैगनी रग की इस तरह की त्वचा, जो, मगल की वनस्पति की ही तरह, उष्मा किरणा

जाता है कि प्रति-सैकिण्ड वहाँ होने वाला परमाणुओ का विघटन, विघटन की साधारण प्रक्रिया से अधिक है, तो टुगस टैगा की दुघटना का स्वरूप स्पष्ट हो जायगा। तब दुघटना के केन्द्र-स्थल का पता लगाना भी सम्भव हो जायगा और, यदि वह वही है जहाँ मरे हुए पेड खडे हुए हैं, तब तो मगल से आये अन्तरिक्ष-यान की क्षति का भी पूरा-पूरा चित्र फिर से तैयार करना सम्भव हो जायगा।

का अवशोषण कर लेती हो। मगलवासी बहुत लम्बे भी नहीं हो सकते गुरुत्वाकर्षण का बल वहाँ बहुत नहीं है उनकी मास-पशियाँ हमारी तुलना मे कम विकसित होगी अब, और क्या बाकी रह गया ? हाँ, हाँ ! उनके सास लेने के अग । वे अति उच्च रूप से विकसित होगे, क्योकि उन्हें केवल उसी नाम मात्र की आक्सिजन पर गुज़र करनी पडती होगी जो मगल के वायुमण्डल मे पायी जाती है। किन्तु मैं गारटी नही कर सकता कि ये सब चीज़ें जो मै बता रहा हूँ एकदम सही है।"

"और शुक्र के प्रबुद्ध प्राणियो का रूप विन्यास कैसा होगा ?", अपने विचारो म मग्न निज़ोवस्की ने गभीरता से पूछा।

खगोल-वेत्ता अनायास ठहाका मार कर हस पडे।

"उसके सम्बध मे मैं कुछ नही कह सकता। अब भी हम उसके विषय मे बहुत कम जानते है। हमारा ज्ञान कितना सीमित है !"

"इसके बावजूद वे लोग शुक्र से उडकर आये थे," निज़ावस्की ने आहिस्ता से कहा।

ग्राईमोव ने सिर हिलाया।



हम लोग जब उठे तो आधी रात बीते भी बहुत देर हो गयी थी। आज की शाम के मनोरजन से बोरिस एफीमोविच अत्यन्त प्रसन्न थ।

'क्या बढ़िया इन्सान है ! कितना एकव्रती ! उत्तर ध्रुवीय प्रदेश म हमारे साथ भी ऐसा ही कोई एकाध आदमी होता तो कितना अच्छा होता !"

मुझे वह क्षण खूब अच्छी तरह याद है जिसमे हम सबने खगोल-वेत्ता को विदा किया था। नताशा के साथ वे खोलोदनाया जेमलिया मे उतर गये थे, क्योकि वनस्पति के परावर्तन सम्बधी गुणो का वहाँ भी उन्हे पता लगाना था।

उनकी समस्त साज-सज्जा को नीचे लटका कर मोटर लाच म उतार दिया गया था। नताशा और श्राइमाव ने हमारी तरफ घूमकर, हाथ हिलाते हुए, हमसे अलविदा कही थी। कैप्टन ने जहाज के सायरन से विदाई के स्वर निकाल कर उनसे विदा ली थी। कैप्टन हमेशा ऐसा ही करते थे। बोरिस ऐफीमोविच इस मामले मे बहुत पाबन्द थे।

मिजोवस्की डेक की रेलिंग के ऊपर झुक गया और चिल्लाकर उन लोगो स बोला

"वे शुक्र से आये थे।"

नही, मगल से!" श्राइमोव ने उतनी ही जोर से चिल्ला कर जवाब दिया था। उस समय उनके चेहरे पर कोई मुस्कराहट नही थी क्योकि वे एकदम सजीदा थे।

लहरो के बीच से उछलता, स्थिर-गति से बढता लाच क्रमश छोटा होता गया था। वह दूर दिखलायी देने वाली जमीन के दंतीले तट की तरफ जा रहा था।

घण्टे भर बाद जहाज का लाच वापिस आ गया।

ज्योर्जी सीडोव ने लगर उठा लिया और फिर अपनी यात्रा की तैयारियाँ शुरू कर दी।

लेखक
एलेक्जेण्डर काज़ान्तसेव
*

मंगल का वासी

"ज्योर्जी सीडोव" के सैलून में अब भी "मंगलवासियों की दुर्घटना" का प्रेत मँडरा रहा था। उत्तर ध्रुवीय प्रदेशों की दुस्साहसिक कहानियों के बारे में बात करने की इच्छा अब किसी में शेष नहीं रह गयी थी। नाविक और ध्रुवीय प्रदेश के अन्वेषक सभी टुन्गस क विस्फोट से सम्बधित बातों की चर्चा कर रहे थे। बातों बातों में वे उत्तेजित हो उठे और एक गर्मागर्म बहस छिड़ गयी जैसा कि कैप्टन ने कहा था, "हमारा उत्तरी कहानीकार" तो बालू में फँस गया है "

'एलेक्जेण्डर पत्रोविच, इससे अब आप ही हमें उबारें," एक मुस्कराहट के साथ मुझे सम्बोधित करते हुए कैप्टन ने आगे कहा। "हमारे खगोल-वेत्ता अतिथि ने हमारे कौतूहल को काफी जगा दिया है अब कल्पित-कथाओं के हमारे लेखक की बारी है कि वे हमें कोई खूब फड़कती हुई और विचित्र कहानी सुनायें।"

"हाँ हाँ।" सैलून में एकत्रित सभी ने एक साथ आग्रह करते हुए कहा। "हमें कोई ऐसी कहानी सुनाइए जिस पर किसी भी तरह हम विश्वास न कर सकें।"

'लेकिन टंगा के अन्तरिक्ष-यान के आने की बात पर क्या वाकई आपने विश्वास कर लिया है?' मैंने मजाक के ढंग में पूछा।

"अमरीकियों की एक कहावत है हम ईश्वर को मानते हैं और नक्द रुपये को। मेरे खयाल मे उसमे बहुत नक्द माल था।" कैप्टन ने उत्तर देते हुए कहा।

"हाँ इतना बहुत कि उसका खण्डन नहीं किया जा सकता," हवाई जहाज के चालक ने बीच मे जड़ा। वह एक भारी भरकम शरीर-वाला, खामोश किस्म का आदमी था जो हमेशा उड़ने का अपना सूट और रोएँ के बूट पहने रहता था। उसे काम दिया गया था कि एक हवाई अड्डे के निर्माण के लिए वहाँ के द्वीपो मे से किसी एक को चुन ले। यात्री बनकर ग्योर्जी सीडोव मे वह इसीलिए आया था।

'अन्तरिक्ष-यान की बात पर विश्वास नहीं होता, फिर भी उसका खण्डन नहीं किया जा सकता," पतवार को सभालने वाले मल्लाह, नितायेव ने कुछ सोचते-सोचते कहा।

"तो मुझे एक ऐसी कहानी सुनानी है जिस पर किसी भी तरह आप विश्वास न कर सकें," मैने बात का सिलसिला शुरू करते हुए कहा। मन ही मन मैंने सोच लिया था कि जहाज के सैलून मे ध्रुवीय प्रदेश के जीवन से सम्बन्धित जो सरल यथार्थ अक्सर सुनने को मिलती हैं उन्ही के बीच एक बिल्कुल दूसरी तरह की, एकदम अविश्वसनीय, एकदम असम्भव जैसी कोई एक कहानी मैं सुना दूँगा, लेकिन

वे सुनने लगे। शुरू-शुरू मे उनका भाव शायद अविश्वास का था और ऐसा लग रहा था जैसे वे मेरे ऊपर अनुग्रह कर रहे थे, अथवा मुझे उत्साह दिलाने के लिए मन्द-मन्द हँसी हँसते जा रहे थे। उनका भाव कुछ उसी प्रकार का था जिस प्रकार का, आगे किसी विचित्र कहानी को पढ़ने की आशा मे, मेरी कहानी के वर्तमान पाठक का इस पृष्ठ का उलटते समय हो रहा होगा।

कहानी का सम्बन्ध मौजूदा काल से ही है। वास्तव में उसका संबंध एक प्रकार के एक सर्वथा अचित्तरंजक कमरे में हुई एक मुलाकात से है। यह विचित्र कमरा, जिसकी छत चूती थी और जिसकी मेजों पर स्याही के धब्बे लगे हुए थे, मास्को के बाहर, तुशीनो में स्थित, चकालोव केन्द्रीय हवाई क्लब के अंदर है।

क्लब में उस वक्त मेरी ड्यूटी थी। इतना ताज्जुब न कीजिए, मैं हवाई जहाज का चालक (पायलट) नहीं हूँ। बात केवल इतनी ही है कि कुछ वर्ष पहले अन्तरिक्ष-यात्रा में दिलचस्पी रखनेवाले हम कुछ उत्साही लोगों ने स्वयम् अपना एक अन्तरिक्ष-यात्रा संघ कायम कर लिया था। इस संगठन का उद्देश्य था भविष्य में होनेवाली अन्तरिक्ष उडानों के काम में मदद पहुँचाना। बहुत दिन नहीं हुए जब हमारा मजाक उडाया जाता था और हँसी-हँसी में हमें पागल कहा जाता था, क्योंकि हम चाँद पर जाने का स्वप्न देखते थे। परन्तु हमने इस सब की परवाह नहीं की और अपने महान विचार का प्रचार करने के लिए जमकर काम करते रहे। अन्तरिक्ष उडानों के सम्बन्ध में अपने विश्वास की भावना से जिन लोगों को अनुप्राणित करने में हम सफल हुए थे उन सबको हमने एक जगह इकट्ठा किया। हमने तरह-तरह की कमिटियाँ बनायीं अन्तरिक्ष-यात्रा कमिटी जेट से उडने की इंजीनियरिंग कमिटी, अन्तरिक्ष उडान से सम्बन्धित खगोल विद्या तथा जीव विज्ञान की कमिटी, रेडियो नियंत्रण की कमिटी। हमारे अन्तरिक्ष यात्रा संघ का अब कोई मजाक नहीं बनाता। उसके सदस्यों में अब वैज्ञानिक, प्रसिद्ध विमान चालक, विद्यार्थी, इंजीनियर तथा लेखक सभी शामिल हैं। नौजवान लडके-लडकियाँ, प्रौढ तथा वयोवृद्ध लोग, विद्याडम्बरी तथा स्वप्न-द्रष्टा किस्म के व्यक्ति, सब उसमें शामिल हो रहे हैं।

अन्तरिक्ष-यात्रा संघ का एक संगठन-कर्त्ता चूँकि मैं भी था, इसलिए उस वर्ष पृथ्वी के प्रथम कृत्रिम ग्रह को जब कक्षा में रखा गया तो,

सयोग से, वल्य म मेरी ड्यूटी लगी हुई थी। दो लडकियो और एक युवक के साथ उस समय मैं किसी गम्भीर वार्तालाप मे लगा हुआ था। वे सब उडना चाहते थे। इधर-उधर कही नही, बल्कि वे सीधे मगल पर जाना चाहते थे। बात खत्म करके मेरे पास से वे अभी ही गये थे। उन्हे विदा करके म कुछ नये पत्रो के पढने मे लग गया था। उनमे से एक पत्र एक नव-युवक का था। यह पत्र बहुत मनोरजक था।

उसने लिखा था, "मैं १८ वष का हूँ। स्कूल की पढाई मैंने अभी ही खत्म की है। अभी तक मैंने कोई महत्वपूण चीज नही की है, लेकिन विज्ञान के लिए कुछ करने की मेरी बहुत अभिलाषा है। मैंने सुना है कि एक कृत्रिम उपग्रह म रखकर एक कुत्ते को ऊपर भेजने का विचार किया जा रहा है। अगर आदमी को ऊपर भेजा जाय तो विज्ञान के लिए अधिक उपयोगी होगा। कृपा कर मुझे बताइए कि अन्तरिक्ष की प्रयोगात्मक उडान के लिए मैं किस प्रकार अपनी सेवाएँ अर्पित कर सकता हूँ। मुझे विश्वास है कि अगर मैं जाऊँ तो अपनी तमाम सम्वेद-नाओ को मैं रेडियो से भेज सकूगा और मैं यह भी देख सकूँगा कि सितारो से हमारी पृथ्वी कैसी मालूम पडती है।"

दूसरा पत्र एक स्त्री का था "मैं ४६ वष की हूँ और घर का काम काज करती हूँ। अपने जीवन म मैंने बहुत कम कुछ किया है। मैं चाहती हू कि आप मुझे विज्ञान की सेवा करने का अवसर दें। अन्तरिक्ष उडान के समय मानव शरीर की स्थिति के अध्ययन काय के लिए मैं अपने को आप की सेवा मे प्रस्तुत करती हूँ। इस बात का मैं भली भाँति समझती हूँ कि प्रत्येक राकेट पृथ्वी पर वापस नही लौट सकता"

बयाल झील के उस पार से एक इजिन ड्राइवर न लिखा था "मुझ यात्रिक चीजें बहुत पसन्द हैं। मुझे मशीनो की अच्छी।

है और मैं सीखने के लिए तैयार हूँ। अन्तरिक्ष-यान के एक कमचारी के रूप म मैं उपयोगी हो सकता हूँ "

दरहकीकत, सोवियत सघ तथा अन्य देशा मे ऐसे लोगा की सख्या दसिया हजार से ऊपर पहुँच गयी है जा भविष्य की अन्तरिक्ष उडाना म भाग लेने के लिए आकुल और आतुर ह।

वहाँ क्लब म बैठे-बैठे मानव स्वभाव के इसी विस्मयकारी पक्ष के सम्बन्ध म मैं सोच रहा था। वह कौन-सी शक्ति है जो मानव को सितारो की तरफ और पृथ्वी से दूर आकर्षित करती है ? ज्ञान की निस्सीम, अतृप्त, उद्दाम पिपासा ही तो! वही शक्ति जिसन ध्रुव के साहसी, दुर्दान्त अन्वेषका को अनुप्राणित किया था! इन अन्वेषको मे स कुछ थाडी दर क लिए गिर गये थे और फिर उठ बैठे थ, पर कई हमेशा के लिए जात रह थ। परन्तु, इस सब के बावजूद, अप्रवश्य हिम, हिम के विकट चट्टानो तथा तुषार के तीव्र प्रभजना के उस रहस्यमय स्थल की ओर वे बढते गय थे जा पृथ्वी के गाले पर केवल एक सफेद चिह्न से इंगित है और जा ध्रुव कहलाता है। ठीक इसी शक्ति की प्रेरणा से बँधे हुए, सागरा के साहसी नाविक समुद्रा के विशाल विस्तारो मे उतर जात है और अजान देशो का पता लगान के लिए भयकर तूफाना के बीच स आग बढते हैं—उन देशा का जा वैभवमडित ह क्याकि व अज्ञात ह! यह वही शक्ति है जो पहाड पर चढन वाला के हिम्मती, जवाँ मद दला को बर्फीले ढलावा के ऊपर स पहाडा की उन दुगम, अविजित चोटिया की ओर खीच ले जाती है जहाँ तुद गजती हुई हवाओ के अलावा और कुछ नही है जहाँ की चकाचौध पदा करने वाली तज रोशनी आँखो का झपका देती है और जहाँ इन्सान को जबर्दस्त ऊँचाई की तिमिरकारी, नशीली-सी एक विशिष्ट अनुभूति होती है।

जिन लक्ष्या और ऊँचाइया पर पहुँचन का प्रयत्न मनुष्य आज कर रहा है उनकी उन चीजा स कोई तुलना नही की जा सकती जिनको वह प्राप्त कर चुका है

यही मनुष्य का स्वभाव है, यही वह वस्तु है जो उसे भव्य बना देती है।

सर्वप्रथम उस पर मेरी नजर खिडकी से उस समय पडी थी जिस समय वह "हवाई क्लब" का मैदान पार कर रहा था। मैं घर जाने ही वाला था, किन्तु रुक गया था, जैसे कि मुझे मालूम हो गया हो कि वह मुझसे मिलने आ रहा है। उसके हाव भाव मे कोई विचित्र चीज थी। मुझे याद नही आता कि आया इसका सम्बध उसके चलने के तरीके से था। पर यह बात मुझे उसी समय लगी थी जिस समय वह द्वार पर आया था।

जब उसे मैंने समीप से देखा तो मेरी यह भावना और भी बढ गयी (जैसा कि बाद म पता चला, वास्तव मे वह मुझसे ही मिलने आ रहा था!)। उसके विचित्र लगने की वजह यह नही थी कि वह नाटा था और उसकी चाल-ढाल भोंडी मालूम होती थी, न उसकी वजह यही थी कि उसका शरीर, भुजाएँ और टाँगें कुछ बे-अनुपात थी, न इसकी वजह यह थी कि उसका सिर बडा, दकुनत और पूर्णतया गजा था। उसकी वजह उसकी मानो, बडी-बडी आँखो का भाव मालूम होता था। उसके चश्मे के अद्भुत अविश्वसनीय रूप से उतल (convex) लेंसो के कारण उसकी आँखें विकृत लगती थी। उसके चश्मे के इन लेंसो की वजह से कोया जैसो उसकी बडी-बडी उदास-सी आँखें मेरे एकदम नजदीक आ गयी थी। ऐसा लगता था कि वे मेरे अन्दर तक घुसी जा रही है, कि वे सब कुछ जानती-समझती थी। मेरे ऊपर जो प्रभाव उसने डाला उसका कारण अपने दिमाग म मैं इस विचित्र चश्मे का ही समझता था।

मैंने उससे बैठने के लिए कहा।

उसने मुझे देखा तो स्नेहपूर्वक मुस्कराया। उसने मेरे सामने मेज पर

एक मोटी-सी पाण्डुलिपि रख दी। स्पष्ट था कि मेरी आखा मे प्रनिबिम्बित भय को उसने भाप लिया था। कदाचित, उसने यह भी समन लिया था कि मेरे अन्दर पाण्डुलिपिया से दूर भागने की प्रवत्ति है, क्योंकि, आम तौर से, मुझे इतनी बहुत-सी पाण्डुलिपियाँ पढनी पडती हैं कि

"नही, साहित्यिक विचारणा के लिए मैं नही आया हूँ। न यह पाण्डुलिपि छपने के लिए ही है," उसने कहा।

उसका मशा जानने के लिए मैंने उसकी ओर देखा।

"म जानता हूँ कि किसी निश्चित अन्तग्रहीय उडान तथा उसम भाग लेने वाले लोगो के सम्बध मे इस समय बात करना अभी कुछ असामयिक है, यद्यपि, निस्सदेह, लागा ने अपनी प्रार्थनाओ से आप को तग करना शुरू कर दिया होगा। फिर भी, मुझे आपके विभाग की सहायता की जरूरत है और म चाहूगा कि उसके लिए मैं अभी से अर्जी दे दूँ।"

मेरे सामने जो व्यक्ति बैठा था वह नौजवान नही था। उसे मैं मजाक करके नही टाल दे सकता था। मैं उसे यह सलाह नहीं दे सकता था कि वह विज्ञान की उन शाखाओ का अध्ययन मनन करे जो अन्तरिक्ष का उपयोगी यात्री बनने मे किसी दिन उसकी सहायता करेंगी।

किसी अगम्य ढग मे वह मेरी भावनाओ को समझ गया, क्योंकि उसने फौरन कहा कि वह न तो कोई अन्तरिक्ष-यात्री है, न भूगर्भ शास्त्री, न डाक्टर और न इजीनियर, यद्यपि—यहाँ पर ऐसा लगा जैसे एक सैकिण्ड के लिए उसने साँस लेना बन्द कर दिया हो—वह उनमे से कोई भी बन सकता था। इसके बावजूद, वह हमारी सहायता और समर्थन की आशा करता था, वह चाहता था कि यह बात पक्की हो जाय कि

मगल को जाने वाले प्रथम अन्तरिक्ष-यान के कमचारियो मे वह भी एक होगा क्योकि इस बात का हरेक को अधिकार है कि वह अपने देश लौट जाय।

मै एकदम उद्विग्न हो उठा। मुझे याद आया कि १९४० मे स्वर्द-लोफ्क के एक डिपार्टमेण्ट स्टोर के मैनेजर का एक पत्र मैने पढा था जिसमे उसने भी यही प्रार्थना की थी कि मगल वापिस लौटने मे उसकी सहायता की जाय! उस समय मुझे बतलाया गया था कि और सब प्रकार से वह मनुष्य एकदम साधारण आदमी था।

आगन्तुक मुस्कराया। उसकी आँखो म मैने देखा कि वह मुझे फिर समझ गया था।

हे भगवान!—मैने सोचा। कदाचित् यह सचमुच सही है कि मगल का वायुमण्डल अत्यधिक विरलित (हल्का) है और इसलिए उसके निवासियो ने ध्वनि-तरगो के माध्यम से विचारो के प्रेषण की पद्धति को, अर्थात हवा म कम्पनो के द्वारा अपने विचारो को व्यक्त करने की पद्धति को, बहुत दिन पहले ही तिलाजलि दे दी थी। मैं सोचने लगा कि न केवल वह मेरे विचारो को समझ लेता है, बल्कि म भी उसके विचारो को समझ जाता हूँ। सबसे ठीक चीज यही होगी कि उसे एक बीमार आदमी मान लिया जाय।

"हाँ," मेरे आगन्तुक ने बात जारी रखी। "शुरू शुरू म मुझे पागलखाने म डाल दिया गया था। फिर मैं समझ गया कि लोगो को विश्वास दिलाने की कोशिश करना बिल्कुल बेकार है।"

मैं इस उधेड-बुन म लग गया कि युद्ध से कुछ दिन पहले जो पत्र मेरे पास आया था क्या वह इसी का था!

आगन्तुक ने पाण्डुलिपि की ओर इशारा किया।

"मैं इसे रूसी अथवा अंग्रेजी, फ्रांसीसी अथवा डच, जर्मन, चीनी अथवा जापानी, इस पृथ्वी पर प्रचलित किसी भी एक भाषा का इस्तेमाल करके उसी में लिख सकता था।"

शिष्ट बने रहने की चेष्टा करते हुए, मैंने पाण्डुलिपि को खोला। एक विचित्र चित्र लिपि से भरे उसके पृष्ठों को देखकर मेरी भौंह खिंच गयी। यह क्या है? कोई रहस्य कोई तिलिस्म, अथवा किसी बीमारी का लक्षण?

'किसी भी बुद्धिमान प्राणी के लिए, चाहे वह कोई हो," आगन्तुक ने आगे कहा, 'उसकी समस्त यथोचित अभिव्यञ्जनाओं तथा कथनीयता के साथ, किसी ऐसी अज्ञात भाषा की एकान्त में सृष्टि कर सकना असम्भव है, जो उन विचारों और भावनाओं का भी प्रेषण कर सके जिन्हें लोग पूर्ण रूप से नहीं समझ सकते। और न किसी प्रबुद्ध प्राणी के लिए यही सम्भव है कि, उसी एकान्त में, वह किसी ऐसी लिखित भाषा का आविष्कार कर ले जिसमें वह इस प्रकार की भाषा के समस्त ऐश्वर्य को उँडेल सके। इस बात को शायद आप समझ सकेंगे कि इस पाण्डुलिपि को वास्तव में मौजूद, सुदूर की किसी प्राचीन और समझदार उस जाति का ही एक प्रतिनिधि तैयार कर सकता था जो अतीत की भूली हुई दुःसह दुनिया में कभी रहती थी "

"लेकिन इसे कोई पढ़ कैसे सकता है?" मैंने पूछा। मेरा संयम जवाब दे रहा था। तभी मेरी दृष्टि उस अद्भुत चश्मे के पीछे से दिखायी देती उसकी आँखों पर पड़ी। उनमें सदय सहानुभूति भरी हुई थी।

उसने कहा, 'पिछली शताब्दी में पृथ्वी पर संस्कृति का विकास अव्यवस्थित रूप में, ठहर-ठहर कर हुआ है। ऊर्जा की अविनाशिता के नियम के ज्ञान से आगे बढ़कर द्रव्य की ऊर्जा का उपयोग किया जाने

लगा है, मूर्तिपूजा की दशा से आगे बढ़कर पृथ्वी पर अब उन मशीनों का निर्माण किया जाने लगा है जो मस्तिष्क की क्षमता को कई गुणा बढ़ा देती हैं और किन्हीं निश्चित कार्यों के सम्बध मे तो उसकी जगह ही ले लेती हैं। इस सम्बध मे मैं अपने को सौभाग्यशाली समझता हूँ कि जिस समय इस दानी तथा अल्प-वयस्क ग्रह पर यह सस्कृति फल फूल रही है उस समय मैं भी यहाँ मौजूद हूँ और इसे स्वय अपनी आँखो से देख रहा हूँ। इस ग्रह की सहति (mass) काफी है, इसलिए न तो इससे इसका वायु मण्डल छिन सका है, न पानी। इसे इस बात की कोई आशका नही है कि मिट कर यह भी एक दिन विस्मृति के गर्भ मे विलुप्त हो जायगा।"

"तो क्या आप का खयाल है कि बिजली का गणक (electronic computer) इस पाण्डुलिपि को पढ सकता है ?" आगन्तुक का इशारा समझते हुए, मैंने पूछा।

'हाँ, आप की मशीनें इस पाण्डुलिपि को पढ़ लेंगी और तब आप समझ जायेंगे कि इसे किसने लिखा था।"

मैं तो इस बात को जभी अभी ही जान गया था और उसे मानने के लिए तैयार था।

परिस्थिति मे जो मूढता अथवा विचित्रता मौजूद थी उसे मैंने देखा। मेरे हाथ काप रहे थे। इस अकाण्ड मिलन मे किसकी दिलचस्पी होगी पूरी विशाल दुनिया की, या केवल मुट्ठी भर मनश्चिकित्सकों (psychiatrists) की ?

विचारों का प्रेषण करने वाली, विचारों को पढ़ लेने वाली उसकी तीक्ष्ण आँखें काँच के उतल टुकडो के अन्दर से मुझे ध्यानपूर्वक देख रही थीं ? ऐसी हालत मे मूढ़, दो-मुही बातें करने वाला और ढोगी मैं कैसे बन सकता था ?

यह तय करने के बाद कि ६ महीने बाद हम फिर उसी कमरे में मिलेंगे, हमने एक-दूसरे से विदा ली।

और इसके बाद, इसके बाद मैं "ज्योर्जी सीडोव" में यात्रा के लिए निकल पड़ा। कई महीनों से जहाज़ के इस सैलून में आप खुद हमारे साथ हैं।

"यह तो बताइए!" जैसे क्रुद्ध होते हुए नतायेव ने कहा। उसकी फीकी, बाहर निकली पड़ती आँखें जैसे मुझे घूर रही थीं। "उस पाण्डुलिपि का क्या हुआ?"

सैलून में ज़ोर-ज़ोर से बातें होने लगीं।

किसी ने कहा, "न जाने क्यों, पागलों की कहानियाँ हमेशा मनोरंजक होती हैं।"

नेनायेव ने उस व्यक्ति की तरफ गुस्से से देखा।

"मेरे खयाल में कहानी अभी खतम नहीं हुई है" कैप्टेन ने कहा। वह प्रतीक्षा करते हुए मेरी तरफ देखने लगे।

"नहीं, शायद खतम नहीं हुई", मैंने सहमति प्रकट की। "मेरी उससे फिर मुलाकात होगी।

"और वह पाण्डुलिपि क्या आप के पास है? हम उसे देख सकते हैं?" उत्सुकता के साथ नेनायेव ने पूछा।

"नहीं, वह मेरे पास नहीं है। वास्तव में, कहानी का क्रम अभी खतम नहीं हुआ। हमारी इस बात-चीत के तुरन्त बाद ही एक विश्व प्रसिद्ध वैज्ञानिक "स्नाव संघ" के दफ्तर में आये थे। सारी दुनिया के गणितज्ञ उनका सम्मान करते हैं। वे बहुत ही दिलचस्प जीव हैं, नये

प्रकार के वैज्ञानिक हैं। वे लम्बे और एकदम सीधे हैं, उनके शरीर की बनावट एक खिलाड़ी जैसी है, वे शतरंज खेलते हैं और साहित्य की भी विस्तृत जानकारी रखते हैं। हम लोग हमेशा साहित्यिक विषयों पर ही बहस किया करते थे। जब वे विश्वविद्यालय में दाखिल हुये थे तब उनकी अवस्था केवल १६ वर्ष की थी। २० वर्ष के होते होते उन्होंने विज्ञान में एक स्नातकोत्तर डिग्री प्राप्त कर ली थी और २८ वर्ष की अवस्था में वे एक अकादिमीशियन बन गये थे।"

"मैं जानता हूँ आप किसकी बात कर रहे हैं।" नेतायेव ने बीच में ही टोकते हुए कहा।

"हाँ, तो इस वैज्ञानिक ने हमें बिजली की गणक (computing) मशीनों के बारे में सब कुछ बतलाया था। निस्सन्देह, आपने उन साइबरनेटिक मशीनों (cybernetic machines) के बारे में भी सुना होगा जो न केवल गणित की ऐसी अत्यन्त कठिन गणनाओं को झटपट पूरा कर देती हैं जिन्हें पूरा करने में मनुष्य की अनेकों पीढ़ियाँ लग जाएँगी, बल्कि तर्कशास्त्र की भी समस्याओं को हल कर देती हैं। उनके यह याददाश्त (स्मरण-शक्ति) होती है जिसे इलेक्ट्रोनिक (बिजली की) याददाश्त कहा जाता है, उनके अन्दर एक प्रकार का स्वचालित कोश (automatic dictionary) होता है, और वे एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद कर सकती हैं, यहाँ तक कि स्वयम् अपने अनुवादों का वे सम्पादन भी कर सकती हैं।

"इन अकादिमीशियन को जिस समय अपनी कार पर मैं घर ले जा रहा था, रास्ते में उन्होंने अपने एक अत्यन्त साहसी प्रयोग की बात मुझे बतायी। विज्ञानों की अकादमी के महान् इलेक्ट्रोनिक कम्प्यूटर (विद्युत गणक) को पूरा करने के लिए उन्होंने एक कार्यक्रम दे दिया था। इसी प्रसंग में, हम बता दें कि यह इलेक्ट्रोनिक कम्प्यूटर शतरंज

अच्छी तरह खेल सकता था और, यहाँ तक कि, शतरंज सम्बन्धी समस्याओं तक को, परन्तु विरोधाभासो के ऊपर निर्मित अध्ययनों से सम्बन्धित समस्याओं को नहीं, वह हल कर दे सकता था। अकादिमीशियन ने इस मशीन को जो कार्यक्रम दिया था उसके अनुसार उसे एक नाटक के केवल पात्रों के नामों के आधार पर उसके विषय का पता लगाना था। नाटक जब नीरस और निरर्थक होता था, उसमे कोई भी चीज़ नयी नही होती थी, तब इस खेल मे बडा आनन्द आता था। मशीन एकदम शुद्ध शुद्ध रूप से बता देती थी कि कौन पात्र बुरा था, कौन अच्छा, किस स्थल पर सहायक लेक्चरर ने युवती विद्यार्थिनी के साथ धोखा किया था और फिर किस समय उदार प्रोफेसर के हस्तक्षेप की मदद से अन्त मे किस प्रकार सब कुछ ठीक हो गया था

"फिर—अकादिमीशियन ने मुझे ऐसा ही बतलाया था—इलेक्ट्रोनिक कम्प्यूटर (विद्युत गणक) मे एक और भी अत्यन्त मूल्यवान गुण है। एक सैकिण्ड के अन्दर लाखो कार्यों को वह कर सकता है और जल्दी ही प्रति-सैकिण्ड १० लाख कार्य तक वह अंजाम देने लगेगा। एब्जाशन (रेचन) की क्रिया, वैरियेशन (फेर फार) की विधि, तथा भारी संख्या मे अनेक अन्य कृत्यो का, करोडो अरबो कृत्यो का उपयोग करके वह किसी भी गुप्त कोड (सांकेतिक भाषा) का बहुत ही थोडे समय के अन्दर अर्थ प्रकट कर सकता है। अकादिमीशियन के कथनानुसार मिस्र की चित्र-लिपियो अथवा प्राचीन कीलाक्षरो को (स्फान लिपि को) इलेक्ट्रोनिक कम्प्यूटर (विद्युत-गणक) पिछली शताब्दी के वैज्ञानिको की अपेक्षा कही अधिक तेज़ी से पढ सकता है।

"जैसा कि आप स्वयम् सोच सकते हैं, यही तो वह चीज़ थी जिसकी मैं प्रतीक्षा कर रहा था!

"परीक्षा करने के लिए अकादिमीशियन को मैंने उस विचित्र आगन्तुक और उसकी पाण्डुलिपि के बारे मे बतलाया। वे फौरन उत्तारा

मारकर हँसने लग। उनकी छुतही हँसी से मुझे भी हँसी आने लगी, किन्तु मैं एकदम परेशानी मे पड गया। इसलिए थाडो देर तक मैंने अपना सारा ध्यान मोटर के चलाने में ही लगाय रखा। अब तक हम बोल्शाया कालूज्स्काया स्ट्रीट मे पहुँच गये थे और उनके उतरने का वक्त आ गया था। जब वे उतरे तो मुझसे हाथ मिलाने क लिए कार के दरवाजे से उन्होंने अपना हाथ बढाया। उनकी आँखा म एक प्रकार की शरारत भरी हुई थी।

"उन्होंने कहा, 'थोडा खतरा है, लेकिन हम आजमायश कर सकते है। हमारे पास एक परीक्षण मशीन है। रात मे उसका इस्तेमाल नही होता। मेरे नौजवान साथियो को अगर तुम समझाकर राजी कर लो तो व उत्साहपूवक तुम्हारी मदद करेंगे। और तब उसके प्रथम कुछ पृष्ठो का अथ निकालने की हम कोशिश कर सकते हैं।'

"और पाण्डुलिपि के बाकी पृष्ठा का क्या होगा ?' मैंने पूछा।

"उनकी छुतैली हँसी फिर गूँज उठी।

"उनका पढ़ा जाना अगर जरा भी सम्भव है तो '

"युवा अकादिमीशियन जिन्हे शतरज की समस्याओ, गणित की पहेलियो तथा नाटकों से प्रेम था, फिर जोर से हँसन लग। उन्हान सुझाव रखा था कि उनके अन्य युवा साथियो को समझाने का काम मुझे करना होगा। लेकिन विज्ञानो की अकादमी मे उनके पास जब मैं पहुँचा तो मैंने देखा कि उनके अथात प्रधान ने उन्हें पहले से ही उत्साह से भर दिया था और वे अधीरता स मेरी प्रतीक्षा कर रहे थे। पाण्डुलिपि को देखते ही वे उस पर टूट पडे और उसके पन्ना को उलट-पुलट कर उसकी जाँच-पडताल करने लगे। फौरन ही उनके बीच इस विषय मे जोरो की बहस छिड गयी कि उसको पढ़ने के लिए मशीन में उन्हें कौन-सा कायक्रम भरना चाहिए।

"उसे पढने के कार्यक्रम का काम कितना मुसीबत भरा था! आप कभी कल्पना नहीं कर सकते कि उसे कितनी बार बदलना पड़ा था।"

"तब फिर उसमें कामयाबी नहीं मिली?" ननायेव ने चिन्तापूर्ण भाव से दरियाफ्त किया।

"उसमें से कुछ नहीं निकला। शोधकार्य करने वाले कई लोग हैरान हो गये। लेकिन अकादिमीशियन उसी तरह हंसते और छेड़छाड़ करते रहे। फिर उन्होंने खुद उसमें हाथ लगाया और उसे पढने के लिए एक दूसरा कार्यक्रम तैयार किया।"

"और तब क्या हुआ?"

'महीनों बीतते गये और—क्या आप यकीन करेंगे कि अकादिमीशियन बराबर यही कहते रहे कि हम कोशिश करते जाना चाहिए। अगर सिर्फ हम जमकर कोशिश करते जायेंगे—वे कहते—तो नगर की रात की रोशनियां तक को साइबरनेटिक कम्प्यूटर (विद्युत-गणक) से हम एक कविता के रूप में पढवाने में कामयाब हो जायेंगे! मैं नहीं जानता कि इसका कारण क्या था, आया उसका सम्बंध प्राथिकता के सिद्धान्त (theory of probability) की विचित्र विशेषताओं से था अथवा किसी और चीज से था, लेकिन एक दिन अचानक हमने देखा कि मशीन में से कुछ निकलने लगा था! अकादिमीशियन ने अब छेड़-छाड़ करना बन्द कर दिया था, उल्टे वे गुस्सा हो रहे थे तथा और भी अधिक जोरों से प्रयत्न करने की मांग करने लगे थे। सारी रात के साथ-साथ मशीन से सारे दिन भी अब काम लिया जाने लगा। एक बांध में से छनकर निकलने वाले पानी से सम्बंधित हिसाब किताब के सिलसिले में कुछ देर हो गयी थी। उसको लेकर किसी ने झगड़ा शुरू कर दिया था। हम सब अत्यन्त उत्तेजित दशा में थे। उसी दशा में

पहले युक्तिपूर्ण सिद्ध हो चुकी तमाम धारणाओं को हमने जोड़ा और तब, और भी अधिक आत्म विश्वास के साथ, मशीन के अन्दर एक नया कार्यक्रम लगा दिया।'

उत्तेजना के कारण नतायव ज़ोर-ज़ोर से साँस ले रहा था। उसी दशा में किंचित हकलाते हुए उसने पूछा, "और फिर उस पढ़ने में आप कामयाब हो गये ?"

"जी, हाँ, पहले कुछ पृष्ठों का।"

"और, तब फिर क्या हुआ ? जल्दी बताइए, अब हम और अधिक सताना बन्द कीजिए।"

"हाँ, इलेक्ट्रोनिक कम्प्यूटर ने—जो मानव मस्तिष्क की क्षमता को उसी प्रकार बढ़ा देता है जिस प्रकार कि भाप से चलने वाला एक्सकेवेटर (फावड़ा) मनुष्य की मांस-पेशियों की शक्ति में वृद्धि कर देता है—उस पाण्डुलिपि के पहले कुछ पृष्ठ पढ़े। वह एक डायरी थी जिसे मंगलवासी ने यहाँ पृथ्वी पर, हर रोज़ लिखा था। यह मंगलवासी, १९०८ के वर्ष में, अत्यन्त दुखान्त परिस्थितियों के अन्तर्गत टैगा में पीछे छूट गया था

'अब आप स्वयं मेरे मानसिक उद्वेग का अनुमान लगा सकते हैं। सूखे रेगिस्तानों की एक दूसरी दुनिया के प्राणी की आँखों से मैंने हरे-भरे, अनगिनत पेड़-पौधों के साथ, स्वयम् अपने ग्रह के उदात्त और अतुलित सौंदर्य के दर्शन किये। हमारे पेड़-पौधों की अगम्य विविधता ने हमारे विचित्र आगन्तुक की कल्पना को विस्मय से भर दिया था। फिर उसी की आँखों से मैंने अपने ग्रह के उस विशाल प्राणी-जगत को देखा जो, अनेकों छोटी छोटी, स्वतंत्र जीवन धाराओं के माध्यम से, विकसित हुआ है। इनमें से प्रत्येक का सौन्दर्य स्वयम् अपने ढंग से पूर्ण है। और इन सब के शिखर पर खड़ा है—मानव ! वह मानव जिसने प्रकृति को

जान लिया है, उसके रहस्यों को समझना सीख लिया है। और फिर, इससे भी बड़ी बात यह थी कि, दूसरे ग्रह से आने वाला वह मुसाफिर इस मनुष्य से मिला था।

"इस सम्मिलन से उसे कितना विस्मय हुआ होगा! पृथ्वी के प्राणी उसी के समान थे, सुदूर मंगल के उस निवासी के ही समान। इसका अर्थ हुआ कि विकास की सर्वोच्च युक्तिमूलकता (rationality) की परिधि काफी संकुचित है। प्रबुद्ध प्राणियों के अस्तित्व के लिए, वह केवल एक ही जैसे स्वरूपों को चुन सकती है! उसने लिखा था कि पृथ्वी में इन प्राणियों में, लोगों में, सोचने की क्षमता है और वे अपने विचारों का आदान प्रदान करते हैं, यद्यपि उनके इस आदान प्रदान की विधि विचित्र है। उसके लिए वे हवा के कम्पनों का, ध्वनि का इस्तेमाल करते हैं! इसके द्वारा न केवल अपने विचारों को वे प्रेषित कर सकते हैं, दूसरों को बता सकते हैं बल्कि वे उन्हें छिपा भी सकते हैं!

"उसने, दूसरे ग्रह के इस मुसाफिर ने पृथ्वी के लोगों की नकल करने की कोशिश की थी। लोगों को यह बतलाने के लिए कि वह कौन है उसने उन्हीं की तरह की ध्वनियाँ उत्पन्न करने का प्रयास किया था। दरहकीकत, उसने उन्हें यह बतलाया भी था कि वह मंगल का वासी था, जो दुर्योग से यहाँ छूट गया था, लेकिन साइबेरिया के व्यापारियों तथा वहाँ की ग्रामीण पुलिस ने उसे केवल एक विदेशी समझा, और वह भी एक जड़बुद्धि विदेशी, और एक पागलखाने में बन्द कर दिया।

"अन्तरिक्ष से आया हुआ एक मुसाफिर आधी शताब्दी तक लोगों के बीच रहता रहा। रोज उसने अपनी डायरी लिखी। उसकी डायरी के समस्त पृष्ठों को अभी तक हमने नहीं पढ़ा है, लेकिन मैं वादा करता हूँ कि उन सबको पढ़वा कर मैं उन्हें अपने उपन्यास, "मंगल का वासी' में प्रकाशित करूँगा। यह कहानी उस उपन्यास की भूमिका का काम करेगी।

मंगल वासी की डायरी में अपनी दुनिया का हम एक बाहरी आदमी की आँखों से, इन्सानों की एक ऐसी अत्यंत बुद्धिमान तथा प्राचीन जाति के एक प्रतिनिधि की आँखों से देख सकेंगे जो अपने जीर्ण शीर्ण ग्रह पर समाज की उच्चतम् अवस्था में पहुँच गयी है, जिसने विकास की हमारी वर्तमान मंजिल को अपने यहाँ दसियों लाख वर्ष पहले ही तय कर लिया था! मंगलवासी की आँखों के माध्यम से हम स्वयम् अपने जीवन को, अपने को, तथा अपने क्रियाकलापों को देख सकेंगे—और देख सकेंगे—जादू के चश्मों द्वारा उघाड़ कर हमारे सामने रख दिये गये—उन सम्बन्धों के असली स्वरूप को, जो हमारे लोगों के बीच मौजूद हैं! झूठों और पाखण्डों की उस दुनिया को भी हम देखेंगे जो, जब विचार हवा के कम्पनों द्वारा छिपाये नहीं जा सकते, तब जिन्दा नहीं रह सकती लोगों की भावनाओं के वयस्क होते ही इन झूठों और पाखण्डों का तथा उनकी दुनिया का अस्तित्व समाप्त हो जायगा।

"शुरू-शुरू में जब हमसे उसका सम्पर्क हुआ तो हम लोग उसे कैसे लगते थे? और, बाद में, दो विश्व युद्ध के दौरान, जब वह हमारे एक समकालीन की तरह हमारे साथ रहा तब उसे कैसा लगता था? उन लोगों के बारे में उसका क्या खयाल है जो तर्कों का फैसला तर्कों से नहीं, बल्कि खून बहाकर करते हैं, जो अपने वास्ते काम करने के लिए लोगों को बलपूर्वक मजबूर करते हैं, जो कुछ लोगों को सुखी और दूसरों को दुखी बनाये रखते हैं?

"मंगलवासी की डायरी को जब हम पढ़ेंगे तब हम इन सब चीजों का पता चलेगा और मालूम होगा कि बाहर से देखने पर पृथ्वी का जीवन कैसा लगता है!

"फिर, डायरी के अन्तिम पृष्ठों में, हमें पता चलेगा कि इस देश में, जहाँ के लोगों ने ऐसे समाज की नींव डालनी शुरू कर दी है जिसका वह अभ्यस्त है, आने के लिए हमेशा से वह कितना अधिक उत्सुक तथा

व्यग्र था। हम पता चलेगा कि, लोगो के साथ रहने के बाद, उनके सम्बध मे अपनी राय उसने कैसे बदल दी थी। हमारी सस्कृति के वेगवान विकास ने उसके अन्दर उत्कट प्रशसा की भावना भर दी थी। यहाँ एक शताब्दी के अन्दर इतिहास की एक पूरी मजिल तय कर ली गयी है—एक ऐसी मजिल की जिसे तय करने के लिए मगल पर दसियो लाख वर्षों की जरूरत हुई थी। पृथ्वी के प्राणी स्वयम् उसकी जाति के प्राणियो की अपेक्षा अधिक सफल तथा उद्यमी है। इसलिए, मगल के इस वासी को आशा है कि एक न एक दिन ये लोग उसे उसके ऊबड-खाबड, किन्तु प्रिय ग्रह—मगल पर वापिस पहुँचा देंगे! वह उसी दिन का स्वप्न देख रहा है। वापिस जाते समय अपने साथ वह उस अक्षय, जीवन-दायिनी ऊर्जा को भी ले जाना चाहता है जो हमारे लोगो के अन्दर फटी पड रही है, उस ऊर्जा को जो नष्ट होते हुए मगल के जीवन को दसियो लाख वर्षों का और वरदान दे देगी!

"उसकी डायरी को हम अवश्य पढ़ेंगे। हमारी पृथ्वी पर उसका जीवन कैसा था इसके विषय मे उससे जानकारी हम प्राप्त करेंगे। हम समझने की कोशिश करेंगे कि वह किस प्रकार का आदमी था—बल्कि, यो कहना चाहिए कि वह किस प्रकार का मगलवासी था!

'हाँ, उसके साथ दुबारा मिलने की सम्भावना के विचार से मैं रोमाचित हो उठता हूँ। अगर हम खयाल करें कि हमारी बगल मे, हमारे ही समीप कोई ऐसा प्राणी मौजूद है जो, एक तरह से, हमारे भविष्य मे हमारे पास आ गया है और स्वयम् हमारी ही इच्छा आकाक्षाओ के नियमो की कसौटी पर हमारी परीक्षा कर रहा है—तो क्या हम सभी के अन्दर इसी तरह की पुलक न पैदा हो जायगी? हम नहीं चाहते कि, क्षण भर के लिए भी, किसी चीज के लिए वह हमारी निन्दा करे।

'और मेरी कहानी का यही अन्त है!

मैं नहीं उसकी पहचान बता... डेन्वेर के...
चाहता हूँ।

मैं पालन करता हूँ कि आप उसे जरूर पढ़ सकें, ... इस्तेमाल किया और तभी मुझे ध्यान किसी चीज का ... लगी। 'जरा ठहरिए। मेरा ख्याल है कि हमें ... तक ... कि आप सारी मेरी कहानी पर विश्वास नहीं करेंगे।'

ननावत किंचित् कुतूहल भाव से मुस्कराता और ... मेरी तरफ अंगुली से इशारा करते हुए कहा,

'अगर हम लोग दार्जिलिंग वापस पर न गये तो मैं बहुत चाहूँगा कि हवाई क्लब में जिस दिन आप ड्यूटी पर हों, उस दिन वहीं आकर मैं उसे देखूँ।"

जहाज के सलून में एकदम शोर-गुल मचने लगा। लोगों ने मुझे घेर लिया और मुझसे कहने लगे कि मंगलवासी से अगर कभी फिर मेरी मुलाकात हो तो उसके बारे में मैं जरूर लिखूँ।

"निस्सन्देह! उसके बारे में मैं अवश्य लिखूँगा," मैंने वादा किया। मैं एक उपन्यास लिखूँगा।"

किसी ने क्रोध-पूर्वक पूछा, "क्यों, उपन्यास क्यों? आप तो मंगलवासी के बारे में लिखेंगे।"

मैं बाहर डेक पर निकल गया। उत्तर ... प्रदेश में ... सौन्दर्य अवर्णनीय लगता है। किसी भी स्थान पर ... मालूम होते जितने वे वहीं मालूम होते हैं।

ननावत मेरा इन्तजार कर रहा था।

एक लाल-से सितारे की तरफ इशारा करते हुए, उसने कहा, 'वह है, मंगल।"

उस अनजानी दुनिया के प्रकाश को देखते-देखते मैं सोचने लग गया।

"देखिए, अगर वह यहाँ होता, हमारे पास, तो कभी कभी हम लोगों को बहुत शर्मिन्दा महसूस करना पड़ता," नौ चालन अफसर ने कहा।

"लेकिन क्या आप जानते हैं कि मैंने उसके बारे में यह कहानी क्यों कही? क्योंकि, हमारी यात्रा के दौरान में अगर वह हमारे साथ इस सैलून में होता, और इस कहानी के लोगों से मिलता और उन्हें बातें करते सुनता, तो उसकी मौजूदगी में हमने कभी शर्मिन्दगी न महसूस की होती।'

"क्या आप सचमुच ऐसा सोचते हैं?" नेतायेव ने गम्भीरतापूर्वक पूछा।

बहुत देर तक हम लोगों के बीच कोई बातचीत न हुई। फिर नेतायेव ने ही कहा,

"यह तो बताइए, आपका क्या खयाल है? आपके उस अन्तरिक्ष चालन विभाग में वे लोग मेरा खयाल रखेंगे? नौ चालन को नक्षत्र बहुत प्रिय होते हैं। मैं अन्तरिक्ष में भी नौ-चालन का काम भलीभाँति कर सकता हूँ।"

हमने अन्दर लौटने का फ़ैसला किया।

लेकिन वहाँ कोई और गम हुआ मेरा इन्तज़ार कर रहा था।

पायलट ! वह मेरे साथ अलहदा एक गुप्त बात करना चाहता था। किन्तु उसके रहस्य को मैं खोल दूगा। उसकी बात सुनने के बाद मैंने उससे मजबूती से हाथ मिलाया।

आखिरकार, उसी जैसे आदमी तो पहले अन्तरिक्ष-याना का सचालन करेंगे !

"ज्योर्जी सीडोव" तारो के नीचे अपने निर्धारित मार्ग पर वेलौस चला जा रहा था।

●

जोर्जी गुरेविच

जोर्जी गुरेविच (जन्म १९१७) की शिक्षा दीक्षा एक इमारती इन्जीनियर के रूप मे हुई थी। किन्तु वे बन गये कहानी लेखक। उनकी वैज्ञानिक कहानियों की बड़ी धूम है। अब तक उनकी कई पुस्तकें निकल चुकी हैं।



जलवायु सम्बंधी परिवर्तन, जीवशास्त्र की समस्याएँ, तारक-लोकों की यात्राएँ, आयनोस्फियर (पृथ्वी के धरातल से ३५ से ४५ मील तक की ऊँचाई से ऊपर के वायु मंडलीय भाग को आयनोस्फियर कहा जाता है) का मानव द्वारा उपयोग—यही गुरेविच की रचनाओं के विषय हैं। ये सारे जटिल विषय उनकी रचनाओं मे सजीव और तिलिस्मी उपन्यासों की तरह रोचक हो उठे हैं।

इस संग्रह म उनकी रचना "काला सूर्य" दी जा रही है। इस म ब्रह्माण्ड की उस अनजान और अनोखी दुनिया की कहानी है जिसके द्वार मानव के लिए अभी खुल रहे हैं। इस कहानी मे अंधकार, अथवा अर्द्ध-अंधकार मे डूबी उस दुनिया का निमंत्रण भी है और मानव-मस्तिष्क की सृजनात्मक शक्तियों को उसकी चुनौती भी।

लेखक
जी० गुरेविच

काला सूर्य

नक्षत्रों के चमकते सागर पर एक काला वृत्त तैर रहा है—यह धातु की एक ऐसी थाली की तरह लगता है जिसकी कोरें कुहासे में डूबी हुई हैं। उसके एक छोर पर तारे ढक जाते हैं और, आध पल बाद, दूसरे छोर पर वे फिर निकल आते हैं! ये सारी नक्षत्र-मालाएं (Constellations) सुपरिचित हैं। अन्तर बस इतना ही है कि यहाँ वे अधिक जगमग दिखलायी देती हैं और उनकी चित्राकृति अधिक संश्लिष्ट तथा सूक्ष्म मालूम होती है। उनमें से केवल एक के अंदर—नभोमीन (Flying Fish) के अन्दर—एक अतिरिक्त तारा है। यह आकाश का सबसे उज्ज्वल, सबसे सुन्दर तारा है—यह हमारा सूर्य है।

किन्तु हम सूर्य को नहीं निहार रहे हैं, न नक्षत्र लोक की गुलकारी की सूक्ष्म चित्रावली का ही इस समय आनन्द ले रहे हैं। हमारी आँखें उस काले वृत्त पर लगी हुई हैं—यद्यपि, गहरे घटाटोप के अन्दर में, उसके अन्दर की कोई चीज़ दिखलायी नहीं दे रही है, न नंगी आँखों से, न दूरबीन से। हम ६ हैं—अन्तरिक्ष-यान के कर्मियों की हमारी पूरी टुकड़ी है। इसमें कार्पेनिन हैं—अभियान के वृद्ध नेता, जिन्हें हम चाचा कहते हैं, पति और पत्नी कारेन्तसाव हैं, कुन्डाकोव हैं—ये भी पति-पत्नी हैं, और खुद मैं हूँ—राबी ल्यागिन।

"तो फिर क्या वापिस लौट चला जाय ?" चारुगिन बाबा ने पूछा।

"इसके अतिरिक्त और कोई मार्ग नही है," चीफ इजीनियर तोल्या वारेन्नसोव ने उत्तर दिया। "यह राकेट केवल सूखी भूमि पर उतरने योग्य बनाया गया है और यहाँ केवल जल ही जल है, सागर के अतिरिक्त और कुछ नही है। हमारे पास हाथ की खरादें है–वे भी घर की बनी हुई और काम करने के लिए छै आदमी हैं—सबके सब अद्ध-कुशल। कुछ करने की कोशिश करते हुए लगभग एक वर्ष तक हम इधर उधर लटके रहेगे और फिर जल मे उतरने का प्रयास करते समय डूब जायेंगे। यह जोखिम हम नही उठा सकते।"

"इससे भी बडी बात यह है कि हमारे ईंधन की सप्लाई खत्म हो रही है," रहीम युल्डाशेव ने कहा। "हमने आपके साथ हिसाब लगाया था नीचे उतरने का अर्थ होता है—७ वर्ष की देरी। ७ और वर्षों के लिए हमारे पास काफी हवा नही है। और फिर अब हम युवा भी नही है।"

आयशा ने उसकी बाँह पकड कर झिझोड दी। रहीम भूल गया था कि बाबा के सामने अवस्था का उल्लेख करना शिष्टतापूर्ण नही है। वृद्ध बाबा अभी ही ९० वर्ष से ऊपर के हो चुके है।

"आखिर, फिर हम खाली हाथ तो नही लौट जायेंगे," गाल्या वारेन्नसोवा ने कहा।

तब चारुगिन ने बीच मे बोलते हुए कहा,

"फिर केवल एक ही मार्ग है।"

हैरान होकर हम अपने नेता की ओर देखने लगे। उनसे अर्थ को सबसे पहले समझने वाली आयशा थी।

वह चिल्लायी, "नहीं, ऐसा कभी नहीं होगा!"

"जीवन का हिसाब कर्मों से लगाया जाता है, शब्दों से नहीं।" —इन शब्दों का उपयोग करते हुए बाबा को सवप्रथम मैंने १७ वर्ष पहले सुना था। पहले पहल जब मैं उनके पास गया था उस दिन की मुझे खूब अच्छी तरह याद है। पतझड बीत रहा था। एक नम, हाड़ तक को कपा वाली हवा बह रही थी। जेवी जहाज गुलाबी घास व मदाना दूबे वन्य और सुदूर्वीनेव सागर की सुरमई लहरों के ऊपर से उड़ाना हुआ मुझे लिये चला जा रहा था। तभी मेरी दृष्टि चिकनी मिट्टी की ढाल पर खड़े एक चमकीले बाड़े पर पड़ी। वहीं पर हरी, काँच की छत का एक छोटा-सा मकान था। उसके द्वार पर कृत्रिम पशमीन का गम कोट पहने हुए एक बूढ़ा आदमी खड़ा था। उसके घन सफेद बाल सफेदी मिश्रित भूरे भूरे लगते थे, जैसे कि वे भी कृत्रिम रहे हों। बूढ़े बाबा को मैं उनके एक चित्र से पहचान गया। जेवी जहाज के स्विच को मैंने बन्द कर दिया और किंचित फूहड़पन से उसके पगों के पास, सीधे एक गड्ढे में उतर गया।

आओ, और पहले अपने कपड़े बदल लो। उसके बाद तुम मुझे अपना परिचय दे सकते हो," उन्होंने मुझे हाथ से सहारा देते हुए कहा।

अन्तरिक्ष के विख्यात कैप्टन, युग की प्रथम उड़ान के एक चालक वहस्पति के प्रथम अभियान के स्पूतनिक कमाण्डर, शनि के सर्वप्रथम यात्री, और वरुण, अग्नि, आदि पर सवप्रथम पग रखने वाले, पावेल एलेक्ज़ाण्ड्रोविच बारनिन से साथ मेरा प्रथम परिचय इसी प्रकार हुआ था। यहीं सुदूर्वीनेव सागर के तट पर, अपने गौरवशाली जीवन के अन्तिम वर्ष वे विश्रामपूर्वक बिता रहे थे।

मेरा सुद का भी नक्षत्रों में सम्बन्ध रहा था, यानी अन्तरिक्ष में। मुझे निःसन्देह इन्जीनियर की डिग्री थी और पूर्वी अर्जेंटीना के

क्लिमजारो पवत पर बने मुख्य अन्तग्रहीय स्टेशन के निमाण काय म मैंन भाग लिया था। कोई विशेषज्ञ अपने को जब किसी अजनबी स्थान म पाता है तो उसे प्रलोभन होता है कि चीजों को उलट-पुलट कर उन्ह अपने अनुकूल बना ले। फिर, मैं युवा था और मेरे अन्दर आत्म विश्वास भरा हुआ था। मैं सौर परिवार के पुर्ननिर्माण की एक योजना तैयार कर रहा था। उस समय, अर्थात २१वी शताब्दी के आरम्भ म, यह बात स्पष्ट हो चुकी थी कि सभी ग्रह मनुष्य के रहने लायक नहीं हैं। वे, लगभग सब के सब, हमारे लिए बेकार थे। इसलिए मेरा प्रस्ताव था कि उन सबको उनके स्थानों से हटाकर इधर-उधर कर दिया जाय। शुक्र और मगल को खीचकर पृथ्वी के वश म ले आया जाय, मगल के लिए एक कृत्रिम वायुमण्डल की व्यवस्था कर दी जाय और शुक्र के वायुमण्डल म से कार्बोनिक अम्ल (carbonic acid) की सफाई कर दी जाय। मैंने यह भी सुझाव रखा था कि शनि, वरुण तथा वारुणी को, वहाँ की गुरुत्व शक्ति को कम करने के लिए, कई भागों म विभाजित कर दिया जाय और, आणुविक विस्फोटों के द्वारा, उनके विभिन्न भागों को अलग-अलग हाँककर सूय के और नजदीक पहुँचा दिया जाय। मेरा प्रस्ताव था कि नरमीन (टिटन) पर अन्वेषकों का एक उपनगर बसा दिया जाय और फिर वहाँ स उन्ह अन्तनक्षत्रीय यात्रा पर भेजा जाय। मेरी गणना के अनुसार नरमीन पडौस के नक्षत्र मण्डलों की परिक्रमा लगभग १,००० वष म पूरी कर ले सकता था। इसके अतिरिक्त, मेरा इरादा था कि बृहस्पति की उच्च गुरुत्व की परिस्थितियों के अन्तगत कुछ बच्चों का निर्माण किया जाय, जिसम कि उनकी कामल अस्थियाँ तथा पेशियाँ मजबूत हो जायें। तब जब वे पृथ्वी पर आयगे तो सब के सब महा बली मनुष्य होंगे।

यह देखकर मुझे अत्यधिक आश्चय होता था कि मेरी इन समस्त भव्य योजनाओं को लोग हमेशा नामजूर कर देते थे। किन्तु मैंने भी कभी हार नहीं मानी। दूसरों के साथ बराबर मैं एक समस्या से दूसरी

मस्का म जाता और उसके दरवाजे खटखटाता रहा तथा प्रमुख विशेषज्ञा से मिलता रहा। इस स्थिति म यह स्वाभाविक था कि मुझ चारुनिन का भी खयाल आये। इसीलिए उड कर उनके पास म कुइबीशेव सागर जा पहुँचा था। उनके पास सहायता के लिए बहुत लोग पहुँचते थ। अन्तरिक्ष म काम करने के स्वप्न देखने वाले नौजवान पुस्तका के लेखक, होनहार वैज्ञानिक, और स्थानीय क्षेत्र के व निवासी जिनका एक प्रतिनिधि के रूप म वे प्रतिनिधित्व करते थे—य सभी सहायता क लिए उनके पास आते थे। उनका नाम अखबारो म भी बराबर मिलता रहता था। "राष्ट्रों की अन्तिम निरस्त्रीकरण सन्धि' पर चारुनिन के ही दस्तखत थे। विश्वशान्ति समारोह के अवसर पर मशीनगनों और मोटरा को गलाने के लिए खुली भट्ठिया की ओर ल जाने वाली पहली रेलगाडी पर भी चीनियो, अमरीकियो और जमनो क साथ चारुनिन ने यात्रा की थी। असन्दिग्ध रूप म, अपने समय के व एक सवप्रमुख व्यक्ति थे।

दूसरे अनक लोगा की तरह उन्होंने भी एक अनुकम्पा भरी तथा अनुग्रहपूण मुस्कराहट के साथ मेरी बातें सुनी।

"रादी ग्रिगोरियविच, तुम्हारा दोष यह है कि तुम समय से बहुत आगे आगे जा रह हो," अन्त मे उन्होंने कहा। "सौर परिवार म हर जगह अपने को बसाने की कोई जरूरत नहीं है। हमारे लिए अभी यहाँ पृथ्वी पर काफी जगह है और यह जगह आरामदेह भी है। तुम्हारे विचारो की ३०० वष के बाद आवश्यकता पडेगी। निस्सन्देह तुम अपने स बहुत आगे देखो, मैं कितना दूरदर्शी हूँ, कितना तीव्र दृष्टिवाला हूँ। पर यह सब व्यर्थ है! जिन समस्याओ का हमारे युग म सम्बन्ध नहीं है उनम जुटने से कोई लाभ नही होता। जब उसकी आवश्यकता होगी और यह सम्भव होगा, तब यहाँ के पुराणपन्थी के साथ भी लोग हाथ म ले लेंगे। और तब व उन सब चीजा को जो आसानी म साथ ला

जिनमें तुम आज इतनी बुरी तरह से उलझे हुए हो।"

बुढऊ से मैं सहमत नहीं हुआ, लेकिन उनकी बात का मैंने बुरा भी नहीं माना। मुझे लगा कि चाहे अपने विचारों में ही क्यों न हो, किन्तु भविष्य में रहना अच्छा और प्रशंसनीय है। इसलिए अपनी योजना के ब्योरों को सुना-सुनाकर पावेल एलक्जेंडोविच को मैं तंग करता गया। मुस्कराते हुए बाबाजी मेरे विचारों की बखिया उधेड़ देते थे। लेकिन, साथ ही साथ, हमेशा वे मुझसे यह भी कहते कि आगे जिस दिन तुम्हें छुट्टी मिले उस दिन फिर मेरे पास आना। सम्भवतः उन्हें मेरी तारुण्य भरी ढिठाई अच्छी लगती थी और देहात का वह बंगला भी काफी एकाकी रहा होगा! गर्मियों के महीनों की बात दूसरी थी। तब उनके नाती, पोते और उनके बच्चे वहाँ भर जाते थे और उनकी बगिया बच्चों की किलकारियों से चहक उठती थी। लेकिन जाड़ों के महीनों में केवल चिट्ठियों और टेलीफोन के वार्तालापों का ही सहारा रह जाता था।

तो पावेल एलक्जेंडोविच मेरी बातों को हमेशा सुना करते थे। बातचीत के बाद फिर वे एक इलेक्ट्रानिक आशुलिपि मशीन (electronic short hand machine) पर अपने प्रसिद्ध संस्मरण लिखाने बैठ जाते थे और मैं उनकी बातें सुना करता था। कोम्सोमोल्स्काया प्राव्दा में इन संस्मरणों का प्रकाशन उस वक्त आरम्भ ही हुआ था। निस्सन्देह उनके आरम्भ की प्रथम कुछ पंक्तियाँ आपको याद होंगी:

"   की तैयारी करने के लिए हमारा अन्वेषक दल उड़कर चन्द्रमा पहुँच गया था   "

मुझे याद है कि उस वक्त मैंने बाबा से कहा था:

पावेल एलक्जेंड्रोविच, आप इस तरह से नहीं शुरू कर सकते। अपने संस्मरणों को लोग अपने बचपन से, अपने जन्म के दिन से, यहाँ तक

कि अपनी बनावटों की सारिका स गुरु करते हैं। और आप हैं जो अपने चौथाई जीवन का मा ही छोड़े दे रह हैं और श्रीगणेश करते हुए यह रह हैं 'हमारा अवपक दल उड़कर' "

पहले-पहल तभी उन्हें मैंने यह कहते सुना था

"राडी, अतरिक्ष मे हम किनेपनों का गणना करने का खुद अपना ढग है। जीवन का हिसाब हम वर्षों मे नही, बल्कि खाजा के रूप म, अन्वपणा के रूप म लगाते हैं। इसीलिए अपने ग्रन्थ को मैंने पहले मुख्य प्रसग की कहानी से आरम्भ किया है।"

"लेकिन पाठक तो इस चीज को जानने मे अवरुचि रखता है कि आप किस प्रकार के आदमी हैं आपका बचपन कैसा था और यहाँ के अन्वपण-काय म आप किस प्रकार आ लग है।"

बाबाजी इस मानने को तयार नही थे।

'तुम्हारा खयाल गलत है, नौजवान! लोगा की दिलचस्पी मुझम नहीं है बल्कि जो मैं करता हूँ उसम है। हर युग का अपना एक प्रिय पात्र होता है। कोई युग नाविकों का सम्मान करता है, दूसरा—ऐरारा, हवाबाजों, आविष्कारका का। इक्कीसवीं शताब्दी के प्रिय पात्र अन्तरिक्ष के हम नौ चालक हैं। हमारी हमेशा याद की जाती है, सबा पहले हमी लोगों को निमत्रण भेजे जाते हैं। हम सबा आग की पंक्ति म बैठने की जगह दी जाती है।'

सस्मरणों के प्रथम खण्ड के परम-लेख म ये शब्द मौजूद हैं। उनम भिन्न शब्दों को भी देखा जा सकता है

'मैं बहुत सौभाग्यशाली था कि मेरा जन्म ब्रह्माण्डवेत्ता की महान् यात्राओं के युग के प्रारम्भ काल म हुआ था। मेरे बचपन के वर्ष तथा अन्तरिक्षीय नौ चालन के शैशव के वर्ष एक थे। चन्द्रमा पर मानव

का आधिपत्य मे रेजवान होने से पहले ही स्थापित हो गया था। एक युवक के रूप मे मैं शुक्र के साथ साक्षात्कार करने का स्वप्न देखा करता था, प्रौढ होने पर वृहस्पति से मिलन की कामना थी और एक बूढे के रूप मे मैं वृद्ध वरुण से मिलना चाहता था। तकनीकी प्रगति ने मेरे स्वप्नो को साकार बना दिया था। एक शताब्दी से भी कम समय म मेरे जीवन काल म ही, चाल (speed) ८ से बढकर ८०० किलोमीटर प्रति सैकिण्ड हो गयी थी। ब्रह्माण्ड मे मानव के आधिपत्य क्षेत्र का बेहद विस्तार हो गया था। पिछली शताब्दी के मध्य काल म उसके पास केवल एक ग्रह था—केवल ६,३०० किलोमीटर की त्रिज्या (radius) का एक क्षेत्र, आज उसके पास ४ अरब किलोमीटर की त्रिज्या का विराट क्षेत्र है। हम अधिक सबल तथा अधिक बुद्धिमान हो गये हैं, दूसरी दुनियाओ के साथ अपनी दुनिया की तुलना करके भौतिकी, खगोल विद्या, भूगर्भशास्त्र को हमने और समृद्ध बना लिया है। केवल एक स्वप्न हमारा नही पूरा हुआ है अन्य प्रबुद्ध प्राणियो से हमारी मुलाकात नहीं हो सकी है। हम थके नही हैं, किन्तु और आगे जा सकना अब इस समय सम्भव नही है। सौर परिवार की सीमा हमने तय कर ली है, तमाम ग्रहो की हम यात्रा कर आये हैं, हमारे सामने अब अन्तनक्षत्रीय अवकाश (inter stellar space) है। चार प्रकाश घटा का फासला तय कर लिया गया है, किन्तु हमसे निकटतम नक्षत्र की भी दूरी चार प्रकाश वर्ष की है। हमारी चाल इस समय ८०० किलोमीटर प्रति सैकिण्ड की है, पर अब हम इससे १०० गुनी अधिक तेज चाल की जरूरत है। स्पष्ट है कि दूसरे सूर्यो पर हम जल्दी नहीं पहुँच सकेंगे। कुछ लोग कहते हैं कि उनके पास तक हम कभी नही पहुँच सकेंगे। फोटान (भाणु) के राकेटो की योजना तथा इससे भी अधिक साहसी योजनाएँ अभी तक मात्र योजनाएँ ही हैं। वास्तविकता की मार्ग के युग म सम्भवत ३ या ४ शताब्दियो का अब व्यवधान पड जायगा।

यात्रियों को लोग भिन्न भिन्न कारणों से यात्राएँ करते थे। उदाहरण के लिए, एक इंजीनियर के रूप में, मैं इसलिए उनकी ओर आकर्षित हुआ था कि मैं चाहता था कि अन्तर्ग्रहीय पैमाने पर एक सर्वथा नयी तरह का निर्माण-कार्य किया जाय और पावेल पारदिन उनकी तरफ इसलिए आकर्षित हुए थे कि उन्हें आशा थी कि वे अन्य कुछ प्रबुद्ध प्राणियों की खोज कर सकेंगे। उनसे मिलने की आशा में वे नयी दुनियाओं की तलाश करते हुए दूर-दूर तक उड़ते फिरे थे। पर अब जैसे हम एक अंधगली में पहुँच गये हैं। खोजने के लिए अब और कुछ नहीं रह गया है। और वे अन्तरिक्ष के महज एक चालक (pilot) नहीं बन जाना चाहते थे। शान्ति, सम्मान, नाती-पोते, स्मृतियाँ, देहात का घर—उनके पास सब कुछ था और संभव था कि मेरे दिमाग में काले सूर्यों की सम्भावना का विचार यदि अचानक न कौंध गया होता तो दुनिया की चहल पहल से दूर उसी पिछड़े हुए स्थान में उनके जीवन का अन्त भी हो जाता।

वास्तव में, किसी हद तक, इस विचार का सुझाव मुझे उन्हीं ने दिया था। इस विचार को वे किसी तरह स्वीकार ही नहीं कर पाते थे कि उड़कर जाने के लिए अब और कोई भी स्थान शेष नहीं रह गया है।

मेरा तर्क क्या था?

सौर परिवार की सीमाओं का फ़ासला प्रकाश के ४ घंटे के बराबर है और सबसे नज़दीक के तारे का फ़ासला—४ प्रकाश वर्ष के बराबर। बीच में शून्य का अथाह सागर है। परन्तु क्या यह निश्चित है कि वहाँ सब शून्य ही शून्य है? हम केवल यह जानते हैं कि वहाँ चमकते तारे नहीं हैं, होते तो वे दिखलायी पड़ते। किन्तु हो सकता है कि वहाँ पर प्रकाशमान नहीं बल्कि अंधकार-पूर्ण पिण्ड हों। हो सकता है कि, पृथ्वी के हमारे अधिकांश नक्शों की ही तरह खगोलीय नक्शों में भी "सफ़ेद-

लोक की केवल राजधानियों को ही दिखलाया गया हो और नक्षत्रों के गाँवों को छोड़ दिया गया हो।

उदाहरण के लिए, १५ प्रकाश वर्षों के व्यास (diameter) के प्रदेश को ले लीजिए। उसमें ४ सूर्य हैं—हमारा सूर्य, प्रथम प्रदीप (Alpha Centaurus), लुब्धक (Sirius) तथा लघु लुब्धक दरअसल, हम कह सकते हैं कि इस प्रदेश के अन्दर ७ सूर्य हैं, क्योंकि, हमारे अपने सूर्य को छोड़कर, शेष सभी युग्म तारे (double stars) हैं।

किन्तु अवकाश के इसी प्रदेश के अंदर कोड़ियों दूसरे निष्प्रभ, धुंधले सितारे हैं—लाल-बौने (red dwarfs), उप-बौने (sub dwarfs) और श्वेत बौने (white dwarfs) सितारे हैं। ये वे सितारे हैं जो हमारे नजदीक हैं। किन्तु उनमें से लगभग सब ये सब ऐसे हैं जो नंगी आँख से नहीं दिखलायी देते। वे हमारे इतने पास हैं—इस बात का भी पता हमें बीसवीं शताब्दी में ही चला था।

इस प्रकार, अलग-थलग ऐसे कुछ तारे हैं जिन्हें हम खाली आँख से ही देख सकते हैं, और दजनों दूसरे वे तारे हैं जिन्हें दूरबीन के जरिए देखा जा सकता है। किन्तु उसी अवकाश क्षेत्र के अन्दर क्या और भी ऐसे सौर्य-पिण्ड नहीं हो सकते जिन्हें दूरबीन न देख पायी हो? निश्चय ही, १ अरब निष्प्रभ धुंधले नक्षत्रों में से १०० छोटे-छोटे उन नक्षत्रों को चुन सकना, जो हमारे नजदीक हैं, बहुत ही कठिन काम है।

और तापमानों में भी यही निश्चय निराला दिखलायी देता है।

तारों की दुनिया का नियम है तारा जितना बड़ा होता है, वह उतना ही अधिक गर्म होता है, वह जितना छोटा होता है—उतना ही

अधिक उग्र होता है। सूर्य की तुलना में लाल-बौने १० गुना छोटे हैं। इसलिए उनका ताप भी २,००० से ३,००० डिग्री सेण्टीग्रेड है। मान लीजिए कि ऐसे पिण्ड मौजूद हैं जो लाल-बौनों से भी १० गुना छोटे हैं। तो उनका ताप क्या होगा? सम्भवतः १,०   , ६००, ३   , अथवा १०० डिग्री सेण्टीग्रेड! उनमें जो सबसे बड़ा है उसकी दीप्ति (luminosity) अकिंचन होगी, और दूसरों की तो—जरा भी नहीं। ६०० से कम ताप के पिण्डों से केवल अदृश्य अवरक्त किरण ही निकलती है। अदृश्य, तिरालोक वाले सूर्य और उनके ग्रहों के बारे, जिनमें वह है जिनमें हमारी विशेष दिलचस्पी है। ये यह पत्थर से ...ी हैं। उनके तल का तापमान शून्य से ३० डिग्री सण्टीग्रेड ऊपर है।

इनका पता पहले क्यों नहीं लगा था? अगर इसका कारण यह है कि उनको किसी ने ढूंढा नहीं था, और मगर यह कि उनका पता पाना मुश्किल था। आमतौर से, तिरालोक वाले ग्रहों को पृथ्वी से देख पाना असम्भव है क्योंकि हमारी पृथ्वी अवरक्त प्रकाश का विकिरण करती रहती है, हम लोग अवरक्त ज्वाला के एक सागर के बीचोबीच रहते हैं। यह मुश्किल से ही सम्भव है कि ज्वाला के बीचोबीच रहते हुए भी कोई सुदूर के किसी ठण्डे नक्षत्र के मद्धिम प्रकाश को देख ले।

इस तरह अपने विचारों को मैं भारी बनारेना ही ... एस्ट्रोफिज़िक्स के सामने रख दी। लोगों की ओर से पुष्प... ... देखा कि इस बात को गुजरे बड़े बाबा के पहले से अधिक ... पुरानी मुस्कान गायब हो गयी थी। उसकी जगह भौंह ... लिया गयी थी। मेरा खयाल था कि मानी बातों को ... दग से उनके सामने रख रहा था। फिर क्या कोई और ... आपत्ति हो सकती थी? बहरहाल, किसी तरह, मैं अपनी बात अन्त तक कहता चला गया, और फिर उनके उत्तर की प्रतीक्षा करने लगा।

"यह बात बहुत दिलचस्प है, राडी"—बाबा ने शुरू किया। "अन्दर से गम एक ग्रह, एक पूरी उल्टी दुनिया! और हर चीज दुनिया से भिन्न। वहाँ पर जीवन होगा, ठीक है न? निस्सन्देह, अगर वहाँ प्रकाश नहीं है तो वनस्पति भी नहीं हो सकती परन्तु, प्राणि-जीवन? पृथ्वी पर ऐसे प्राणी भी हैं जो अंधेरे में ही रहते हैं, गुफाओं में और सागर की अतल गहराइयों में। प्राणि-जगत् आमतौर से पेड़ पौधों की दुनिया से पुराना है। किन्तु उसके उच्चतर स्वरूप—उनकी क्या स्थिति है? शाश्वत अन्धकार में क्या उच्चतर स्वरूप पैदा हो सकते हैं?"

फिर वे ठठाकर हँस पड़े और मेरी पीठ ठोंकते हुए बोले,

"राडी लगता है कि तुम्हें और मुझे फिर बाह्य अवकाश की यात्रा पर निकलना होगा! क्या तुम अपने उप सूर्यों की तलाश के लिए उड़कर चलने के लिए तैयार हो?"

"और पावेल एलेक्जेंडोविच, आप?"

उन्होंने प्रश्न को अपने ही ढंग से समझा और रूठते हुए बोले,

"क्या, मैं क्या नहीं? मैं अभी बूढ़ा तो नहीं हुआ हूँ। मैं अभी ८० वर्ष का भी नहीं हूँ। और हमारे आँकड़े कहते हैं कि प्रौढ़ावस्था ९२½ वर्ष की उम्र से शुरू होती है।"

२

छ महीने बाद, चन्द्रीय चन्द्र वेधशाला ने जब पहले उप-सूर्य की खोज की घोषणा की तो मैं भी आश्चर्य चकित रह गया था।

पावेल एलेक्जेंडोविच की सहायता न मिली होती, तो यह सब बहुत बाद में होता। पर उन्होंने अपने तमाम कामकाज को बन्द कर

दिया था, मनोरंजन के अपने समस्त कार्यक्रमों को उन्होंने तिलांजलि दे दी थी। अपने हरे जंगल के हरे भरे फूल पौधों को उन्होंने उखाड़ दिया था और उसे एक कर्मशाला में बदल दिया था। संस्मरणों का लिखना भी उन्होंने एक वाक्य के बीच में ही रोक दिया था—अपने अधूरे वाक्य तक को उन्होंने पूरा नहीं किया था। इलेक्ट्रानिक आशुलिपि मशीन के पास पत्र लिखने के अलावा और कोई काम नहीं रह गया था। वैज्ञानिक तथा सार्वजनिक संस्थाओं को, अन्तरिक्ष में दिलचस्पी रखने वाले पुराने मित्रों, साथियों, शिष्यों को, चाँद, मंगल, यूनान (Yunon) तथा आइयो (Io) को, दूर के अन्तरिक्ष-यात्रियों को वह बराबर पत्र पर पत्र लिख रही थी। इन सब पत्रों में एक ही चीज़ थी—विश्वासोत्पादक, आग्रह-पूर्ण, उत्साह भरी यह दरख्वास्त कि ध्वं काले सूर्यों की तलाश करें।

वृद्ध बाबा की शक्ति के सामने मुझे सिर झुकाना पड़ा। ऐसा मालूम होता था जैसे कि देहात के अपने घर में बैठे हुए वे केवल सबेरे की ही प्रतीक्षा कर रहे थे! कदाचित् सचमुच वे प्रतीक्षा ही कर रहे थे। और तब—अज्ञात संसारों का पता लगाने का महान् लक्ष्य उनकी आँखों में कौंध गया। वे एकदम बदल गये, उतावले हो उठे! तो फिर वे पुनः अन्तरिक्ष की यात्रा पर जा सकते थे, वे नयी चीज़ों की तलाश कर सकते थे, नयी खोजें कर सकते थे!

उप-सूर्य अभिजित् (Lyra), धनुष् (Sagittarius), लघु सप्तर्षि (Little Bear), तोकन (Tucana), दूरदर्शक (Telescopium) का नक्षत्र मालाओं में मिलते थे। और उनमें से सबसे नज़दीक का तथा हमारे लिए सबसे मनोरंजक उप-सूर्य—अंगार, यानी परमार ताप के मारक मण्डल में था। उसके तल का ताप शून्य से १०° सेन्टीग्रेड ऊपर था, उसका प्रकाश 'केवल' ७ प्रकाश दिन था। यानी वरुण की तुलना में वह 'केवल' ४० गुना अधिक दूरी पर था। अणुशक्ति-यान इस फासले को १४ वर्षों में तय कर सकता था।

साल भर बाद यान रवाना हो गया। उसमे थे वारेन्तसोव दम्पति, गुल्डशेव दम्पति, पावेल एलेक्ज़ेंडोविच और मैं। इस बात को सिर्फ मैं ही जानता हूँ कि यान के चालको की सूची मे स्वयम् अपने को और मुझे शामिल कराने के लिए अधिकारियो के पास बाबा को कितना प्रयत्न करना पडा था। उनके सम्बन्ध मे, उनकी उम्र बाधक थी, मेरे सम्बन्ध मे मेरी तरुणाई तथा अनुभव-हीनता।



उडान के आरम्भिक दिन मेरी प्रथम मास्को यात्रा के दिनो के ही समान थे अत्यन्त सम्मोहक। हर चीज़ मे एक जादू दिखलायी देता था, हर चीज़ अच्छी तरह परिचित मालूम होती थी। इस सबके बारे मे मै सैकडो ही बार पढ चुका था और सैकडो ही बार इस सब को सिनेमा के पर्दे पर भी देख चुका था। ऊँचाई से पृथ्वी एक ऐसे विशाल गोले के समान दिखलायी देती है जिसकी आकाश के उस पार तक छाया पडती है। यान के अन्दर पहले चार गुना अधिक गुरुत्व शक्ति का सामना करना पडता है फिर भार-हीनता का अद्भुत चमत्कार देखने को मिलता है। चन्द्रमा की भी एक विचित्र दुनिया है—काली और सफेद। उसके चेहरे पर चेचक जैसे निशान हैं। उसमे सपाट चन्द्र व्यवधान मिलते है, गहरी काली छायाएँ नज़र आती है, गहरे गड्ढे दिखलायी पडते हैं और युगो पुरानी धूल मिलती है। इस सब के बारे मे मैं बार बार पढ चुका था, उसकी कल्पना की थी, और अब मैं उसे प्रत्यक्ष देख रहा था और सुध बुध खोकर विस्मित था। इसके बाद, हमारे दैनिक जीवन मे वे एकरस दिन आये जिनका ज़िक्र करना लेखक अपने वर्णनो मे अक्सर छोड देते हैं। एक छोटा-सा सारा का कमरा—३ मीटर लम्बा, २ मीटर चौडा, झूले की तरह के बिछौने, एक मेज़, एक आल्मारी।

उसकी दीवाल के आगे ज़रा-सा ही बड़ा एक काम करने का कमरा है जिसमें टेलिस्कोप (दूरबीन), नियंत्रण पट्ट, औज़ार, गणक, आदि रखे हुए हैं। उसके और आगे—गोदाम है, इंजिन का कमरा है, और अरब किलोमीटर के फुँके हुए ईंधन के डिब्बे हैं। अगर आप चाहें तो डिब्बों के बगल में थोड़ी-बहुत चहल-कदमी कर सकते हैं, अगर आप चाहें तो उड़ान-काल पहनकर हाथ-पैरों को सीधा करने के लिए अवकाश में कुछ उछल-कूद कर सकते हैं। और फिर वही झूले की किस्म का बिस्तरा, वही मेज़ और वही आलमारी! दरहकीकत, यह जेल की कोठरी है। हमें ३० वर्ष तक तन्हाई में बन्द रहने की सज़ा मिली है!

अखबार और तार, तार और अखबार! हमारी घड़ियों में २४ विभाजन चिह्न हैं वर्ना हम भ्रम में पड़ जा सकते हैं। दिन अथवा रात्रि—उनमें कोई अन्तर नहीं है। कमरे में दिन में बिजली जलती है रात में और भी अधिक बिजली जलती है। खिड़कियों से दिन में तारे दिखलायी देते हैं, रात में भी उतने तारे ही दिखलायी देते हैं। खामोशी है। शान्ति का अटूट साम्राज्य है। फिर भी वास्तव में, हम उड़ते चले जा रहे हैं—एक सीधी रेखा में निरन्तर गति से उड़ते चले जा रहे हैं। १ घंटे में लगभग १५ लाख किलोमीटर, दिन भर में लगभग ३६ करोड़ किलोमीटर की गति से हम आगे बढ़ रहे हैं। हम लघुगणिनी (log) में दर्ज करते हैं "२३ मई हमने १ अरब किलोमीटर का फासला तय कर लिया है। १ जून, हम शनि की कक्षा को पार कर आये हैं।" शनि की कक्षा को जिस समय हमने पार किया उस समय हमने आज का एक समारोह किया, गीत गाये और खुशियाँ मनायीं। परन्तु वास्तव में यह कल्पना का एक निशान था, क्योंकि न तो कक्षा के पास पहुँचने से पहले शून्य के अतिरिक्त वहाँ कुछ और था और न उसे पार करने के बाद ही शून्य के अलावा कोई और वस्तु कभी दिखलायी दी थी। अब तो यह है कि कक्षा स्वयम् एक तरफ को हमसे बहुत दूर है। और यदि ऐसा पृथ्वी से दिखलायी देता है वहाँ भी उसका,

अधिक साफ नहीं दिखलायी देता था। वह एक साधारण छोटे-से तारे की तरह लगता था।

तरह-तरह के समारोहों की व्यवस्था पावेल एलेक्ज़ेंडोविच ही किया करते थे। समय काटने के तरीकों का आविष्कार करने में वे पूरे माहिर थे। अंतरिक्ष-यान के अंदर उनके पास समय की कमी रहती थी। खाने के बाद—कम से कम १ घंटे की अन्तरिक्ष ड्रिल चलती थी। इसके अभाव में, सतत भारहीनता के कारण मांसपेशियों के निःशक्त हो जाने का खतरा है। फिर अंतरिक्ष में अनिवार्य हवाखोरी होती है, राकेट यान की जाँच-पड़ताल की जाती है—पहले बाहर से, फिर अंदर से। इसके बाद टलिस्कोप (दूरबीन) पर बैठकर काम किया जाता है। फिर भोजन। इसके बाद दो घंटे तक वे अपने संस्मरण लिखाते हैं। वे मुझसे लिखवाते थे। वे बोलते जाते थे और मैं लिखता जाता था। अतिरिक्त भार के भय से इलेक्ट्रोनिक आशु लिपि मशीन को हम अपने साथ नहीं ला सके थे। फिर सूक्ष्म ग्रंथों (microbooks) से पढ़ाई। बाबाजी ठीक १ घंटे तक पढ़ते थे और घंटा बीतते ही पुस्तक को बंद करके रख देते थे। आंशिक रूप से इसका उद्देश्य मन-बहलाव करना था। साथ ही साथ, अपने मनोबल को बढ़ाये रखने का भी यह साधन था। "धैर्य-पूर्वक हम कल की प्रतीक्षा करनी चाहिए" वे प्रायः कहा करते थे। जहाँ तक मेरी बात है, मैं पूरे दिल से उनका अनुकरण करने की कोशिश करता था। मैं समझता था कि इसके अलावा और कुछ हो भी नहीं सकता है। अगर आदमी अपना मन बिगाड़ता है तो वह अपने लिए ही मुसीबत खड़ी कर लेगा। पहले तुनुक मिज़ाजी पैदा होती है, फिर सुस्ती, फिर बीमारी। फिर आदमी काम करना छोड़ देता है और अपने कर्त्तव्यों को भूल जाता है। बाह्य अवकाश में दुखान्त घटनाएँ घट चुकी हैं। लोगों ने अपने को पस्त हिम्मत हो जाने दिया है और सब कुछ बबाद कर लिया है और ऐसा भी हुआ है कि लोग अपने लक्ष्य पर पहुँचने से पहले ही वापिस लौट आये हैं।

तुनुकमिजाजी का एकमात्र इलाज काम है। लेकिन करने के लिए अधिक काम है नहीं। जाँच-पड़ताल और चलती फिरती मरम्मत के कामों में बहुत समय नहीं लगता। मैं यहाँ के पुनर्निर्माण की अपनी योजना के सम्बन्ध में काम किया करता था, किन्तु वह अधिकांशतया मन ही संताप के लिए हुआ करता था। अलग-थलग रहकर, मानव-जाति जैसी महती सामूहिक शक्ति को अपने काम से कोई सरोकार नहीं पर सकता। और उड़ान के हर वर्ष में साथ-साथ, पृथ्वी के मानवों के अनुसार मेरा ज्ञान अधिकाधिक पीछे पड़ता जा रहा था। वहाँ वे आगे बढ़ते जा रहे थे, परन्तु मुझे उनकी प्रगति की कोई जानकारी नहीं थी।

समझदारी का एकमात्र काम खगोलीय प्रेक्षण करना था। हमने एक सूची तैयार की। तारों की दूरी को नापा। आम तौर से उसे एक त्रिकोण से नापा जाता है। त्रिकोण का आधार पृथ्वी के कक्ष का व्यास होता है उसके दोनों कोण—तारे की दिशा से बनते हैं। ऊँचाई—अर्थात तारे की दूरी—भुजा तथा दोनों कोणों से निर्धारित होती है। किन्तु त्रिकोण जितना ही अधिक सकरा तथा लम्बा होता है, त्रुटि की सम्भावना उतनी ही अधिक बढ़ जाती है इसलिए यह विधि केवल सबसे नजदीक के तारों की ही दूरी नापने के लिए उपयुक्त होती है। हमारा काम अपेक्षाकृत सहज था—क्योंकि सूर्य से अब हम हजार गुना अधिक दूर थे और हमारे त्रिकोण का आधार हजार गुना अधिक बड़ा था। दूरियों को यहाँ से हजार गुना अधिक यथार्थता के साथ नापा जा सकता था। मोटे तौर से यह बात दूरबीन से दिखलायी देने वाले सभी तारों के सम्बन्ध में लागू होती है। फिर यह एक ऐसा काम हमें मिल गया है जो हमारी पूरी यात्रा के लिए काफी है नापो और हिसाब लगाओ, नापो और हिसाब लगाओ! फिर खोजों को लघु-पुस्तक में चढ़ाओ सूची संख्या—अमुक-अमुक वर्णक्रम वर्ग 'ए' (10), दूरी—3,118 प्रकाश वर्ष। कभी-कभी यह सब लिखते समय हम कुढ़ से उठते

७ प्रकाश दिनों को लेकर तो हमारी पूरी जिन्दगी बीती जा रही थी, और हम यहाँ बैठ बैठे ७,००० प्रकाश वर्षों की बातें बघार रहे हैं। इस दूरी तक, ए ओ वर्ग के इस सूर्य तक, कभी-कोई उड़कर नहीं जा सकेगा।

तबियत तंग हो उठती थी, चारों ओर ऊबा देने वाली एकरसता का अनन्त विस्तार था। फिर भी हम निरन्तर जागरूक रहना पड़ता था। पूरे-पूरे वर्षों तक कहीं कुछ नहीं होता, पत्ता तक नहीं खड़कता, फिर भी कोई भी क्षण अपने साथ महा विपत्ति ला सकता है, क्योंकि अवकाश एकदम शून्य नहीं है। उसमें उल्का पिण्ड हैं। और उल्का पिण्डों की धूल बराबर इधर उधर उड़ती रहती है। जिस रफ्तार से हम यात्रा कर रहे हैं उसमें गैस के बादल भी खतरनाक साबित हो सकते हैं। उनके सामने आ जाने का मतलब पानी के अन्दर धस जाने जैसा हो सकता है। बाह्य अवकाश में हमें ऐसे भी कुछ सघन क्षेत्र मिले थे जो विमान को अज्ञात हैं। उनके अन्दर जब हमने प्रवेश किया था तो हर चीज इधर उधर होने लगी थी और हमारी छाती सिकुड़ने लगी थी। यह साफ नहीं है कि क्या। उल्का पिण्डों की धूल बाहरी यान के आवरण को खुरदरा कर कमजोर कर देती है उसकी धातु की शक्ति क्षीण हो जाती है और उसमें अनजानी धाराएँ पैदा हो जाती हैं। इस प्रकार, धीरे धीरे हर चीज छिजा जाती है। फिर हम देखते हैं कि कहीं छेद हो गया है जिसमें हवा आ रही है, अथवा अरित्र-दण्ड (Steering) खराब हो गया है अथवा औजार धोखा देने लगे हैं। वर्षों तक कुछ नहीं होता फिर, अचानक इसलिए, किसी न किसी को हर वक्त पहरे पर रहना पड़ता है।

पहरे में एकाकी घंटे बड़ा लम्बा होता है। पृथ्वी की याद आती है। खेतों और जंगलों में घूमने की इच्छा होती है। रात की रानी की पूरा और स्वच्छ नीले आकाश में चाँदनी का गान सुनने के लिए मन व्याकुल

चौदह वष तक लगातार हम एक अदश्य विन्दु की ओर तेजी से उडते चले जा रहे थे। आखिर वह क्षण आया जब हम अपने लक्ष्य को देख सके—वह एक छोटा, काला सा, अधकार-पूण वृत्त था जो तारो को ढके हुए था। अपने लक्ष्य तक हम ठीक-ठीक ही पहुँच गये थे। पृथ्वी के खगोल-वेत्ताओ के प्रेक्षण सही थे। लेकिन एक चीज की उन्होने पहले से कल्पना नही की थी यहाँ आने पर पता चला कि "इप्सा इकोनिस" (काला उप सूय) अकेला नही था बल्कि वह दो पिण्डों का बना हुआ था। यहाँ पर दो काले सूय थे— 'अ' और 'ब'। 'अ' छोटा था, 'ब' उससे कुछ बडा था। अ हमारे कुछ नजदीक था, 'ब' थोडा और दूर था। "थोडा"—निस्सदेह अन्तरिक्ष की पारिभाषिक शब्दावली म। वास्तव म, इनक बीच की दूरी पृथ्वी व शनि के बीच की दूरी से अधिक थी।

हम सब बचेनी से तडप रहे थ—पावल एल्बेजेण्डोविच तो खास तौर से यद्यपि व अपनी व्यग्रता को जाहिर नही होने देते थे। अन्तग्रहीय वार्तालाप के लिए साधनो का एक पूरा शस्त्रागार पहले से ही उन्होने तयार कर लिया था उसमे प्रकाश के सकत थ, अब रक्त प्रकाश सर्चलाइटें थी। उभरे हुए चित्रो की एक वणमाला तथा ज्यामितीय आकृतियो का एक सग्रह भी तयार था।

हमारे सम्मिलन का महान दिन आ गया।

सुबह स ही हमारे ब्रेक लगाने शुरू कर दिये। ऊपर और नीचे के भाग बिलकुल उलट गये, जिन चीजो को हम हवा म भूल गये थ व फश पर गिर पडीं। दोपहर तक काले उप-सूय को ज्यादा अधिक स्पष्टता से दृष्टि गोचर होने लगा, तारे एक क बाद एक बुझ गये। अन्त म, यह

काली थाली हमारे सामने लटक रही थी ! हम रह गये। हम उस उप-सूर्य के अस्थायी उपग्रह बन गये थे ।

इसके बाद, जरा हमारी निराशा का अनुमान कीजिए हमारे खगोल वक्ताओं ने थोड़ी-सी त्रुटि कर दी थी। उन्होंने पता लगाया था कि इस काले उपसूर्य के तल का ताप शून्य से १०° सेण्टीग्रेड ऊपर होगा, लेकिन वह निकला शून्य से ६° सेण्टीग्रेड नीचे ! उसके वायु-मंडल में गैसें मौजूद थीं बृहस्पति के वायुमंडल की तरह मेथेन (methane) तथा अमोनिया (ammonia) और शुक्र के वायु-मंडल की तरह कार्बन-डाई-ऑक्साइड मौजूद थी। साथ ही साथ, हाईड्रोजन तथा पानी की भाप की भी विशाल मात्रा वहाँ थी—घन घन बादल थे। इनके नीचे जमे हुए बर्फीले सागर का अंतहीन विस्तार था—हिम, हिम के लम्बे चौड़े प्रदेश तथा हिम की लघु पर्वतमालाएँ थीं। बर्फ की यह तह दसियों क्या सैकड़ों किलोमीटर मोटी थी। उसकी गहराई को नापने के लिए हम विस्फोटक पदार्थों का इस्तेमाल करना पड़ा था।

तब क्या उत्तर-ध्रुवीय प्रदेश जैसी इस साधारण-सी राशि के देखने के लिए १४ वर्षों तक उड़ते रहना ठीक था ?

बाबा तो एकदम निराश हो गये थे। उनका अंतिम प्रयास भी असफल हुआ था ! उनके जीवन का स्वप्न पूरा नहीं हो सका था।

काले उप-सूर्य 'व' की यात्रा करने का फैसला हमने तभी किया था।

प्रथम दृष्टि में यह बात सर्वथा स्वाभाविक मालूम होती थी। हम उसके करीब थे, तो फिर वहाँ हो क्यों न आया जाय ! किन्तु, ब्रह्माण्ड यात्रा के हिसाब किताब का स्वयम् एक अपना आधार होता है। वहाँ हर चीज इंधन पर निर्भर करती है। पृथ्वी पर ईंधन तय किये गये फासले का, किलोमीटरों का फ़ैसला करता है, किन्तु ब्रह्माण्ड में यह केवल रफ्तार का फैसला करता है। ईंधन सारे समय नहीं खप

होता, सिर्फ उड़ने समय और रफ्तार कम करते समय उसका इस्तेमाल होता है। अधिकांशतया, दो बार ऊपर उड़ने तथा रफ्तार को कम करके दो बार नीचे उतरने के लिए आवश्यक ईंधन की ही मात्रा साथ ले जायी जाती है। दूसरे वाले उप-सूर्य की यात्रा करने का अर्थ था अपनी वापसी में ३ या ४ वर्ष की और देरी कर देना। अपनी यात्रा में अब और अधिक वर्ष हम नहीं लगाना चाहते थे, लेकिन जहाँ ३० वर्ष बिताये जा चुके हैं वहाँ ३ वर्षों का मूल्य बहुत अधिक नहीं होता। उस अनदेखी दुनिया से, उसका पता लगाये बिना हममें से कोई भी वापिस नहीं जाना चाहता था।

पूरे वर्ष भर तक धीरे-धीरे रेंगते हुए, एक उप-सूर्य से दूसरे उप-सूर्य तक हम गये। अब उस काले स्थल ने विराट आकार ग्रहण कर लिया था और कायले की तरह काले एक चक्र की तरह दिखलायी देता था। हमने फिर रफ्तार कम कर दी काले चक्र के अस्थायी उपग्रह बन गये और अपने एक स्वचालित गुप्तचर को अंधकार में उसकी खोज-बीन करने के लिए रवाना कर दिया। हम खुद भी चीजों को देख रहे थे क्योंकि वहाँ पर अंधकार पूर्ण नहीं था। वायुमण्डल में बिजली चमकती थी और कभी-कभी तूफान उठते दिखलायी देते थे। वहाँ पर बादल की रूप रेखाएँ दृष्टि आती थी। स्वचालित गुप्तचर के पास से रंगिया रिपोर्ट आयी—हवा का तापमान शून्य से २४° सेन्टीग्रेड ऊपर है। कदाचित पृथ्वी के खगोल-वेत्ताओं ने अपनी गणना में ज्योतिष गलती कर दी थी कि उन्होंने दल में उस उप-सूर्य की किरणों को इस तूफानी उप-सूर्य की किरणों के साथ मिला दिया था। पता चला कि शून्य से १० सेन्टीग्रेड औसत तापमान के होने की बात सच्चाई से बहुत दूर नहीं थी।

लेकिन अपनी गणना में हमसे कोई भी चूक नहीं हुई थी क्योंकि हमारा ... ... गया। ... कि ... वहाँ सूर्य

गया था। आखिरी बार टेलीविजन के पर्दे पर हम पानी का अनन्त प्रसार तथा उसके ऊपर उठती ऊंची, तिरछी वेगानिल तरंगें दिखलायी पड़ी थीं। तब हमने एक दूसरे राकेट को भेजा। उसने उप-सूर्य के कई चक्कर लगाए। हमने देखा कि बादल थे और पानी सीधा-सीधा गिर रहा था, तिरछा नहीं—जैसा कि आम तौर से पृथ्वी पर वह बरसता है। उप-सूर्य पर गिरने वाली बूंदें भी अधिक भारी थीं। हमने फिर तरंगें देखीं। वहां केवल सागर था, हर जगह सागर, कहीं छोटा-सा भी द्वीप नहीं था। उसकी मध्य रेखा पर सागर और उसके ध्रुवों पर सागर! बर्फ जरा भी नहीं थी। चीज समझ में आने वाली थी। उप-सूर्य में गर्मी चूंकि अन्दर से आती है, इसलिए उसकी जलवायु सब जगह एक ही जैसी होती है, ध्रुवों पर वह अधिक ठंडी नहीं होती।

वहां कोई महाद्वीप नहीं थे, द्वीप नहीं थे, किसी ज्वालामुखी की चोटी तक नहीं थी। सागर, हर जगह सागर!

इन वाक्यावलियों में कितने अचम्भे छिपे हुए हैं! इनके सम्बन्ध में नीरस व्याख्या और तर्क आ जाने की बात करना गलत है। हमें किस चीज की आशा थी? इस चीज की कि उप-सूर्यों पर सूखी भूमि होगी और सागर होंगे, कुछ उसी प्रकार जिस प्रकार वे पृथ्वी पर हैं। प्रबुद्ध प्राणियों का विकास स्वभाविक है कि केवल सूखी भूमि पर ही हो सकता है (अपने दिल में हम सबने उनसे मिलने की आशा रखी थी)। हम सागर का अध्ययन करना चाहते थे, किन्तु तट पर से। हमारी योजना थी कि तट से दूर कहीं समुद्र में चले जायेंगे और वहां पहुँच कर एक छोटे-से प्रेषण यन्त्र को पानी के नीचे छोड़ देंगे। इसके अतिरिक्त, हमारा अन्तरिक्ष-यान केवल ठोस, कड़ी जमीन पर ही उतर सकता था!

होता, सिर्फ उड़ने समय और रफ्तार कम करते समय उसका इस्तेमाल होता है। अधिकांशतया, दो बार ऊपर उड़ने तथा रफ्तार को कम करके दो बार नीचे उतरने के लिए आवश्यक ईंधन की ही मात्रा साथ ले जायी जाती है। दूसरे का[illegible] उप-सूर्य की यात्रा करने का अर्थ था अपनी वापसी में ३ या ४ वर्ष की और देरी कर देना। अपनी यात्रा में अब और अधिक वर्ष हम नहीं लगाना चाहते थे, लेकिन जहाँ ३० वर्ष बिताये जा चुके हैं वहाँ ३ वर्षों का मूल्य बहुत अधिक नहीं होता। उस अनदेखी दुनिया में उसका पता लगाये बिना, हममें से कोई भी वापिस नहीं जाना चाहता था।

पूरे वर्ष भर तक धीरे धीरे रेंगते हुए, एक उप-सूर्य से दूसरे उप-सूर्य तक हम गये। अब उस काले स्थल ने विराट आकार ग्रहण कर लिया था और [illegible] की तरह काले एक चक्र की तरह दिखलायी देता था। हमने फिर रफ्तार कम कर दी [illegible] के अस्थायी उपग्रह बन गये और अपना एक स्वचालित गुब्बारा वहाँ के अन्धकार में उसकी खोज-बीन करने के लिए रवाना कर दिया। हम [illegible] भी चीजों को देख रहे थे यद्यपि वहाँ पर अन्धकार पूर्ण नहीं था। वायुमण्डल में बिजली चमकती थी और कभी-कभी तूफान उठते दिखलायी देते थे। यहाँ पर [illegible] ज्यादा वृष्टि आती थी। स्वचालित गुब्बारे के पास से रंगीन रिपोर्ट आयी—वहाँ का तापमान शून्य से २४° सेन्टीग्रेड ऊपर है। क्योंकि पृथ्वी के [illegible]-धाराओं ने अपनी [illegible] में [illegible] [illegible] कर दी था कि [illegible] बर्फ न [illegible] इस उप-सूर्य की किरणों को इस पुरानी उप-सूर्य की किरणों के साथ मिला दिया था। पता चला कि [illegible] से १० सेन्टीग्रेड औसत तापमान के होने की बात [illegible] से बहुत दूर नहीं थी।

लेकिन अभी [illegible] में हमने [illegible] खोज [illegible] भी [illegible] होती यद्यपि स्वचालित गुब्बारा [illegible] था। मालूम हुआ कि यह कभी इस

गया था। आखिरी बार टेलीविजन के पर्दे पर हम पानी का अनन्त प्रसार तथा उसके ऊपर उठती ऊंची, तिरछी वेगानिल तरंगें दिखलायी पड़ी थी। तब हमने एक दूसरे राकेट को भेजा। उसने उप-सूर्य के कई चक्कर लगाये। हमने देखा कि बादल थे और पानी सीधा-सीधा गिर रहा था, तिरछा नहीं—जैसा कि आम तौर से पृथ्वी पर वह बरसता है। उप-सूर्य पर गिरने वाली बूंदें भी अधिक भारी थीं। हमने फिर तरंगें देखी। वहां केवल सागर था, हर जगह सागर, कहीं छोटा-सा भी द्वीप नहीं था। उसकी मध्य रेखा पर सागर और उसके ध्रुवों पर सागर! बर्फ जरा भी नहीं थी। चीज समझ में आने वाली थी। उप-सूर्य में गर्मी चूंकि अन्दर से आती है, इसलिए उसकी जलवायु सब जगह एक ही जैसी होती है, ध्रुवों पर वह अधिक ठंडी नहीं होगी।

वहां कोई महाद्वीप नहीं थे, द्वीप नहीं थे, किसी ज्वालामुखी की चोटी तक नहीं थी। सागर, हर जगह सागर!

इस खाद्यावकाश में कितने अचम्भे छिपे हुए हैं! इसके सम्बन्ध में नीरस एकरसता और तंग आ जाने की बात करना गलत है। हमने किस चीज की आशा की थी? इस चीज की कि उप-सूर्यों पर सूखी भूमि होगी और सागर होंगे, कुछ उसी प्रकार जिस प्रकार वे पृथ्वी पर हैं। प्रबुद्ध प्राणियों का विकास स्वभाविक है कि केवल सूखी भूमि पर ही हो सकता है (अपने दिल में हम सबने उनसे मिलने की आशा लगी थी)। हम सागर का अध्ययन करना चाहते थे, किन्तु तट पर से। हमारी योजना थी कि तट में सैर पर समुद्र में बने गार्डों और वहां पहुंच कर एक छोटा प्रेक्षण कक्ष को पानी के नीचे छोड़ दें। इसके अतिरिक्त, हमारा नक्षत्र यान केवल ठोस, कड़ी जमीन पर ही उतर सकता था!

और यहाँ अब तारों के झिलमिलाते चमकीले सागर के ऊपर एक काला वृत्त तैर रहा है—वह बहुत कुछ ऊपर उतराती हुई एक ऐसी बड़ी तश्तरी की तरह है जिसकी कोरें कुहासे में डूबी हुई हैं। उसके एक छोर पर तारों का ग्रहण लग जाता है और, आध घंटे बाद, दूसरे छोर पर वे फिर निकल आते हैं। ये नक्षत्र मालाएं सुपरिचित हैं। अन्तर केवल इतना है कि यहाँ पर वे अधिक दीप्तिपूर्ण दिखलायी देती हैं और उनकी चित्राकृति अधिक संश्लिष्ट है। उनमें से केवल एक नक्षत्र-माला के अन्दर एक अतिरिक्त तारा है—यह स्वयम् हमारा सूर्य है।

किन्तु हम सूर्य को नहीं निहार रहे थे, न तारक लोक की नक्काशी की सुकुमार गुलकारी का ही इस समय आनन्द ले रहे थे। हमारी आँखें उस काले वृत्त पर लगी हुई थीं यद्यपि कोहरे के घन पर्दे के अन्दर से उसके अन्दर की कोई भी चीज़ दिखलायी नहीं पड़ रही है—न नंगी आँखों से, न दूरबीन के ज़रिए।

"तो फिर, क्या वापिस लौट चला जाय?", पावलिक काका ने पूछा।

सौवीं बार, हजारवीं बार यही प्रश्न पूछा जा रहा है! तो हम लौट जाना पड़ेगा। इस परिस्थिति का सामना करने के लिए हम और कोई उपाय नहीं निकाल सके।

"अब फिर केवल एक ही रास्ता है" काका ने स्पष्ट किया।

और हम पतन-रेखा की ओर चल पड़े। उस समय मन में बहुत-कुछ शमशान वाली भावना थी।

"हरगिज नहीं ! ऐसा कभी नहीं होगा," वह बेसाख्ता चिल्लायी। "मैं जानती हूँ, आप कठोर मण्डल (bathysphere) में बैठकर नीचे उतर जाना चाहते हैं !"

हम सबके हृदय आशंका से भर उठे थे। कठोर-मण्डल में बैठकर नीचे उतर जाना तो बिल्कुल सम्भव था, लेकिन सवाल यह था कि फिर वहाँ से लौटा कैसे जायगा। स्वचालित गुप्तचर उड़ नहीं सकता। कठोर-मण्डल हमेशा-हमेशा तक के लिए फिर वहीं रह जायगा और एक आदमी को अन्दर लिये हुए !

"हम आपको हरगिज नहीं जाने देंगे।" आयशा ने जोर से कहा।

लेकिन बाबा ने धीरे-से सिर्फ अपने कन्धे उचकाये। वे बोले,

"आयशा, तुम जानती हो कि तुम्हारे अन्दर डाक्टरों वाले पूर्वग्रह ही पूर्वग्रह भरे हुए हैं। तुम्हारा खयाल है कि आदमी को सिर्फ किसी संगीन बीमारी से ही मरने का अधिकार है। किन्तु अन्तरिक्ष के हम विज्ञानियों का जीवन का हिसाब किताब करने का अपना एक अलग ही तरीका होता है। हम जीवन को कर्मों से नापते हैं, वर्षों से नहीं।"

"यह एक अनावश्यक बलिदान है !" रहीम ने कहा। "हम [illegible] काम करना चाहिए। पृथ्वी वापिस जाकर हम अपनी रिपोर्ट देनी चाहिए। अगला अभियान इन सब बातों का ध्यान रखते हुए भिन्न रूप से तैयार किया जायगा। वह सागर के गह्वर (bed) का अच्छी तरह अध्ययन करेगा।"

अच्छा। लेकिन कब ? ३० वर्ष बाद ?

और यहाँ अब तारों के झिलमिलाते चमकीले सागर के ऊपर एक काला वस्तु तैर रहा है—वह बहुत कुछ ऊपर उतरती हुई एक ऐसी बड़ी तश्तरी की तरह है जिसकी कोरें कुहासे में डूबी हुई हैं। उसके एक छोर पर तारों को ग्रहण लग जाता है और, आध घंटे बाद, दूसरे छोर पर वे फिर निकल आते हैं। ये नक्षत्र मालाएं सुपरिचित हैं। अन्तर केवल इतना है कि यहाँ पर वे अधिक दीप्तिपूर्ण दिखलायी देती हैं और उनकी चित्राकृति अधिक सश्लिष्ट है। उनमें से केवल एक नक्षत्र-माला के अंदर एक अतिरिक्त तारा है—यह स्वयम् हमारा सूर्य है।

किन्तु हम सूर्य को नहीं निहार रहे थे, न तारक लोक की नक्काशी की सुकुमार गुलकारी का ही इस समय आनन्द ले रहे थे। हमारी आँखें उस काले वस्तु पर लगी हुई थीं यद्यपि कोहरे के घन पर्दे के अंदर से उसके अंदर की कोई भी चीज़ें दिखलायी नहीं पड़ रहीं हैं—न नंगी आँखों से, न दूरबीन के ज़रिए।

"तो फिर, क्या वापिस लौट चला जाय ?," चारशिन बाबा ने पूछा।

सौवीं बार, हज़ारवीं बार वही प्रश्न पूछा जा रहा है! हाँ, हमें लौट जाना पड़ेगा। इस परिस्थिति का सामना करने के लिए हम और कोई उपाय नहीं निकाल सकते।

'तब फिर केवल एक ही रास्ता है" बाबा ने एलान किया।

भौंचक हम अपने नेता की ओर देखने लगे। उनके मतलब को सबसे पहले समझने वाली आयशा थी।

"हरगिज नहीं ! ऐसा कभी नहीं होगा," वह बनावटी चिल्लायी। "मैं जानती हूँ, आप गंभीर मण्डल (bathysphere) में बैठकर नीचे उतर जाना चाहते हैं।"

हम सबके हृदय आशंका से भर उठे थे। गंभीर-मण्डल में बैठकर नीचे उतर जाना तो बिल्कुल सम्भव था, लेकिन सवाल यह था कि फिर वहाँ से लौटा कैसे जायगा। स्वचालित गुप्तचर उड़ नहीं सकता। गंभीर-मण्डल हमेशा-हमेशा तक के लिए फिर वहीं रह जायगा और एक आदमी को अन्दर लिये हुए।

"हम आपको हरगिज नहीं जाने देंगे।" आयशा ने जोर से कहा।

लेकिन बाबा ने धीरे-से सिर्फ अपने कन्धे उचकाये। वे बोले

"आयशा, तुम जानती हो कि तुम्हारे अन्दर डाक्टरों वाले पूर्वग्रह ही पूर्वग्रह भरे हुए हैं। तुम्हारा खयाल है कि आदमी को सिर्फ किसी संगीन बीमारी से ही मरने का अधिकार है। किन्तु अन्तरिक्ष में हम विज्ञानियों का जीवन का हिसाब किताब करने का अपना एक अलग ही तरीका होता है। हम जीवन को कर्मों से नापते हैं, वर्षों से नहीं।"

"यह एक अनावश्यक बलिदान है!" रहीम ने कहा। "हम शायद ही काम करना चाहिए। पृथ्वी वापिस जाकर हमें अपनी रिपोर्ट देनी चाहिए। अगला अभियान दूर नये यानों को प्यार रखते हुए विशेष रूप से तैयार किया जायगा। वह सागर के तल्लर (bed) का अच्छी तरह अध्ययन करेगा।"

अगला। लेकिन कब? ३० वर्ष बाद?

तोल्या वारेतसाव बीच म बोलकर खुद अपन जान का प्रस्ताव रखने ही वाला था कि गाल्या न उसका हाथ पकड लिया। फिर मैंने आग्रह किया कि भेजना ही है तो मुझे भेजा जाना चाहिए।

"फैसला किया जा चुका है" बाबा ने एलान किया। "इसलिए निरथक वहस करके समय न बिगाडा। मैं आज्ञा देता हू कि नीचे उतरने की तैयारियां शुरू कर दो।



अन्तिम तैयारियां चल रही थी पर हम सब गहरी उदासी म डूब हुए थे। विदा की वला आ गयी। वद्ध कैप्टन न आदेश दिया कि विदाई का भोज तयार किया जाय। भोज म क्या-क्या चीजें रहनी चाहिए इसकी सूची भी खुद उन्होने ही तैयार की। हमने अपने प्रिय रिकाड—"मास्को की सडको पर" को बजाया। फिर हमने बिथोवेन की नवी सिम्फनी (तराने) को सुना। बाबा को वह पसन्द थी क्योकि वह एक जोशीली सिम्फनी थी, उसमे सघष का आवाहन था। हमने शैम्पेन पी। एक भारहीन राकेट के अन्दर शैम्पेन का पीना एक अच्छी खासी समस्या होती है वह हवा म उड उड जाती है। फिर हमने गीत गाये। हमने अन्तरिक्ष के अपने प्रिय गान को गाया। उसे किसने बनाया था यह किसी को नही मालूम है। उसकी कुछ पक्तियाँ है

कदाचित आवश्यकता है पूरी निरन्तता की,
खोज करने के लिए सम्पूर्ण अनन्तता की!
किन्तु लक्ष्य प्राप्त होने से पहले ही
कैप्टन हमसे विदा लिये जा रहे हैं!

पर दूसरे मिल जायेंगे, यदि आवश्यकता होगी

आयशा और नाल्या रो रही थी। मुझे थोड़ा नशा हो गया था। मैंने पूछा 'पर आपको डर नहीं लगता, पावल एन्देजेण्डोविच ?" उन्होंने उत्तर दिया "राड़ी, मेरे नौजवान साथी, मैं डर रहा हूँ। लेकिन सबसे ज्यादा भय मुझे इस बात का है कि शायद यह सब मैं व्यर्थ ही कर रहा हूँ। थाने पानी के अलावा मुझे और कुछ वहाँ देखने को नहीं मिलेगा " मैंने उनका हाथ अपने हाथ में पकड़ लिया और अनुनय करते हुए कहा 'पावेल एन्देजेंडोविच, यह सही है कि हो सकता है कि वहाँ कुछ भी न निकले। कृपाकर अपने आदेशों को वापिस ले लीजिए।"

५

और अब हम केवल पाँच रह गये थे। नंगे मुह किये हुए हम सब राउंड स्क्वेयर के सामने खड़े थे। उसमें से कड़कती बिजली की, सीढ़ियों के टूटने और नाचने की घर घर करती आवाजें आ रहीं थी। इस बात उप-कूप का वायुमण्डल विद्युत से संतृप्त (saturated) है—यही पाया है।

आखिरकार, वायुमण्डल के शोरगुल को चीरती हुई नालिन की शान्त सुदृढ़ आवाज सुनायी दी। तो हमारे बाबा हमारे साथ ही थे! उनका आनोखा सुपरिचित स्वर सारे कमरे में भर गया।

वे कह रहे थे, "मैंने रास्लाइट को बुझा दिया है। यहाँ धूल जैसा नहीं है। एक चादर जैसा फैली हुई है और बिजली बराबर कौंध रही है। उसकी चमक की रोशनी में धब्बों की तरह फैले हुए बादलों की मोटी तह दिखायी देती है। ये बादल दूधों तरह के हैं

जिस तरह के वहस्पति पर मिलते हैं। छोरा पर जो बादला के ढेर है उनके नीचे का भाग काला काला है। हवा घनी है और उसकी धाराओ के छोरो पर चक्रवात दौड रहे हैं।"

वायु मण्डल से फिर शोर गुल आया। कई-कई शब्द तथा पूरे के पूरे वाक्याश उसम खो जाते थे। फिर वे अधिक साफ सुनायी देने लगे।

बाबा कह रहे थे, "हवा अधिक साफ हो रही है। मुझे समुद्र दिखलायी दे रहा है। उसका तल काले इनामल जैसा है। उसकी छोटी छोटी तरगें लहरिया की तरह हैं। मैं धीरे धीरे नीचे गिर रहा हूँ, हवा बहुत घनी है। गुरुत्वाकपण शक्ति इतनी अधिक है कि उस पर विश्वास करना मुश्किल होता है। जरा भी गति करना कठिन है। वही हालत है जो उप-सूर्यों की हिम नदियों के अन्दर होती है। मेरे लिए अपनी जबान को हिला सकना भी कठिन हो रहा है।'

अचानक वे खुशी से भर कर बोले "पक्षी! दीप्तिमय पक्षी! एक और, और एक और! एक साथ तीन-तीन! वे आये और चमकते हुए निकल गये। क्या तुम्हारे टेलीविजन के पर्दे पर व दिखलायी दिये? मैं उनके गोल सिर, मोटे शरीर, और छोटे, फडफडाते डैनों को ही देख सका। व हमारी उडने वाली मछली की तरह के मालूम होते हैं। शायद वे मछलियाँ ही हैं, पक्षी नहीं हैं। लेकिन वे उड काफी ऊँचाई पर रहे थे।"

जोर से छपाक की एक आवाज सुनायी दी, फिर थोडी देर के लिए पूण खामोशी छा गयी।

"तुम लोगो को वह आवाज सुनायी दी थी? वह मैं ही था— पानी म गिरता हुआ। मैं उससे बडी जोर से टकराया था। फिर भी,

उसमें कोई अन्तर नहीं पड़ता। रोशनी मैंने बुझा दी है। अँधेरे का मैं आदी बनता जा रहा हूँ।"

और फिर थोड़ी देर बाद

"मैं धीरे धीरे नीचे जा रहा हूँ, दो मीटर प्रति सैकिण्ड की रफ्तार से। सर्चलाइट को मैंने फिर जला लिया है। खिड़की से बाहर एक दीप्तिमय तूफान दिखलायी दे रहा है। एक उज्ज्वल कान्ति से आलोकित वातावरण है, उछलती तरंगें हैं तथा बादलों के भारी जमघट हैं। छोटे छोटे प्राणियों की संख्या यहाँ अगणित मालूम होती है। कदाचित् ये हमारे झींगों की किस्म के हैं। नीचे मैं जितना ही अधिक गहरे में जाता हूँ, उनकी संख्या उतनी ही बढ़ती जाती है। पृथ्वी पर इसका बिल्कुल उल्टा होता है। वहाँ जितना नीचे जाओ उतना ही जीवन कम होता जाता है। लेकिन यहाँ, गर्मी ऊपर से आती है यहाँ नीचे से।

'और यह क्या है? लम्बा और काला-काला सिर है, न पूंछ! मछली, क्या है यह? यह बहुत तेज भागती है और अपने पीछे एक चमकीली धार छोड़ जाती है। दोनों तरफ रोशनियों की एक पाँत दिखलायी दे रही है, जैसे कि किसी जहाज की बगल वाली खिड़कियाँ या रोशनदान हों। क्या यह कोई पनडुब्बी हो सकती है? अथवा कोई और चीज, जिसकी और किसी चीज से तुलना नहीं की जा सकती। अन्तराल इसी मैं सर्चलाइट से उसे संकेत करता हूँ दो-दो बार, दो तीन छः, दो-दो बार।

'उसने कोई ध्यान नहीं दिया। वह दाहिनी तरफ को मुड़ गयी। अब दिखलायी नहीं देती।

'यह देखो कुछ और भयानक जन्तु या पत्थर बहुत और

आक्टोपस (अष्टपाद) के बीच के से कोई जीव मालूम पडते हैं। अष्टपादी मैं इन्हें सिर्फ इनकी शक्ल बताने के लिए कह रहा हूँ। वास्तव मे उनके पैर पाच ही हैं। पाच स्पर्शिकाएँ (tentacles) हैं, १ पीछे पतवार की तरह और ४ अगल-बगल म। उनके सिरे मोटे है, उनम चूसक लगे हुए हैं। सामने की एक स्पर्शिका मे कोई मजबूत दीप्तिमान इद्रिय है। वह मोटर की सामने वाली रोशनी की तरह लगती है। उसका प्रकाश-दण्ड समुद्री सेवार पर पड रहा है जिससे वह कातिमय हो उठी है। उसकी पीठ पर एक कवच है। उसकी आखें केकडे की तरह है जो अन्दर बाहर होने वाले दण्डो पर लगी मालूम होती है। मुह तुरई की शक्ल का है। म इतने ब्यौरे मे इनका हाल बता रहा हूँ, क्योकि ये प्राणी तैरते हुए मेरी ही तरफ आ रहे ह। अब वे एकदम सीधे—मेरे सिर के प्रकाश की ओर देख रहे है। बडी भयानक सी अनुभूति हो रही है। उनकी आखो की नजर से समझदारी टपकती है। उनकी पुतलियो म केलासीय (crystalline) लेंस ह और उनके कृष्णमण्डल (iris) से स्फुरदीप्त, हरी हरी सी एक रोशनी निकलती है—बिल्ली की आखा की रोशनी की तरह। एक बार मैंने पढा था कि पृथ्वी के आक्टोपस की आखा की दृष्टि मानव जसी होती है, लेकिन मैंने आक्टोपस कभी देखा नहीं इसलिए उनसे इनकी तुलना नही कर सकता।

"सचलाइट सागर की तलैटी को देखती पर उनी आगे बढ रही है। तलैटी म कुछ गैंठीली जडें हैं, मूगा अथवा समुद्री कमल की जडो की तरह की। मुझे मोटे मोटे तने दिखायी दे रहे ह। उनकी डालो से नीचे की ओर छोटे छोटे प्याले लटक रहे है, उनम से कुछ नीचे थाह पर टिक गये है। हमारी समुद्री बुमुद अपने प्याले का ऊपर की ओर रखती है। नीचे की ओर गिरने वाले भोजन को वह उनम पकड लेती है। फिर ये प्याले गाद (silt) के अन्दर जिस चीज को

तलाश कर रहे हैं ? सच्चे हुए अवशिष्टों की ? लेकिन व सब तो जीव तक नहीं पहुंचन । तब क्या ये गर्मी का अवशोषण कर रहे हैं ? परन्तु ये तो पौधे हैं । प्रकाश के बिना पौधे ? यह नामुमकिन है ! प्रसंगवश, मैं यह भी बतला दूं कि सागर की तलहटी में अव-रक्त प्रकाश बिखर रहा है । क्या अल्बूमिन (albumen) का निर्माण करने, तथा कार्बन डाई ऑक्साइड का विच्छेदन (decompose) करने के लिए अव रक्त किरणों की ऊर्जा से काम लिया जा सकता है ? यहाँ ऊर्जा अधिक नहीं है इसलिए उसका संचय करना आवश्यक होना है । लेकिन पृथ्वी की हरी पत्तियाँ ही ऊर्जा का संचयन करती हैं । वास्तव में दृश्य किरणें कार्बन-डाई-ऑक्साइड का विच्छेदन अपने-आप नहीं करतीं ।

मुझे कुछ देर हो गयी ' बाबा ने फिर बात शुरू की । 'मैं समझी कि सवारी में फंस गया हूँ । अब मैं आराम से अपने इर्द गिर्द देख सकता हूँ । मुझे अधिकाधिक विश्वास होता जा रहा है कि मेरे चौतरफ पौधे हैं । यह देखो एक मोटी अमिर की मछली है जो कापना को चुग रही है । एक दूसरी मछली ने—जिसके दांत हैं और जो लम्बी है—उस मोटी मछली को पकड़ लिया है और उसे लेकर ऊपर की तरफ तैर गयी है । भोजन का प्रवाह यहाँ तलहटी से पानी की सतह की ओर, यानी ऊपर की तरफ होता है । पनडोली चिड़िया को सबसे बाद में भोजन प्राप्त होता है ।"

तब लगोता और धातु के ऊपर टन-टन किये जाने की धीमी-सी आवाज आयी । इसका क्या मतलब हुआ ?

"गहरा मण्डल (bathysphere) अपनी जगह से हट गया है बाबा ने सूचना दी । उसे किसी चीज ने पकड़ लिया है और खींचे लिए जा रही है । वह क्या है मैं देख नहीं सकता । बाबा की बातों

आक्टोपस (अष्टपाद) के बीच के से कोई जीव मालूम पडते हैं। अष्टपादी मैं इन्हें सिर्फ इनकी शक्ल बताने के लिए कह रहा हूँ। वास्तव में उनके पैर पाच ही है। पाच स्पर्शिकाएँ (tentacles) हैं, १ पीछे पतवार की तरह, और ४ अगल-बगल में। उनके सिरे मोटे हैं, उनमें चूसक लगे हुए हैं। सामने की एक स्पर्शिका में कोई मजबूत दीप्तिमान इंद्रिय है। वह मोटर की सामने वाली रोशनी की तरह लगती है। उसका प्रकाश दण्ड समुद्री सेवार पर पड रहा है जिसमें वह कान्तिमय हो उठी है। उसकी पीठ पर एक कवच है। उसकी आखें केकडे की तरह हैं जो अन्दर बाहर होने वाले दण्डों पर लगी मालूम होती है। मुह तुरई की शक्ल का है। मैं इतने ब्यौरे में इनका हाल बता रहा हूँ, क्योंकि ये प्राणी तैरते हुए मेरी ही तरफ आ रहे है। अब वे एकटक सीधे-मेरे सिर के प्रकाश की ओर देख रहे है। बडी भयानक-सी अनुभूति हो रही है। उनकी आखो की नजर से समझदारी टपकती है। उनकी पुतलियो में केलासीय (crystalline) लेन्स है, और उनके कृष्णमण्डल (iris) से स्फुरदीप्त, हरी-हरी सी एक रोशनी निकलती है—बिल्ली की आखो की रोशनी की तरह। एक बार मैंने पढा था कि पृथ्वी के आक्टोपस की आखो की दृष्टि मानव जैसी होती है, लेकिन मैंने आक्टोपस कभी देखा नहीं, इसलिए उससे इनकी तुलना नही कर सकता।

'सचलाइट सागर की तलैटी को देखती परखती आगे बढ रही है। तलैटी में कुछ गँठीली जडें है, मूगा अथवा समुद्री कमल की जडो की तरह की। मुझे मोटे मोटे तने दिखलायी दे रहे है। उनकी डालो से नीचे की ओर छोटे छोटे प्याले लटक रहे है, उनमें से कुछ नीचे थाह पर टिक गये है। हमारी समुद्री कुमुद अपने प्यालो को ऊपर की ओर रखती है। नीचे की ओर गिरने वाले भोजन को वह उनमें पकड लेती है। फिर ये प्याले गाद (silt) के अन्दर किस चीज की

तलाश कर रहे हैं ? सड़ते हुए अवशिष्टों की ? लेकिन वे सब तो नीचे तक नहीं पहुंचते। तब क्या वे गर्मी का अवशोषण कर रहे है ? परन्तु वे तो पौदे हैं। प्रकाश के बिना पौदे ? यह नामुमकिन है ! प्रसंगवश, मैं यह भी बतला दूं कि सागर की तलैटी से अव रक्त प्रकाश निकल रहा है। क्या अल्ब्यूमिन (albumen) का निर्माण करने, तथा कार्बन डाई ऑक्साइड का विच्छेदन (decompose) करने के लिए अव रक्त किरणों की ऊर्जा से काम लिया जा सकता है ? यहां ऊर्जा अधिक नहीं है इसलिए उसका संचय करना आवश्यक होता है। लेकिन पृथ्वी की हरी पत्तियां भी ऊर्जा का संचयन करती हैं। वास्तव में दृश्य किरणें कार्बन-डाई-ऑक्साइड का विच्छेदन अपने-आप नहीं करती।

"मुझे कुछ देर हो गयी," बाबा ने फिर बात शुरू की। "मैं तलैटी के सेवारों में फंस गया हूँ। अब मैं आराम से अपने इर्द गिर्द देख सकता हूँ। मुझे अधिकाधिक विश्वास होता जा रहा है कि मेरे नीचे पौदे हैं। यह देखो एक मोटी बेसिर की मछली है जो कोंपलों को चुन रही है। एक दूसरी मछली ने—जिसके दांत हैं और जो लम्बी है—उस मोटी मछली को पकड़ लिया है और उसे लेकर ऊपर की तरफ तैर गयी है। भोजन का प्रवाह यहां तलैटी से, यानी नीचे से सतह की तरफ, यानी ऊपर की तरफ होता है। चमकीली चिड़िया को सबसे बाद में भोजन प्राप्त होता है।"

एक चरोचने और धातु के ऊपर ठक-ठक किये जाने की धीमी-सी आवाज आयी। इसका क्या मतलब हुआ ?

"गहोर मण्डल (bathysphere) अपनी जगह से हट गया है" बाबा ने सूचना दी। "उसे किसी चीज ने पकड़ लिया है और नीचे लिये जा रही है। यह क्या है मैं देख नहीं पाता। सामने की रागों

म कोई चीज नही है

"सागर की तलैटी यहाँ से ढलुवी हो गयी है। सेवारा का कोई अन्त नही। लेकिन विचित्र चीज तो यह है कि पौदे सीधी पातो म इस तरह लगे हुए है जिस तरह उन्हे किसी बगीचे मे लगाया जाता है। कोई विशालकाय वस्तु धीरे धीरे चल रही है, रास्त की पूरी पूरी झाडिया को वह जटो से काटती जा रही है। पटू दानव झाडियो को लीलता चला जा रहा है। मैं उसे अच्छी तरह नही देख पा रहा हू, लेकिन बगल म कही, यह जीवित कम्बाइन धीरे धीरे खिसकता हुआ आगे बढता आ रहा है। सामन पत्थरो का एक बडा ढेर है। हम उसके अन्दर से आगे निकल आये है। आगे एक अधेरा गत है। कठोर-मण्डल नीचे डूबता जा रहा है। दाब बढता जा रहा है। अल्विदा ! मास्को को मेरा अभिनन्दन ! !"

एक सैकिण्ड की खामोशी। फिर यकायक एक पुकार, लगभग एक चीत्कार

'छे ! ! !"

घूसो जैसी आवाजा का शोर बढता जा रहा था। साफ था कि पानी कठोर मण्डल के कक्ष मे घुस गया था।

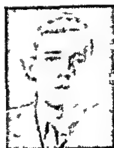
बाबा ने गुटकने की-सी आवाज की। सम्भवत वे कुछ पानी पी गय थे। फिर तजी के साथ लडखडाते शब्दा का एक प्रवाह फूट पडा

"गत की तलटी पर इमारतें हैं ! एक शहर। सडक की रोशनियाँ। एक गुम्मज, अनक मेहराबें ! तरते हुए बगूरे। अजीब तरह के प्राणी वे सब तरफ है क्या वे हो सकते है "

-

व्लादीमीर शावचेन्को

व्लादीमीर शावचेन्को (जन्म १९३३) एक योग्य भौतिक शास्त्री हैं। अर्द्ध चालकों के वे विशेषज्ञ हैं। शावचेन्को का सम्बंध सोवियत वैज्ञानिकों की नयी, अत्यंत प्रतिभाशाली युवा श्रेणी से है। यह श्रेणी अन्वेषण और विनोद (केवल वैज्ञानिक अर्थ में) के लिए नित नयी दुनियाओं की तलाश में रहती है।



कुछ समय पहले शावचेन्को ने एक वैज्ञानिक कहानी 'काले तारे' लिखी थी। इस कहानी में उन्होंने नाभिकीय भौतिकी (nuclear physics) की समस्याओं को लिया था। उनके शब्द चित्र 'राकेट कोई जवाब नहीं है' ने भी काफी प्रसिद्धि प्राप्त की है।

वर्तमान संग्रह में उनकी रचना,'प्रोफेसर बर्न का पुनर्जागरण' दी जा रही है। इसे शावचेन्को ने १९५६ में लिखा था। शायद लोगों को चौंकाकर सही रास्ते पर लाने के लिए ही उन्होंने इस घोर वास्तववादी रचना की भयावह कल्पना की होगी।

लेखक
स्लादीमीर शावचेंको

*

प्रोफेसर वर्न का पुनर्जागरण

१९५२ मे, *जिस समय सारी दुनिया बीसवीं शताब्दी की सबसे बडी* मूर्खता यानी "शीतयुद्ध" की गिरिफ्त मे थी, श्रोताओ के एक विशाल समूह ने प्रोफेसर वर्न को आइन्सटाइन के इन गमगीन शब्दो को उदधृत करते सुना

"तीसरा विश्व युद्ध अगर आणविक बमो से लडा गया तो चौथा विश्व युद्ध गदाओं से लडा जायगा "

यह बात चूकि प्रोफेसर वर्न ने कही थी इसलिए किसी साधारण विनोदपूर्ण शब्दवाक्य से जो प्रभाव पडता उससे कही अधिक सशक्त असर इसका पडा था । प्रा० वर्न को सब लोग "बीसवी शताब्दी के सबसे बडे सयाने वैज्ञानिक" के रूप में जानते थे। उनके उपर्युक्त कथन के बाद पत्रो की झडी लग गयी, लेकिन वर्न उनका जवाब न दे सके । उसी वर्ष की पतझड मे, जब, भू भौतिकी (geophysical) से सम्बंधित अपनी द्वितीय अन्वेषण यात्रा पर, वे मध्य एशिया गए हुए थे तब वहीं उनकी मृत्यु हो गयी ।

उनके इस छोटे-से अभियान के समय उनके एकमात्र साथी— इन्जीनियर निमायर थे । उन्होंने बाद मे उनकी मृत्यु का निम्न विवरण दिया था

"अपने अड्डे को उठाकर हैलीकॉप्टर के ज़रिए हम गोबी रेगिस्तान के अन्दरूनी भाग मे ले गये थे। भूकम्प विद्या सम्बधी (seismological) अन्वेषणो के लिए आवश्यक तमाम औज़ारो तथा विस्फोटक पदार्थों को जब हैलीकॉप्टर पर लाद दिया गया तो उनके साथ साथ प्रोफेसर वन भी पहली ही खेप मे यात्रा पर निकल पडे। बाकी साजो सामान की देख भालके लिए मुझे पीछे रहना था। हैलीकाप्टर जब उडने जा रहा था तभी उसके इजिन म कुछ गडबडी हो गयी। उसने घर घर शोर करना शुरू कर दिया और आखिर मे एकदम बन्द हो गया। हैलीकॉप्टर की रफ्तार म अभी तक तेजी नही आयी थी, इसलिए तेजी के साथ १०० मीटर की ऊँचाई से वह एकदम सीधा नीचे आ गिरा। जमीन से टकराने पर उसमे २ जबदस्त विस्फोट हुए। उसका नीचे आना इतना अचानक हुआ था कि जमीन के साथ उसकी टकराहट की वजह से उसके अन्दर के द्विपरमाणुक के डाइनमाइट (dynamite) का प्रस्फोटन (detonation) हो गया होगा। प्रो० वन, हैलीकॉप्टर, और उसके अन्दर जो कुछ भी था वह सब एकदम नष्ट भ्रष्ट हो गया था "

पत्रकारो के सामने, जिन्हाने उसे घेर रक्खा था, निमायर ने शब्दश यह कहानी दोहरा दी। उसम उसने न कुछ जोडा, न उसमे से कुछ घटाया। विशेषज्ञो को उसकी बात पर यकीन आ गया। वास्तव म, रेगिस्तानी पवतो के ऊपर की हवा गम और विरलित होती है। उसमे अगर कोई लदा हुआ हैलीकाप्टर नीचे गिरने लगे तो वह असाधारण तेजी से गिरता है। इसलिए, जमीन के साथ उसके टकरान से किसी प्रकार का दुखदायी परिणाम निकल सकता है। दुघटना की जाँच-पडताल के लिए जो कमीशन उड कर वहाँ गया या उसन भी इन्ही बातो की पुष्टि कर दी थी। इस बात को केवल निमायर जानता था कि वास्तव म ऐसा नही हुआ था। लेकिन अपनी मृत्यु शय्या पर भी प्रो० वन के भेद को उसने छिपाये रखा था।

अपने निर्दिष्ट लक्ष्य पर पहुँच कर ज्योंही पहले के एक अभियान के समय के पड़ाव का पता उन्होंने पा लिया, त्यों ही अपनी नोट बुक के उस पृष्ठ को प्रो० वन ने जला दिया जिस पर इस स्थान की ठीक-ठीक स्थिति लिखी थी। आसपास के स्थानों में घोर रेगिस्तान में इस स्थान में अब केवल एक ठूंठ रह गया था और यह यह था कि यहां पर भी घोर निनादर मौजूद थे। वे लोग तम्बू के बाहर आराम कुर्सियां डालकर पैर पसारे हुए, उन पर आराम कर रहे थे। थोड़ी ही दूरी पर हैलीकॉप्टर का रुपहला कवच (ढांचा) तथा उसके नोदकफल (propeller blades) धूप में चमक रहे थे। वह एक ऐसी विशालकाय मक्खी की तरह लगता था जो वहां आकर रेगिस्तान की बालू पर बैठ गयी थी। सूर्य की अन्तिम किरणें लगभग क्षितिज पर थीं। उनकी वजह से बालू के टिब्बों पर प्रो० वन के तम्बू तथा हैलीकॉप्टर की विचित्र प्रकार की लम्बी लम्बी परछाइयां पड़ रही थीं।

प्रोफेसर वन लेटे लेटे कह रहे थे,

'मध्य युग में एक बार एक डाक्टर ने जीवन को अनिश्चित काल तक लम्बा बनाने का एक सरल उपाय बताया था। उसने कहा था

६

इसके लिए सिफ चाहिए यह कि ठण्डा करके आप अपने को जमा लें और फिर उसी अवस्था म कही किसी तहखाने के अन्दर ९० या १०० वप तक के लिए पड जायें। उसके बाद जब जरूरत हो आप अपने को गम कर लें और फिर जिन्दा हो जायें। आप की मर्जी हो तो दस वप तक आप एक शताब्दी मे रहें और फिर, अच्छे समय के आने तक, ठडा करके अपने को जमा लें यह सही है कि, किसी वजह से, वह डाक्टर स्वयम् हजार वप तक और जिन्दा रहने की अभिलाषा नही रखता था। साठ वप पूरे करने के बाद वह प्राकृतिक मृत्यु स मर गया था।"

बन ने अपनी आखो को भीचा। उनम कुतूहल भरी हुइ थी। फिर उन्होंने अपने सिगरेट होल्डर को साफ किया और उसम एक और सिगरेट लगा कर जला ली। तब बाल,

"हूँ, मध्ययुग हमारी अविश्वसनीय बीसवी शताब्दी मध्ययुगो के विचित्र से विचित्र विचारो को भी कार्यान्वित करने के काम म जुटी हुई है। पारस पत्थर की जगह अब रेडियम ढूढ लिया गया है जिससे पारा अथवा शीशे को सोने मे बदला जा सकता है। अभी तक सतत गति का आविष्कार हमने नही किया है—वह प्रकृति के नियमो के सवथा विरुद्ध है, लेकिन नाभिकीय ऊर्जा के शाश्वत तथा स्वयम अपना प्रत्युद्धार कर लेने वाले स्रोतो को हमने ढूढ निकाला है और फिर, उनका वह दूसरा विचार भी हमारे सामने मौजूद है १६६६ मे लगभग सारे योरप मे ससार के अन्त की घोर आशका फली हुई थी। उसका कारण यह था कि ६६६ के अक के साथ लोग किसी गुप्त और अशुभ चीज का सम्बध जोडते थे और उनका अध विश्वास था कि ईश्वरीय पुस्तक मे इसी का विधान था। परन्तु आज परमाण्विक तथा हाइड्रोजन बमो की वजह से ससार के विनाश के भय के लिए एक ठोस आधार तैयार हो गया है। लेकिन हम फिर "जमन" वाली बात,

प्रशीतन वाली बात को ले लें मध्ययुगीन डाक्टर की उस सीधी सादी कल्पना मे आज वैज्ञानिक तत्व पड गया है। तुमने अनाबियोसिस (anabiosis) की क्रिया के बारे मे सुना होगा, सुना है न? उसकी खोज लीयू वेनहूक ने १७०१ मे की थी। उसका मतलब होता है प्रशीतन अथवा निर्जलीकरण के द्वारा जीवन की प्रक्रियाओ को धीमा कर देना। तुम जानते ही हो कि शीत तथा आर्द्रता (humidity) की अनुपस्थिति स तमाम रासायनिक एव जीवशास्त्रीय प्रक्रियाओ की गति बहुत धीमी हो जाती है। मछलियो और चमगीदडो का अनाबियोसिस करन म तो वैज्ञानिक बहुत पहले ही सफल हो गये थे। शीत उनको मारती नही, बल्कि उनकी सरक्षा करती है। निस्सन्देह, शीत साधारण ही होनी चाहिए। फिर एक और अवस्था होती है—लाक्षणिक मृत्यु (clinical death) की। बात यह है कि जब हृदय की गति रुक जाती है, अथवा साँस बन्द हो जाती है तो पशु अथवा मानव प्राणी तुरन्त नही मर जाता। ऐसा कदापि नही होता। पिछले युद्ध के दिनो म डाक्टरो को लाक्षणिक मृत्यु का गम्भीरता स अध्ययन करन का काफी अवसर मिला था। सगीन रूप से घायल कई आदमियो को, उनके दिल की धडकन के बन्द हो जाने के कई मिनट बाद भी, फिर म जिन्दा कर लिया गया था, और, याद रखना, वे घातक रूप स घायल आदमी थे! तुम भौतिकी विज्ञ हो और शायद इस सबको नहीं जानते "

"मैने इसके बार म थोडा-बहुत सुना है,' निमायर ने सिर हिलात हुए कहा।

"उसके साथ जब डाक्टरी नाम 'लाक्षणिक' जोड दिया जाता है तो 'मृत्यु शब्द' का डर कुछ कम हो जाता है, है न? दरहकीकत जीवन और मृत्यु के बीच कई बीच की अवस्थाएँ होती हैं और, निद्रालुता (तन्द्रा) तथा अनाबियोसिस की अवस्थाएँ। इन अवस्थाओ

म मानवी शरीर की क्रियाए उसकी जाग्रतावस्था की तुलना मे धीमी हो जाती है। पिछले कुछ वर्षो से, मैं इसी विषय के सम्बध म काम कर रहा हूँ। शारीरिक क्रियाओ को अधिकतम सीमा तक मद्धिम कर दन के लिए अनाबियोसिस की क्रिया को उसकी चरम अवस्था तक अर्थात लाक्षणिक मृत्यु की अवस्था तक ले जाना होता है। ऐसा करने मे मैं कामयाब हो गया हूँ। इसके लिए सबसे पहल मेढको, खरगोशा, और वण्टमूषा (गिनिया पिग्स) को अपने जीवन की बलि चढानी पडी थी। बाद मे, जब शीत से जमाने (हिमीकरण) का नियम और उसकी विधि एकदम स्पष्ट हो गयी थी तब मैंने अपनी मादा चिम्पैंजी मीमी का थोडी देर के लिए 'मार देने का जोखिम उठाया था।"

"हाँ, हा, उसे ता मैंने भी देखा है,' निमायर ने सोत्साह कहा। "वह बहुत ही हँसमुख जीव ह। चीनी के डल्ल को माँगती हुई कुर्सी-कुर्सी कूदती फिरती है।'

"तुम ठीक कहते हो" बन न गम्भीर होते हुए कहा। "लेकिन चार महीन तक मीमी को मैंने मुर्दा रखने के एक छोटे से बक्स म डाल रक्खा था। उसके चारो तरफ नियत्रक औजार थे और उसे लगभग हिमाक (freezing point) तक ठडा कर दिया गया था।"

काँपती हुई अगुलिया से बन ने अपन होल्डर म दूसरी सिगरेट लगा ली। फिर उन्होंने कहा "अन्त म, फिर वह सबसे महत्वपूण और आवश्यक परीक्षण आया जब मैंने खुद अपने ऊपर प्रयोग किया, पूरे तौर से मैने अपनी अनाबियोसिस कर ली। यह पिछले वप की बात है। तुमने शायद सुना हो कि उन दिनो यह खबर फल गयी थी कि प्रोफेसर बन बहुत बीमार है। वास्तव मे बात इससे कही अधिक गम्भीर थी। पूरे छै महीने तक मैं 'मरा हुआ' था। और मैं तुमसे कह सकता हूँ, निमायर कि एसे समय मे आदमी एक अत्यन्त विचित्र प्रकार की सम्वदना का अनुभव करता है—अगर किसी भी प्रकार की

सम्वेदना की अनुभूति के पूर्ण अभाव को इस प्रकार कहा जा सके। साधारण नींद के समय, चाहे देर से ही क्या न हो, समय की लय-ताल का हमें कुछ न कुछ प्रतिबोध होता रहता है। लेकिन उस समय ऐसा कुछ नहीं होता था। उस समय कुछ वैसी ही अनुभूति हो रही थी जैसी कि नशे की वजह से अचेत होने समय इन्सान को होती है। वह अचेत हो जाता है, उसके बाद पूर्ण खामोशी छा जाती है और चारों तरफ अंधकार के अलावा और कुछ नहीं रह जाता। उसके बाद मैं जीवितावस्था मे वापिस लौट आया था। तुम्हें यह भी बता दूँ कि, उधर—दूसरे लोक मे, कुछ नहीं था "

वन आराम से बैठे हुए थे। उनके पैर कुर्सी पर पड़े थे। उनकी पतली, धूप मे सांवली हो गयी भुजाएँ उनके सिर के पीछे रक्खी हुई थी। चश्मे के लेन्सों के पीछे उनकी आँखें उदास-सी लग रहीं थीं।

'सूर्य प्रकाश का एक गोला, जो इस अनन्त वाले आकाश के मात्र एक कोने को क्षीण ढंग से आलोकित कर रहा है। उसके चारों तरफ दूसरे गोले हैं, उससे छोटे और ठण्डे। उनके ऊपर का सारा जीवन केवल सूर्य पर निर्भर करता है और फिर, इन्ही मे से एक गोले पर मानव-जाति का—सोचने वाले प्राणियों के कबीले का जन्म हो गया! मानव-जाति का जन्म कैसे हुआ था? इसके बारे में अनगिनत किंवदन्तियाँ, कथाएँ तथा परिकल्पनाएँ हैं।

'लेकिन, एक चीज निश्चित है मानव-जाति के जन्म के लिए किसी जबर्दस्त महाप्लाव की जरूरत पड़ी होगी। उसके लिए हमारे ग्रह पर कोई ऐसी विराट भूगर्भीय उलट-पलट हुई होगी जिसने उस समय तक के सर्वोच्च प्राणियों, अर्थात् वानरों के जीवन की परिस्थितियों को एकदम बदल दिया था। आम राय यह बनी है कि ग्लेशियरीकरण (glaciation) ही वह घटना थी जिसने यह सब कर दिया था।

उत्तरी गोलार्ध के तेजी से ठण्डे हो जाने की वजह से, पौदों के भोजन का अकाल उत्पन्न हो जाने की वजह से, उच्चतर वर्ग के वानरों को मांस की प्राप्ति के लिए पत्थर और गदाएँ उठाने के लिए बाध्य हो जाना पड़ा था। इसकी वजह से उन्हें अपने को काम करने के योग्य बनाने के लिए बाध्य हो जाना पड़ा था, उन्हें आग से मोहब्बत करना सीखना पड़ा था।"

"ये सब चीजें बहुत सम्भव हैं," सहमति प्रकट करते हुए निमायर ने कहा।

"और हिम नदियां (ग्लेशियर) वहां क्या पैदा हुई थीं? इसका क्या कारण है कि यह रेगिस्तान, और यहां तक कि सहारा का रेगिस्तान, एक समय रेगिस्तान नहीं था, उल्टे, वहां प्राणी और पादप जीवन की भरमार थी? इस प्रश्न का केवल एक ही तर्क-पूर्ण उत्तर मिलता है। इस उत्तर के अनुसार हिमयुग (ice age) का सम्बन्ध पृथ्वी की धुरी की अयनगति (precession) के साथ है। हर ऐंचदार लट्टू की तरह पृथ्वी की घूमती हुई धुरी भी अयन गति करती है। वह धीरे धीरे, बहुत ही धीरे-धीरे परिक्रमाएँ करती है। एक परिक्रमा पूरी करने में उसे छब्बीस हजार वर्ष लगते हैं। इधर देखो," प्रोफेसर ने कहा और दियासलाई की एक सींक निकालकर बालू के ऊपर उन्होंने एक दीर्घवृत्त (ellipse) बना दिया फिर उसके संगम (फोकस) पर एक छोटा-सा सूर्य तथा तिरछी धुरी वाला एक नन्हा-सा पृथ्वी का गोला बना दिया। फिर वे बोले, "जैसा कि तुम जानते हो, पृथ्वी की धुरी दीर्घवृत्त की धुरी की ओर झुकी हुई है। उसके साथ वह २३°२७' का कोण बनाती है। और पृथ्वी की धुरी आकाश में जो कोन (cone—शंकु) बनाती है—उसका केन्द्रीय कोण इस प्रकार का है जो चीज़ लोगों को युगों से ज्ञात है उसी को फिर से बनाने के लिए तुम मुझे माफ कर दोगे, यह मैं जानता हूँ। लेकिन,

निमायर, मेरे लिए यह चीज महत्वपूर्ण है। दरअसल, मेवाड़ धुरी का नहीं है। वह तो पृथ्वी में है भी नहीं। वास्तव में, महत्वपूर्ण चीज यह है कि एक हजार वर्ष के अन्दर सूर्य से सम्बंधित पृथ्वी की सापेक्ष स्थिति में परिवर्तन पैदा हो जाते हैं!

"देखा, चालीस हजार वर्ष पहले, दक्षिणी गोलार्ध का रुख सूर्य की तरफ़ था और यहाँ, उत्तर में, बर्फ ने चलना शुरू कर दिया था। भिन्न भिन्न स्थानों में—सम्भवतः मध्य एशिया के भिन्न भिन्न स्थानों में—मानव-वानरों के कबीले पैदा हो गये थे। अत्यंत कठोर भौगोलिक परिस्थितियों ने उन्हें यूथों (झुण्डों) में रहने के लिए मजबूर कर दिया था। पुरःसरण (precession) के इसी चक्र में प्रथम संस्कृतियों का उदय हुआ था। तेरह हजार वर्ष बाद सूर्य के साथ उत्तरी और दक्षिणी गोलार्धों का सम्बंध परस्पर बदल गया—उन्होंने एक दूसरे का स्थान ले लिया। अब दक्षिणी गोलार्ध में भी मानव-वानरों के कबीलों का जन्म हो गया।

"उत्तरी गोलार्ध में अगले हिमयुग का बारह या तेरह हजार वर्ष बाद सूत्रपात होगा। मानव-जाति अब अतुलनीय रूप से कहीं अधिक शक्तिशाली बन गयी है। अब वह इस खतरे का अच्छी तरह सामना कर सकती है अर्थात्, अगर मानव-जाति जिन्दा बनी रही! लेकिन, मुझे तो लगता है कि, तब तक वह अवश्य ही अस्तित्व विहीन हो जायगी! निरन्तर बढ़ती हुई रफ्तार से हम स्वयं अपने अन्त की ओर दौड़ते जा रहे हैं यह रफ्तार आधुनिक विज्ञान की वजह से सम्भव हो गयी है। मैं दो विश्व युद्धों को देख चुका हूँ। पहले में मैं एक सिपाही था, दूसरे के समय—मैं मैदानिक में था। आणविक तथा हाइड्रोजन बमों के परीक्षणों को भी मैंने अपनी आँखों से देखा है। उनके परीक्षणों के समय मैं उन्हीं के नजदीक मौजूद रहा हूँ! फिर भी तीसरा विश्व युद्ध किस तरह का होगा इसकी मैं कल्पना नहीं

कर सकता ! उसके बारे म सोचना भी भयकर है ! किन्तु इससे भी बदतर तो वे लोग है जो, वैज्ञानिक दूरदर्शिता के साथ, भविष्यवाणी करते हुए घोषणा करते है कि युद्ध इतने महीना के अन्दर शुरू हो जायगा, दुश्मन के औद्योगिक केन्द्रा को सामूहिक आणुविक प्रहार से उडा दिया जायगा, चारो तरफ विशाल रेडियम धर्मी(विकिरणशील) रेगिस्तान बन जायेंगे ! कुछ वैज्ञानिक इसी तरह की बातें कर रहे ह ! कुछ तो इससे भी आगे जाते है। वे इस बात का हिसाब लगाने की कोशिश कर रहे ह कि विकिरण के द्वारा पृथ्वी, पानी और हवा को अधिक से अधिक कारगर ढग से किस प्रकार जहरीला बनाया जा सकता है ! हाल मे मैंने अमरीका के एक वैज्ञानिक की पुस्तक पढी थी जिसमे सप्रमाण बताया गया था कि अधिक से अधिक विकिरण शील मिट्टी की सृष्टि करने के लिए आवश्यक है कि आणुविक बम को जमीन के अन्दर कम से कम पचास फुट गहरे भेजा जाय ! यह एक डरावनी वैज्ञानिक कल्पना है !"

वन तेजी से उठकर खडे हो गये। अपने सिर को व दोना हाथा से पकडे हुए थे।

सूय डूब चुका था और गम रात शुरू हो गयी थी। धुधले नीले, तजी से काले होत हुए आकाश मे कुछ शान्त, क्षीण तारे लटके हुए दिखलायी दे रहे थे। रेगिस्तान भी काला था। केवल तारा की वजह से आसमान रेगिस्तान स कुछ भिन्न मालूम पडता था।

प्राफेसर धीरे धीरे शान्त हो गय। एक गम्भीर लगभग निभाव स्वर म वे एसी ही बातें करते रहे। इतनी गर्मी थी, फिर भी प्राफेसर जो कुछ कह रह थे उसे सुन कर निमायर क बदन म कँपकपी दौड गयी।

व कह रहे थे,

के समय तक उच्चतर वर्ग के वानर इतने काफी विकसित हो जायगे कि वे सोचना शुरु कर देंगे । इस भांति, मानव-जाति की एक नयी नस्ल का उदय हो जायगा । आओ, हम आशा करें कि वह हमारी वर्तमान नस्ल से अधिक सौभाग्यशाली होगी ।"

"लेकिन, जरा रुकिए तो, प्रोफेसर ।" निमायर ने उन्हे टोकते हुए कहा । "आखिर, हम सब के सब आत्मघाती पागल तो नही है !"

"यह तुम ठीक कहते हो," अर्थ पूर्ण ढग से मुस्कुराते हुए बन ने सहमति प्रकट की ।" लेकिन एक पागल आदमी भी इतना अधिक नुक्सान कर सकता है कि फिर उसे हजारो समझदार आदमी भी न सभाल सकें । मैंने तय कर लिया है कि नयी मानवी नस्ल के जन्म के समय मैं मौजूद रहूँगा । मेरे यन्त्र के समय योजित्र (time relay) मे कार्बन का एक रेडियम धर्मी समस्थानिक (isotope) है । इसका अर्ध-काल लगभग आठ हजार वर्ष है ।"—बन ने गढे की तरफ इशारा करते हुए कहा । "योजित्र इस तरह से लगाया गया है कि उसे खत्म होने मे १८० शताब्दियाँ लगेंगी । उस समय तक समस्थानिक की विकिरण शीलता इतनी कम हो जायगी कि विद्युतदर्शी की पट्टिकाएँ (plates of electroscope) अलग-अलग हो जायेंगी तथा परिपथ को पूरा कर देंगी । तबतक मृत मरभूमि मे एक बार फिर उपोष्ण-कटिबन्धीय प्रदेशो वाली घनी हरियाली लहलहा उठेगी और नये मानव-समो के जीवन के लिए अत्यत अनुकूल परिस्थितियाँ पैदा हो जायेंगी ।"

निमायर उद्वेग से उठ कर खडा हो गया ।

"माना कि जगबाज पागल हैं । लेकिन आप और आपकी योजना का क्या होगा ?" उत्तेजना भरे स्वर मे उसने कहा । "आप अपने को अट्ठारह हजार वर्षों के लिए शीत से जमा लेना चाहते हैं !"

"लेकिन केवल 'जम जाने' की बात क्या करते हो ?" शान्त भाव से आपत्ति करते हुए वन ने कहा। "यहाँ हमारे पास तो मृत्यु को उलट देने की एक पूरी योजना है आदमी को ठंडा करना, आहिस्ता से सुला देना, फिर उसके अन्दर प्रति-जीविता की स्थिति उत्पन्न करना "

"लेकिन यह तो सीधे-सीधे आत्म-हत्या करना है!" निमायर ने जोर से कहा। "इसके विषय में आप मुझे कभी कायल नहीं कर सकेंगे। प्रोफसर, अब भी बहुत विलम्ब नहीं हुआ है।"

"नहीं। दूसरे जटिल प्रयोगों में जितनी जोखिम होती है उससे अधिक जोखिम इसमें नहीं है। तुम स्वयं जानते हो कि साइबेरिया के टुण्ड्रा की शाश्वत हिम की तहों में से चालीस वर्ष पहले एक विशालकाय जानवर का शव निकला था। उसका मांस इतनी अच्छी हालत में था कि कुत्ता ने उसे मजे से खाया था। अगर किसी विशाल जानवर का शव आकस्मिक, प्राकृतिक परिस्थितियों के अन्तर्गत दसियों हजार वर्ष तक इस प्रकार ताजा बना रह सकता है तो वैज्ञानिक रूप से निर्धारित की गयी, परीक्षित परिस्थितियों में मैं क्यों नहीं अपने को सुरक्षित रख सकता? और तुम्हारे नवीनतम अर्ध-चालक तापीय-तत्वों (semi-conducting thermo-elements) की वजह से यह सम्भव हो गया है कि ऊष्मा को सरलता तथा पूर्ण विश्वास के साथ विद्युत-धारा में परिवर्तित कर लिया जाय और, साथ ही साथ, उससे शीतलता पैदा कर ली जाय। मेरा खयाल है कि ये तापीय तत्व अट्ठारह हजार वर्षों तक मुझे धोखा नहीं देंगे, ठीक है न ?"

निमायर ने कन्धे उचकाते हुए कहा,

"निःसन्देह, तापीय तत्व तो आपको धोखा नहीं देंगे। उनकी रचना एकदम सरल है और गढ़े के अन्दर की परिस्थितियाँ जो जितनी अच्छी हो सकती हैं उतनी अच्छी हैं। ताप का उच्चावचन (fluctuation)

उसके अन्दर बहुत थोडा है और नमी जरा भी नहीं है सविश्वास कहा जा सकता है कि कम से कम उतने समय तक तो ये परिस्थितियाँ बनी ही रहगी जितन समय तक वह विशाल जानवर पडा रहा था। लेकिन, बाकी औजारो के बारे मे क्या कहा जा सकता है ? उनकी क्या स्थिति होगी ? अट्ठारह हजार वर्षो म अगर उनम से एक भी टूट गया तो . "

अपन हाथ-पैर सीधे फैलाकर बन ने अँगडाई ली और फिर तारा-भरी रात की ओर देखते हुए और भी अच्छी तरह आराम से लेट गये। तब बोले,

"दूसरे औजारो को इतने दिना तक चलने की कोई जरूरत नही होगी। उन्ह केवल दो बार काम करना होगा कल सुबह और फिर अट्ठारह हजार वर्ष बाद, उस समय जिस समय कि हमारे ग्रह पर जीवन के नये चक्र का सूत्रपात होगा ! शेष सारे समय वे भी मेरी तरह कोठरी के अन्दर सुरक्षित बन्द रहेंगे !"

"प्रोफेसर, सच-सच बताइए, क्या अब भी आप सचमुच विश्वास करते ह कि हमारी मानवी नस्ल का अन्त हो जायगा ?"

"इस चीज पर विश्वास करना बहुत भयानक लगता है," बन ने उदास भाव से कहा । "लेकिन मनुष्य होने के साथ-साथ मैं एक वैज्ञानिक भी हूँ और मैं वास्तविकता को स्वय देखना चाहता हूँ। अच्छा, अब उठो, हम थोडा आराम कर लें। कल हम बहुत काम करना होगा।

बहुत थका होने पर भी, निमायर को अच्छी तरह नीद न आयी। इसका कारण चाहे गर्मी रही हो, चाहे प्रोफेसर की बातो का प्रभाव, किन्तु उसका मस्तिष्क बहुत उद्वेलित था और उसे नींद नहीं आ रही थी।

सूर्य की पहली किरणों के तम्बुओं पर पड़ते ही वह उठ गया—जैसे उसे मुक्ति मिल गयी हो। वन उसके पास ही पड़े हुए थे। उन्होंने भी तुरन्त आँखें खोल दीं।

"काम शुरू कर दिया जाय ?"

गड्ढे की तलहटी की शीतल गहराइयों के अन्दर से साधारण रूप से नीले आकाश का एक अंश दिखलायी दे रहा था। जमीन के नीचे जाकर वह सँकरा गड्ढा चौड़ा हो गया था। उसके एक कोने में वह यंत्र रखा हुआ था जिसे निमायर और वन पिछले कुछ दिनों से वहाँ लगा रहे थे। तापीय तरंगों के मजबूत बेलुन गड्ढे की ढलुई दीवारों के अन्दर से आये थे।

कक्ष में लगे तमाम औजारों के काम की वन ने अन्तिम बार परीक्षा की। उनके आदेश पर, गड्ढे के ऊपरी भाग में निमायर ने एक छोटा-सा सन्दूक बना दिया। फिर उसमें एक चीज रख दिया और उसके तार को सेल से जोड़ दिया। तैयारियाँ जब पूरी हो गयीं तब वे बाहर निकल आये।

प्रोफ़ेसर ने एक सिगरेट जलायी और चारों तरफ देखने लगे।

'रेगिस्तान आज कितना सुन्दर लग रहा है, है न? मेरे प्रिय साथी अब यही निर्णय रह गया है! कुछ ही घण्टों के अन्दर जगत जीवन का मैं स्वयं अन्त कर दूँगा! इसी चीज को मैं इसी ढंग से तुम आत्महत्या कहते हो! वस्तुओं को जरा और गहरी दृष्टि से देखो। जीवन एक पहेली है, लोग निरन्तर उसके अर्थ का पता लगाने का प्रयत्न करते रहते हैं—समय की अनन्त धारा में यह केवल एक छोटा-सा बुलबुला है। जीवन को अब दो 'बुलबुलों' का हो जाने दो। आओ, अब दिन के एक दो काम तो शुरू कर दो!

छोटी मोटी चीजो के बारे मे बात करने का तो हम कभी मौका ही नही मिला है !"

निमायर ने अपना ओठ काट लिया । क्षण भर तक वह कुछ न बोल सका । फिर आहिस्ता-आहिस्ता उसने कहना शुरू किया

"मेरी समझ मे नही आता कि क्या कहूँ ! मैं अब भी विश्वास नही कर पाता कि आप सचमुच यह सब करने जा रहे है । आप ऐसा करेंगे, इस बात पर विश्वास करने मे मैं डरता हूँ !"

"हूँ ! तुमने मुझे कुछ शान्त कर दिया है," मुस्कुराते हुए वनने कहा । "जब अपनी चिन्ता करने के लिए कोई और हो, तो इतना बुरा नही लगता । विदा के इन क्षणा को और लम्बा करके एक-दूसर को हम उदास नही बनायेंगे ! जब तुम वापिस पहुँच जाओ तो हैलीकॉप्टर से उसी तरह की दुघटना कर देना जैसी हमने तय की है । यह बात तो मेरे कह बिना भी तुम जानते हो कि इसे गुप्त रखना ही इस परीक्षण की जान है । दो हफ्ता मे पतझड आ जायगी और बालू के तूफान फिर उठने लगेंगे । अलविदा ! देखो, मेरी तरफ इस तरह से मत दखो मैं तुम सबके बाद तक जिन्दा रहूँगा !"

प्रोफेसर ने निमायर के साथ हाथ मिलाया ।

"इस कक्ष म तो शायद एक ही आदमी समा सकता है," निमायर ने उद्वेग से भरकर कहा ।

"हाँ, केवल एक !" वन के चेहरे पर स्नेह-पूण सहानुभूति का गहरा भाव था । वे कहते गये "मुझे लगता है जसे इस बात का मुझे अफसोस हो रहा है कि मैंने तुमको पहले ही क्यो नही राजी करने की कोशिश की थी ।"

फिर, सीढ़ी पर एक पैर रखते हुए, उन्होंने कहा "पाँच मिनट के अन्दर तुम इस गड्ढे से एकदम दूर चले जाना।" उनका सफेद सिर गड्ढे के अन्दर गायब हो गया।

बन ने कक्ष का दरवाजा अन्दर से बन्द कर लिया। अपने कपड़े उतार कर नानाखोरो-जैसा एक सूट उन्होंने पहन लिया। इस सूट में अनेक नलियाँ लगी हुई थीं। इसके बाद वे जमीन पर प्लास्टिक के गद्दे पर लेट गये। गद्दा इस तरह बना हुआ था कि उनके शरीर की रूप रेखा पर वह बिल्कुल फिट बैठ जाता था। उन्हें कहीं कोई तकलीफ नहीं हो रही थी। सामने के नियंत्रण पट्ट (*control panel*) पर लगी संकेत की रोशनियाँ बता रही थीं कि औजार काम के लिए तैयार हैं।

टाइम की बत्ती (फ्यूज) के बटन को टटोल कर उन्होंने उस पर हाथ रख लिया। एक क्षण हिचकिचाये फिर उसे उन्होंने दबा दिया। एक हल्का-सा कम्पन हुआ, किन्तु तहखाने की कोठरी के अन्दर कोई आवाज नहीं पहुँची। गड्ढा अब ऊपर से पट गया था। एक अन्तिम प्रयास के द्वारा बन ने ठण्डा करने वाले यन्त्र और मादक-द्रव्य पहुँचाने वाले पम्पों को चला दिया, अपनी भुजा को गद्दे में बनी उसकी उपयुक्त जगह में रख दिया, ऊपर छत में लगे एक छोटे चमकते गोले के ऊपर अपनी दृष्टि जमा ली, और स्थिर गति से सेकिण्डों की गिनती करने लगे

ऊपर, सतह पर, निमायर ने विस्फोट की एक हल्की-सी आवाज सुनी और देखा कि बालू और धूल का एक स्तम्भ हवा में ऊपर उड़ा जा रहा है। बन की तहखाने वाली कोठरी अब पृथ्वी के नीचे ४५ फुट की गहराई में दब चुकी थी। निमायर ने आस-पास देखा। एकदम खामोश रेगिस्तान में साँय साँय हो रहा था। फिर वह धीरे धीरे हैलीकॉप्टर की ओर चल पड़ा।

हैलीकॉप्टर को जान-बूझ कर उड़ा देने के लगभग ५ दिन बाद वह एक मंगोलियाई बस्ती मे जा पहुंचा।

ठीक एक हफ्ते बाद पतझड़ की हवाएँ चलने लगी। बालू की पहाड़ियो को रगिस्तान के एक भाग से उड़ाकर दूसरे भाग मे पहुँचाना उन्होने शुरू कर दिया। उस खन्दक के तमाम चिह्न मिट गये। बालू ने, जो समय की ही तरह अन्तहीन थी, बन के छोटे से अन्वेषण दल के अन्तिम कैम्प का पाट कर बराबर कर दिया। ऐसी कोई चीज शेष नही रह गयी जिससे वह स्थान आस पास के स्थानो से किसी भी प्रकार भिन्न या विशिष्ट लगता।

२

धीरे धीरे अन्धकार के अन्दर से झिलमिलाती हुई, विसरित सी एक हरी रोशनी दिखलायी पड़ी। जब वह स्थिर हो गयी, तब प्रोफेसर बन ने समझा कि यह रेडियम धर्मी याजिन (relay) का सकेत लम्प है। इसके मान कि उसन ठीक-ठीक काम किया है।

उनका सचेत मस्तिष्क धीरे धीरे और भी साफ हो गया। उन्होन देखा कि उनकी बायी तरफ था अनन्तकालीन घड़ी के विद्युत दर्शी की गिरी हुईं पट्टिकाएँ पड़ी थी। घड़ी १९' और '२० के बीच इगित कर रही थी। 'बीसवी सहस्त्राब्दि का मध्य काल!"—उनके मस्तिष्क ने कहा। तो वह ठीक-ठीक काम कर रहा था। वे किंचित उद्वेलन की सी सम्वेदना का अनुभव कर रहे थे।

"अब शरीर की परीक्षा की जाय।' सावधानी स उन्होने अपने हाथो, परो और गदन को हिलाया, अपन मुह को खाला और बन्द किया।

शरीर भी ठीक से काम कर रहा था, सिवा दाहिने पैर के जो अब भी सुन्न था। स्पष्ट था कि वह 'सो गया है", अथवा तापमान अत्यधिक तेजी से बढ़ गया है। अपने को गर्म करने के लिए अपने अंगों को उन्होंने तेजी से हिलाया-डुलाया। फिर वे उठकर खड़े हो गये। उन्होंने औज़ारों पर एक नज़र डाली और देखा कि वोल्टमापियों की सुइयाँ नीची हो गयी थीं। साफ था कि तुषार को हटाने की क्रिया में संचायक (accumulators) कुछ खाली हो गये थे। वन ने तमाम तापीय बैटरियों को चला दिया। सुइयाँ फौरन हिल उठीं और ऊपर की ओर चढ़ने लगीं। तुरन्त उनका ख्याल निमायर की तरफ गया। तापीय तत्वों ने उन्हें धोखा नहीं दिया! उनकी स्मृति में तभी एक विचित्र, पीड़ा-भरी, दोहरी चिन्तनधारा उन्मुक्त हो उठी "लेकिन निमायर को हुए तो युग बीत गये! अब वहाँ कोई जिन्दा नहीं है "

उनकी नज़र फिर छत पर लगे धातु के गोले की तरफ गयी। वह धुंधला था उसमें ज़रा भी चमक नहीं थी। वन अधीर होने लगे। उन्होंने फिर वोल्टमापियों की ओर देखा संचायकों में चार्ज अच्छी तरह से नहीं भर रहा था। लेकिन अगर तापीय बैटरियों को भी चला दिया जाय तो ऊपर सतह तक आने के लिए काफी शक्ति उत्पन्न हो जायगी। उन्होंने अपने कपड़े बदले और कक्ष की छत में लगे फूट द्वार में निकलकर, उसके स्वचालित पेंच की मदद से, ऊपर पहुँच गये।

उन्होंने स्विच को चालू कर दिया। बिजली के मोटर घरघराते हुए चलने लगे। उनके मैं पेंच ने ज़मीन के अन्दर छेद करना शुरू कर दिया था। कक्ष का फ़र्श थोड़ा-सा हिला। वन ने जब यह देखा कि कक्ष ने धीरे धीरे ऊपर की ओर उठना शुरू कर दिया है तो उन्हें बहुत राहत मिली .. "

आखिरकार, धातु की टक्कर से पत्थरों में होने वाली किरकिराने

की सूखी आवाज का अन्त हो गया। ढक्कन सतह पर पहुँच गया था। एक विशेष चाभी की मदद से बन न दरवाज़े की ढिबरियो को खोलन की चेष्टा की, किन्तु उन्ह खोलना इतना आसान न था। उन्होने अपनी अँगुलियो मे चाट लगा ली। दरवाज़े की एक दरार म से शाम की नीली नीली सी रोशनी दिखलायी द रही थी। प्रोफेसर ने थोडी और कोशिश की और वे ढक्कन से बाहर निकल आय।

शाम अभी ही हुई मालूम पडती थी। गोधूलि की वेला थी। उसके अँधियारे म चारो तरफ एक आलोक हीन, मौन जगल का विस्तार था। ढक्कन का नकु एक पेड की जडो के पास जमीन से ऊपर निकल आया था। पेड क विशाल तन के ऊपर आसमान तक पत्तियो का एक घना वितान फला हुआ था। उसके ऊपर आकाश का रग काला होता जा रहा था। यह सोचकर कि व कितनी वडी विपत्ति से बाल बाल बच गये है बन के रोगटे खडे हो गये अगर वह पेड सिफ आधा ही गज बायी तरफ होता ? व पेड के पास गये और उसे स्पश करन लगे। उसकी फूली हुई खुरदुरी छाल गीली थी। यह किस प्रकार का पेड है ? इसे जानने के लिए उन्ह सुबह तक इतजार करना होगा।

प्रोफेसर बन अपन कक्ष के आवरण के अन्दर लौट आये। व देखने लगे कि उनके पास क्या-क्या सामान था। उन्होने देखा कि उनके भोजन और पानी के डिब्बे उनका दिक-सूचक यन्त्र तथा रिवाल्वर—सब ठीक हालत म थ। उन्होन एक सिगरट जलायी। "यहा तक ता मरा खयाल बिल्कुल सही निकला है, —सबसे ऊपर उनक दिमाग म यही बात घूम रही थी। 'रेगिस्तान जगल स ढक गया है। अब जरा दखू कि रेडियम घर्मी घडियो न भी ठीक समय रक्खा है, या नही। लेकिन कैसे ?"

पेड बहुत घन नहा थे। आकाश म ऊपर चमकते सितारे उनके

बीच से साफ-साफ दिखलायी दे रहे थे। बन ने ऊपर देखा और उनके दिमाग में एक और विचार कौंध गया अब प्रथम अभिजित (Vega) को 'ध्रुव तारा' होना चाहिए।

उन्होंने अपने दिक् सूचक को उठा लिया और किसी नीची डालों वाले पेड़ की तलाश में अँधेरे में ही चल दिये। एक पेड़ पर चढ़ना शुरू कर दिया। पेड़ की डालें उनके वजन से झुक रही थी और उनके हिलने डुलने की सर-सर आवाज से भयभीत होकर एक पक्षी, जोर से आवाज करता हुआ और बन के गाल पर जोरों का एक प्रहार करता हुआ, ऊपर उड़ गया। उसकी विचित्र आवाज कुछ देर तक जंगल में गूंजती रही। प्रोफेसर हाँफते हुए ऊपर की एक शाख पर बैठ गये और आसमान की ओर देखने लगे।

अब तक बिल्कुल अंधेरा हो चुका था। उनके सिर के ऊपर जो आकाश फैला हुआ था वह एकदम अपरिचित था। उसमें चमकीले तारों की भरमार थी। उनकी आँखें परिचित तारक-मण्डलों को ढूंढ़ने लगीं सप्तर्षि कहाँ है? और शर्मिष्ठा (Cassiopeia) कहाँ है? वे नहीं हैं। और वास्तव में, वे हो ही कैसे सकते हैं? हजारों वर्ष में तारे अपने स्थानों से हट गये थे और नक्षत्रों के पुराने सब चित्र गड़बड़ हो गये थे। किन्तु तारक-धूलि की पोटली भरी एक पट्टी जो आकाश के एक छोर से दूसरे छोर तक आकाश गंगा अब भी फैली हुई थी। प्रोफेसर बन दिक्-सूचक को अपनी आँखों के समीप ले गये और उत्तर की ओर इंगित करने वाली उसकी क्षीण रूप से चमकती सुई को देखने लगे। अपनी नजर उन्होंने उत्तर की ओर घुमायी। पाले क्षितिज के एकदम ऊपर, जहाँ तारों भरे आकाश का अन्त हो रहा था आकाश का सबसे उज्ज्वल नक्षत्र—प्रथम अभिजित लगभग बिल्कुल निस्तब्ध रात्रि में अपना हल्का प्रकाश को बिखेर रहा था। पास ही छोटे छोटे अन्य तारे चमक रहे थे। उन्हीं में अभिजित (Lyra) का विचित्र तारा मण्डल भी था।

अब तमाम सन्देह मिट गये थे। इसमे कोई सन्देह नही रह गया था कि वन पूर्वायण (precession) के नये चक्र के आरम्भ काल मे—*बीसवी सहस्राब्दि मे—पहुँच गये थे।*

रात उनकी सोचते विचारते ही बीती। उन्हे नीद नही आयी। अधीरता-पूर्वक वे पौ फटने की प्रतीक्षा करने लगे। आखिरकार, तारे मद्धिम पडने लगे और, अन्त मे, वे लुप्त हो गये। पेडो के बीच एक धूमिल पार दर्शी कोहरा छा गया। बन ने अपने पैरो के नीचे की माटी लबी-लबी घास को देखा। उन्हे देखकर आश्चर्य हुआ कि वहाँ जबदस्त काई थी। यह ठीक वसा ही है जैसी उन्होने आशा की थी—फन (पर्णांग) की तरह की वनस्पति! यही सबसे आदिम वनस्पति है, सबसे मजबूत। हिमनदी युग (glacial period) के बाद सवप्रथम इसी का विकास हुआ था।

बन और भी अधिक उत्साह के साथ जगल के अन्दर चलने लगे। उनके पर काई की लम्बी, चमकीली नालो मे फँस गये, भारी ओस ने उनके जूतो को भिगो दिया। साफ था कि पतझड की ऋतु आ गयी थी। पेडो की पत्तिया रग रगीली हो रही थी। हरे, लाल, पीले और नारगी रगो की बहार थी। तभी पेडो और उनकी ताम्र-वर्णी छाल ने उनका ध्यान आकर्षित किया। ताजे, धूमिल हरे रग की पृष्ठभूमि मे पेडो की पत्तिया चमक रही था। वे उनके पास गये। वे चीड के पेडो की तरह लगते थे, लेकिन चीड की सुइयो की जगह उनमे मोटी मोटी पत्तियाँ थी जो तेज कोनेवाले त्रिकोणो की नाई लगती थी। उनमे से रेजिन (राल) की सुगन्ध आ रही थी।

धीरे धीरे जगल मे जीवन आने लगा। हल्के, सरसर बहते पवन ने कोहरे के अन्तिम अवशेषो को भी मार भगाया। पेडो के ऊपर अत्यन्त ऊँचाई पर सूर्य उठ आया। यह वही पुराना, परिचित सूर्य था, आँखो को अन्धा बनाने वाली उसकी चकाचौंध अब भी पुरानी नही पडी थी। १८० शताब्दियो मे उसमे लेशमात्र भी परिवतन नही हुआ था।

पट्टों की ऊंचाइयों पर गिरते-पड़ते प्रोफेसर बन आगे चलते गये। हर बार जब उनके ठोकर लगती तो उनका चश्मा उनकी नाक से नीचे आ जाता और वे उसे फिर ठीक से लगा लेते। अचानक टहनियों के ज़ोर से चरचराने और किसी के घुरघुराने की आवाज सुनायी दी। फिर पट्टों के अन्दर से नाक की आकृति के सिर वाले किसी जानवर की भूरी सूंड बाहर निकली। "जंगली सुअर"—बन ने मन में कहा। लेकिन वह उस तरह का सुअर नहीं था जैसे पहले हुआ करते थे। उसके थूथने के ऊपर एक सींग था। बन को देखकर, एक सकिण्ड तक, सुअर चुपचाप खड़ा रहा। फिर रिरियाता हुआ पट्टों के बीच से वह भाग गया। 'अहा! आदमी से डरता है," आश्चर्य से उसे देखते हुए प्रोफेसर ने सोचा। तभी अचानक वे एकदम सन्न रह गये। ओस में डूबे, भूरी भूरी काई के ऊपर काले-काले गीले पद चिह्न बने हुए थे! ये पद चिह्न मैदान के उस पार तक साफ दिखलायी देते थे। ये आदमी के नंगे पैर के चिह्न थे!

प्रोफेसर बन एक पद चिह्न के ऊपर झुककर उसे देखने लगे। वह सपाट था। उसका अंगूठा पैर की दूसरी अंगुलियों से अच्छी तरह से अलग दिखलायी देता था। क्या सचमुच ही सब कुछ इतना सही सही उन्होंने पहले से ही सोच लिया था? तब क्या जो प्राणी हाल में यहीं से गुज़रा था वह मानव प्राणी था? वे और सब कुछ भूलकर पद चिह्नों के पीछे-पीछे चलने लगे। उन्हें साफ-साफ दिखता जाता कि वे किधर बढ़ते हुए जा रहे थे। तो यहीं पर मानव प्राणी है और इतना तो है कि जंगली सुअर उनसे डरते हैं मालूम होता है कि वे मज़बूत और फुर्तीले होंगे।"

उनकी मुठभेड़ एकदम अप्रत्याशित ढंग से हो गयी। पद चिह्न उन्हें एक मैदान में ले गये। सबसे पहले बन को उन्हें ताड़ वन में छिपा था। आवाजें सुनायी दीं। फिर उन्हें भूरे बालों से ढके हुए कई

प्राणी दिखलायी दिये। उनके शरीर झुके हुए थे। वे कुछ पेडो के पास, उनकी शाखाओ को अपनी भुजाओ से पकडे हुए खडे थे। अपनी ओर बढते आते प्रोफेसर की तरफ वे गौर से देख रहे थे। वन ने चलना बन्द कर दिया। सावधानी की बात वे भूल गये। वही खडे होकर वे उन द्विपदीय प्राणियो को देखने लगे। निस्सन्देह, वे मानव सम वानर थे। उनके हाथो मे पाच अँगुलिया थी। उनकी भौंहो के ऊपर आगे निकले हुए गुमडे थे। उनके ऊपर सकरे ढलावदार माथे थे। उनके गुमडो के नीचे और हनु के ऊपर छोटी सी नाक थी। उन्होने देखा कि उनमे से दो के कधो पर चमडे का कोई आवरण जैसा था।

तो आखिर सचमुच ही वैसा हुआ! यकायक वन को कुछ याद आया और अपना अलगाव उन्हे खलने लगा। 'चक्र पूरा हो गया! जो चीज दसियो हजार वर्ष पहले थी भविष्य के हजारो वर्षों के बाद वही फिर लौट आयी है।'

इसी बीच उन मानव सम वानरो मे से एक वन की तरफ बढा और उसने जोर से आवाज की। उसकी आवाज एक फर्मान की तरह प्रतीत हुई। प्रो० वन ने देखा कि अपने हाथ मे वह पेड की एक भारी गदा लिये हुए था। स्पष्ट था कि वह उन प्राणियो का लीडर था। बाकी भी उसके पीछे पीछे आगे की ओर बढने लगे। सिर्फ तभी उन्हे इस बात का अहसास हुआ कि उनके लिए खतरा है। अपनी अध झुकी टागो पर भौंडे ढग से लडखडाते हुए, लेकिन काफी तेजी से चलकर वानर उनके और नजदीक आ गये। प्रोफेसर ने अपने रिवाल्वर के सारे कारतूस हवा मे दाग दिये और जगल की तरफ भाग गये।

यही उनकी गलती थी। अगर वे खुले मैदान की तरफ भाग होते, तो, बहुत सम्भव था कि, वानर उन्हे न पकड पाते, क्योंकि सीधे खडे होकर चलने के लिए उनके परो का अभी तक बहुत कम अनुकूलन हुआ था। लेकिन जगल मे वे बेहतर स्थिति मे थे। तीक्ष्ण, विजयोन्मत्त

हुंकारें भरते हुए, एक पेड़ की शाखाओं से दूसरे पेड़ की शाखा पर झूलते हुए, वे उनकी ओर बढ़ने लगे। उनमें से कुछ भारी भारी छलांगें भरते हुए चलते थे। उन सब के आगे-आगे अपनी गदा लिए हुए उनका वही "नेता" था।

मानव वानर ज्योंही उनके पास पहुंचे त्योंही उनके पीछे से उल्लास भरी बर्बर आवाजें आने लगीं। किसी वजह से प्रोफेसर के दिमाग में तभी यह खयाल दौड़ गया कि यह तो लिंच करने (बांधकर जिन्दा जलाने) जैसी ही चीज है। उन्हें भागना नहीं चाहिए था, भागने वाला हमेशा पराजित होता है। उनका दिल तेजी से धड़कने लगा। चेहरे से पसीने की धार फूट पड़ी। उन्हें लगने लगा कि उनकी टांगों में रुई भरी हुई है। फिर अचानक उनका भय गायब हो गया। उसे एक स्पष्ट, ममता-हीन विचार ने दूर भगा दिया था "भागो क्या? भागने की किस चीज से जरूरत है? यही तो प्रयोग का अंत है!" उन्होंने दौड़ना बन्द कर दिया, अपनी भुजाओं से एक पेड़ के तने को पकड़ लिया, और अपना पीछा करने वालों का सामना करने के लिए मुस्तैद होकर इन्तजार करने लगे।

मानव वानरों का "नेता" पीछा करने वालों में सबसे आगे था। अपनी गदा को वह सिरके ऊपर घुमा रहा था। प्रा० वन ने उसकी छोटी छोटी, हिंस्र, किन्तु कायरता भरी, आंखों और मुड़े हुए दांतों को देखा। उसकी आंखों के ऊपर लाल-लाल, बालदार ढक्कन थे। उसके दाहिने कंधे के बाल जल हुए थे। 'अच्छा, तो ये जानते हैं कि आग क्या है!" वन ने जल्दी से मन ही मन नोट किया। तभी 'नेता' उनकी तरफ दौड़ा। उसने जोर से हुंकार भरी और अपनी गदा का भरपूर प्रहार वैज्ञानिक के सिर पर दे मारा। उस भयंकर प्रहार से आहत होकर वैज्ञानिक जमीन पर गिर पड़े। उनका चेहरा खून से लथपथ हो गया। क्षण भर के लिए वे बेहोश हो गये। फिर मानो दूर कहीं से

लिए कि दूसरे वानर उनकी तरफ किस तरह चपट रहे है और उनका "नेता" अन्तिम प्रहार के लिए फिर अपनी भुजा किस प्रकार उठा रहा है, उनकी चेतना लौट आयी। उन्होंने यह भी देखा कि नीले आकाश की पृष्ठभूमि मे रुपहली सी कोई चीज चमक रही थी।

"कुछ भी हो, मानव जाति का नये सिरे से विकास हो रहा है," सिर पर गदा के गिरने तथा आग सोचने की क्षमता से वंचित होने से ठीक एक क्षण पहले उनके मस्तिष्क मे यही विचार आया। यही उनका अन्तिम विचार था।

३

कुछ दिन बाद, विश्व अकादमी की सूचना पत्रिका मे निम्न वक्तव्य प्रकाशित हुआ

> "मुक्त मानव के युग की तारीख १२ सितम्बर, १८,८७९ को, गोबी के भूतपूर्व रेगिस्तानी प्रदेश के एक एशियाई उपलभ्य में, एक मानव का क्षत विक्षत शरीर मिला था। उक्त मानव को आपद्कालीन आयनोजहाज (iono plane) के द्वारा अचेतावस्था में ही सबसे नजदीक की पुन जीवनदात्री इकाई (Life Restoring Unit) के पास पहुँचा दिया गया था। वह अभी तक होश मे नहीं आया है, किन्तु अब उसका जीवन खतरे से बाहर है।
>
> "उसके कपाल तथा तत्रिकातंत्र की रचना, तथा जो बचे खुचे उसके कपडे है वे जाहिर करते हैं कि वह हमारे युग के

आरम्भिक काल का मानव था—उस काल का, जब वैज्ञानिक और प्राविधिक विकास का स्तर नीचा था। उस काल का मानव १८ सहस्राब्दियों में अधिक समय तक अपने को कैसे जिन्दा बनाये रहा यह अभी अस्पष्ट है। उक्त उपलब्ध में अकादमी का एक विशेष अन्वेषण दल जोरों से जांच पड़ताल का काम कर रहा है।

"हम जानते हैं कि मानव तथा मानव जाति की उत्पत्ति से सम्बन्धित परिकल्पना की सच्चाई की जांच करने के लिए गोबी के उपलब्धों में कई पीढ़ियों से जीव शास्त्री प्रयोगात्मक काम कर रहे हैं। उनकी कोशिशें मानव-वानरों की एक ऐसी जाति पैदा करने में सफल हो गयी हैं जो, विकास के स्तर की दृष्टि से, मानव-सम वानरों और उन वानर मानवों के बीच की एक कड़ी है जो सैकड़ों हजारों वर्ष पहले मौजूद थे। जिस स्थान पर अतीत का मानव पाया गया था उसके पास के प्रदेश में इन मानव-वानरों की एक जाति रहा करती थी। बहुत सम्भव मालूम होता है कि उन्होंने उसे देख लिया था और इसी से उसका इतना दुःखपूर्ण अन्त हुआ था।

"अकादमी में पुरा भूगर्भ शास्त्रीय विभाग का प्रस्ताव है कि भविष्य में उक्त सुरक्षित स्थान की ओर भी अधिक अच्छी तरह से निगरानी की जाय। विशेष ध्यान इस चीज़ की ओर दिया जाय कि, काम करने के अस्त्र औजारों का वानर मानव मारकाट में अस्त्रों के रूप में इस्तेमाल न कर सकें, क्योंकि अगर वे ऐसा करेंगे तो उनकी बुद्धि के विकास पर इसका हानिकारक प्रभाव पड़ेगा।

"विश्व अकादमी का अध्यक्ष मण्डल।'



इण्डिया पब्लिशर्स के अन्य प्रकाशन

१ रंगे हाथ पकड़े गये कई वर्ष पहले "भारत पर अमरीकी फन्दा" *नाम की प्रसिद्ध पुस्तक प्रकाशित हुई थी तो देश में एक सनसनी फैल गयी* थी। "रंगे हाथ पकड़े गये" भी उतनी ही महत्वपूर्ण तथा उसी तरह रोयें खड़े कर देने वाली रचना है। उपन्यास जैसी रोचक इस सचित्र पुस्तक में पूरे प्रमाणों के साथ बताया गया है कि दूसरे देशों की आजादी की जड़ें खोदने के लिए अमरीका के जासूसों का विश्व-व्यापी जाल क्या-क्या करता है।

२०५ पृष्ठ, ४५ चित्र। मूल्य ३ रुपया

२ मेरी जीवनी ले० ए के गोपालन, एम०पी०

केरल तथा देश के प्रसिद्ध राष्ट्रीय तथा कम्युनिस्ट नेता की यह रोमांचक आत्म-कथा राष्ट्रीय इतिहास के अनेक विस्मृत, परन्तु चिर-स्मरणीय पृष्ठों को पुन सजीव कर देती है। यह एक गौरवशाली पीढ़ी की भी कहानी है।

पुस्तक की भूमिका भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के प्रधान मन्त्री तथा केरल के भूतपूर्व मुख्य मन्त्री श्री ई एम एस नम्बूद्रिपाद ने लिखी है।

३०० पृष्ठ कई चित्र मूल्य ३ रुपया

३ हिन्दी उर्दू की समस्या (और श्री यशपाल) ले० रमेश सिनहा

श्री यशपाल के भाषा तथा समाज सम्बन्धी किन्ही प्रतिक्रियावादी विचारों के उत्तर में लिखी गयी इस पुस्तिका में केवल उन विचारों का खण्डन ही नहीं किया गया है, बल्कि विषय के सम्बन्ध में कई महत्वपूर्ण सकारात्मक स्थापनाएँ भी की गयी है। मूल्य ७५ नये पैसे

४ धर्म ले० मार्क्स और एंगेल्स

कम्युनिज्म तथा कम्युनिस्ट पार्टी के धर्म सम्बन्धी विचारों को लेकर तरह-तरह की भ्रान्तियाँ फैलायी जाती है। इस ग्रन्थ में कम्युनिज्म के दोनों महान संस्थापकों के आधिकारिक विचार संग्रहीत हैं।

(प्रकाशन नवम्बर, ६२) पृष्ठ लगभग ५००, मूल्य ५ रुपया ५० नये पैसे

५ भारतीय इतिहास पर टिप्पणियाँ ले० कार्ल मार्क्स

भारतीय इतिहास तथा समाजशास्त्र के गम्भीर विद्यार्थियों के लिए इन टिप्पणियों में अमूल्य सामग्री मौजूद है। "भारत सम्बन्धी लेख" तथा "१८५७ का भारतीय स्वातन्त्र्य संग्राम" के साथ-साथ यह मार्क्स की भारत के सम्बन्ध में सबसे महत्वपूर्ण *कृति है।* *पृष्ठ लगभग २४०* मूल्य ३ रुपया

६ कम्युनिस्ट दर्शन ले० रमेश सिनहा

इस छोटी-सी पुस्तिका में अत्यन्त सरल शैली में कम्युनिस्ट दर्शन का परिचय कराया गया है। दूसरा संशोधित संस्करण मूल्य ५० नये पैसे